

“ बरकी बीकरापीकी लकी है ? खर ! खर ! जात क्या है ? ”

“ ठीक नहीं मास्स । धामर जुल्महिन उखाहिन होगी । ”

अधर बहुत बेरसे बोला नहीं या अब पूछ उठ उठसे अछर-बोच भी नहीं होगा धामर ? ”

शिवनाथने कहा अछर-बाचके खेमसे तो ब्याह किया नहीं किया है अपने किए । और इस बीबका धामर उसमें समाज नहीं है ।

इस उचितके बाध मनोरमाने फिर एक बार उठनेकी कोशिश की परन्तु इस बार भी उसके पाँच फरकी तरह भारी हो रहे । पुत्रहक और उठेकमात्रक किरीने उसकी तरह बेला नहीं । बेलाते तो धामर बर जात ।

हरेन्द्रने कहा तो यह धामर सिधिक ब्याह ही हुआ ?

शिवनाथने गरदन झिकाकर जवाब दिया “ नहीं ब्याह हुआ धममगसे । ”

अविनाथने कहा बानी बोला बेनेका रास्ता दसो दिशाअसे कृता रकबा, क्यों न शिवनाथ ! ”

शिवनाथने हँसकर कहा ‘ यह तो कोमकी बात है अविनास बाबू ! नहीं तो पिताकी छर अपनी मौजूदगीमें मेरा जो ब्याह कर गये हैं, उमें तो कोई भी बेबाकीकी गुंजाइश नहीं थी मगर फिर भी बाबा तो रह ही गया बा । उसे हँस निष्ठाअनेकी जोखि होनी चाहिए ।

अविनाससे कोई उत्तर देत न बन पडा किर्क उसका चररा मारे कोबके सुर्ध हो गया ।

बाबू बाबू पुत्रनाथ फिर छुछने बैठे हुए सोचने लगे—यह क्या हुआ ! यह क्या हुआ !

दो-तीन मिनट किरीके भी गुरसे कोई बात नहीं निकली, निरामन्द और कम्बकी पुठती हुई हवासे घर भर गया । बाहरसे एक जोरका हवाका झोका आये बिना बेनेनी घर नहीं हो सकनी ऐसा ही कुछ मनोभाव किम हुए अविनाथ बाबू अछरमाह बोले उठे “ जाने दो जाने दो ये सब बातें । हों तो शिवनाथ अब नहीं फररका धम कर रहे हो क्या ! ”

शिवनाथने कहा “ हों । ”

दुन्दरे मित्रके नावाकिम अके-बाखेका इन्तजाम तो दुन्दरीका चरवा पडता होगा । उनकी मौ है न । हाकत बेसी है ! उठनी अछी तो नहीं ह का-र ? ”

“ नहीं बहुत ही खराब है । ”

अनिताउने कहा 'उहू अचानक मर गये,—हम ज्येठोने सोचा था कि रुपना पैसा कुछ खेच गये होंगे। लेकिन हौं तुम्हारे मित्र बनकर थे। अकस्मिक छहदू बिमरी बोला।’

शिवनाथने गरबन हिलकर कहा 'हौं हम दोनों पाठशाळामें एक साथ ही थे।’

अनिताउने कहा 'इसीसे उस समय थे तुम्हारे छिपू इतना कर सके थे।’
 बरा ठहरकर कहा 'लेकिन और वो भी कुछ हो शिवनाथ जब जकेसे तुम्हींसे जब धारा अरोबार देखना पड़ेगा तो इसमें अपना कुछ हिस्सा रखनेछ कनो नहीं जाना करते ? बतौर मासिकके—’

शिवनाथने बात बहुत नहीं होने ही बोला 'हिस्सा कोईछ ? अरोबार तो मेरा जकेसेछ है।’

प्रोफेसरोक। एक मासो आसमानसे पीन्हे जा पडा। असयने कहा 'परकर अरोबार अचानक जापकर हो कैसे यया शिवनाथ बालू ?’

शिवनाथने गंभीर होकर जबाब दिया 'मेरा तो है ही।’

जयबने कहा, 'किसी तरह नहीं। हम सभी जानते हैं, बोगीन्द्र बालूका है।’

शिवनाथने जबाब दिया, 'जानते हैं तो अशाकतयें जाकर गवाही कनो नहीं दे जाये ? कोई डॉकुमेंट था ? सुना था ?’

अनिताउने चौंकर प्रश्न किया 'नहीं, सुना तो कुछ भी नहीं। लेकिन मामला कना अवाक्य तक पहुँच यया था ?’

शिवनाथने कहा 'हौं। बोगीन्द्रके छाँने नाकिय की थी। किन्ही मुसकरो ही मिन्ही है।’

अनिताउ सौंख छेसकर बोला 'अच्छ हुआ। बाधिरकर शिवनाथके कुछ देना नहीं पया।’

शिवनाथने कहा 'नहीं। बाकिमने 'जाप' तो कर बनाये हैं मई। और भी हो एक के आजो।’

बाबू बालू माबाकिन्ही मौलि बैठे थे चौंकर मुँह उठाके बोले 'उह कना जाप समय तो कुछ भी नहीं था रहे हैं ?’

ज्येठनकी ठकि और भूख समीकी नायब हो चुकी थी। मनोरमा पुपकेसे उठी जा रही थी शिवनाथने हुलाकर कहा 'बाह, हम ज्येठोका जाना कतप नहीं हुआ और जाप कभी क्या रही है ?’

मनोरमाने इस बातपर उत्तर नहीं दिया, मुझकर देखा तक नहीं मारे कृपाके उरके धारे धरीरमें खड़े ठठ जाने ।

३

उस फटनाके पीछे एक घण्टा हो चुका । दो दिनसे असमयमें बाहर फिर फिर आते हैं और बर्षा शुरू हो जाती है; आज भी सबेरेसे बीच-बीचमें पाणी पड़ रहा है । दोपहरको कुछ बेर बन्द रहा, मगर बाहर हते नहीं । आकाशकी हाकल ऐसी है कि किसी समय बर्षा शुरू हो सकती है; इतनेमें मनोरमा घूमनेके लिए तैयार होकर अपने पिताके कमरेमें जा पहुँची । आज बाबू मोटी-सी एक कर्त अति आगमकुरसीपर बैठे थे उनके हाथमें एक किताब थी । अइसीने आश्चर्यके साथ पूछा 'बाबू बाबूजी तुम अभी तक तैयार ही नहीं हुए । आज तो हम खेचेंगे' इतनाहीबोली कम देखने जानेकी बात थी ।

बात तो थी विदिया, लेकिन आज मेरी कमरेमें बातका दर—"

"तो मोटर बापस ले जानेके लिए क्या है ? फिर कस ही कसे नकेने कन्वें-ठीक है न बाबूजी ?"

फिराने बोधते हुए कहा नहीं नहीं न घूमनेसे तेरा फिर बुलने क्योना । तुम हो तो बोधा घूम-फिर आ मैं तक तक यह मासिक-पत्रिका देखा है । कहानी लिखी अच्छी है ।"

अच्छ मैं जाती हूँ । पर छीटनेमें मुझे दर नहीं होगी । बाहर तुमसे कहानी सुनूंगी सो अभी क्या जाती हूँ ।' यह कहकर वह अकेली ही घूमने निकल गई ।

कन्वे-भरक अन्दर ही मनोरमा पर बीट आई और पिताके कमरेमें चुपते चुपते बोली "कैसी कहानी है बाबूजी ? खतम हो गई ? फिरने लिखी है ?"

मगर बात सुनते निकलनेके बाद ही वह बौकल पड़ी देखा कि कमरेमें पिता अकेले नहीं हैं, सामने शिवनाथ बैठा है ।

शिवनाथने सठकर नमस्कार किया, और कहा 'क्योंतक घूम आई ?'

मनोरमाने जवाब नहीं दिया; शिव नमस्कारक बदलेमें करा-सा फिर दिखकर बसकी तरह पूरी तरहसे पीठ करके पितासे कहा 'पूरी पढ़ चुके बाबूजी ?'

आप्त बाबूने इतना ही कहा नहीं।”

कमाने कहा तो मैं ठे जाऊँ, पढ़के अपनी तुम्हें बापस दे जाऊँगी। इतना कहकर वह पत्रिका हाथमें लेकर चक दी। परन्तु अपने खेमेके कमरेमें जाकर वह चुपचाप बैठी रही। कम्बे बदलना हाथ-मुँह धोना वगैरह सब काम पड़ा रहा पत्रिका एक बार खोलकर देखी एक नहीं कि खीन-खी कहानी है, किसने लिखी है अपना किसी लिखी है।

इस तरह बैठी बैठी वह क्या क्या सोचने लगी, कोई ठिठपना नहीं। कुछ बेर बाद मीकरके सामनेसे आते देख उसने पुछा ‘अरे बाबूजीके कमरेसे वह आदमी क्या गया।’

मेहराने कहा, ‘जी हाँ।’

‘क्या गया?’

‘पानी पकनेसे पड़े ही।’

मनोरमाने खिड़कीका परदा हटाकर देखा बत्त ठीक है। फिर बर्पा शुरू हो गई है पर ज्यादा नहीं। ऊपरकी ओर देखा पश्चिमके आकाशमें बादल बनबोर होते आ रहे हैं और इस बातकी सूचना दे रहे हैं कि उत्तमो मूलकाबार पानी पड़ेगा। पत्रिका हाथमें लिये खिड़की बैठकमें जाकर देखा कि वे चुपचाप बैठे हैं। पत्रिका इनकी आरामकुर्सीके हाथेर पीरसे रखकर बोली ‘बाबूजी तुम तो जानते हो यह सब मुझे अच्छा नहीं लगता।’

इतना कहकर वह पाठकी सीढ़ीपर बैठ गई।

आप्त बाबूने मुँह बठाकर कहा ‘क्या सब बेटी?’

मनोरमाने कहा ‘तुम ठीक समझते हो कि मैं क्या कर रही हूँ। गुपीत आदर करना मैं भी कम नहीं जानती बाबूजी, लेकिन सिवनाथ बाबू जैसे एक सुप्रसिद्ध धारणीके क्या समझकर प्रभव दे रहे हो?’

आप्त बाबू मारे सरम और खेमेके एकद्वारकी चक पक गये। कम्बेके एक खेमेमें डेक्कपर बहूत-खी पुस्तकें रख कर पड़ा था मनोरमा समकके अमाकसे कोई सवास्वाग सजाकर अब तक रख नहीं सकी थी। उस तरह भौंखका हमारा करके वे चिर्के इतना कह सके, ‘वे हैं न अपनी—’

मनोरमाने मकके साब ठपर मुँह फेरकर देखा सिवनाथ डेक्कके बाठ कहा हुआ कोई खिटाव हूँक रहा है। नीकरने उसे समझा खबर दी थी। मनोरमा

मारे शरमके मार्गों समीपमें बैठने लगी। शिवनाथके पास जाकर खड़े होनेपर वह ऊपर मुँह ठठाकर देख न सकी। शिवनाथने कहा “किताब मुझे मिली नहीं आठ बाबू। तो अब क्या।”

आष्ट बाबूसे भीर कुछ कहा नहीं गया सिर्फ इतना ही कहा ‘बाहर मेह जो बरस रहा है।”

शिवनाथने कहा बरसने ही खैर। जवादा नहीं है।”

इतना कहकर वह जा ही रहा था कि अचानक ठिठककर खड़ा हो गया। मनोरमाको बचन करके बोली मैंने देखा जो सुन लिया है वह मेरा दुर्मित्र भी है और सौमित्र भी। इसके किए आप बचिन न हों। ऐसी बातें अकसर सुननी पड़ती हैं। फिर भी, वह मैं निश्चिन्त जानता हूँ कि बातें मेरे सम्बन्धमें कही जानेपर भी मुझे सुनाकर नहीं कही गईं। इनकी निर्दय आप हटगिन नहीं हैं।”

फिर बरा डरकर कहा ‘मगर मेरी और एक सिद्धांत है। उस दिन अकसर बाबू बगरह प्रोफेसरोंके गुजरने मेरे निकट इच्छा किमा था कि मार्गों में किसी खास मतलबको लेकर इन बरसे अनिच्छता बहानेकी कोशिश कर रहा हूँ। पर एक तो सब कोयोंके भीविषयकी चारणा एक-ही नहीं होती,—दुनरे बाहरसे कोई एक घरना बड़ी दिखाई देती है वह उसका पूर्ण रूप नहीं होता। पर बात जो भी हो आप कोयोंमें प्रवेश करनेकी कोई मूढ़ दुरमिच्छति उस दिन भी मेरे अन्दर नहीं थी और आज भी नहीं है।” फिर सहसा आष्ट बाबूको बचन करके कहा मेरा गाथा सुनना आपको अच्छा लगता है,—पर मेरा जवादा वृत्त नहीं अगर किसी दिन सुननेकी तबीयत हो याव तो वहाँ बरस-बर सीजिएगा मुझे सुधी ही होगी।” इतना कहकर ठिठके नमस्कार करके शिवनाथ बाहर चला गया। पिता का कम्पा सेनोमिसे कोई एक भी बातका जवाब न दे सका। आठ बाबूके दरबमेंसे बहुत-सी बातें एक साथ निकलनेको बहकनबकना करने लगीं किन्तु निकल न सकीं। बाहर तब दर्या खोरी हो रही थी, यह बात भी उनके सुँहसे न निकली कि शिवनाथ बाबू बरा डरकर जाइएगा।

नौकर चाकर सामान लेकर हादिर हुआ। मनोरमाने पूछा सुन्दारी याव क्या नहीं बना है बाबूरी।”

आहू बाबूने कहा नहीं मेरे लिए नहीं, सिवनाथ बाबूने कहा बाबू पीनेको कहा बा ।”

मनोरमाने नीकरको नाम बापस के जानेके लिए इजारा किया । मनकी बचकताके कारण आहू बाबू कमरमें दर्द होते हुए भी बीन्दीसे उठकर कमरमें बाहलकमी कर रहे थे इतनेमें सहसा शिवकीके पास ठिठककर खड़े हो पड़े और क्षण-भर पीरसे देखकर बोले, “उस पेड़के नीचे जो लता है सो सिवनाथ ही है न ? बा नहीं सक है, मीग रहा है ।” फिर दूसरे ही क्षण बोक लठे, छापमें कोरै ली मी लारी है । बंगालियोंके जैसे करने परमे — वह बेचारी और मी मीगरी जा रही है ।

इसके बाद तुरन्त बम्होंने नीकरको बुझना और कहा बाबू, देख तो बा गेड़के पास पेड़के नीचे लठे मीग लीन रहे हैं । जो बाबू लमी लमी यहाँसे गये हैं, वही हैं नना । — डेकलन ठहर ठहर —”

बात उगकी बीचमें ही रुक गई, अचछमात् मनमें मयालक सखेह जाग लठ — वह औरत सिवनाथकी लड़ी ली तो लड़ी है ।

मनोरमाने कहा ठहरे कनों बाबूजी बाकर सिवनाथ बाबूको बुझ ही लखे न ।” और वह लठके लुकी शिवकीके किनारे पिताके पास जा लड़ी हुई । बोली, ‘वह बाबू पीना बाहता बा ऐसा जानती तो मैं हरगिज लसे जान लड़ी देती ।’

बाबूकीको बातके लयालमें आहू बाबू पीरसे बोले सो तो डीक है लनि लगर मुझे लर है कि वह ली लो लाल लकी है, लालर ललकी लही ली लो । बाहर लकी लकी बाट देख रही ली ।”

बात लुनकर मनोरमाको लिखित लालल लुना कि वह लही ली है । एक लार लनके लनमें लुलिबा लई कि इस लरमें लठी किठी लहानेसे लुझना ल्य लछता है या लही पर पिताके लुहकी लरल देखकर ललने लर ललके लु लु कर दिना । नीकरसे लहा लर, बाकर लन लोनोसे ही लुला ललके । सिवनाथ बाबू लगर लुळे कि लिखन लुझना है, लो मेरा लाल लठा देना ।”

नीकर लला गला । आहू बाबूका ली लरललके लर लठ लोके “लनि लह लाल लालर डीक लही लुना ।”

“कनो बाबूजी ?”

आहू बाबूने कहा किमनाम नों चाहे कैता हो, पर बाबिर एक ठब सिद्धित बीर एसीक आरमी है,—इसकी बात बीर है। पर इसके सिद्धिसिद्धिमें इस बीरतसे मी परिवर्त करना क्या ठीक हो सकता है। बाबिरके कैबता-बीकता हम खेब मके ही बतनी न मानवे हों पर मेर लो है ही। नौकर-नौकरानियोंके साथ तो बन्धुत्व नहीं किना आ सकता भेरी।”

मनोरमाने कहा “ बन्धुत्व करनेकी बसरत नहीं बाबूजी। निपसिकें समन राहतेके राहकिरके मी कुछ कन्वेके सिद्ध आरमन किया जाता है। हम खेब सिद्ध उतना ही करेंगे।”

आहू बाबूके मनकी दुबिबा नहीं मिटी। कई बार फिर हिजाकर बोके ‘ बात ठीक इतनी ही नहीं है। मेरी समझमें यह मी तो नहीं आ रहा है कि उच लीके आ बानेपर तुम इसके साथ कैसा व्यवहार करोगी।”

मनोरमाने कहा “ मेरे ऊसर क्या तुम्हारा विश्वास नहीं है बाबूजी।”

आहू बाबू बरा एसी हँसी हँसकर बोके ‘ सो तो है। फिर मी बात बरा लीकसे समझमें नहीं आ रही है। तुम जानती हो जो तुम्हारी बराबरकी भेजीक से उनके साथ कैसा व्यवहार किना जाता है, बीर इतना बहुत कम लक्षिकी ही कामकी होनी। नौकर-नौकरानियोंके प्रति व्यवहार मी तुम्हारा निर्दोष है मगर यह बरा बीर बात है।—समझी बेटी किमनामपर में स्नेह करता हूँ मैं उसके गुणोच्च मजुरागी हूँ—दैनिकी किमनामसे आब बिना कारण यह बहुत कुछ कमजूर सह गया है, जब फिर बरमें तुमकर में उचे बीर सताना नहीं चाहता।”

मनोरमाने समझा कि यह बरीके प्रति सिक्कावत है, उसने कहा ‘ जच्छा बाबूजी वैसा ही होगा।”

आहू बाबूने हँसकर कहा, होना क्या आसाम है भेरी। कारण, मेरे मनपर मी इसकी यह स्पष्ट बारमा नहीं रही है, कि उसके साथ क्या व्यवहार होना बचित है। सिद्ध नहीं बयाक आ रहा है कि किमनामके जब हमारे पर बीर यह न सिके।”

मनोरमा कुछ कहना ही चाहती थी कि कबानक पीछकर बोधी हों तो ये आ ही ले फने।”

आहू बाबू स्पष्ट-से होकर बाहर आ मये बोके ‘ यह किमनाम बाबू,—भीषकर लो बिलकुल—”

शिवनाथने कहा " हौं अचानक पानी जोरकर पकने लगा —सो मुझसे भी बहुत ज्यादा ये मीमी हैं। कहते हुए घायली झींझे दिखा दिया। मगर वह झींझ है वह परिष्कृत न तो उन्होंने ही छात्र दिया और न इन्हीं लोगोंने साक्ष प्रकाश।

अस्तुतः उस झींझे के उपर दृष्टा रहने कायक कहीं भी कुछ नहीं बना था उसके उस कपड़े भीगकर मारी हो गये हैं, मानेके बने काके बाजसे पानीकी बाध गालनेपरसे वह रही है,—पिता और पुत्री इस नवागमता रमणीके चेहरेकी तरह देखकर असीम विरमयसे निर्वाह हो रहे। आसु बाबू सुन कबि नहीं हैं किन्तु उन्हें देखते ही लगा कि ऐसे ही गारी-बपकी धानद प्राचीन कालके कवि विचित्र भीत पद्य के साथ तुम्हारा कर बने हैं, और अगतमें इतनी अविष्ट सखी तुम्हारा भी धानद और नहीं है। उस दिन जब अद्ययके नाना तरहके प्रश्नोंके उत्तरमें शिवनाथने अस्तिर होकर यह जवाब दिया था कि उन्होंने शिक्षिता होनेकी बजाहसे नहीं अपने लिए स्नाह किया है, एवं किछीने नहीं सोचा था कि यह बात कितनी ज्यादा सच है। पर अब स्थग्न होकर आसु बाबू शिवनाथकी उस बातको बार बार सोच करमें लगे। उन्हें सचमुच ही ऐसा मान पड़ा कि इनकी जीवन-यात्राकी प्रभावी स्थि और नीति-सम्मत मके ही न हो बहि-पक्षी सम्बन्धकी पवित्रता भी इनके बीच मके ही न हो मगर इस मध्य अयतमें नर-नारीके नगर शारीरके ही आभव केकर सुविधा यह कैसा अवि-नगर सत्य प्रस्तुति हुआ है। और परम आचर्यकी बात है कि जिस देशमें रूप कुल केनेच कोई विधिष्ट मार्ग नहीं जिस देशमें अपनी धौंसोके बन्ध करके नौरोकी जाँझोपर ही निर्भर रहना पकता है, ऐसे अन्वधरमें इन दोनोंको परस्पर एक दूसरेकी कबर का कैसे मई? परन्तु इस मोहाकक भावको काट केनेने उन्हें एक क्षणसे ज्यादा समय नहीं लगा। स्वस्त होकर बोके " शिवनाथ बाबू, भीगे कपड़े तो बदल लीजिए। अह, बाबूको हमारे बाध-रूममें है आ। "

बैहराके छात्र शिवनाथ अस्म गया। सुरिकक आई अब मनोरमाकी । कुपतीकी उमर अयमम मनोरमाके बराबर होपी और भीगे कपड़े बदल कास्मेकी बसे भी सख्त अहरत थी। परन्तु उसके बंध और अस्मक जो परिचय उस दिन शिवनाथके मुँहसे सुना है, उससे मनोरमाकी कुछ समयमें न आया कि वह क्या बहकर इसको सम्बोधन करे। रूप इसमें बाहे शिवना

ही क्यों न हो विद्या-संस्कारहीन श्रीमं शाहीन इस दासी-कम्बुको आम्ने
 क्कर बुझनेमें मी फिताके सामने उसे संकोच माझम हुमा और भाइए
 क्कर सम्मानके साथ बान्न कमरेमें के जानेमें तो उस और मी गुना माझम
 हान लगी। किन्तु सहसा इस समस्याकी मीमांसा कर ही स्वर्न उस युवतीने
 मनोरमाकी तरफ देखकर उसने कहा 'मेरा भी सब कुछ मीग क्या है, मेरे
 लिए मी एक बोटी मैगा देनी पड़ेगी।'

बेटी हूँ।" क्कर मनोरमा उसे भीतर के गाँ, और महीको बुझकर
 बोली कि इन्हें महान-परमें के जाकर ये कुछ बखिए तो सब बे बे।"

उस क्षीने मनोरमाके करारसे नीचे एक बार बार देखकर कहा "मुझे एक
 साक बोबीकी बुझी बोटी देनेके लिए कह दीजिए।"

मनोरमाके कहा तो ही होगी।

क्षीने महीसे पूछा 'उस घरमें साबुन है न?'

महीने कहा 'है।'

"लेकिन मैं किसीका समाना हुमा साबुन नहीं लगाती।"

इस अपरिचित क्षीका मन्तव्य सुनकर पहले तो महीको आश्चर्य हुमा फिर
 वह बोली नहीं नये साबुनको बॉक्स क्या हुआ है। लेकिन, वह जीजीबाईका
 अपना महान-पर है। उनका साबुन समानमें क्या बुराई है।"

क्षीने ओंठ सिफेइकर कहा 'नहीं वह मुझसे नहीं होना मुझे बड़ी बकरत
 माझम होती है। इसके सिवा हर एकका साबुन जगामेसे बीमारी हो जाती है।"

मनोरमाका क्करा कोबसे मुँह हो उठ, पर एक लजके लिए ही। वृद्धे
 ही क्षम निर्मल हैंसीकी क्करासे उसकी दोनों ओंठि बमचने लगी। उसके मनपरसे
 मानो एक मेघ टूट हो गया। 'इसकर पूछा, यह बात तुमने सीकी किससे?'

क्षीने कहा 'सीखी किससे? मैं बुर ही सब जानती हूँ।"

मनोरमान कहा 'सब? तो बरा हमारी इस महीको मी कुछ अच्छी बातें
 सिखा देना। यह बिकमुल ही मूख है।" क्कर क्करते बसे फिर हैंसी जा गई।
 मही मी हंस ही बोली, 'बस्ये पण्डितानीकी साबुन-साबुन लगाकर
 पहले तैयार हो लो फिर तुम्हारे पास बैठकर बहुत-सी अच्छी अच्छी बातें सीख
 लेंगी।—जीजीबाई, क्षीने हूँ ये?'

मनोरमा हैंसी बचानेक लिए अगर वृद्धी तरफ मुँह न फेर केती तो सम्भव

है कि वह इस अपरिणिता अविधिवाणीकी मुँहपर कौतुक और प्रच्छन्न उपहासप्र-
-त्यास टाक जाती ।

४

मनोरमा आज्ञा बाबूकी सिर्फ़ मन्की ही हो खो बात नहीं वह उनकी साथी
सैनी मंत्री मित्र एक साथ सब कुछ थी । इसीसे पिताके सम्मानरक्षार्थ
भारतीय समाजमें जो संश्लेषसहित कुल सन्तानके लिए अथवा पारमनीय माता
जाता है, अविनाश मीर्चीपर बसकी रक्षा न हो जाती थी । बीच-बीचमें ऐसी
आश्चर्यनाएँ होनीमें होने लगती थीं जो बहुत-से पिताजीके अटकेगी; पर इनके
-अनोमें नहीं बढकती थीं । उनकीको आज्ञा बाबू इतना प्यार करते हैं कि
उसकी सीमा नहीं । वे ही-मित्रीके बाद फिरसे प्याह करनेकी मनमें अन्तना
-की नहीं कर सके, इसका भी एकमात्र कारण यह बकती ही है । मगर मित्र
मनहकीमें बात विद्वेपर केरके साथ वे करते हैं कि एक तो सादे तीन
-मनका यह भारी खीर और सो भी बात-रोगके कारण र्णु । अब और क्यों
इसके लिए एक बकतीका सर्वनाथ बिना काम भाई ! जो दुःख सरपर केकर
-मनकी मा स्वर्ग सिंघार गई है सो मुझे मन्का है । इस आज्ञाके लिए बही
-अपनी है ।

मनोरमा वह बात सुनती तो घेर आपत्ति कटती कटती " बाबूकी तुम्हारी
-वह बात मुझे नहीं सुझती । यहाँ ताकमहक देखकर किन्ने आश्चर्यमेंको न
-कने क्या क्या बार जाता है, पर मुझे बार आती है तुम्हारी और माकी । मेरी
-मा स्वर्गमें क्या कुछ बहकर गई है ! "

आज्ञा बाबू करते तू तो तब कुल बस-बारह सालकी बरकी थी, तू तो सब
-आगती है-। एकके गरीम बसरेकी माका गिरनेका जो निस्सा है खो सिर्फ़ मैं ही
-अनता है निस्सा । " करते करते उनकी जीके बबडवा आती ।

आगरेमें आकर वे बिना किसी संश्लेषके सबके साथ दिव-मिल गये हैं,
-पर सबसे बढकर उनकी हार्दिक मन्त्री हुई है अविनाश बाबूके साथ । अविनाश
-सहिष्णु और संवत प्रकृतिका भावमी है । उसके विचमें ऐसी एक शान्ताधिक
-धाम्ति और प्रसन्नता थी कि वह उदक ही सबकी प्रथा जाकरपित कर देता ।
-अपर आज्ञा बाबू सुगम हुए वे कुछ और ही करवते । उनकी तरह बनने
-की हमरी बार प्याह नहीं किवा वा और फनी-मेयके निरर्तनके लिए बरने

सर्वत्र अपनी जीके चित्र लगा रहे थे। बाबू बाबू बसते करते “अविनाश बाबू, शेष हमारी प्रीति करते हैं। सोचते हैं हम ज्योगोष केका आत्मसंयम है, मानो हम ज्योगेने कोई बहुत बड़ा कठिन काम कर सक्ता हो। पर मैं सोचता हूँ कि यह प्रेम बढता ही कैसे है? जो शेष दूसरी बार स्नाह करत हैं, वे कर सकते हैं इतीकिय करते हैं। उन्हें मैं शेष भी नहीं देता और न छोड़ा ही सपसता हूँ। मैं सोचता हूँ कि मैं कर नहीं सकता। सिर्फ इतना ही जानता हूँ कि मणिश्री माफी जगह और किनीको जीके रूपमें प्रहम करना मेरे किय सिर्फ कठिन ही नहीं असम्भव भी है। पर इसकी उन्हें क्या खबर? बात ऐसी ही है न अविनाश बाबू। अपने मनसे पूछ देखिये क्या ठीक बात करता हूँ या नहीं।”

अविनाश हँस देता करता देखिन मैं तो मुटा नहीं सच हूँ बाबू बाबू। मास्दरी करके पुनर करता हूँ, बच भी नहीं मिळता और उमर भी हो चुकी है,—कफ़ी देना खीन।”

बाबू बाबू हँस होकर करते ठीक बही बात है अविनाश बाबू यही बात है। मैं भी सबको करता फिरा हूँ कि बेहका वजन सादे तीन मज है बातका पंगु हूँ, कर बही बसते-फिरत हार्द फेक हो जय कोई डिखाना नहीं मफ़ी देना खीन। देखिन जानता हूँ कि कफ़ी केनशाओकी कमी नहीं है, सिर्फ केनेकात्म मनुष्य ही मर गया है। हा ह हा ह—अविनाश भी मर चुका और बाबू भी—हा ह हा ह।—” करकर ज्यादा मारकर ऐसे जोरसे हँसते कि करकी चिचकियो और उनके हाँसे तक शेष उठते।

रोज शानको बाबू बाबू अपनी कन्याके साथ बूमने मिळतते पर अविनाशक मकानके सामने बाबर सतर पकते करते ‘अब शमको बच ठंडी हवा लगाना मेरे किय ठीक नहीं बेरी बकि तुम औरते बच मुझे भरने साथ के जाना।

मनोरमा हँसकर चाली “ठंडी नहीं है बाबूजी आज तो काफी गरमी है।”

बाबूजी करते “सो भी तो अच्छ नहीं बेटी बूँके स्वास्थके किय गरम हवा भी तो हालिकारक है। तुम क्या पूम फिर जानो हम दोनों बूँके मिठकर तब तक दो-चार बार्ते ही करें।”

मनोरमा हँसकर चाली “बार्ते तुम शेष दो-चार डोक दो-चार भी करते रहो मुझे उठमें कोई ऐतबार नहीं देखिन तुम दोनोके कोई कमी बूँका नहीं हुआ सो मैं माद चित्तमे जाती हूँ।” इतना करकर चू चली जाती

बातची बहससे जिस दिन आहु बाबूसे किसी भी तरह जाना नहीं जाता उस दिन अविनाशचंद्र जाना बढता। गाँवों में लेकर आदमी लेकर, बाबूचंद्र निमन्त्रण लेकर — जैसे की बनता आहु बाबूचंद्र अनिर्वाह अनुपेय उनके पास पहुँचता और उसे वे किसी भी तरह टाल नहीं सकते। दोनों ही इच्छा हीनेपर और और बाहोंके साथ सिक्काबद्ध भी अक्सर बिक सिद्ध जाता। इच्छा हीनेपर आहु बाबूके मनसे बुर नहीं होती की कि उस दिन उसे निमन्त्रण लेकर पर बुलाया और सबसे मित्रकर अपमानित करके उसे विवा कर दिया। सिक्काबद्ध निमन्त्रण आदमी है गुणी है, उसका सारा शरीर जीवन त्याग्य और जीवनसे भरा हुआ है, — यह सब क्या कुछ भी नहीं ! तो फिर फिर बाबूसे अपनी सम्पदा भ्रमभंगने उसे दोनों हाथोंसे बड़ाकर दे दी है। क्या इसीलिए कि मनुष्य-समाजसे उसे बड़ाकर बुर चेंक दिया जाय ! धरती हो गया है, तो इससे क्या ! धरती पीकर मतनाके तो बाबूठेरे हो जाया करत हैं। जीवनमें यह चरु तो उभरी भी बन पया है, इसके लिए किसीने उन्हें त्याग दिया है।

आदमीकी बुद्धिमें आदमीके अपराधोंपर गौर करनेकी अपेक्षा उसे क्षमा करनेकी तरह उनके हृदयका सुखय बहुत ज्यादा होता जाता था और इसी लिए वे अविनाशचंद्र साथ अक्सर इस विषयकी बहस किया करत थे। प्रकृत रूपसे सिक्काबद्ध निमन्त्रण देनेका धर उन्हें चाहत नहीं होता किन्तु मन उनका हमेशा उसकी संपत्तके लिए लक्ष्य करता। अविनाशचंद्र सिर्फ एक बातका उससे कोई जवाब देते नहीं बनता कि वह जो एक बीमार जीवों को बड़ाकर अपनी जी बरमें के जाया है सो यह क्या है।

आहु बाबू लज्जित होकर कहत यही तो सोचता हूँ कि सिक्काबद्ध कैसा आदमी वह काम कर केते सख ! लेकिन क्या जानें अविनाश बाबू, छत्र मीतर कोही रहस्य हो — जो सखत है, — और — सभी बातें क्या सबके जाने कही जा सकती हैं, या कहना उचित है।

अविनाश कहता " मगर उसकी जी निर्दोष की यह तो उसने अपनी ही जवानसे कबूल दिया था ?

आहु बाबू पराल होकर परहन हिंसक कहत " सो तो किया ही था । " अविनाशकी कहा और वह जो मरे हुए मित्रकी विपदाको सोचा देना सारे योग्यारको अपना बताकर उसपर देखल कर देना — यह क्या था ! "

आहु बाबू मारे घरमके कमीनमें यह जाते जैसे छद्म उन्हेंनि यह दुष्कार्य कर
 राख्य हो । फिर अपराधीकी तरह धीरेसे कहत ' लेकिन बात यह है न अवि-
 नाश बाबू खानद मीठर कोई रहस्य हो — जखम फिर अहमदतने क्या समझ
 कर उन्हें बिक्री द री ! तयने क्या कुछ मी बिचार नहीं किया होगा । ”

अविनाश कहता ' मरिजी अहाकतकी बात खोद हीखिए आहु बाबू । आप
 घर मी कमीनार हैं वहाँ सबसके खागे दुर्बल कर बिक्री हो सक्य है, बता
 सकते हैं मुझ ।

आहु बाबू कहते " नहीं नहीं यह ठीक बात नहीं । यह बात ठीक नहीं ।
 मपर ही यह मी नहीं कह सकता कि आपकी बात सझ है । लेकिन बात
 यह है न—'

अन्तमक मनोरमा आ जाती तो हँसकर कहती " बात जो है सो सभी जानत
 हैं । बाबूजी तुम छद्म मी मन ही मन जानते हो कि अविनाश बाबू सिध्दा तक
 नहीं करते ।

इसके बाद आहु बाबूके मुँहसे फिर कोई बात नहीं निकलती ।
 अविनाशके निश्चयमें मनोरमाकी ही निम्नता मानो सबसे ज्यादा थी । मुँहसे
 यह ज्यादा कुछ नहीं कहती थी पर पिता सबसे ज्यादा डरते थे बचीसे ।

दिल दिन शामको अविनाश और उसकी ली पानीमें भीतर इस बरमें आध्म
 केनेको बाध्य हुए ये उसक बाद सो बिकतक आहु बाबू बातके प्रकोपसे एकदम
 खटपर पड़े रहे । न तो वे छद्म ही करीं आ सके और न अविनाश ही कामकी
 संस्यकी बजहसे उनके पास आ सके । परन्तु उनके आते ही आहु बाबू बातक
 अलप्य दर्दको भूँकर आरामकुर्सीपर धीमे होकर बैठ गये और बोले " अजी
 अविनाश बाबू अविनाशकी लीके लान तो हम कोशोक परिक्रम हो गया । लकी
 है बिकतक बक्रीकी मूर्ति । ऐसा रूप कभी नहीं देखा भाई । मासम हुआ जैसे
 उन कोशोक मपवानने किसी उरेस्यसे ही निकलना है । "

" कहते क्या हैं । '
 ही, ही । कोशोक आक बगल बहा कर सो तो देखते ही रह जाना पकता
 है । आप भीकें हटा ही नहीं सकते इतना मैं कह देता हूँ अविनाश बाबू । "
 अविनाशने उँठत हुए कहा, ' हो सकता है । लेकिन आप प्रोसा करने
 लगत हैं ता लकी सीमा नहीं रखते । "

जाहू बाबू वन-भर उनके सँहकी ओर देखते रहे फिर बोले " यह शेष सुस्में है । सीमासे बाहर या सफ़टा होता तो इस मामलेमें भी बहर जाता अगर शक्ति नहीं है । इन दोनोंके बारेमें किनता ही क्यों न कहा जय तब सीमाकी बारे तरफ ही रहेगा बाकिबी तरफ नहीं पहुँचनेका । "

अभिनाशने इतरर पूरा विश्वास कर सिबा हो सो बात नहीं परन्तु पहलेका परिहासका बंद मी बन्द न रहा । बोले " तो फिर उस दिन किनताबने अक्षरक सम्म नहीं किया क्यों ? मगर परिचय हुआ किस तरह ? "

जाहू बाबूने कहा " विस्मयन देखी करना हुई । किनताबको काम या सुससे । नी साय बी पर मकानके अन्दर अन्देकी हिम्मत नहीं हुई, बाहर ही एक पेड़के नीचे उसे खड़ा कर आया । लेकिन देव देका हो तो आदमीकी कुराई काम नहीं लेनी असम्भव बात भी सम्भव हो जाती है । हुआ यही । " यह कहकर उन्होंने उस दिनकी बीबी-मेहकी सारीकी सारी कतबा विस्तारके साथ कह सुनाई; फिर कहा ' हमारी मति लेकिन खूब नहीं हो सके । उसकी हम-उप ही बी सामय हुआ यही मी हो;—मगर मतिअ करना है कि उस दिन किनताब बाबूने सखी बात ही कही थी —अपनी वास्तवमें अधिकित किसी बासीकी लक्ष्य है । कमस कम हमारे शिष्ट समाजकी तो नहीं है, इसमें कोई सन्देह नहीं ।

अभिनाशको हुआ " सो कैसे जाना ? "

जाहू बाबूने कहा " उसने घायद मीगी पोतीके बड़े साथ पुत्री मोती मामी बी, और कहा था कि मैं किसीका इतनाका किया हुआ साधुन नहीं बना सकती —मुझे मकरत मान्य होती है । "

अभिनाश समझ नहीं सके कि इसमें शिष्ट-समाजके नियमोंके बाहरकी कीमती बात है ।

जाहू बाबूने मी ठीक यही बात कही, इसमें अक्षरगत कीमती बात हुई, नि अब तक नहीं समझ सके । मगर मति खूबी है बातन नहीं बाबूनी अन्देके उँयमें एक ऐसी बात थी जो बिना सुने नहीं जानी जा सकती । इसके सिवा कियोंकी बीबी और कामोंको पोखा नहीं दिना जा सकता । हमारे बासीकी नीकरानी तक मी समझ गई कि यह उषीकी बातकी है, उसके माकिषोंकी कोई नहीं । विस्मयन नीचेसे अचानक एकदम ऊपर बढ़ा देनेसे जैसा होता है, इसके मी ठीक वैसा हुआ है । '

अविनाशने कुछ बेर चुप रहकर कहा " दुःखकी बात है । मगर आपके साथ परिचय हुआ किस तरह ? आपसे बोली ही क्या ? "

आहु बाबूने कहा " बरकर । मीठी बोली बहककर सीधी मेरे कमरेमें आकर बैठ गई । जिसकी बसा यी ही नहीं — मेरी तबीयत कैसी है, क्या जाता है, क्या हुआक तक रहा है, अबह वह अरखी छग रही है या नहीं — पूछनेका क्या ही सहज-रहस्यन्त माव बा । बसिक सिवनाप तो कुछ संकुचित मी हो रहे, मगर उसमें अक्ताक विहृ तक देखनेमें नहीं आया । न बातचीतमें न आचरणमें । "

अविनाशने पूछा, " मास्स होता है, मनोरमा तब न होगी ? "

नहीं । उसे न जाने कैसी अभय्या-सी हो गई है, कहा नहीं जाता । उन स्नेहोके कके आनपर मैंने कहा " मनि उन्हें निदा करने मी एक बार बाहर नहीं आई ? " मनिने कहा " और जो कुछ कहे कर सक्ती हूँ बाबूजी ऐकिन चरके नीकर बाकर या बास-दासियोंके बैठिए कइकर अम्पर्यना नहीं कर सकनी और फिर आरूपा ' कइकर निदा मी नहीं के सक्ती । अपने कर आनेपर मी नहीं । " इसके बाद कइमेओ और क्या रह जाता है । "

कइमेओ और क्या रह जाता है सो अविनाशके हृद मी हूँके न मिता, सिर्फ मनु कइसे इतना कहा ' बताना सुरिक्त है आहु बाबू । पर मास्स होता है कि मनोरमाने ठीक ही कहा था । इस तरहकी औरतोंसे हम अँसोके घटोँकी जिबोँकी धान-महकाल न होना ही अच्छ है । "

आहु बाबू चुप रहे ।

अविनाश कइने लगे " गिरपाकके संशेषका करण मी साबद यही है । उसे तो सभी बातें मास्स हैं — उसे डर था कि कही कोई मई न निदामने समयक बात उसकी लीके मुँहसे न निकल जाय । "

आहु बाबू हँस दिने बोले " हौं हो मी सक्ता है । "

अविनाशने कहा " बरकर वही बात है । "

आहु बाबूने प्रतिधर नहीं किना " सिर्फ कहा " कइकी ऐकिन कइमीकी-सी प्रतिमा थी । " बहकर उन्होंने एक छेटी-सी सॉस छोड़ी थीर ने आरामदुरकीस पीठ लगाकर बैठ रहे ।

कुछ बेर चुप रहकर अविनाशने कहा " मेरी बातसे क्या आपको धोम हुआ ? "

आप्त बाबू इठके बैठे नहीं, उसी तरह अचानक ही हाकलमें पड़े हुए धीरे धीरे बोले "छोम नहीं अविनाश बाबू, पर न जाने कैसी एक अचानक-सी माहलम हुई। इससे तो आपसे मिलनेके लिए इस तरह धनकड़ा रहा या। बाहें भी कैसी मीठी थी उसकी — सिर्फ़ कर ही नहीं।"

अविनाशने हँसते हुए उत्तर दिया, "मगर मैंने तो उसका रूप भी नहीं देखा और बाहें भी नहीं सूली आसू बाबू।"

आप्त बाबूने कहा "पर देखा मीका अगर कभी हाथ आसगा तो आप समझ जायेंगे कि उन्हें स्वयं कैनेमें कितना अन्धाय हुआ है। और कोई भले ही न समझे पर मैं विद्युत जानता हूँ कि आप जरूर समझेंगे। जाते वक़्त उस वक़्त-कैने मुझसे कहा 'जब आप मेरे पक्षिवा याना मुनना पसन्द करते हैं, तब कबो उन्हें कभी कभी सुझा नहीं डेते? इस बातका क्याल ही आप न करें कि मैं कौन हूँ मैं तो आप सेपेके बीच आनेका राजा करती नहीं।"

अविनाशको कुछ आश्चर्य हुआ बोले "यह तो विचित्रक अस्थितो कैसी बात नहीं आप्त बाबू। मुननेसे माहलम होता है, इसके निकले सम्बन्धमें हम चाहे कैसी भी अचरबा करें पर पक्षिको यह शिष्ट-धमाके कब्य बना चाहती है।"

आप्त बाबूने कहा "वास्तवमें उसकी बात सुनकर माहलम हुआ कि उसे सब माहलम है। हम सेपेके जो उस दिन उसके पक्षिको अपमानित करके बिदा किया था इस बातको सिधनापने उससे कियाया नहीं है। सिधनाय जयादा किया-कियकर कबनेवाकल शकल भी नहीं है।"

अविनाशने मँडूर करते हुए कहा "स्वभावसे यह ऐसा ही है। ककिन एक बीच उसने जरूर कियाई है। यह सझकी चाहे जो हो इससे उयन वास्तवमें आह नहीं किया है।"

आप्त बाबूने कहा "अविनाशने तो कहा है यह उसकी जी है, और उसने भी ऐसा ही परिचय दिया कि यह उसका पति है।"

अविनाशने कहा "परिचय दिया करे। मगर यह सब नहीं है। इसके अन्दर जो नम्मीर रहस्य है असब बाबू उसका भेद फिरी न फिरी दिन खाले दिना न रहेंगे।"

आप्त बाबूने कहा "इसमें तो मुझे भी शक नहीं। कारण असब बाबू अकिम्माकी पुसब हैं। मगर, इनको परस्परकी स्वीकारोकिमें सब नहीं सब

केवल छिने हुए रहस्यको बुझानेके सामने उपाह देनेमें ही है । अविनाश बाबू, आप तो बन्धु नहीं हैं । आपसे तो मैं ऐसी प्रत्याशा नहीं करता । ”

अविनाश अजिबत होकर बोले, मगर समाज भी तो है । बसकी मन्दाहक छिपू मी तो—

परन्तु बन्धुम्व इतना बलम नहीं हो पाना था कि पास्के दरवाजेको खोकर मनोरमाने प्रवेश किया । अविनाशको नमस्कार करने उद्यमे क्या 'बापूजी मैं बूमने आ रही हूँ, तुम कामद आत्र बाहर निकल नहीं सकेगे । ”

नहीं निद्रिवा तुम आधो । ”

अविनाश उठकर बड़े हुए बोले सुसे मी आत्र काम है । बाजारके पास बरा नहीं उतार के सफ्ती मनोरमा । ”

बहर,—बसिए । ”

बाते समय अविनाश कह मये कि बहुत ही बहरी कामसे उन्हें कल ही दिखी जाना पड़ेगा और शामद एक छात्रके पड़े नहींसे सीटना नहीं होमा ।

५

इसके दिन बाद अविनाश दिखीसे बीट आये । उनके नी-दस सामके पुत्र अगतने आकर हापमें एक छोटी-सी बिट्टी थी । उसमें सिर्फ एक बालक लिखा था—“शामको बहर आइएगा ।—आह । ”

अगतकी बिबवा मौसीने दरवाजेके परेके हटाकर बिके हुए गुल्मब जेमा नुई निकलसकर कहा “आशु बभूके बरक क्या बीजे लिखये ही बैठ से जो परमें मात न आते उकन कर सिने मये ।—अमी ही जाना होगा । ”

अविनाशने कहा शामद कोई काम काम है । ”

काम काम है । वे लगे तो जैसे मुकामी साहबको विगत ही जाना चाहते हैं । ”

अविनाश अपनी छोटी सामीको लपटे कमी छोटी बहू 'कहत हैं और कमी बसक्य नाम नीलिम्य केकर पुकारते हैं । इसके बोले छोटी बहू अमृत-कक अमाहरके साथ पेह-पके पहा हुमा हो तो उसे देखकर बाहरके लोगोंको सोम बरा हो ही जाता है ।

नीलिम्या हंस ही बोली 'तब छो यह बात उन लोयोंको बता देना बहरी हो जाती है कि वह शत्रावन पल है अमृत पक नहीं । ”

आष्टु बाबू इन्के बैठे नहीं, उसी तरह भक्करी हाकतमें पड़े हुए पीरे पीरे बोले धीमे नहीं अविनाश बाबू, पर न जाने कैसी एक ध्वपा-सी मासूम हुई। इसीसे तो आपसे निकलनेके लिए इस तरह व्यवस्था रहा ना। बाते भी कैसी मीठी भी बसकी—सिर्फ रूप ही नहीं।”

अविनाशने हँसते हुए बतल दिया, मगर मैंने तो उसका रूप भी नहीं देखा और बाते भी नहीं सुनी आष्टु बाबू।

आष्टु बाबूने कहा “पर वैसा मीका अगर कभी हाथ आयमा तो आप समझ जायेंगे कि उन्हें स्वाप देनेमें कितना अन्वान हुआ है। और कोई मके ही न समझे पर मैं निश्चिन जानता हूँ कि आप बस्तर समझेंगे। जाते बच उस सङ्घर्षने मुझसे कहा अब आप मेरे प्रतिष्ठा माना सुनना पसन्द करते हैं तब क्यों उन्हें कमी कमी बुझना नहीं कैते ? इस बातका खबाल ही आप न करें कि मैं शौन हूँ मैं तो आप धेमेके बीच जानेका राजा करती नहीं।”

अविनाशको कुछ आश्चर्य हुआ बोले “वह तो कितना अतिथितो कैसी बात नहीं आष्टु बाबू। सुनसेसे मासूम होता है इसके मित्रके सम्बन्धमें हम चाहे कैसी भी व्यवस्था करें पर प्रतिष्ठा वह शिष्ट-समाजमें बसना चाहती है।”

आष्टु बाबूने कहा भारतमें उसकी बात सुनकर मासूम हुआ कि उसे अब मासूम है। हम धेमेके जो उस दिन उसके पतिको सम्मानित करके बिदा किया ना इस बातको अविनाशने उससे छिपावा नहीं है। अविनाश ज्यादा छिपा-छिपाकर बसनेवाला शकल भी नहीं है।”

अविनाशने मंजूर करते हुए कहा “स्वभावसे वह देता ही है। संकित एक बीज उसने बस्तर छिपाई है। वह व्यवधी चाहे जो हो इससे उसने वास्तवमें ब्याह नहीं किया है।”

आष्टु बाबूने कहा “अविनाशने तो कहा है वह उसकी बी है, और उसने भी देता ही परिवार दिया कि वह उसका पति है।”

अविनाशने कहा “परिवार दिया करे। मगर वह सब नहीं है। इसके अन्दर जो गम्भीर रहस्य है अजब बाबू उसका भेद किसी न किसी दिन खले बिना न रहेंगे।”

आष्टु बाबूने कहा “इसमें तो मुझे भी शक नहीं। अरुण अजब बाबू अविनाशकी पुरख हैं। मगर, इनको परस्परकी स्वीकारोक्तिमें सब नहीं सब

केवल छिपे हुए रहस्यको बुझानेके सामने उपाय देनेमें ही है ! अविनाश बाबू, आप तो अक्षय नहीं हैं। आपसे तो मैं ऐसी प्रस्तावा नहीं करता।”

अविनाश अजिबत होकर बोले, “मगर समाज भी तो है। उसकी मरम्मतके लिए भी तो—”

परन्तु बक्ष्म ठनका खतम नहीं हो पाया था कि उसके दरवाजेको खोलकर मनोरमाने प्रवेश किया। अविनाशको ममस्वर करके उसने कहा बाबूजी मैं बूमने आ रही हूँ, तुम शायद आज बाहर निकल नहीं सकोगे !”

नहीं बिटिया तुम जाओ।”

अविनाश ठठकर खड़े हुए बोले मुझे भी आज काम है। बाजारके पास जरा नहीं उतार दे सक्ती मनोरमा !”

असर,—पक्षि।”

आते समय अविनाश यह पये कि बहुत ही जरूरी कामसे उन्हें एक ही दिशि जाना पड़ेगा और शान्त एक सप्ताहके पहले नहींसे बीटना नहीं होगा।

५

एक दिन बाबू अविनाश दिशिसे खीट आये। उनके नीचेस सारके पुत्र जगत्ने आकर हाथमें एक छोटी-सी किट्टी दी। उसमें किंकि एक वाक्य लिखा था— साम्ने असर आइएगा।—माधु।

जगत्की विनया मौसीने दरवाजेके परेकेके इटाकर खिले हुए गुलाब जैमा लौह निष्काकर कहा “आधु बाबूके करके क्या बीनें लिखाय ही बैठे ये आ-परमें आत न आते उकर कर लिये गये।—मामी ही जाना होगा।”

अविनाशने कहा ‘शान्त कोई कास काम है।”

काम काक है ! मे जोग तो जैसे मुकामी साहबको निमल ही जाना चाहत है।”

अविनाश अपनी छोटी साडीके समसे कमी छोटी बहू’ खरत है और कमी उरुका नाम नीसिमा केकर पुकारते हैं। इसके बोले “छोटी बहू अमृग-रुच अनादरक साथ पैर-पुके पहा हुआ हो तो उसे देखकर बाहरके खेगोंको नोम करा हो ही जाता है !”

नीसिमा ईस ही बोधी तब तो यह बात उन खेयोंको बता देना खरी हो खरी है कि यह इमानक एक है अपुत एक नहीं।”

अविनाशने कहा, अच्छा जाता हैना। पर वे विधास नहीं करेंगे खेम और भी बड़ आयया हाथ बटानेमें भी कसर न रक्खेंगे।”

बीकन्याने कहा “बससे काम न होना सुखर्षी महाशय सब खेमोंकी पहुँचके बाहर जबकी बार मञ्जूत-सा बैठा बबबा रहींगी। इतना कहकर वह हँसी दबाके परदेकी ओरमें चली गई।

अविनाश जब आगु बाबूके घर जाकर पहुँचे, तब घोडा-सा दिन बाकी था। गुरुस्वामीने अत्यन्त आदरके साथ उनका स्वागत किया और कुत्रिम कोपके साथ कहा आप बार्मिक हैं। परदेसमें निजको अकेला छोड़कर इस दिनसे गैरहाजिर रहे इस बीकन्या तो इस अनुचरकी इस रणार्थे उर्लखित हो गई।”

अविनाश बीककर बोले एक साथ दस दस दसाएँ। पहले पदमी तो बठाइए।”

‘बताता हूँ। पदमी दसा तो यह हुई कि दोनों ओरें चिन्हें ताज्य ही नहीं हुई बसिक बगहोने अत्यन्त सब सामने छपरठे पीचे और पीचेसे ठपर आना बाबा शुरू कर दिया।’

‘बेहद मक्की बात है। दूसरीका बर्नन कीजिए।”

दूसरी यह कि आज किसी पर्वके उपसङ्गमें हिन्दुस्तानी भाठी-कुत्र बसुनाके कूलपर इच्छा हुआ है और इरेन्द्र-अस्य आदि पवित्रत-समाजने निर्मित निर्दि कार विधासे बहो जमी जमी अविनाश किया है।’

अच्छा ठीक है। तीसरी दशाख हात गुनाइए।”

दरबनेगु आगुनाय अत्यन्त उत्कण्ठित हुएस्ये अविनाशकी प्रतीक्षा कर रहा है प्रार्थना है कि वे अरबीघर न करें।’

अविनाशने ईसते हुए कहा “उन्होंने प्रार्थना मंजूर कर ली। अब बीबी दशाख बर्नन कीजिए।

आगु बाबूने कहा यह बरा कुछ भारी है। चिरंजीव महोदयने विनाशतरे मात्तमें पदार्पण किया है और वे काही होत हुए परसों इसी आयरा बगरीमें पधारे हैं। सम्प्रति मोटरकी मशीन विपद गई है आर चिरंजीव स्वयं मरम्मतके काममें लगे हुए हैं। मरम्मत समाप्तशय है और वे जब आते ही होंगे। अन्ति-क्याप है, बहली चौदही रातमें सब एक साथ आज ताबमहल्लय निरीक्षण करें।”

अग्निनाशक हैसता हुआ चेहरा पम्मीर हो उठ पड़ा "ये निरंजीनी साहब कीन हैं आछ बाबू ? क्या इन्हींकी बात उस रोब कदत कदत जवानक रुक गये थे ?"

बाबू बाबूने कहा ' हाँ । मगर आज कदनेमें कदसे कम आपसे कदनेमें कोई रुकावट नहीं । अश्विनीकुमार मेरे माजी जमाई हैं, इन दोनोंका प्रेम संसारकी एक अपूर्व वस्तु है । कदक कदा है रत्न है ।"

अग्निनाश स्थिर होकर सुनने लगे और बाबू बाबू कदने को ' इन ब्रह्मममाजी नहीं हैं । सब किन्ना-कर्म सनातनी-मतादुवार करते हैं । पचासमय अर्थात् चार साल पहले ही इन दोनोंके ब्याह हो जानेकी बात थी । होत भी नहीं मगर नहीं हुआ । जिस तरह इन दोनोंका परिचय हुआ वह भी एक विचित्र घटना है,—जिध-जिधि कहा बात तो असुधि नहीं होगी । पर उक्त बातको जमी जाने दीजिए ।"

अग्निनाश पूर्ववत् दाम्ब बैठे रहे । बाबू बाबू बोले " मजिदी टेक-ताई हो गई थी कि इतनेमें रातकी बाड़ीसे काशीसे छोटे कदक जा पहुँचे । पिताजी मृत्युके बाद वे ही बरके बने वे बाक-बपचा कोई या नहीं कदकीके केकर बहुत विमोहि कशोबास कर रहे थे । ज्योतिपवर उमक जकक विरवास बा आकर बोले यह ब्याह अभी हो ही नहीं सक्ता । उन्होंने कद तथा और और पवित्रोक्ति निर्मूल गचना कर देयी है कि इस ब्याहके होनेसे तीन साल तीन मदिनेके अन्दर ही मजि विक्वा हो जायगी ।

जमें एक कदम-सा मज मया सारी ठेकारिबीं गुदाकेमें पर पर, मपर में कदकके जानता बा समस मया कि इसमें कद मी इनर-उबर नहीं होनेका । अश्विनी कद भी एक बहुत बने बरक कदक है, उसके एक विपवा कदकीके विवा संसारमें और कोई न या ब मी बहुत गुस्ता हुई । अश्विनी मारे कद और अग्निपालके इंजीनियरिंग पदनेके बहाये विद्वकत कला गया और सने कदक विवा कि वह सम्बन्ध इयेसके लिए दूट गया ।"

अग्निनाशने कदकी हुई सोंस छेकर पूछा " इसके बाद फिर ?"

बाबू बाबूने कहा " फिर हम सब हठास हो गये हुई नहीं एक मजि कद । मुझसे आकर बोली ' बाबूजी ऐसी क्या बकी बात हो गई है जिसक लिए तुमने काना-पीना-सोमा छोड़ दिया है ? तीन साल ऐसा क्या बका समय है ?' उसके मजको पिठनी जबरदस्त ठेस पहुँची थी, सो मैं जानता बा । मैंने कहा, बेटी,

जेरी बात ही चारबंद हो पर इन सब बातोंमें तीन साफ़ तो दरमिन्दार, तीन दिनकी रोक मी बुरी होती है।" मन्दिने हँसकर कहा "तुम्हें करनेकी बहरत नहीं बापूजी, मैं उन्हें पहचानती हूँ।" अर्थात् हमेशासे जरा कुछ चारिबंद प्रकृतिचर आसमी है भयवानपर उचक अचक विधास है। बाते समस मनिओ एक छोटी सिन्धी किबकर बस मया। इन चार सास्त्रोंमें फिर उतने बुरी सिन्धी हो नहीं सिन्धी। न किसे, पर मन ही मन मनि सब जानती थी, और तबसे उचने अक्षरिणीय जीवन प्रथम कर सिन्धी। देखो तो बाहरसे कोई कुछ समस ही नहीं सञ्जा। समसे अविनाश बापू।'

अविनाश भयसे विगमिस्त-वित्त होकर बोले हों बास्तवमें नहीं समस सञ्जा मैं आधीर्षार देता हूँ कि ये श्रेय जीवनमें सुखी हों।

आप्त बाबूने कन्नाकी तरफसे ही मानो फिर सुककर उचें प्रथम किया और कहा, "आप्तपत्र आशीर्षार सिन्धी नहीं होगा। अर्थात् सबसे पहले कन्ना आशुबके पास गया था। उम्होंने अनुमति दे दी है। नहीं तो, नहीं कन्ना नह जाता ही नहीं।"

इसके बाद दोनों कुछ देर चुप रहे। फिर आप्त बाबू कन्ने स्त्रो, 'अर्थात्के विक्रमवत बने अनेतर अब दो साफ़ तक उचक कोई समाचार नहीं आया। तब 'मिने जीतर ही मीतर बरकी खोज न की हो सो बात नहीं। पर मनिओ अक्षरमात्-आत्म हो गया और उचने मना कर दिया। कहा "बापूजी, इतकी कोसिध-तुम मत करो। मेरा तुम्हें प्रथम रूपसे सम्बधान यके ही न सिन्धी हो पर मन्ने से कर ही दिया था।" मन्ने कहा 'ऐसा तो सिन्ने ही विवाहोंमें हुआ करता है, देवी। लेकिन कन्कीकी अर्थात्में मानो पत्नी नर आया। बोली "नहीं होला बापूजी। सिन्धी बातचीत ही होती है, उचसे पनावा कुछ नहीं—नहीं बापूजी मेरे माममें भयवानने जो सिन्धी है उसे मैं सह उन्हें, नहीं बापूजी है, मुझे और कोई आदेश तुम मत देना।" दोनोंकी ही अर्थात्से और गिरने स्त्रो, 'योककर मैंने कहा, "असुर बन गया देवी अन्ने नासमस बापूओ व समा कर।

अक्षरमात् पूर्व सृष्टिके आदेशसे उचका कष्ट कर हो गया। अविनाश सर-नी कुछ देर तक बात नहीं कर सके; उचक बाद बीरे बीरे बोले "आप्त बाबू, संसारमें हम श्रेय न जान सिन्धी पक्षिनी सिन्धी करते हैं और न अने सिन्धी अनुचित कारणोंसे मनमें पलके रहते हैं।"

आशु बाबू ठीक समझ न सके, कही ? ”

यही, जैसे हममेंसे बहुत-से ऐसा समझा करते हैं कि कड़कियों परब सिद्धा पाकर मेम-साहबा बन जाती हैं, हिन्दुओंके प्राचीन मयुर संस्कारोंके बिना इनके हृदयमें जैसे स्वान ही नहीं रहता । यह किताबा क्या प्रम है, मय्य ! ’

आशु बाबूने परबन हिम्मत करवा ‘अब बहुतेरी बयह होता म्हर है । मय्य आप जानते हैं अविनाय बाबू, क्या सिद्धा और क्या अस्त्रिणा असस नीय है प्राप्त करना । इस प्राप्त करने न करनेके ऊपर ही सब बातें निर्भर हैं । नहीं तो एकदम अपराध सुन्दरेपर आरोप करनेसे ही शुराका होता है ।—आ मये अस्त्रिण मणि कहा है ! ”

तीसेक साकस्य एक सुन्दर अस्त्रिण कुपक कमरेके भीतर शक्तिशुभा । उसके कर्णोंपर अस्त्रिणके रत्ना लग गये थे । उसने कहा “ मय्य अब तक मेरी मय्य कर रही थी इनके कर्णोंमें भी अस्त्रिण लग गई है, करो बदनमें गई हैं । मोटर ठीक हो गई है, सोधरसे सामने आकर कही करनेसे कह रिवा है । ”

आशु बाबूने कहा “ अस्त्रिण वे मेरे परम मित्र हैं, श्रीपुत्र अविनाय मुखे-पाप्याय । नहाके कर्णोंके मोडिसर हैं, श्राद्धन हैं इन्हें प्रणाम करो । ”

आगमुक सुन्दर अविनायसे पौध लुकर प्रणाम किया । फिर खड़े होकर आशु बाबूसे सहर करके कहा “ मणिके जानेमें पौधेक मिनयसे ज्यादा डेर न लोनी । मय्य आप जरा अस्त्रीसे तैयार हो लीजिए । डेर होनपर सब कुछ देखनेका समय नहीं मिलेगा । जोग करते हैं ठाम्मरन देखत देखत जी ही नहीं भरता । ”

आशु बाबूने कहा ‘ जी न भरनेकी ही नीय है, तुम्हींको अभी करो बरतना बाधे हैं । ”

सुन्दरने हैंसकर कहा ‘ छो रहने दीजिए । यह तो हमारा पेश है । कर्णों-पर अस्त्रिण लम्बसे हम ज्योयोध्र कोई कपीरन नहीं होता ।

बात सुनकर आशु बाबू मन ही मन आश्चर्य प्रकट हुए और, अविनाय भी सुन्दरकी विनय सरलतापर मुग्ध हो गये ।

इतनेमें मय्य आ पहुँची । सहसा उसकी तरफ देखकर अविनाय चौक

चले। कई दिनोंसे उन्हेंने ससे देखा नहीं था और इस बीचमें ही वह अपरवाहित जानन्दकी घटना हुई थी। खासकर, उसके पिताके मुँहसे अभी अभी जो बातें सुनी थी उससे उन्हेंने समझ लिया था कि मनोरमाने के चेहरेपर आज साबू ऐसी कोई बात देखेगा जो अनिर्वचनीय होगी और जीवनमें कभी देखी न होगी। मगर वहाँ कुछ भी नहीं था बिल्कुल सीधी-सारी पोशाक। छिपे हुए जानन्दका छिपा आङ्गुर कईसे आत्म प्रकाश करता हुआ नहीं दिखाई दिया। सुयम्भीर प्रसन्नताकी शान्त दृष्टि केहरेपर कहीं भी विकसित होती नहीं दिखाई थी बल्कि न जाने कैसी एक कलात्मिकी छायाने ही आँखोंकी दृष्टिमें मगान कर रखा था। अनिनासके ऐसा जान पड़ा कि पितृ-स्नेहस साबू आशु बानूने अपनी कम्पाके पल्ल समझा है या फिर किसी दिन जो सख्त या वह आज छूट हो गया है।

बोली हैरत एक बड़ी मारी मोटरमें बैठकर सब एक भिपे। बानुनाके घाट-बादपर पुष्प-सुष्प नारियो और रूप सुष्प पुष्पोंकी मीठ तब तक छगभात कम हो चुकी थी। सुन्दर और सुशीर्ष मार्यमें सबैत्र ही उनकी सख-सख और विचित्र रस-विरयी पोशाक अल्लमाय रकि-करोंसे भिपेय सुम्बर हो उठी थी और उस दृश्यके देखते हुए सब के विचक्षितयात अनन्तसीम्बमव ताममहलके सिंहशरके सामने आ पहुँचे तब हेमन्तशुद्धा छेदा-सा दिन अचानककी ओर बढ़ा जा रहा था।

यमुना किनारे जो कुछ देखनेका था सो सब देख-भाकर अक्षयका रूप पहलेसे ही वहाँ हाथिर हो गया था। तब उन छेगोंने बहुत बार देखा है, देखते देखते अर्थि हो गई है इसीसे वे ऊपर न जाकर नीचेके बागमें एक किनारे बैठ गये थे। इन छेगोंके आते देख उन सबने अब काँधहके साथ स्वागत किया। बासम्बाकि-प्रीकित आशु बानू अपनी मारी-भरकम केहके बासपर रखते हुए मारी उसात छोड़कर बोले 'ओह अब भीमें ही आया। अब किसकी कितनी तपीकत हो मुस्ताय बेवमकी वत्र देकर जानन्द प्रल करते रहो बाबा। आशु बैस यहिसे बेवम साहबाके कोदिस बजा जाता है। इससे प्यारा और सससे कुछ नहीं हो सकता।'

मनोरमाने सुष्प कट्टी कहा 'सो नहीं होमा बापुजी, तुम्हें कहेका छोड़कर हममेंसे कोई भी नहीं जा सकता।'

आशु बानू ईसकर बोले, 'बकी कोई बात नहीं बेटी तुम्हारे पूँडे बापके कोई पुरा नहीं है अबया।'

अग्निनाम्ने क्या " नहीं इसकी आर्थात् नहीं । बरसतू केन और जोड़ेकी खंजीर क्यसे बंदर वह उठा ही कैसे सकेगा । "

मनोरमाने क्या " मेरे बापूजीको कोई बखर न लगाए । आप सोगेकी ही बखरसे बापूजी नहीं आकर बहुत-बुछ हुबके हो गये हैं । "

अग्निनाम्ने क्या, " ऐसा अगर हुआ हो तो हम सोगेसे अन्याय हुआ है वह बात माननी ही पड़ेगी । कारण सप्टमके सिद्धान्तसे इस पीत्रकी इज्जत तात्रमइत्ये किनी करर कम नहीं है । "

सब कोड़े हँस दिये । मनोरमाने क्या " सो नहीं होगा बापूजी तुम्हें साथ साथ चलना होगा । तुम्हारी अँखोसे देखे बिना इस पीत्रका जाया सौन्दर्य उँका ही रह जायगा । कोई किननी ही बातें क्यों न बताये पर तुमसे ज्यादा अलखी बातें और कोई नहीं जानता । "

अग्निनाम्नेके सिवा हम बातका मर्म और कोई नहीं जानता कि इसके मानी क्या हैं । ये भी यही अत्रुरोध करने आ रहे थे । इननेमें सहसा सबकी दृष्टि पड़ी एक अग्रत्वाक्षिण पीत्रपर । तात्रके पूर्वकी ओरसे घूम कर अक्षस्मात् सिद्धान्त और उसकी ही सामने आ पड़े । सिद्धान्त अनदेखी करके दूसरी तरफ जाया ही चाहता था कि ही उसकी दृष्टि आकर्षित करके खूब हो उठी और बोली, " आशु बाबू और उनकी उनकी भी आई हैं, देखो तो सही । "

आशु बाबूने ओरकी आवाज लगाकर उन्हें पुकारा " आप ज्ये कब आये सिद्धान्त बाबू ! इधर आइए । "

श्रीके साथ सिद्धान्त पास आ खड़ा हुआ । आशु बाबूने वनका परिचय देकर कहा, " ये हैं सिद्धान्तकी श्री । आपका नाम कैकिन नहीं मालूम । "

मेरा नाम है कमल । मगर मुझसे आप ' न कहा करें आशु बाबू । "

आशु बाबू बोले, " क्या ठकित भी नहीं है कमल य लोग मेरे मित्र हैं तुम्हारे पतिक भी परिचित हैं । बसो । "

कमलने अशितकी तरफ इशारा करके कहा " मगर इन्का परिचय तो दिया ही नहीं । "

आशु बाबूने कहा, " कमल- हूँगा । ये मेरे,—ये मेरे कम आरतीय हैं । नाम अशितकुमार राव । बुछ ही दिन हुए, दिनायतसे बापस आकर हम लोगसे मिलने आये हैं । कमल तुमने क्या आज पहले पहल तात्रमइत्य देखा है । "

कमलने फिर हिलफिर कहा "हो।"

बाबू बाबूने कहा "तब तो तुम माम्मफती हो। पर अर्द्ध तुमसे भी माग्गवान् है क्योंकि वह परम आश्चर्यकी चीज उसने अभी तक देखी नहीं जब देखेगा। लेकिन उबाला फटता जाता है, ज्वाला बरकत तो अब ठीक नहीं अर्द्ध।"

मनोरमाने कहा ' 'बैर तो सिर्फ तुम्हारे लिए ही हो रही है बाबूजी उठो। उठना तो आसान काम नहीं है बेटी उसके लिए तो आयोजन करना पड़ेगा।'

' तो फिर वही आयोजन करो व बाबूजी।'

करता है। अच्छा कमल देखकर कैसा मासूम हुआ ?'

"आश्चर्यकी चीज ही मासूम हुआ ?"

मनोरमा उसके साथ बोली नहीं वही तक कि उसके परिचय है इस बातका आभास भी उसके आचरणसे प्रकट नहीं हुआ। फिनासे टाकीद करत हुए उसके कहा 'काम हुई व। रही है बाबूजी उठो अब ?'

उठना ही बेटी।" कहकर बाबू बाबू उठनेका करार भी उसीग न करके बैठे ही रहे। कमल करत हँसी मनोरमाकी तरह देखकर बोली "इसकी तबीयत भी अच्छी नहीं है, और चढ़ना उतरना भी आसान नहीं। इतने बर्तक हम खेप बैठे बैठे बाँधें करें आप खेप देख जाए।"

मनोरमाने इस प्रस्तावका ज्वाब तक नहीं दिया कि फिनासे ही उसके साथ कहा 'नहीं बाबूजी खे नहीं होनेका। उठो अब तुम।'

मगर देखा गया कि उठनेकी कोसिल क्यमप फितीने भी नहीं की। जो जीवित आश्चर्य इस अपरिचित रमणीके सर्वांगमें ज्वाब होकर अचरमात् मूर्तिमान् हो उठत, उसके सामने वह निश्च ही कहा हुआ संभारमरकत कम्पक आश्चर्य मानो एक क्षणमें कुचस्र-सा पड़ गया।

अकिनासकी अम्बयनसकता वृद्ध हो गई। बोले, 'इसके बिना गये क्यम न फिनासे। मनोरमाकी चारणा है कि फिनाकी अँकुरि देखे वपैर टाकक आचर सौम्बर्ष भी हर्बर्षम नहीं दिया जा सकता।"

कमलने अपनी तरह अँकुरि उठाकर पूछ "क्यों।" फिर बाबू बाबूने कहा 'आप शायद इस विषयके विद्वेष हैं। और शायद सब बाँधें जानते हैं।"

मनोरमा सग ही सग विस्मिता हुई, बाते ठीक अवस्थित राखी-क्या बैसी तो नहीं मासम होती ।

आहु बाबू पुष्कित होकर बोले, मैं कुछ भी नहीं जानता । विशेषज्ञ तो हूँ ही नहीं और सौन्दर्य तत्त्वका सिर पैर तक नहीं जानता । उस तरफ़से तो मैंने इसे देखा तक नहीं कमल । मैं देखता हूँ बाइसाह आइजर्हीको । मैं दखता हूँ उनकी जसीम ब्यबाओ जो मानो इसके हर फ़रके अंग-अंगमें समाई हुई है । मैं देखता हूँ सगके एकनिष्ठ परनी प्रेमको जो इस मर्मर काम्यकी सृष्टि करके बिरादरके किए अपनी प्रियतमाको बिरके सामने अमर कर गया है । ”

कमलने अत्यन्त स्वामाधिक चउते उनके खेदकी तरह देखकर कहा, मगर उनको तो गुना है और भी बहुत-सी बेयमें बी । बाइसाहको मुम-लाबपर बैसा प्रेम या बैसा औरोंपर भी था । हो सकता है कि सबसे कुछ ज्यादा हो पर एकनिष्ठ प्रेम तो उसे नहीं कहा या सकता आहु बाबू । उममें वह बात नहीं बी । ”

इस अप्रबन्धित सवालक मन्तव्यसे सब चौंक उठे । आहु बाबू या और कोई इसका जबाब खोजकर भी न पा सका ।

कमलने कहा बाइसाह कवि वे वे अपनी शक्ति सम्पदा और बैबैते इतनी बड़ी बिराद् सौन्दर्यकी वस्तु प्रसिद्धि कर गये हैं । मुमताक तो एक आर्कस्मिक उपमदन-भाव बी । वह न होती तो भी ऐसा सौन्दर्य-सौच वे कितनी भी कटनाको केहर रब या सकते थे । धर्मके नामपर होता तो भी कोई मुकसान नहीं था और हमारों-अबो आरमिबोंकी हत्या करके विविधव-प्रसिद्धि रसुतिके रूपमें होता तो भी इधे तरह बख्य जाता । वह एकनिष्ठ प्रेमका बान नहीं है, वह तो बाइसाहका निजी आनन्द-न्येकका अछन बान है । बस इतना ही हमारे किए काफी है । ’

आहु बाबूके दिखार बोल्-सी कपी । बार बार सिर दिखकर कहने लगे “ काफी नहीं कमल हरबिज ऐसा नहीं था । तुम्हारी बात ही अगर सच हो बाइसाहके मनमें एकनिष्ठ प्रेम अगर न था तो इस बिलास रसुति-मन्दिबक कोई मानी ही नहीं रह जाता । फिर वे बाहे कितनी बड़ी सौन्दर्यकी सृष्टि क्यों न कर जाते, मनुष्यके हृदयमें बैसी अछाका आसव उनके लिए नहीं रह जाता । ”

कमलने कहा ' अगर न रहे तो वह मनुष्यकी मूर्खता है। मैं नहीं चाहती कि पिताका कोई मूल्य ही नहीं पर जो मूल्य मुक्त-मुक्तसे लेने उभे देते माने हैं वह उच्च प्राप्त मूल्य नहीं है। एक दिन जिससे प्रेम किया है, फिर किसी दिन किसी भी कारणसे इसमें किसी परिवर्तनका भयकाश नहीं हो सकता; मनुष्य वह अचक-अचिग वह बर्तन तो स्वल्प है और न सुन्दर ही। "

मुक्तक मनोरमाके विरमवकी सीमा न रही। मूल्य दासी-कन्या कष्टकर इसकी उपेक्षा करना कठिन है मगर इतने पुण्यके सामने उठी जैसी एक नाटिके मुँहसे निकली हुई इस तरहकी कज्जाली बातनी उभे कबरबस्त चोट पहुँचाई। अब तक वह कुछ बोली नहीं थी; पर अब वह अपनेको रोक न सकी; बढेर किन्तु वही कबानसे बोली मैं माफती हूँ, ऐसी मनोहरता और किस्तीके न सही पर आपके किय स्वामानिक है। मगर औरोंकी दृष्टिमें न तो वह सुन्दर है और न योग्य।

भाऊ बाबू मन ही मन अत्यन्त मुग्ध होकर बोले कि बेटी। '

कमल गुस्सा नहीं हुई, बल्कि बरा रूँच ही। बोली बहुत दिनोंके बाद-मूल संस्कारपर आयात कालसे आदमी सहसा सह नहीं सकता। आपने सब ही कहा है हमारे निष्कट यह बात बहुत ही स्वामानिक है; क्योंकि हमारे शरीर और मनमें बीजम परिपूर्ण है, हमारे मनमें प्राण हैं। जिस दिन जानूँगी कि आवस्यकता कोनेर भी इसमें परिवर्तनकी कोई शक्ति बाकी नहीं रही उस दिन समस्त ऐसी कि उषका आत्मा हो चुका है—वह मर चुका है। " कष्टकर ज्यों ही उसने बोलीं उठाईं त्यों ही देखा कि अत्रितकी आँसुओंसे कैसे चिनगाँरिबों निकल रही हैं। माफक नहीं वह दृष्टि मनोरमान देखी या नहीं, किन्तु वह बातके बीचहीमें अकस्मात् बोध ठठी बापुकी अब दिन नहीं है मुझसे प्रियता बनेगा मैं अचित्त बाबूको तब तक कुछ पाया दिखा जाती हूँ।

अचित्तकी अत्यन्तकृता बर हो गईं। उसने कहा बच्चे हम लोग बेक जाएँ। "

भाऊ बाबू उष होकर बोले, अच्छी बात है, बाबू बेटी हम लोग यही बैठे हैं। लेकिन बरा जल्दी ही बीट जाना न होगा तो कम फिर बरा जल्दी था जाँगे। "

६

अभिषिक्त और मनोरमा जब राजा दखकर खीरे तब सूर्य अस्त हो चुका था पर उजासा खतम नहीं हुआ था। सब खूब गिरोह बौधकर जमे थे, और तब बोरतर हो उठा। राजमहलकी बात पर खीटनेकी बात यही तक कि अभिषिक्त मनोरमाकी बातका भी उन्हें खनास नहीं था। अज्ञान युव बैठा उचल रहा था। देखकर मात्स्य होता था कि इसके पहले वह कपटी सोर मया चुका है और अब हम के रहा है। आशु बाबू इसके अशोभागको पकड़ बाहरकी ओर पसार कर और कर्ष मागको सोनो हाथोंपर रखकर, गुरु-भार बहन पर नेत्र एक तरीका निश्चलकर अत्यन्त विस्मयकीके साथ घुन रहे हैं। अत्रिनाथ सामनेकी ओर झुककर तीस दृष्टिसे कमकक केदरेकी तरफ देख रहे हैं। समसने आवा कि पिन्नुकास सवाल-जवाब इन्ही रोनीके दरम्यान आछ हैं। सवने मागनुकीकी ओर मुँह ठठकर देखा। किमीने बरा गरहम दिख्यै और किमीको सतमी भी फुरसत नहीं मिली। कमक और सिवनाथ — इन रोनीने भी मुँह ठठकर देखा। किन्नु आशुव यह है कि एककी आँखोंकी दृष्टि बसे सिवनाथी तरह अक रही है, दूसरेकी दृष्टि बैसे ही कस्तान्त और मस्किन हो रही है। मागो यह कुछ बेक ही नहीं रहा है, न कुछ घुन ही रहा है। इस दखमें बैठा हुआ भी सिवनाथ बैसे न जाने कहीं किनी बुर क्या गया है।

आशु बाबूने कहा 'बैठो।' पर वे कहीं बैठे और बैठे या नहीं यह बेखनेकी भी उन्हें फुरसत नहीं मिली।

अत्रिनाथने खानर अक्षयकी मुक्ति-मायाका दिव सूत्र हाथमें के किनी और कहा "बादशाह बाहजदोका प्रसन्न जमी रहने हो। मैं मानता हूँ कि उनके सम्बन्धमें विचार करकेकी बहरत है और प्रश्न बरा बटिक है। मगर प्रश्न जहाँ उत सामनेक संवसरमरक समान सफेद पानीकी तरह सार सूर्यके प्रकाशकी तरह स्पष्ट और सीधा है — के बीजिए हमारे आशु बाबूका जीवन किमी भी विद्यामें भी कोई बनी नहीं थी, बन्नु बागपदकी कोशियेमें भी कोई बुद्धि नहीं थी, मत्स्य तो है ही सब — केकिन यह बात ये सोच ही न सक कि अरनी यून कौकी जगह और किमीकी काकर किनी तरह बिठया जा सकता है। यह बात इनकी अज्ञानसे भी बाहर है। बताइए, नर-भाठीके प्रेयका यह कितना बड़ा आदर्श है? कितना ऊँचा स्थान है इसका?"

कमल कुछ खरना ही चाहती थी कि पीछे एक मुटु स्पर्शका अनुभव करके
बचर देखने लगी। शिवनाथने कहा "अब वह भाओकना बन्द करो।"

कमलने पूछा "क्यों ?"

शिवनाथने बचरमें सिर्फ इतना कहा "ऐसे ही कर रहा हूँ।" और ये बात
हो गये। लकड़ी बाटपर किछीने विसेव भ्राम नहीं बिबा,—उन उदास अन्व-
मनस्क मौखिके अन्तरात्ममें खोज-खी बात बची रह गई, किछीको माझस भी न
हुई, और न किछीने जाननेकी कोसिख ही थी।

कमलने कहा "अच्छा ऐसे ही। तुम्हें बर कम्लेकी जन्मी पकी है कायर ?
पर बर तो साय मौखिक है।" और हँस ही।

आठ बानू सहम गये इरेन और अद्यय ओझे ही ओझेमें मुसकराने
मनारमाने दूसरी तरफ मौखिक केर सी किन्दु बिसको खन करके बह बात कही
गई थी उस शिवनाथके आधैरवक सुनर बेहरेपर एक रेखाक भी परिवर्तन
नहीं हुआ,—मानो वह बिकतुन पबका बना हो—न तो उठी कुछ बिबाई
देता है और न सुनाई।

अबिनाथने देर नहीं सही ज रही थी। उधरमें कहा "मेरे सवासक
जबाब हो।"

कमलने कहा "पर पतिकी मनाई है जो। लकड़ी मंशाके बिबाक कम्ला
क्या बकित है ?" यह कहकर वह हँसने लगी। अबिनाथने खर्ब मी बिना इसे
न रहा गया। बोके "इय मामकेमें अपराज न माना कायना। हम इतने
आरमी मिक्कर तुम्हे बहुतोच कर रहे हैं जबाब हो।"

कमलने कहा "आठ बानूको जाज मिक्कर दो दिन देखा है सिक् पर
इसी बीचमें मन ही मन मैं उन्हे चाहने लगी हूँ।" फिर शिवनाथकी तरफ
इशारा करके कहा, "अब समझमें जाना न कि क्यों ये मुझे बोल्नेके किय
मना कर रहे थे ?"

आठ बानूने खर इसमें क्यबद बायी बोके "पर मेरी तरफसे तुम्हें संशोक
या इजिबा करनेक कोई कारण नहीं। बूझा आठ वैच बना निरीह आरमी है
कमल। सिर्फ हो ही दिन देकर तुम्हें जसे बहुत-कुछ समझ निना होगा और
दो दिन और मी देखोगी तो समझ जाओगी कि जससे करने देती भूक संसारमें
सायर ही कई हो। तुम खरक्यतासे करो—ये खर बाँटे सुननेमें वास्तवमें मुझे
बहुत जानबू जाता है।"

कमलने कहा ' मगर ठीक इसीकिय तो ये मला कर रहे थे और इसीकिये
अभिनाश बाबूकी बातका जबाब देनेमें अब तक मेरी जवान कपटी भी कि-
यर-जातीके प्रेमके व्यापारमें न तो मैं इसे बरी चीज समझती हूँ और न आदर्श
ही मालती हूँ । "

अब लखनका मुँह खुला । उसके प्रश्नके अंशमें श्रेय था, " सम्भव नहीं है कि-
आप खोम नहीं मानते मगर क्या मानते हैं अणु बतार्पणी क्या ? "

कमलने उसकी तरफ देखा करु पर ठीक उसीको उत्तर दिया हो सो बात
नहीं । वह बोली एक दिन आठ बाबू अपनी लीसे प्रेम करते थे जो इस
समय भीति नही हूँ । पर अब उन्हें न तो कुछ दिया ही था सज्जा है और
न उनसे कुछ पाया ही था सज्जा है । उन्हें अब न तो सुखी किवा था सज्जा है
और न कुछ दिया जा सज्जा है । वे हूँ ही नहीं प्रेम-यात्रका निशान तक मुँह
गया है । उन्हें किसी दिन प्रेम किवा था मनमें सिर्फ यह बदना-मात्र रह गई
है । मनुष्य नहीं है, उसकी केवल स्मृति है । उसीको अहोरात्र मनमें पाकते
रहकर वर्तमानकी अपेक्षा अतीतको ही मुर खाकर जीवन बितानेमें कौन-सा
परा भारी आदर्श है मेरी तो कुछ समझमें नहीं आता । "

कमलने मुँहसे एसी बात सुनकर आठ बाबूको फिर खोटे पहुँची । वे बोले
मगर हमारे देखी निवशार्थके हाथमें सिर्फ नहीं एक करम पहुँची रहती है ।
पति बह बसता है पर उसकी स्मृतिको छेड़ ही तो निववा-जीवनकी पवित्रता
बनी रहती है । इसे क्या तुम नहीं मानती ? "

कमलने कहा " नहीं । एक बड़ा नाम वे देनेसे ही तो कोई चीज संसारमें
सम्पन्न बनी नहीं हो जाती । बल्कि जो कहिय कि इस देशमें इसी तरह केवल
जीवन बितानेका विवाह है इसे मैं अस्वीकार नहीं करूँगी । "

अभिनाशने कहा ' मगर ऐसा ही हो खेय अगर उन्हें ठगठ ही था रहे
हों निववाके ब्रह्मचर्यमें,—खेर जाने सो ब्रह्मचर्यका नाम अब न देना—किन्तु
उसके आंतरिक संवत्त जीवनको क्या हम विराट पवित्रताका भी सम्मान न करें ! "

कमल ईश ही बोली " अभिनाथ बाबू यह भी एक ठीक सत्यका मोह है ।
संयम सत्य बहुत दिनोंसे बहुत बनावत इज्जत पा पा कर ऐसा फूट उठा है
कि उसके किय अब स्थान-अच्छ करण-अकारण नहीं रह गया है । उसके-
संस्कार-मात्रसे सम्मानके बोझसे आदमीका फिर कुछ बाठा है । परन्तु

अवस्था-विशेषमें वह भी एक बोधी आवाजसे उवाचा कुछ नहीं है। वह व्यर्थ मुँहसे निकलकरते ही साधारण श्लेगोंको भजे ही बर बने, पर मुझे नहीं कम्पता। मैं उस बजधी नहीं हूँ। तब इसीलिए कि बहुत-से श्लेग बहुत दिनोंसे कोई एक बात कहते आ रहे हैं, मैं उसे मान नहीं देती। पतिजी स्थितिसे छापीले विपत्ताने रहकर विपत्तानोंको दिन कल्पने चाहिए, इसके लयान स्वतःस्विक परित्रताकी वारमाको स्वीकार करनेमें मुझे तब तक विश्वासवाहक रहेगी जब तक कि उसे कोई प्रमाणित नहीं कर देगा।”

अभिनासको उवाच हूँ न मित्त और मे छत्र-भर विमुक्तकी मौति देखते रह यने फिर बोले “तुम कहती क्या हो ?”

बाधने क्या “हो और हो बार होती हैं, इसे भी सावर प्रमाणित किने गौर आप नहीं मानेंगी ?”

कमलने न तो उवाच दिया और न गुस्सा ही हुई। तब हँस दी।

और भी एक सजजन को गुस्सा नहीं हुए, वे वे आछ बाधू। किन्तु कमलकी जातसे सबसे उवाचा व्यथित भी वे ही हुए।

बाधव फिर बोले “आपकी वे सब यन्त्री पारबायै हमारे विश्व-समाजमें नहीं हैं, वही वे बज नहीं सकती।”

कमलने पूर्ववत् हँसते खेरेसे ही उत्तर दिया “किह समाजमें पकटी नहीं हैं वह मैं जानती हूँ।”

इसके बाद कुछ देर तक सबके सब नीन रहे। बाधू बाधू पीरे पीरे बोले ‘और एक बात तुमसे पूछना हूँ कमल। परित्रता-अपरित्रताके लिए नहीं वह रहा किन्तु स्वभावता को और कुछ कर नहीं सकता—जैसे सुसभो ही के से मयिची रसगीव माधी जगह और कित्तोको ब्य विखनेकी तो मैं कभी कम्पना ही नहीं कर सकता।”

कमलने क्या “आप बूँते को हो गये हैं आछ बाधू।”

बाधू बाधूने क्या “मानता हूँ आच बूँता हो क्या है। किन्तु उस दिन तो बूँता नहीं था। पर तब भी तो यह बात नहीं मोच सकता था।

कमलने क्या “उस दिन भी ऐसे ही बूँते थे। देखते नहीं मन्ते। थई कोई आदमी हाँव है जो बूँता मन लिये ही पदा होत है। उस बूँतेके शासनके नीचे उनका जीवै-जीवी विरुद्ध बीदन हमेशा बज्जरासे तिर मीबा किने रहता है। बूँता मन तुम होकर करता है, क्या। यही तो मन्त्र है, कोई ईगमना

वही उन्माद नहीं —वही तो शान्ति है वही तो मनुष्यके लिए चरम तरफकी बात है ! उसके लिए बितने तरहके अच्छे अच्छे विदोषण हैं, किन्ती बाइ बाहीअ आइम्बर है । ऊँचे स्वरसे बसकी अनासिका बाजा बजता है, पर इस बातको बइ जान भी नहीं पाता कि यह उसके जीवनका अय-वाप्य नहीं आनन्द-स्योदके विनर्जनका बाजा है । '

समीचे मन ही मन मग्ना कि इसका एक बड़ा अबाध देना जरूरी है । एक-कौंके मुँहसे जीवनके अन्मादकी इस निर्मोज्य स्तुतिसे समीके अमन अग्ने स्यो, पर अबाध देने कायक बात किसीको हुँदे नहीं मिली ।

उर आसु बाबूने मुहु कण्ठसे पूछा कमस बूझा मन तुम मिये कइती हो ? देखे, अपने सान अरा मिजाकर । यह सचमुच ही वही है वा नहीं ? "

कमसने कहा मनका बुझापा मैं उसीके कइती हूँ आसु बाबू, जो अपने सामनेकी ओर नहीं देख सकता बिसरकर हारा-बकर अरामस्त मन मनिषकी समस्त आसानीको अबाधित देखे सिर्फ अतीतके अन्दर ही जिन्दा रहना चाहता है । और मानो उसे कुछ करनेकी कुछ पानेकी चाह ही नहीं है,—वर्तमान सचकी हासने छुट है, अनासक है, और मनिष अर्पहीन । अतीत ही बसके लिए सब कुछ है । वही उसका आनन्द वही उसकी निरना और वही है सचका मूल बन । उसीके मुना मुनाकर गुबर करके जीवनके बाकी दिन बिता देना चाहता है । देखिए तो आसु बाबू, अपने सान अरा तुझका करके । "

आसु बाबू ऐसे बोले, ' यबासमन एक बार बकर देखेया ।

अभितकुमारने अब तककी इतनी बातचीतके बीचमें एक मी बात नहीं कही थी यह सिर्फ निष्कण्ठ दृष्टिसे कमसके मुँहकी तरफ देख रहा था; सहसा व आनन्द उसे क्या हो मना अपनेचे यह समस्त न सका बोळ उठा मेरा एक ब्रह्म है, देखिए मिसेब्र—"

कमसने सीधे उसकी तरफ देखकर कहा मिसेब्र किध किये ? मुझे आप कमस ही कहिए न । "

अभिन मारे सरमेके मुखे हो उठा— नहीं वही सो कैसे—ऐसा कैसे—"

कमसने कहा ऐसा-बसा कुछ मी नहीं । मा-बापके मेरा यह नाय रक वा पुकारके लिए ही तो । इससे मैं नाराज नहीं होती । " अकरमाद मनोरमाके मुँहकी ओर देखकर बोली, " आपका नाम मनोरमा है,—मनोरमा कहकर तुम्हनेसे आप नाराज होती हैं क्या ? "

मनोरमाने फिर दिखाकर कहा, 'हैं मैं माराब होती हूँ।' देखी बाराबकी उससे कितने भी बन्नीय नहीं थी थी, बापू बापू तो मारे पर्यवेकके म्नाम हो गये।

तिरिक्त संकल्पित नहीं हुई कम्पन स्वर्ण। बोली, "नाम तो और कुछ नहीं एक सम्पद है, जिससे समझा जाता है कि एक भावनी बहुतोमिसे कितनी एक भावनीको तुम्हें रहा है। पर हों वह सब है कि बहुतोमि बन्नाससे यह बडकी है। वे इस तरहको नामा कम्पने अर्कत करके तुलना चाहते हैं। देखते नहीं रामा शेष अपने नामके भागे न जाने कितने निरर्बक सम्पद जोड़कर कितने भी जोड़कर एक कहीं उसे दूसरेको उच्चारण करने देते हैं। नहीं तो बननी मर्षाया गण होती है।" इतना कहकर वह सहा ईस परी और सिवनाककी तरह दृष्टा करके बन्नी "देखो वे। कमी इनसे कम्पन करते नहीं बनता करते हैं किवानी। अर्थात् बापू, बाप बन्नीक ससे मियेक किवनाक न कहकर सिवानी कहिए। कम्पनी छोटा है, और सब समस भी छोटे। कम्पने कम मैं तो समझ ही जातीं।"

परन्तु न जाने क्या हुआ कि ऐसा सुस्पष्ट आदेश पाकर भी अर्थात्से कुछ बोझ नहीं गया प्रश्न उसके मुँहमें ही अटक रहा।
 एक संज्ञा अठम हो चुकी थी और अर्थात्-पूर्वके नामाच्छब्द आकाशमें स्वच्छ बौदनी सिद्ध रही थी। इस तरह देखकर सिवानी दृष्टि आकर्षित करते हुए मनोरमाने कहा 'बापूजी ओस पढ़नी शुरू हो गई है, वस उठिये अब।'

बापू बापू बोले "वह तो उठता हूँ सिद्धिवा।"
 अर्थात्से कहा सिवानी नाम बहुत अच्छा है। सिवनाक सुनी सुस्पष्ट है, दूसरे नाम भी मीमा रिया है, अपने नामके साथ मेल भी पूर सिद्धिवा है।"
 बापू बापू किंक उठे बोले 'जहाँ वे सिवनाक नहीं अर्थात्से कम्पने के।' और एक बार आकाशकी ओर देखकर बोले "आदि-अच्छक उस दृष्टि अर्थात्से इन दोनोंका सब तरहसे मेल करनेके सिद्धि आदि-अच्छक उस दृष्टि थी। जीत रही।"
 अर्थात्से अर्थात्से हीवा होकर बैठ गया और दो तीन बार फिर दिखाकर अर्थात्से छोटी छोटी बौदनीको उच्चारण प्रारंभ बोला "अच्छक आपसे एक प्रश्न कर लच्छा हूँ क्या।"

कमलाने कहा " क्या प्रश्न ! "

बलराने कहा " आपसे निर्य संशय नामकी तो कोई वस्तु है नहीं इसीसे पूछता हूँ,—शिवानी नाम तो अच्छा है, मगर शिवनाथ बाबूके साथ क्या आपका वास्तवमें क्या हुआ है ? "

बाबू बाबूका चेहरा स्वाह पड़ गया बोलि, " यह क्या कह रहे हो असुय बाबू ! "

अविनाशने कहा " तुम पापक हो गये हो ! "

हरेन्द्रने कहा ' झूठ " (बंगाली) ।

बलराने कहा " आप तो जानते हैं, मेरे बॉलॉन्स झूठा सिद्धांत नहीं । "

हरेन्द्रने कहा " झूठा सचबा किसी तरहका भी नहीं । पर हय बोगोबो तो है ! "

कमल कैपिन हंसने लगी । जैसे वह कोई बड़े विनोदकी बात छे । उसने कहा " इसमें बाराह होनेकी बीज-सी बात है हरेन्द्र बाबू ! " म बटाती हूँ अलग बाबू । बिलकुल कुछ हुआ ही न हो से बात नहीं । क्याह अरी कोई बात हुई अदरी बी । जो छेय देखने जाने ये ये लगे हंसने । बोले वह क्याही नहीं,—पोचा है । इनसे पूछनेपर इन्होंने कहा " सेव मतसे क्याह हुआ तो इसमें निम्ताकी बीज-सी बात है ! "

अविनाश झुनकर दुःखित हुए, उन्होंने कहा, लेकिन सच-विवाह तो अब हमारे समाजमें होता नहीं न इसकिय अमर से किसी दिन नहीं हुआ ' कदकर उसे ठगा बेना चाहें तो प्रमाणित करने आवश्यक तुम्हारे पास कुछ रह नहीं जाता कमल ! "

कमलने शिवनाथकी तरफ देख कर कहा ' क्यों जी करोगे क्या तुम एता किसी दिन ! "

शिवनाथने कुछ अवाक नहीं शिवा वह पहलेकी तरह उदास और पम्पीर चेहरा सिने बैठा रहा । उस कमलने हीकी कहाने माथेपर हाथ मारकर कहा हाय रे भाग्य ! ये जानैने नहीं हुआ कहकर अस्वीकार करने और मैं जानैनी इसीको हुआ है कदकर दूसरेके पास न्याय करने । उसके परके मथेमें बीसी बसने आवश्यक एक रसी भी न लुटेगी क्या ! "

अविनाशने कहा ' झूठ सचती है, मगर आत्म-हत्या तो पाप है ! "

कमलने कहा " पाप नहीं खाक है । मगर ऐसा होमा नहीं । मैं आत्म-हत्या करने जानैनी यह मेरे विवाहा भी नहीं छेय सकते । "

बाबू बाबू कह उठे " यह तो मनुष्यकी-सी बात है कमल ! "

कमलने उनकी तरफ बेकायद विचारक करनेके बगैरे कहा, "देखिए तो अनिनाथ बाबूका भ्रमबाय ।" फिर शिवनाथकी तरफ इशारा करके कहा "ये करेंगे मुझे अस्वीकार और फिर मैं जाऊँगी गरबन पकड़के इनसे स्वीकार करने । साथ तो हुए जायगा और शिव अनुष्ठानको मानती नहीं। लक्ष्मी ररसी केकर इन्हें बीजना चाहूँगी मैं ! मैं करूँगी ऐसा काम ।" करते करते उनकी दोनों आँखें बमक उठी ।

आशु बाबूने आश्चर्यसे कहा "शिवामी संसारमें सब ही बना है, इस बातको हम सभी मानते हैं, पर अनुष्ठान भी तो मिथ्या नहीं है ।"

कमलने कहा "मिथ्या तो यह नहीं रही है । जैसे कि प्राण भी सब है और वेद भी है,—कैकिन प्राण जब निकल जाते हैं तब !"

मनोरमामे पिताका हाथ खींचते हुए कहा "बाबूजी, बहुत ज्यादा ओछ पढ़ने लगेगी अब बिना उठे काम नहीं चलेगा ।"

"अभी ठठा भिरिया ।"

शिवनाथ छद्मता बड़ा होकर बोला "शिवामी अब और दर मत करो ।" कमल इसी वक्त उठ कर खड़ी हो गई और सबको नमस्कार करके बोली "आप ज्येवोंसे परिचय हुआ मार्गो सिर्फ बहस करनेके ही लिए । कुछ बचाक प करें ।"

शिवनाथको इतनी बेर बार अब बरा हँसी आई, कहा "बहस ही सिर्फ की शिवामी चीखा कुछ भी नहीं ।"

कमलने विस्मयके स्वरमें कहा "नहीं । मगर चीखनेको या ही क्या मुझे तो कुछ बचाक नहीं पड़ता ।"

शिवनाथने कहा, "बचान पढ़नेकी बात भी नहीं थी वह जोरजोर शोरमें ही रह गया । हो सके तो आशु बाबूके अस्वस्थ बूढ़े मनके प्रति बरा बरा रचना सीखना । बस बड़कर सीखनेको और कुछ नहीं है ।"

कमलने विस्मयके साथ कहा "वह तुम यह क्या रहे हो आज ।"

शिवनाथने बचाव नहीं लिया फिरसे सबको नमस्कार करते कहा "कल्ले ।" आशु बाबूने एक गहरी सौंस केकर कहा "आश्चर्य है ।"

७

आश्चर्य तो है ही । इसके सिवा मन्त्री बात स्पष्ट करनेके लिए और

सम्बन्धी ही शीत-सा था। वास्तवमें, वे दोनों चले क्या गये एक भलि आश्चर्य-जनक मात्राके बीचके ही अंशमें परबिका डाल गये,—परबेके ठस पार विस्मयकी न जाने कितनी बातें अज्ञात रह गईं। सभीके मनमें वही एक बात बबल-मुपल मजान लम्बी और सभीको ऐसा माहम हुआ मानों इसीलिए वे यहाँ आये थे। आकाशमें चन्द्रमा उदित हुआ है, हेमन्त ऋतुकी ओससे भीनी हुई चाँदनीके पासके ताजमहलके सकेद संमरमर मानापुटीकी मूर्ति बसावित हो उठ है; पर उपर किसीकी छवि भी नहीं है।

मनोरमाने कहा अब नहीं उठोगे तो सचमुच तुम्हारी तबीयत खराब हो जायगी बाबूजी।”

अविनाशने कहा ओस पड़ रही है, ठठिए।”

सबके सब उठके खड़े हो गये। चन्द्रके बाहर आसू बाबूजी बड़ी मोटर रुकी थी; पर अश्व हरेन्द्रके हाँगेबाकेका पता नहीं था। शायद इस बीचमें वह जवाहा किरायेकी सवारी पाकर चम्पत हो गया था। बिनाका किसी तरह सट-सटाकर सबको मोटरमें ही बैठना पड़ा। कुछ देर तक सब चुप रहे अन्तमें बात की सबसे पहले अविनाशने। वे बोले, ‘ शिबनाशने छूट गया था। कमक इतिवत् किसी राखीकी लकड़ी नहीं है। अशम्भ है। चन्द्रके वे मनोरमाके मुँहकी ओर देखने लगे।

मनोरमाके मनमें भी ठीक वही प्रश्न उठ रहा था पर वह मीन रही। अश्वने कहा छूट बोलनेका कारण ? बीच यह परिवर्तन तो गौरवका नहीं है अविनाश बाबू।”

अविनाशने कहा वही तो सोच रहा हूँ।”

अश्वने कहा “आप शेष अचम्भमें आ गये पर मैं नहीं आया। यह सब शिबनाशकी प्रतिफल है। इसीसे उसकी बलमें बचाओ’ (बहादुरीका चील) बहुत जवाहा का चीर कुछ नहीं थी। अश्वक और नकल जान केता हूँ। इतना आमान नहीं है मुझे थोका देना।”

हरेन्द्र बोले उठा बाप रे ! आपको थोका देना ? एकदम मोनोपैठी (एकाधिक्य) पर हलसेप ?”

अश्वने उत्तर एक तीव्र क्रुद्ध छवि हाककर कहा “मैं जानेके साथ कट सफटा हूँ कि उसमें कब करनेका ‘कडकर’ (संलूनि) पाई-भर नहीं है। और—तोके मुँहसे वे सब बातें ‘शौरक’ (अनेतिक) ही नहीं अर्थात् मी हूँ।”

अविनाशने प्रतिवाहक लीरपर कहा यह दूसरी बात है। उसकी उन बातें औरतोंके मुँहसे ठीक शोभन व कर्णों पर बन्द बरकील नहीं कह सकते अक्षय।”

अक्षयने कठोर होकर कहा वे दोनों ही एकछे हैं अविनाश बाबू। देखा नहीं क्याह इन लोगोंके लिये तमासेधी शीर बन गई है। अब छानने भाकर कहा कि वह क्याह नहीं है बोखेबाजी है तब उन्होंने छिर्के ईसके कहा ऐसी बात है क्या? सनका एम्सोल्सूट इम्बिपरेन्स (सम्पूर्ण बपेक्षा-भाव) भाप खेमेनि क्या मोटिस नहीं किया? वह क्या कमी कुलीन कम्पाके लिए सोमा के सकता है, वा कमी सम्भव हो सकता है।”

बाल उसकी सच भी इसीसे सच सुन रहे। आहू बाबू अब तक कुछ बोले नहीं थे। सच कुछ वे सुन रहे थे किन्तु वे अपनी ही बपेक्षा-मुनमें। सहासा इस स्तम्भतासे इनका ध्यान भंग हुआ। धीरे धीरे बोले विवाहके प्रति नहीं बन्धक सचके धर्म (तरीके) पर धायक कमकमी उतनी भास्वा नहीं है। अनुमान कुछ भी हो जो हो गया तो उसके लिए ठीक है। पतिसे कहा वे खेय कहते हैं, वह क्याह बोखेबाजी है।” पतिने कहा ‘विवाह हुआ है हम खेमोका कैव मतसे।’ कमक सुन होकर बोली “सिपके साथ क्याह अगर कैव मतसे हुआ हो तो वही अक्षय है। बात मुझे ऐसी मीठी कमी अविनाश बाबू, कि पूछिए नहीं।”

भीतर ही भीतर अविनाशका मन भी इसी स्वरमें बैठा था वे बोले, और उषी सिपनाबके मुँहकी तरफ देखकर देखते देखते पूछना क्योंकी करोने क्या तुम पेसा? दोगे क्या मुझे थोका?” उसके बाद तो फिलती ही बातें हो गई आहू बाबू केकिन उसकी गूँज अभी तक मेरे कानोंमें गूँज रही है।”

प्रासुत्तरने आहू बाबूने ईसकर छिर्के सिर दिखा दिया।

अविनाशने कहा और उसका वह सिपानी नाम? वह क्या कम मीठा है।’

अक्षयने मानी सहा नहीं गया वह बोला, भाप खेमेनि तो मुझे दंग कर दिया अविनाश बाबू! उनका जो कुछ है सच मसुर है। यही तक कि अविनाशके नामके साथ एक भी जोड़ देनेसे भी मसुर सरन पगा।”

हरेमने कहा “छिर्के भी” जोड़ देनेसे ही नहीं होता अक्षय बाबू, आपकी कौनसे अक्षयनी? वहकर पुकारनेसे ही क्या मसुर सरन पगेगा।”

उसकी बात सुनकर सभी हँस पड़े यहाँ तक कि मनोरमने भी रास्तेकी तरफ मुँह फेरकर हँसी छिगाई ।

अखण्ड मारे खोबके पायल-ठा हो उठा । परबखर बोला ' हरेन्द्र बाबू होन्ट भू गो टू खर ' (बहुत ज्यादा मत बड़ो ।) किसी एक्कीसीय महिककाक साब ऐठी जियोकी तुकना इसारेमें करनेको भी मैं अज्ञान्त अपमानबजनक समझता हूँ, सो आपसे स्पष्ट बड़े देता हूँ । "

हरेन्द्र चुप रहा । बहस करनेपर उसका स्वभाव न बा और न अपनी सुखियोंसे प्रभावित करनेकी ही उसकी आदत थी । बीपमें अचानक कुछ कहकर वह ऐसा नीरव हो जाता कि हजार खोबनेपर भी कोई इसके मुँहसे एक शब्द भी नहीं निकलता सकता । हुआ भी ऐसा ही । अखण्ड बने हुए रास्तेमें तिसानीको खोबकर हरेन्द्रके पीछे पड़ गया । वह कहता रहा कि उसने छिट महिककाक छिटताहीन गन्दा मजाक उठाया है । धिन्धापकी वैचमलसे निबाहिता लीकी बातमें और व्यवहारमें आभिभासकी वू तक नहीं बल्कि उसकी छिन्हा और संस्कारसे अकन्य हीनताका ही परिचय मिलता है — माँके बाँधोंको वह अत्यन्त अप्रिय लपिकेसे बार बार प्रभावित करने लया । इतनेमें गाड़ी आगु बाबूके दरवाजेपर आकर खड़ी हो गई; फिर अविनास तथा और सबोंको उतारकर हरेन्द्र अखण्ड आदिचो पहुँचाने लकी गई ।

आगु बाबू उद्विग्न होकर बोले, गाड़ीमें दोनोंके दोनों कहीं मार-पीट न कर बैठें ।

अविनासने कहा, इसका कोई डर नहीं । वह तो रोबमर्दाकी बात है, और इससे ठनकी निजतामें कोई डरक नहीं आता । "

मीठर जाकर चाब पीने बैठे तो आगु बाबूने बीरेसे कहा अखण्ड बाबूकी प्रकृति बरी कठोर है । इससे बड़कर कठोर बात उनकी अचानक और क्या आती ! " उसका लकड़ीकी खेर देखकर बोले ' अच्छा मणि कमलके सम्बन्धमें तुम्हारी कहलकी चारणा क्या आज भी नहीं बदली ! "

' ऐसी चारणा बापूजी ! "

यही जसे — जसे — "

" मगर मेरी चारणासे तुम ल्येयोंको क्या नाम बापूजी ! "

पिताने फिर कुछ नहीं कहा । वे जानते थे कि इन लीके सम्बन्धमें मनोरमाका निज अज्ञान्त विपुल है । वह बात उन्हें पीछा पहुँचाती है; पर

इस बातको लेकर वही तरहसे आलोचना करके बैठना उनके लिए किस तरह अप्रिय है, वैसे ही निष्कण्ठ भी है।

अकस्मात् अविनाश बोझ उठे " मगर एक विषयपर आप ध्येयोंनि शाब्द ध्यान नहीं दिया। यह है शिवनाथके अन्तिम शब्द। कमकम सब कुछ ही अन्तर दूरेकी प्रतिष्ठा निमात्र होता तो यह बात शिवनाथको कहनेकी जरूरत नहीं पड़ती कि वह आपपर भ्रष्टा रखना सीखे।" इतना कहकर उसने हृदय मी यन्मीर अज्ञानके साथ आहुत बाबूके मुँहकी तरफ देखाकर कहा " कहनेमें क्या दर्ज है वास्तवमें आप जैसे मणिक पात्र संसारमें हैं कितने ! सिर्फ इसीके लिए मैं उसके अनेक अज्ञान छुपा कर छुपा हूँ आहुत बाबू कि इतनेसे मामूली परिचयमें शिवनाथने इतने बड़े छत्रके छुपरामम कर लिया। "

सुनकर आहुत बाबू अचंचल हो उठे। उनका विपुल कौशल अज्ञानके मार्गों से अज्ञान हो गया। मनोरमाने अज्ञानके दोषों अंतर्गत मरकर अज्ञानके मुँहकी तरफ मुँह उठाकर देखा और कहा " अविनाश बाबू, नहींपर उनके साथ अज्ञानकी अज्ञान-सम्बन्ध मेह है। आज मैं जान गई कि उस दिन चोटी और साधुन मोगनेके बहाने वह मेरा सिर्फ अपहारा ही कर गई थी। उस दिनका उसका अविनाश मैं छुपाने नहीं सकी थी।—पर उसका वह सब अज्ञान-अज्ञान सब अज्ञान अज्ञान है बाबूकी अन्तर दुर्भेद वह आज सबसे बड़ा अज्ञान न पहचान सकी हो।

आहुत बाबू व्याकुल हो उठे " तुम्हें सब क्या कह रही है बेटी ? "

अविनाशने कहा " अज्ञानके सिद्ध तो इसमें कहीं भी नहीं आहुत बाबू। बाते बच शिवनाथने वही बात अपनी जीते कहनेकी कोशिश की थी। आज अज्ञानके बात नहीं थी, पर अज्ञान ही एक ही बातसे मुझे मान्य हो गया है कि उन दोषोंमें परस्पर नहीं सबसे बड़ा मठमेह है। "

आहुत बाबूने कहा " ऐसा अगर हो तो शिवनाथका ही दोष है, कमकम नहीं। "

मनोरमा सहसा बोझ उठी " वह तो तुम्हीं जानो बाबूकी, कि तुमने किन अज्ञानोंसे उसे देखा है, मगर तुम वैसे मनुष्यको जो भ्रष्टा नहीं कर सकती उसे क्या कमी क्षमा किया जा सकता है ? "

अहुत बाबूने अज्ञानके अज्ञानकी तरफ देखाकर कहा " क्यों बेटी ! मुझपर अज्ञान करनेका मात्र तो उसके एक ही अज्ञानके अज्ञान नहीं हुआ।

" पर भ्रष्टा तो नहीं दिखाई थी ? "

भाबू बाबूने कहा दिखाई देनेकी कोई बात भी नहीं हो सकि। बल्कि दिखाई देती तो उसका वह मिथ्याकार होता। मेरे अन्दर जिस चीजको तुम लोग खिन्नी कहते हैं वही बात उसने सुसंकेत की है कि कमबोर जावनीको रनेके सहारे प्यार किया जा सकता है,—परन्तु मेरा जो मूय्य उसकी दृष्टिमें नहीं है, अगर दृष्टी उसे देकर उसने मुझे भी जीये नहीं मिराबा और न अपना ही अपमान किया। वही तो ठीक है इसमें श्वथित होनेकी तो कोई बात ही नहीं सकि।”

अब एक श्वथित अन्वयनरूपका वा इत बातपर उसने इकर देखा। वह कुछ भी जानता नहीं वा भीर जान देनेकी पुरसत भी उसे नहीं मिसी थी। सारी बातें उसके लिए सुबली-थी थी,—अब भाबू बाबूने जो इत कहा उससे भी कुछ स्पष्ट नहीं हुआ फिर भी उसका मन मानो जाब ठर।

मनोरमा चुप रही, किन्तु अविनाथ बाबू उदयनाके साथ पृष्ठ उठे ' तो क्या फिर स्वार्थत्यागका कोई मूय्य ही नहीं।”

भाबू बाबू ईस दिने, बोले प्रश्न ठीक प्रोफेसरों जैसा नहीं हुआ। जो भी हो—उसके लिए उतका मूय्य नहीं है।”

तो फिर आत्म-सुखकी भी कोई कीमत नहीं।”

उसकी दृष्टिमें नहीं है। संभव नहीं बनहीन है वही सिर्फ सिन्धु आत्म पीवन है। और उसीको केकर अपनेको बड़ा मानना सिर्फ अन्तेको ठनना नहीं बल्कि दुनियाको ठगना है। कमलके मुँहसे जो कुछ सुना उससे सुसे क्या कि वह इसी बातको बार बार कहना चाहती है।” इतना कहकर वे क्षण-भर मौन रहे फिर बोले, “मासूम नहीं उसे कहीसे वह कारण मिसी पर छासा सुनन्से बड़ा आश्चर्य होता है।”

मनोरमा बोले उठी, केवल आश्चर्य होता है। सारे शरीरमें अन्न नहीं जाने समती? बाबूजी क्या कमी कोई भी बात तुम कोरके साथ नहीं कह सकते? जो जिसके मनमें आवेगा कहेवा और तुम उसपर हों कह लोगे।”

भाबू बाबूने कहा हों तो नहीं कहा बेदी। केवल मनमें राय देष भरकर दिवार करनेकी सिर्फ एक ही नहीं ठगना जाता बुरा पक्ष भी ठगना जाता है। जो बातें हम कमलके मुँहमें देस देना चाहते हैं, ठीक वै ही बातें उसने नहीं कही। उसने जो कुछ कहा उतका निश्चय थापर वही है कि इन

सम्बन्धित सत्य समझकर भिन्न तत्त्वको हमने अपने अन्तर्गत मान लिया है वह प्रथम सिर्फ एक ही परत है। मगर उसका दूसरा परत भी है। आख मीठकर सिर्फ सिर दिना केसे ही किये कल सफटा है मणि।”

मनोरमाने कहा “बापूजी इतना काल बीत गया भारतवर्षमें क्या उस परतको देखनेवाला हमरा कोई हुआ ही नहीं।”

उसके पिता बरा हैंसकर बोले, ‘वह अत्यन्त कोबकी बात है बेटी। नहीं तो तुम बुर भी अच्छी तरह जानती हो कि सिर्फ एक हमारे केसके ही नहीं बुनियाके किसी भी केसके पुरखा श्लेष प्रश्न’ का जवाब नहीं दे गये हैं। दे गये हो ऐसा हो भी नहीं सकता क्योंकि तब तो फिर सचि ही बक जाती। इसके बलनेका कोई अर्थ ही नहीं रह जाता।”

छरसा उन्होंने देखा अश्रित एकदक देख रहा है। बोले तुम छपर कुछ भी समझ नहीं रहे हो — क्यों ?”

अश्रितके पररन दिखनेपर आशुबाबूने परमाश्र पुरापर समझाकर कहा, अश्रितने न जाने कैसी एक होमकुबकी-सी पवित्र भाव कला ही कि अश्रित उसकी तरह देखना तो बुर रहा मुझे मारे भीख तक नहीं प्योत सके। और मया यह कि हम लोपोक्ष मामला है शिष्याके विरुद्ध और दण्ड दिना गया है कमकसे। वे वे यहाँके एक प्रोफेसर बरतन पीनेके अरराकमें उनकी नीकरी गई, अश्रित कीके श्रावकर बर के भावे कमकसे। बोले विवाह हुआ है केव मठसे।’ अश्रित बाबूने मीतर ही मीतर पता लगाकर जाना कि सब थोका है। पूछा गया अश्रित क्या कुलीन परानेकी है? शिष्याने कहा “वह उनके बरकी दासीकी कन्या है।” पूछा गया अश्रित क्या शिक्षित है? शिष्याने कहा “शिष्याके लिए विवाह नहीं किया किया है इसके लिए।” बात सुनी। कमकका अरराक सुस कही हैंके नहीं मिका अश्रित और फिर अश्रितको हम अगेने कल सेकगोसे बुर कर दिना। हम लोपोक्षी बुरा जाकर कही सबसे बड़कर अश्रितपर। और यही हुआ समाकथ म्याव।”

मनोरमाने कहा ‘असे क्या समाकथके अन्तर कुल केना पाइते हो बापूजी? आशु बाबूने कहा “मेरे ही चाहनेसे जा जावगी क्या बेटी? समाकथमें अश्रित बाबू भी तो मीठर हैं,—उन्हीका पद तो प्रक है।’

अश्रितने पूछा “तुम अकेके होते तो कुछ केते छपर ?”

फिराने इसका सख्त जवाब नहीं दिया बोले ' बुझनेसे ही क्या सब भाग जाना करते हैं बेटी ? "

अभिजातने कहा 'आजकल तो यह है कि आपके साथ ही उगका सबसे ज्यादा विरोध है, और मजा यह कि आपका स्नेह उन्हें सबसे ज्यादा मित्र है । "

अभिजातने कहा 'इसका कारण है अहित बाबू । हमलके बारेमें हम लोग कुछ जानत नहीं जानते हैं तो सिर्फ उसके मित्रोही मतको । और जानते हैं उसके अलग-थलग बुराईके पदको । इसीसे उसकी बातें सुननेसे हमें बर भी लगता है और गुस्ता भी आता है कि अज यमा शायद सब-कुछ । "

फिर आशु बाबूको उद्देश करके कहने लगे " हमका शरीर निष्कल्प है मन निष्कल्प है, सग्रेकोही क्षया तक इसपर नहीं पड़ती न मजका शान ही समत है । महादेवसे लिए चाहे लिए हो चाहे अल्प एक ही बात है —गर्भमें ही क्षिया रहेगा पेटमें नहीं आक्या । चाहे बेपताकोका बल का धार और चाहे बल-शामक आकर फेर ले ये निश्चिन्ता निश्चिन्त-रहित रहिये —सिर्फ गठिवाके पंजेसे बच गये तो ये कुछ है । मगर हम लोगोको तो— "

बात पूरी न हो पाई कि अजानक आशु बाबूने दोनों हाथ उठाकर उन्हें रोका दिया बोले, 'आगे अज और कुछ न कहियेगा आपके पैरो पक्या हैं । समाप्त एक युवाका जुग विद्यापतमें बिता जाया हैं, वहाँ क्या किना है क्या नहीं सो खुद मुझे भी याद नहीं —र यह बात अजदके कानों तक पहुँच गई ता और नहीं । एकदम नाथी-नसत्र तक हैंदकर निष्काक कायेया । तब क्या होया ? "

अभिजातने आश्चर्यके साथ कहा 'आप क्या विद्यपत मी गये थे ? "

आशु बाबूने कहा 'हो यह कुर्भ मी मुझसे हो चुका है । "

मनोरमाने कहा " बचपनसे ही बापूजीका सारा पसुकेअन बोरोपमें हुआ है । बापूजी बैरिक्टर हैं, बापूजी डॉक्टर हैं । "

अभिजातने कहा " क्यूती क्या हो ? "

आशु बाबू बड़ी तरह कह उठे " डरनेकी कोई बात नहीं डरनेकी कोई बात नहीं डरनेपर विद्या-प्या सब मूल क्या हैं । दीर्घकालसे यायावर-वृत्ति-अदकम्पना

* यह अमलवृत्ति जिसमें बर-बार साथ रहता है; Nomad = बचपना या तदुत्पन्न अमलवृत्ति ।

करके कन्धीके साथ वहीं तहाँ खोटा-बोर किन्ने चूना चिना है, और जैसा कि आपसे कहा सारा चित्त-पट विमकुल बुल-गुलकर निम्नाप निम्नरूप हो गया है जम्मा-जम्मा कहीं बुल भी बाकी नहीं है। और का भी हो, इस बातसे बहुत-बाबूके कर्णोत्तर न कीजिएगा।”

अभिजातने हँसते हुए कहा “कसबसे आपसे क्या कर है ?”

बाबू बाबूने उठी बल खींचकर चिना हों। एक तो बठियाके मारे को ही जीना कठिन है, उसपर ललक कहीं इतनाक जामत हो गया तो विमकुल ही मारा जाईगा।”

मनोरमा तुसेमें मी हँस ही बोली “बाबूजी वह तुम्हारा जम्माप है।

बाबूजीने कहा, “जम्माव मके ही हो बेटी पर आत्म रक्षाप समीचे अधिकार है।”

तुलकर लकके लव हँस पड़े। मनोरमाने पूछा “कच्छ बाबूजी मनुष्य समाजमें क्या बलव बाबू जैसे आदमीकी तुम बहरत ही नहीं समझते ?

बाबू बाबूने कहा “तुम्हारा वह बहरत’ जम् तो बेटी संसारमें सबसे जवाहा तुम्हारीकी बीज है। कहे इसकी मीमांसा हो जाव लव तुम्हारे प्रभुप जवाधे बहर दिना जाम। मगर वह तो कमी होनेका नहीं। इयेगाठे बसफो केकर तर्क बकला आ रहा है मीमांसा जव तक दुरे ही नहीं।”

मनोरमा सुन्न होकर बोली, “तुम सब बातोंके मवाबमें देने ही बककर निकल जाते हो बाबूजी कनी साफ साफ इच्छा करते ही नहीं। वह तुम्हारा क्या जम्माप है।”

बाबू बाबू हँसते हँसते बोले “साफ साफ कहे जावक विद्या-बुद्धि तेरे बाबूमें नहीं है, मनि,—वह तेरी लकरीर है। जव जामका मेरे जगर तुम्हा-करनेसे क्या जाम है, बता ?”

अमित अचानक बठ जवा हुआ बोला, “विरमें बर्ब हो रहा है, परा बहर पूज जाई।”

बाबू बाबू बकल होकर बोले बडे “विरका इधमें कोरे अफराज नहीं जैदा —मगर इतनी खोसमें ? देसे खेपेमें ?”

इतिहासी एक तुनी चिन्तिते बहुत-ही निगप जेतका भीबेके काँरेपर विचार रही थी अजितने बसकी और बलक जाम आकपित करते हुए कहा “ओस जामव खोती बहुत पक्की होगी, पर खेपेज नहीं है। जाई, जरा पूज जाई।

पर पैस मत्त चूमना ।”

‘ नहीं । गाड़ीमें ही बाँटेंगे । ’

‘ गाड़ीका इकना क्या देना अजित, कड़ी जोस न कम जान । ’

अजित उधर राशी हो गया । आशु बाबूने कहा तो फिर अविनाश बाबूकी भी उधरके उधर पहुँचाते आना । कैम्पन औरनमें देर न हो । ”

“ अजित ” अजित अविनाश बाबूको साथ केकर बाहर नग्न गया । उसके बड़े जानेपर आशु बाबूने मुनकराठ हुए कहा “ देखता हूँ इस अजितकी मोटरमें चूमनेकी समक जमी पड़े नहीं है । ऐसी उधरमें कम दिना चूमनेको । ”

८

पत्रहेक दिन बादकी बात है । शाम होनेमें देर नहीं है, आशु बाबू और मनोरमाको अविनाश बाबूके घर उतारकर अजित अकेला चूमने निकला है । ऐसा वह अकसर किया करता है । जो छहक छहरके उधरसे आकर बँडेरके सामनेसे कुछ दूर जाके सीधी पश्चिमकी ओर बसी गई है, उसीपर एक गिराफ़ी आहमें खड़ा उधर नाटि-अउसे अपना नाम मुनकर अजित चौक पहा । गाड़ी रोक दी । देखा शिवनाथकी डी है । सड़कके किनारे दूध-फूटा पुराने जमानका एक दुर्मिखा मद्यम है, सामने उसका देसा ही भीहीन फूलेका बाग़ीचा है और उसीके एक किनारे कड़ी कमक हाथ डठकर उसे पुछार रही है । मोटर उधरनपर वह उसके पास आ गई, बोली एक दिन और मी आप देस ही अनेके बा रहे ये, मैंने फिना पुछारा पर आप मुन ही नहीं पाये । पायेंगे कैसे ? बाप रे बाप ! इतने जोरसे जाते हैं — देखनेसे मद्यम होता है कैसे हम एक आपका । आपकी डर नहीं कमता ? ”

अजित पाईसे बीचे उधर आना बोला, आप अकड़ी कैसे ? शिवनाथ बाबू कहीं हैं ? ”

कमरने कहा, “ वे धरपर नहीं हैं । पर आप मी अनेके कम निकले ? उधर दिन मी देखा ना साबने कोई नहीं बा । ”

अजितने कहा “ नहीं । इधर कई दिनोंसे आशु बाबूकी लकीपत ठीक नहीं थी इसीसे वे कोई निकले नहीं । आज उन जोयोको अविनाश बाबूक वहाँ उतारकर मैं चूमने निकला हूँ । शामको तो मुझे धरमें रहना अकसर नहीं कमता । ”

करके कपड़ोंके साथ वहाँ वहाँ छोटा-बोर तिये धूमा किना है, और कैसा कि आपने कहा सारा बिच-पट निकलुक्त कुक-कुकर निम्नाप विप्लव हो गया है मन्ना-मन्ना कहीं कुछ भी बाकी नहीं है। और वो भी हो, इस बातको ज्ञान बापूके कर्मयोग न कीजिएगा।”

अभिनाम्ने ईसते हुए कहा अज्ञानसे आपको क्या जर है।”

बाबू बापूने सही नक स्वीकार किया “हाँ। एक तो पठिवाके मारे वो ही जीना कठिन है, उसपर समझ कहीं कुछकुछ आमत हो गया तो विक्रम ही मारा जाईगा।”

मनोरमा गुस्सेमें भी ईस ही बोली बापूजी वह तुम्हारा अन्धकार है।” बापूजीने कहा, “अन्धकार अके ही हो बिटी पर आत्म-रक्षात्म समीको अविचार है।”

सुनकर उनके लज ईत रहे। मनोरमाये पूछा अन्धकार बापूजी मनुष्य-समाजमें क्या अज्ञान बापू जैसे आदमीको तुम कहतर भी नहीं समझते।

बाबू बापूने कहा तुम्हारा वह कहतर 'अन्ध' तो बिटी संसारमें सबसे ज्यादा गुलाबकी नीब है। फले इसकी मीमांसा हो जाय तब तुम्हारे प्रथम-अर्थार्थ कहतर दिया जाय। मगर वह तो कमी होमिथा नहीं। हमसारे कहणो केकर तक कहता था रहा है, मीमांसा अब तक हुई ही नहीं।”

मनोरमा झुम्न होकर बोली, “तुम सब बातोंके जवाबमें ऐसे ही बचकर-निकल जाते हो बापूजी कमी साफ साफ कहते ही नहीं। वह तुम्हारा क्या अन्धकार है।”

बाबू बापू ईसत ईसत बाके साफ साफ कहने लायक किया-मुझि तेरे बापूमें नहीं है, मन्नि,—वह तेरी तकरीर है। अब आसका मेरे कसर गुरना-करनेसे क्या लाभ है, क्या।”

अभिनाम्ने अचानक बड़ बड़ा हुआ बोका 'सिरमें रई हो रहा है, परा-बाहर घूम जाई।”

बाबू बापू बचल होकर बोल बडे “सिरका इसमें कोरे अन्धकार नहीं बिटा—मगर इतनी ओसमें। ऐसे बीबेरेमें।”

इतिहासी एक सुनने किफकीते बहुत-सी सिग्म जेल्का पीकेके कर्सेपर विवर रही थी अन्धकारमें इसकी ओर उभय प्नाम आकृति करत हुए कहा “ओत धाबद बोली बहुत पढ़ती होमी, पर बीबेरा नहीं है। जाई, जरा घूम जाई।

“ पर देखत मत घूमना । ”

नहीं । गाड़ीमें ही बैठेगा । ”

‘ गाड़ीका उठना क्या देना अधिक, वहीं जोस न कम जाय । ’

अधिक ठपर राजी हो गया । आष्टु बाबूने कहा तो फिर अमिनाश बाबूको भी ठहरके उधर पहुँचाते जाना । ऐम्बिन लौटनेमें डेर न हो ।

“ अच्छा अरुअर अमित अमिनाश बाबूको साथ लेकर बाहर चला गया । उसके बड़े जानेपर आष्टु बाबूने मुसकराते हुए कहा “ देखता हूँ, इस सम्बन्धी मोटरमें घूमनेकी समझ अभी गई नहीं है । ऐसी ठाड़में चल दिया घूमनेको । ”

८

पन्द्रहक दिन बाबूकी बात है । धाम होनेमें डेर नहीं है, आष्टु बाबू और मनोरमाको अमिनाश बाबूके घर उतारकर अमित लकेअ घूमने निकला है । ऐसा वह अकसर किया करता है । जो सड़क शहरके उत्तरसे आकर बेंकेबके सामनेसे कुछ दूर जाके सीधी पश्चिमकी ओर चली गई है, उसीपर एक गिराकी क्याहमें छाया उरच नापि कच्छे अपना नाम मुनकर अमित चौक पड़ा । गाम्भी रोक सी । बच्चा विदनापकी ली है । सड़कके किनारे टूट-फूटा पुराने धमाकेका एक कुम्भिका मकान है, सामने उसके बेटा ही भीड़िन फूलोंका बगीचा है और उसीके एक किनारे लकी कमल हाथ उठाकर उसे पुकार रही है । मोटर ठहरनेपर वह उसके पास आ गई, बोली एक दिन और मी आप देस ही अकेके जा रहे थे, मैंने निवृत्ता पुकारा पर आप मुन ही नहीं पाये । पायेंगे कैसे ? आप रे बाप ! इतने जोरसे जाते हैं,—देखनेसे माखल होता है उसे हम एक जायगा । आपको डर नहीं लगता ? ”

अमित गाड़ीसे नीचे उतर आता बोला, आप अकेकी कैसे ? विदनाश बाबू क्यों हैं ? ”

कमलने कहा, वे घरपर नहीं हैं । पर आप मी अकेके कैसे निकले ? उस दिन भी देखा था, घाबमें छोड़े नहीं था । ”

अमितने कहा “ नहीं । इपर कई दिनोंसे आष्टु बाबूकी लबीकत ठीक नहीं थी इसीसे वे छोड़े निकले नहीं । आज उन लोपोको अमिनाश बाबूके वहाँ उतारकर मैं घूमने निकल हूँ । घामको तो मुझे घरमें रहना अच्छा नहीं लगता । ”

“अपके कर्मोंके साथ नहीं ठहो खोटा-बोर किने पूजा किया है और जैसा कि आपने कहा सारा बिल-पट बिलकुल पुल-पुलकर निष्ठाप विव्यहृत हो गया है यन्मा-अन्मा नहीं कुछ भी बाकी नहीं है। बर जो भी हो, इस बातको लक्ष्य-बाबूके कर्मोवर न कीजिएगा।”

अभिनासने हँसते हुए कहा “अधुयसे आपको क्या बर है।”

बाबू बाबूने उड़ी बच स्वीकार किया हों। एक तो पठिपाके मारे नो ही जीना कठिन है, उतबर उतक्य नहीं कुतुहल जाग्रत हो गया तो बिलकुल ही मारा जाऊँगा।”

मनोरमा गुस्सेमें जी हँस ही बोली “बाबूजी वह तुम्हारा अन्माव है।”

बाबूजीने कहा, अन्माव मके ही हो बेटी पर आत्म-रक्षाक्य समीको अविचार है।’

पुनकर उनके लव हँस पड़े। मनोरमाने पुन अन्माव बाबूजी प्रमुन समाजमें क्या अक्षय बाबू कैसे आदमीकी तुम बहरत ही नहीं समझते।”

बाबू बाबूने कहा “तुम्हारा वह बहरत’ सन्ध तो बेटी संतामें सबसे यन्मावा गुटाकेकी थीव है। प्यके इतकी मीमांसा हो क्यव लव तुम्हारे प्रभक्ष-अर्थात् बसर दिना जाव। मपर वह तो कमी होमेका नहीं। इमेतासे यन्को केकर तर्क बसता था छा है, मीमांसा अर तक हुई ही नहीं।

मनोरमा मुन्य होकर बोली, ‘तुम सब बातोंके अभावमें ठेके ही बचकर-बिचल जाते हो बाबूजी कमी साक साक कुछ करते ही नहीं। वह तुम्हारा क्या अन्माव है।”

बाबू बाबू हँसत हँसते बोले “साक साक करने मारक विद्या-बुद्धि तेरे बाबूमें नहीं है मकि,—वह तेरी तफदीर है। अब कामका मेरे ऊपर गुस्ना-कारमेसे क्या काम है, बता।”

अकित अचानक उठ कहा हुआ बोल्य, ‘सिरमें दर्द हो रहा है, जरा-बहर पूम जाऊँ।”

बाबू बाबू बचत होकर बोक बडे धिरक्य इधमें कोई अचरण नहीं-वेता —मपर इतकी ओसमें ? ऐसे भीरेमें ?”

इतिहासी एक घुनी बिबकीसे बहुत-ही म्निग्य जेल्ता भीकेके कर्पेटपर बिलर रही ही अकितने उतकी ओर उतक्य ज्ञान आकदिग करते हुए कहा “ओन-सावद थोकी बहुत पक्की होगी, पर भीरेन नहीं है। जाऊँ, बरा पूम जाऊँ।

पर पैदल मत चूमना ।”

नहीं । याहीमें ही बार्डेगा ।”

‘गाड़ीका इकना क्या देना अखित, कहीं जोस न कम बाव ।”

अखित उधर राखी हो गया । आशु बाबूने कहा तो फिर अविनास बाबूको भी उधरके उधर फूँचाते जाना । अखित जीउनेमें डेर न हो ।

“अच्छा कहकर अखित अविनास बाबूको साथ कैर बाहर बस्य गया । उठके बडे बानेपर आशु बाबूने मुमकराते हुए कहा “देखता हूँ इस कबनेकी मोटरमें चूमनेकी समक अभी गई नहीं है । ऐसी ठगमें बस बिना चूमनेको ।”

८

पत्रहोक दिन बाबूकी बात है । शाम होनेमें डेर नहीं है, आशु बाबू और मनोरमाको अविनास बाबूके घर बतारकर अखित अकेला चूमने निकला है । एसा वह अकसर किया करता है । जो एकक उधरके उधरसे आकर अकेलेके सामनेसे कुछ दूध जाक सीधी पश्चिमकी ओर बसी गई है, उसीपर एक निराली बगहनें सहासा ठकन नाटी छठसे अपना नाम सुनकर अखित चौंक पड़ा । गाड़ी रोक थी । देखा छिपनाबकी ली है । सड़कके किनारे टूट-फूटा पुराने बमानेका एक कुम्बिका मछान है, सामने उसक बैसा ही भीड़िन फूसके बगीचा है और उसीके एक किनारे खड़ी कमक हाव उठकर उसे पुकार रही है । मोटर ठहरनपर वह उसके पास आ गई, बोली एक दिन और भी आप ऐसे ही अकडे बा रहे थे, मैंने किना पुकारा पर आप मुन ही नहीं पाये । पायेगी कैसे ? आप रे बाप ! इतने ओरसे आते हैं,—देखनेसे माख्य होता है उसे हम एक बावगा । आपको डर नहीं लगता ।”

अखित गाड़ीसे नीच उतर आवा बोका, आप अकेली कैसे ? छिपनाब बाबू कही है ।”

कमकने कहा, “वे डरपर नहीं हैं । पर आप भी अकेले कडे निकले ? उस दिन भी देखा बा, साबमें कोई नहीं बा ।”

अखितने कहा “नहीं । डर कई दिनेसे आशु बाबूकी तबीयत ठीक नहीं थी इसीसे वे कोई निकले नहीं । आज उन अकडेके अविनास बाबूक यही बतारकर मैं चूमने निकला हूँ । शामको तो मुसे चरमें रहना लख्य नहीं लगता ।”

कमलने कहा " मेरा भी बही हाक है । मगर अच्छा नहीं लगता करनेसे ही तो नहीं बनता — परियोंको तो बहुत-कुछ अच्छा लगाना पड़ता है । " कहकर वह अशितको मुँहकी तरफ देखने लगी फिर ध्रुवसा बोस उठी वे बलि-पुत्रा मुझे साबनें ? जरा घूम आऊँगी । "

अशित मुसीबतमें पक गया । साबनें आम खोकर तक नहीं था और वह वह पड़े ही छुन कुछ था कि शिवनाथ बामू भी बरपर नहीं हैं, मगर ना' भी पड़ते नहीं बनता । जरा कुछ बुझाके साब बोसा, " बहो आपका साबी-छाही भी छावक कोई नहीं है । "

कमलने कहा छुनो इनकी बात । साबी-छाही कहीं पाऊँ ? देख बहो रहे हैं मुँहकी बसा । वह स्वाम शहरके दिग्बुद्ध बाहर ही बर्माछाप । पास ही गृह संभ्रमों या कुछ ऐसा ही नाम है, कहीं बमकेछा कारखाना है, — हमारे पड़ोसी सब मोची ही मोची हैं । कारखाने बात हैं, आते हैं, उरज पीते हैं और सारी रात हवा मचाते हैं, — बही मेरा सुदकर है । "

अशितने पूछा हजर सरीक लोग हैं ही नहीं क्या ? "

कमलने कहा ' छावक बहो हैं । और हो भी तो क्या — मुझे वे अपने पर कबों जाने-मामे होंगे ? तब तो कमी कमी जब बहुत छना छना-सा मसखम होता था आप कोयोंके बहो भी कभी जा सजती थी । ' — अरत पड़ते वह पादोंके लुके दरबाजेसे छर ही मीतर आकर बैठ गई और बोली, आइए मैं बहुत दिनेसि मोरपर नहीं सकी । लेकिन आम मुझे बहुत बुर तक बुना माना होगा । "

अशितको कुछ धृष्टा नहीं कि क्या करना चाहिए । बोलेके साब बोस " जबादा बुर मानसे रात बहुत हो जायगी । शिवनाथ बामू पर औरकर आपको न देखेंगे तो साबक कुछ खयाल करेंगे । "

कमलने कहा " नहीं जबाब करनीकी कोई बात ही नहीं । "

अशितने कहा " ब्राइबरके पास न बैठकर पीछे बैठिए न ? "

कमलने कहा, " ब्राइबर तो आप खुद ही हैं । पास बिना बैठे बात कैसे करनी ? इतनी बुर पीछे बैठकर मुँह बन्द करके कहीं जाया जाय है । आप बैठिए, जब बेर न बीगिए । "

अशित बैठ गया और कापी बजाने लगा । रास्ता हमर और विराम है, कदापि एक-आप आरमी दिखाई दे जाता है — बस । गाड़ीकी तेज चल

कमला और तेज होने लगी। कमलने कहा थाप तेज बलाना पसन्द करते हैं, न ?

अशितने कहा हों।”

उर नहीं लगता ?”

नहीं। मुझे आदत पड गई है।”

आदत ही सब कुछ है।” कहकर कमल कुन-भर मीन रही फिर बोली, मगर मुझे तो आदत नहीं फिर भी यह मुझे अच्छम लग रहा है। सायद स्वभाव है, इसीलिए न ?”

अशितने कहा हो सकता है।”

कमलने कहा बहर। हाथी कि निपति आ सकती है—जो कहते हैं उनपर भी और जो सब आते हैं उनपर भी—ठीक है न ?

अशितने कहा—नहीं हबेगे कनो ?

कमलने कहा सब भी जावें तो क्या मुकसान है अशित बाबू ? तेजीकड भी एक भारी आनन्द है—कसा गाडीको और कसा इस जीवनको। मगर जो डरपोक हैं वे नहीं सक सकते। न सावधानीसे धीरे धीरे कसते हैं। सोचते हैं, पैदल चलनेकड कड जो बच गया वही उनके कियु काफ़ी है। मार्गको पोखा देकर वे चला हैं, अपनेको पोखा देनेकड उन्हें मान ही नहीं होता। ठीक है न अशित बाबू ?”

बात अशितको कुछ समझमें नहीं आई, उसने कहा इसके मानी।”

कमल उसके सुहृदी तरफ देखकर जरा हँस दी। कुन-भर बाद सिर हिमाकर बोली मानी नहीं जो ही।”

इतना-भर समझमें आया कि बात वह कम्मसा नहीं समझाना चाहती और मुठ नहीं।

बैचेरा और भी याका होता आ रहा है; अशितने खैटना चाहा; कमलने कहा, “अनीसे ! कतिह और बोका जावें।”

अशितने कहा “बहुत दूर आ गये हैं बापस पहुँचनेमें काफ़ी एत हो सकती।”

कमलने कहा हो जाव तो क्या हर्म है ?”

“कैकिन सिलनाब बाबू नाल्लरा होंगे।”

कमलने कहा ‘हो जाने दीजिए।”

अभिमत मन ही मन विरिमत हुआ बोका मगर आशु बाबू बयैरहये घर के जाना है। डेर हो जानेसे अच्छा नहीं होगा।”

कमलने जवाब दिया “आमरा घरमें तो गाढ़िबोंधी कनी है नहीं वे आसानीसे जा सकते हैं। बकिपू और भी जरा।” इस तरह कमल मानों उसे चबरदस्त की कमला आनेकी ओर बकेल बकेलकर के जाने लगी।

कमला: सुनसान रास्ता अत्यन्त बनहूस्व और रातका डैबेरा गाढ़िसे गाढ़नर होने क्या और चारों तरफअ विगन्त-विस्तृत मैदान अत्यन्त स्तब्ध हो गया। अइसा अभिमतने एक क्षणमें उद्विग्न विचसे गाढ़ीकी रफ्तार रोक दी; और कहा अब और नहीं और बकिपू।”

कमलने कहा बकिपू।”

बापस झूटवे हुए उसने पीरे पीरे कहा “सोच रही थी मनुष्य झूठके साथ समझौता करके जीवनकी किनारी सम्पदा गह कर बाकता है। मुझे अकेली के जानमें आपसे कितना असौख संसोच हो रहा था। मैं भी अगर उसी तरहसे पीछे हट जाती तो मेरे मातृमैं ऐसा आनन्द बोध ही बरा था।”

अभिमतने कहा पर अन्त तक बिना देखे निजमरबैक तो कुछ कहा नहीं जा सकता। पर आकर आनन्दके बरके गिरानन्द भी तो मातृमें बहा हो सकता है।”

कमलने कहा ‘इस अन्वकारमव विचन पथमें अकेली आपके पास बँटकर सर्वपाससे न जाने कितनी दूरतक पूम आई। आज मुझे कितना अच्छा लगा है कुछ कह नहीं सकती।’

अभिमतने समझा कमलने उसकी बातपर प्यान नहीं दिया मानों वह अपनी बात अपनेसे ही सुनायी जा रही है। सुनकर वास्तवमें सरमानेकी बात उसमें शाबद कुछ भी न हो किन्तु फिर भी पढ़के वह मानों सङ्कुचित-सा हो गया। इन लीके सम्बन्धमें विरह करना और असुख अनधुनिक सिता शायद कोरे भी कुछ नहीं जानता — कितना जानत है वह भी संभव है बहुत कुछ हट छे — और अस्य जो कुछ है उसमें भी शायद अस्वकी जग्या ऐसी बचकार पक गई हो कि पढ़कानेका कोरे रास्ता ही न रहा हो। और जो भी बहे तो जोबकर बया सकते हैं वे बताते नहीं उनके कि प सबस सब मिलकुम सामिन मजाक है।

अभिमत चुन रहा, इसीसे कमलको मानों येनग-सा हो आया। बोली

हो, क्या कह रहे थे वह जानन्द के बच्चे निरात्मन्द् मायमें बह
 हो सकता है ! हो क्यों नहीं सकता !”

अश्विने क्या तब फिर !”

कमलने क्या ‘ तब भी उससे यह साबित नहीं होता कि जो आत्मन्द् आत्म
 मिथ्य है वह नहीं मिथ्य ।”

अश्वी बार अश्वित हैस दिया । बोम्मा साबित नहीं होता मगर यह साबित
 कर होता है कि आप कम तार्किक नहीं हैं । आपके साथ बातेंमें जीवन
 सुविफल है ।”

अश्वित अश्वी कि कूट-तार्किक करते हैं, मैं नहीं हूँ !”

अश्विने क्या नहीं सो बात नहीं; किन्तु यह तो आप कर ही मानती
 होगी कि अश्वित यह अश्विने बुद्धिमें ही उमात्त होता है उसके आत्मन्द्में
 चाहे कितना ही आत्मन्द् क्यों न हो, उसे उच्चतुल्य आत्मन्द्-भोग नहीं कहा
 जा सकता ।”

कमलने क्या नहीं मैं नहीं मानती । मैं मानना चाहती हूँ कि जब
 अश्विता पाके सहीके सत्ता समझकर मान सके । बुद्धि यह मेरे बीते हुए
 सुखके जोसके बूँदोंके मुखा न बने । वह चाहे कितना भी क्यों न हो और
 परिणाम उसका उच्चतुल्य अश्विने चाहे कितना ही सुख क्यों न गया जानू
 फिर भी मैं उसे अश्वीकार न करूँ । एक दिनका आत्मन्द् दूसरे दिनके निरात्मन्द्के
 सामने धारमाये नहीं ।” इतना कहकर वह अश्व-भर स्वप्न रही फिर अश्विने
 लगी इस जीवनमें बुद्धिबुद्धि रोमोंमें कोई भी सम नहीं अश्वित जानू, अश्व
 हैं सिद्ध उनके बचल अश्व, अश्व है सिद्ध उनके पके अश्वके अश्व-मात्र । बुद्धि
 और अश्वसे उनको पाना ही तो अपारम्भ पाना है । क्या नहीं अश्व नहीं है !”

इस प्रश्नपर उत्तर अश्वित न दे सका; किन्तु उसे लगा कि अश्वकारमें भी
 दूसरेकी रोमों अश्वें अश्वके साथ उसकी तरह देख रही हैं । मानो वह
 अश्वित कोई बात सुनना चाहती है ।

“क्यों अश्व नहीं दिया !”

आश्वी बाँधें यह साक्ष समझमें नहीं आर्य ।”

नहीं आर्य !”

नहीं ।”

उसने एक हथी चौंस ली, और फिर धीरे धीरे कहा "इसके मानी यह कि क्या एक समझनेका अभी आपका समय नहीं आया। अगर अभी आये तो उस समय मेरी बाव कर लीजिएगा। करेंगे ?

अबिठने कहा 'कहना।'

गाड़ी जाकर टूटे-टूटे फूम-बागके सामने खड़ी हो गई। अबिठ दरवाजा खोलकर बाहर निकलकर कहा हो गया। परन्तु तरह देखकर बोला 'अभी भी बरा ठण्डा नहीं मान्य होता। मान्य होता है, सब सो गये।'

कमलने उत्तरत हुए कहा 'साबर।'

अबिठने कहा 'देखिए, आपकी पवास्ती है न। किसीको क्या भी नहीं आये,—सिपनाथ बाबू न जाने किसनी बुद्धिमत्तामें पये होंगे।

कमलने कहा "हो वे बुद्धिमत्ताके बोलसे सो गये हैं।

अबिठने रहा 'ऐसे कैबरेमें काबिली कैसे। गाड़ीमें एक हाथ-आन्दोलन है, उसे जवाबकर साम करे।'

कमलने आनन्द लुप्त होकर कहा 'तब तो फिर कहना ही क्या है अबिठ बाबू। आइए आइए। आपका बरा बाव दिखा है।'

अबिठने अनुभवके रसरमें कहा 'और जो भी हुकम करेंगी, तामील करोगा; अगर इतनी रातमें बाव पीनेकी आज्ञा न लीजिए। अबिठ, आपको पहुँचाए जाता है।'

बाहरका दरवाजा हाथ लगाते ही सुन गया। नीतरके बरामदेंमें वहींकी एक दासी सो रही थी, वह आइए ना आकर बैठ गई। सोमझिना मकान है। ऊपर छोटे छोटे दो कमरे हैं। अत्यन्त सँछीन बीना है, उनके नीचे इरीकेन आन्दोलन दिमागिया रही है। उसे हाथमें बठाकर कमलने अबिठको ऊपर बुलाया। वह मारे सँछेपके स्वाकुल होकर बोला, 'नहीं नहीं अब जाता है। बहुत रात हो गई है।'

कमल भिद करने लगी "सो नहीं होनेका आइए।"

अबिठ फिर भी बुझिना कर रहा है, देखकर कमलने कहा "आप खेव रहे हैं, जानेसे सिपनाथ बाबूके सामने बड़ी घर्मकी बात होगी। अगर वह क्यों नहीं सोचते कि नहीं जानेसे मेरे लिए तो और भी ज्यादा खजवाही बात होगी। आइए। मैंने ही इस तरह जगदरके साथ आपको जनि देते रातको सुसे भीद न जानेगी।

अश्विने छपर आकर देखा कि परमें बीम-बस्त नहींके बरामर है । एक कम बीमतकी आराम-कुरसी एक छोटी-सी बेचिक एक स्टूल कई ट्रंक एक फिनारे पुरानी स्मोकेकी आट और तसपर बिस्तर-तकिनोका बेर पका हुआ है । वे ऐसे बेचिकी तौरपर रखे हैं किसे छाबारकत तन सबकी छोई बकरत ही नहीं पवती । बर सूना है, सिबनाप बानू नहीं हैं ।

अश्विनेको आम्बन हुआ किन्तु मन ही मन तसने सन्तोषकी सौंस की बोला " क्यों वे तो अभी तक आये नहीं हैं ।

कमलने कहा " नहीं । "

अश्विने कहा, आज शानद हम खोगोके वही उनका गाना-बजाना शुरू खोरसे बक रहा होगा । "

ईसे आना ! '

" एक परसो दो दिन गये नहीं हैं । आज उन्हें पाकर आसु बानू शानद सारी छति-भृति करामे के रहे हैं । "

कमलने पूछा " रोब जाते हैं, खबर दो दिक्से क्यों नहीं ? '

अश्विने कहा " इसकी खबर हम खोगोसे आपसे ही पचादा होगी । सम्भवतः आपने छोडा नहीं होगा इसीसे नहीं जा पाये होंगे । नहीं तो उन्हें देखनेसे ऐसा तो नहीं माखम होता कि अपनी हथकासे गैरजाभिर हुए हों । '

कमल कुछ क्षण तसके खेदरेकी तरफ देखकर अफरमात्तु ईस दी । बोली " यह किसे माखम कि वे नहीं जाते हैं गानेके सिम् । वास्तवमें किन्ती आदमीके पकड़कर रखना बडा अम्प्याय है । है न ! "

अश्विने कहा, बसर । '

कमलने कहा " वे मछे आदमी हैं इसीसे । अफस आपसे खबर छोई पकड़के रखता तो आप राते ? "

अश्विने कहा " नहीं । इसके सिवा मुझे पकड़के रखनेवाक्य मी तो नहीं है । "

कमल ईसती हुई दो-तीन बार फिर दिखाकर बोली, " वही तो मुश्किल है । पकड़के रखनेवाका बीम कहां छिया रहता है आम्बनेका उपाय ही नहीं । वही खेयिप न, मैंने जो कामसे आपसे पकड़ रकटा है, इसकी आपसे खबर ही नहीं । खेर रहन दीखिप, समी बातोंपर तर्क करनेसे काम क्या होगा ? मगर बातों ही बातोंमें बेर हुई जा रही है । जाऊँ मैं उस कमरेमेंसे आपके सिम् पाय

बना जाऊँ ! ”

बीर नहीं मैं बनेगा तुम मारे बैठे रहूँ ! जो नहीं होनेका । ”

“ होनेकी बहरत भी क्या है ! इतना कहकर कमल उसी अपने साथ दूसरे कमरेमें ले गई और उसके बैठनेके लिए बना आसन विछाकर बोली, बैठिए । पर विचित्र है इस दुनियाकी बातें, अकित बाबू । उस दिन इस आसनको अपनी पसन्दसे करीबत तक छोटा वा कि इसे विछाकर किसीसे बैठनेके लिए खड़ीगी — केकिन यह बात तो और किसीसे कही नहीं जा सकती अकित बाबू । फिर भी आपका बैठनेके लिए बिछा ही दिया । मलय बठकाइए, किन्ने-से समझा अन्तर है वह । ”

इसके मागी क्या हुए, सोचना क्या मुश्किल है ! हो सकता है कि बहुत ही आसाम हो और वह भी सम्भव है कि उससे भी ज्यादा बुरा हो । फिर भी अकित मारे धरमके मुर्ख हो गया । कमलमें हिचकिचाया मगर फिर भी बोला “ बम्हें बैठनेकी दिवा क्यों नहीं ! ”

कमलने कहा, “ नहीं तो आसामीकी अपरहस्य भूख है । सोचना है, सब कुछ उसीके अपने हाथमें है, केकिन क्यों बैठे हुएमा कीन साथ हीसाब फिताब उखल-सखल केना है कोई पता ही नहीं । आपकी बाबमें क्या बीती ज्यादा जाऊँ ! ”

अकितने कहा “ डाल हीजिए । बीनी और इसके स्नेहसे ही तो मैं बाम पीता हूँ, नहीं तो उससे मुझे कोई दिक्कतसी नहीं । ”

कमलने कहा “ मैं भी ऐसी ही हूँ । क्यों स्नेह वह पिना करते हैं, मेरी तो कुछ समझमें ही नहीं आता । और मना यह कि इसीके बेजमें येत जन्म है । ”

आपकी जन्म-भूमि क्या आसाममें है ! ”

“ सिर्फ आसाममें ही नहीं एकदम बाबके बगीचेमें । ”

“ तो भी बाबमें बंधि नहीं ! ”

‘ बिलकुल नहीं । स्नेह के बेत हैं तो पी केती हूँ । सिर्फ धराधरके खातिर । ”

अकित बाबका प्यास हाबमें के चारों तरफ देखकर बोला, ‘ यह बाबद आपका रसोईबा है ! ”

कमलने कहा “ हाँ । ”

अकितने पूछा “ आप खुद ही बनाती होपी ! मगर क्यों, आज तो बनानेका बंध नहीं मिला ? ”

कमलने कहा नहीं।”

अश्विit बगलें झोकने लगा। कमल उसके मुँहकी ओर बलबलर हँसती हुई बोली, ‘अब पूछिए कि तब आप खासैगी क्या ? उसके अभावमें मैं कछुँगी उठके में खाती ही नहीं। दिनमें सिर्फ एक ही बार खाती हूँ।

‘सिर्फ एक ही बार ?’

कमलने कहा “हो। मगर इसके बाद ही आपको अभाव होना चाहिए कि तो फिर अभावनाय बाबू कर आफर क्या खासैगी ? उनका तो कोई एक-आप बार खानेका मामला नहीं। तब फिर ! इसके अंतरमें मैं कछुँगी कि वे तो आप ही खेगोके नहीं खा-पी आते हैं,—उन्हें क्या फिर है ? आप करेगे, सो तो ठीक है मगर रोज तो ऐसा नहीं होता।’ सुनकर मैं सोचपी ‘इस बातका अभाव सुनरोके बेनेसे काम ही क्या ? पर इसके आपको समुद्र नहीं किया जा सकता। तब मजबूर होकर खाना ही पड़ेगा अश्विit बाबू, आप खेगोके लिए डरनेकी कोई बात नहीं। वे नहीं खाने नहीं आते। सैन-विवाहकी शिवाजीका मोह समय अब बुर हो चुका है।’

अश्विit वास्तवमें इत बातके माली नहीं समझ सका। यममीर बिस्मयके साथ उसके मुँहकी तरफ देखाकर पूछने लगा इसके मापी ? आप क्या गुस्सेमें कर रही हैं ?

कमलने कहा “नहीं गुस्सेमें नहीं। गुस्सा करने समयक शानक आज मुझमें जोर भी नहीं रहा। मैं समझती थी, पत्थर काटनेके लिए वे बनपुर गये हैं, आपसे ही प्यारे-प्यारक वह खबर मिथी कि वे आपका खेगकर अब तक नहीं गये हैं। अश्विit उस कमरेमें बलकर बैठे।”

उस कमरेमें आकर कमलने कहा नहीं इस खेगोका सोनेका कमरा है। तब भी इससे ज्यादा एक भी चीज नहीं थी—आज भी नहीं है। किन्तु उस दिन इन सब पीडोका खेहरा देखते तो आज मुझे खाना भी नहीं प्यता कि मैं गुस्सा नहीं हुई। लेकिन आपको तो बहुत ज्यादा रात हो रही है अश्विit बाबू, अब तो बेर करमेसे काम नहीं लैया।”

अश्विit उठके कहा हो मया बोला, हों तो फिर आज बसता हूँ मैं।” कमल साथ साथ उठ करी हुई।

अश्विitने कहा अगर आज्ञा हो तो कल आऊँ ?’

‘हों, आइया।’ क्यती हुई वह पीछे पीछे नीचे उतर आई।

अमित कुछ देर तक नागों लोंककर बोला "अगर कुछ कदूर न समझे तो एक बात पूछूँ, शिवनाथ बाबू कितने दिन हुए नहीं जाये ?"

"हो गये बहुत दिन।" कदुरी हुई वह हँस दी। अमितको साबुकेमके सबाकेमें लख दिखाई दिया कि इस हँसीकी बात ही स्यादी है। उसके पहले की हँसीसे इसका कहीं भी कोई साहस्य नहीं।

९

अमित जब घर लौटा एक रात गहरी हो गई थी। सड़क सुनसान थी सजाना छाया हुआ था। दुकानें सब बन्द हो चुकी थीं—बादमीका कहीं नाममिखान तक न था। कभी खोजकर देखा तो साबुम हुआ कि वह बाकीके जमाकीं आठ ही बजे बन्द हो चुकी है। जमी साबुद एक बजा होगा, या तो बजे होंगे,— ठीक कितने बजे हैं, कुछ अन्त्या नहीं कर सका। वह निश्चित है कि आज बाबूके घर अब तक सब शास्वत विन्तित हो रहे होंगे, सोनेकी बात तो बुर रही जाना-पीना तक साबुद बन्द होमा। पर पहुँचकर वह क्या कहेया कुछ सोच न सका। सत्य सजना तो कही नहीं जा सकती; वह ठरक मरन है कि कहीं नहीं कही जा सकती।—बल्कि छूट कदा जा सकता है, मगर छूट बोझनेकी उसे जाबत नहीं थी। नहीं तो मोटरमें अकेले निकलकर देर होनेका अरथ बूढ़ निकलनेमें इतनी विन्ता नहीं करनी पडती।

गेद लुका था। दरबाबने समझ करके कहा कि शोकर नहीं है, वह आपको हुकमे गया है। गाड़ी अस्तवन्ते रकाकर अमित आज बाबूकी बैचकेमें गये। कुछे ही देखा कि वे जमी तक सोने नहीं गये हैं। अस्वस्थ घटीर सिन्ने अकडे देते उसकी बात देकर रहे हैं। वे लोहमे घीमे होकर बैठ गये और बोले "जा गये। मैं बार बार यही सोच रहा था कि कोई एक्सिडेंट हो गया होगा। कितनी बार तुमसे कह चुका हूँ कि बुके रातेमें कभी अकेले नहीं निकलना चाहिए। बुकेकी बात आखिर सामने आई न। विन्ता तो मिथी ?"

अमित घरमिन्ना हाकर जरा हँस दिया बोला "आप लोगोंको इतनी बुद्धिमतामें डरक दिया इसके किम् में अत्यन्त दुःखिन हूँ।"

दुख कम करना। बगीची तरक मजर उमकर देको दो मज रहे हैं। बोवा बहुत घा-पीकर से जानो जाके। कस मुर्ग्या घाटी बाते। जदु, जो जदुआ।—वह भी बाध्यक बना गया क्या तुम्हें हुकमे ?"

अश्विने कहा ' बसिष् तो आप ज्योतिषी किन्तु भी ज्ञाएती है । इतने बड़े शहरमें मन्ना यह क्यों मुझे फली मन्नी है? ठीक ठीक दिरेपा ? '

आशु बाबूने कहा ' तुमने तो यह दिना ज्ञाएती है; मगर हम ज्योतिषी केसा कम रहा था तो हम ही जानत हैं । मन्ना बने किन्तुनाबन्ध गाना बलम हुआ तबसे — मन्नि यह क्यों ? इसे भी तो तबसे नहीं देख रहा हूँ । '

अश्विने कहा ' साम्य तो यह होगी । '

" सोयेगी कैसे श्री ? जमी तक उसने जाना भी नहीं है । " बहुत बड़ते सहसा वनों एक बात पाह जा गई, बोले " अस्तवर्गमें जोबचानको देखा या क्या ? "

अश्विने कहा ' नहीं तो । '

" तब तो हो गया । " बहुर ने बुधिनताक मारे फिर एक बार बठके सीधे बैठ गये, बोले ' जो खेना या बही हुआ । माहस होता है पाही केकर यह भी यह है । देखो तो केशी परेखानीमें बाल यह । इस उरसे कि कहीं मैं मना न कर हूँ, जरा कुछ यह तक नहीं गई चुपके-स बनी गई । बीन जाने कम खोयेगी । आबकी रात माहस होता है खोरी भीखों ही पीठेगी । "

" मैं देखता हूँ आपके गाही है ना नहीं । " कहुता हुआ अश्वि बाहर पलम गया । अस्तवर्गमें जाकर देखा कि गाही मीबू है और खोरे बीन-बीनमें पैर फटकत हुए मन्ने पास जा रहे हैं । तबकी एक बुधिनता मिटी ।

भीबक बरामदेके उतरकी तरफ कुछ दिखायती छाक और पामके पेड़ अवरहस्त अम्परवाहीके साथ खड़े थे । — उनके ऊपर ही मनोरमाध खेनेध कमरा है । यह देखनेके लिए कि जब तक कमरेमें बत्ती जल रही है या नहीं अश्वि उन तरफसे बूमकर आशु बाबूके पास जा रहा था । इतनेमें छाकी-मेंसे किन्तीकी आवाज सुनाई दी । अस्तवर्ग परित्त बण्ड था । बल हो रही थी किसी एक गानेके स्वरके निपपमें । कोई बुधि बात नहीं थी — किन्तु फिर भी उसके लिए पेश-रीबोंके धुरधुरमें बैठनेकी जरूरत नहीं थी । धन-मरके लिए अश्विनेके दोनों पैर बिर्बिक-से हो गये पर अश्वि-मरके लिए ही । आखेचना चलने लगी और यह जैसे चुपचाप आवा या जैसे ही चुपकेसे चल दिया । उन खेनेमेंसे खोई भी न जान सख कि उनके इस निधीबन्धनीन विमन्नात्तापका खोई सखी है ।

आशु बाबूने धम होकर पत्र पना स्या ? '

अभितने कहा " पाणी-पोषा अस्तवस्ममें ही है । मणि बाहर नहीं गई । "

बैर बानमें बान आई, बहकर जागु बानूने निश्चिन्त परितृष्णिका दीर्घ श्वास सिन्हा फिर कहा रात बहुत हो चुकी है थायर बह एक बकबक करमें जाके सो गई होगी । देखता हूँ कि बान बकबक बाना नहीं हुआ । बानो केडा बोषा-बहुत जाकर तुम भी सो जाओ

अभितने कहा इतनी रात गये मैं अब न खाऊंगा आप सोने जाइए ।

जाता हूँ । पर तुम कुछ भी न खाओगे ? बरा कुछ खा-पीकर—'

नहीं कुछ नहीं । आप बैर न करें । सोने जावें । ' इतना बहकर उस बग्न आदमीके भीतर मेजकर अश्लि बानने कमरेमें कमर मचा और वहाँ सुली हुई चिकनीके पास जाकर खड़ा रहा । वह निश्चित जानता था कि स्वर-सम्बन्धी आम्बेबना अतम होनेपर पिताजी घरर केनेके ममोगमा इपर एक बार जाकर ही आयेगी ।

मणि आई, पर कामग थाच पन्हे कर । प्यके उसने पिताजी बैठके सामने जाकर देखा कमरेमें बिपेर है । बडु छाबद पास ही कहीं जाग रहा था; मणिकके पुकारनेपर उसने जवाब तो नहीं दिया था पर उनके चले जानेपर बनी जुसा दी थी । मनोरमने अन्न-मर इपर ठगर करके मुँह केरा तो देखा कि अश्लि बानने कमरेमें सुली चिकनीके पास चुपचाप खड़ा है । उसके कमरेमें भी बनी नहीं अल रही थी अश्लि सहनके अररके बरामदेसे सीन प्रकाशकी किरने जाकर उसकी चिकनीपर पड़ रही थी ।

" बीन ? "

" मैं हूँ, अश्लि । "

" बाह ! कम था गये ? बानूनी थायर सोने चले गये । " बहकर मनो रमाने मानों बरा चुप रहनेके श्लेषिच थी; परन्तु असमाप्त बातकी रफ्तारने उसे रुकने नहीं दिया । करने लगी देखो तो तुम्हारा कैसा अविचार है ! बर-भरके शेष मारे चिकने परेसाल होते रहे,—बहर कुछ न कुछ हुआ होगा । इसीसे बापूजी बार बार मला करत हूँ अकेके जानेके लिए । "

इन सब प्रश्नों और मन्ठम्योंअ अश्लिने कुछ भी जवाब नहीं दिया ।

मनोरमने कहा मगर उन्हें और इरवित्र न आई होगी । बहर जान रहे होंगे । उन्हें बरा मगर तो कर है ।

अशितने कहा। अस्वस्त नहीं। वे मुझे बल्ले ही छोले हैं।'

'देखक सोय हैं। तो फिर मुझे खबर क्यों नहीं दी?'

'उन्होंने समझा कि तुम सो गई हो।'

'सो कैसे जाती? अब तक तो मैंने खाया भी नहीं है।'

'तो खाके सो जाओ। रात अब ज्यादा नहीं है।'

तुम नहीं खाओगे?'

नहीं। कहकर अशित लिफ्टीके पाससे हट गया।

बाह अच्ये रहे!' इससे ज्यादा बात उसके मुँहसे न निकली। मगर मीठरसे भी फिर कोई बधाव न आया। बाहर मनोरमा स्तम्भ खड़ी रही। बसमें मनामनूष्य गुस्सा होकर अपनी जिन् कायम रखने समझ जोर नहीं रहा—न मासूम अशितने उसका मुँह फूटके बन्द कर लिया। अशित रात सतम करके घर सीटा है। घर-भरमें सबकी दुःखिताका अन्त नहीं। उसीने खुद इतना बधा अपराध करके उसके अय्यामकी हद कर दी, और फिर भी अरा-भा प्रतिबन्ध करनेकी माया तक उसकी अवागपर न आई। और सिर्फ जीम ही निर्यात नहीं हुई बल्कि लारि बेह ही मानो कुछ अर्पणके लिए अपार हो रही। अशितकीपर कोई कायम नहीं आया। यह अलनेकी भी किनीने अस्वस्त नहीं समझी कि वह रही ना बनी गई। यही निष्ठीय राशितमें उसी तरह उपवास खरी रहकर बहुत बेर बाह वह पीरे पीरे पड़ी गई।

सबेरे ही मीठरके अरिष्ट आशु बाबूके मासूम हुआ कि वह रातको अशित या मनोरमा दोनोंमें किनीने भी नहीं खाया। चाव पीते बल्ले उन्होंने ठाकुरके साथ पूछा। वह अस्वस्त ही कोई अर्द्धत एकिमरुण्ट हो गया या हुआ ना न।'

अशितने कहा। नहीं।'

तो फिर अवागक तक निवट गया होगा?'

'नहीं तेल खड़ी ना।'

तो फिर इतनी बेर कैसे हो गई?'

अशितने सिर्फ कहा, ऐसे ही।'

मनोरमा खुद चाव नहीं पीती। उसने पिताको चाव अस्वस्त एक प्यास चाव और नास्तेकी तरफसे अशितकी ओर बधा दी पर न तो कोई बात पूछी और न मुँह अटकर अशितकी ओर देखा। दोनोंके इन माव-परिवर्तनको पितृ ताक गये। नाशुा करके अशित अर बढ़ाने खया गया टर कड़कीको पूछन्तमें

पाकर उद्दिष्ट कष्टसे बोले 'वहीं बैठी वह बात बरछी नहीं। जकितके साथ हम कोमोक्ष सम्बन्ध चाहे क्लिष्टता भी बनिष्ठ क्यों न हो फिर भी बरमें वे अतिथि हैं। अतिथिके योग्य सम्मान उनका होना ही चाहिए।

मनोरमाने कहा 'मैंने तो नहीं कहा बापूजी कि नहीं होना चाहिए।

नहीं नहीं 'नहीं कहा वह सच है; लेकिन हमारे आचरणसे किती तरहकी निरर्थक या सापरवाही होना भी अपराध है।'

मनोरमाने कहा 'सो मानती हूँ। पर तुमने किसे सुना कि मेरे आचरणसे अपराध बन पका है।'

आशु बाबू इस प्रश्नका जवाब न दे सके। उन्होंने सुना कुछ भी नहीं न कुछ जानत ही हैं। सच कुछ उनका अनुमान-मात्र है। फिर भी मन उनका प्रसन्न न हुआ। कारण इस तरहसे बहस की जा सकती है; किन्तु सन्तुष्टिस्तित्तके विरुद्ध निःसह नहीं किया जा सकता। बोधी देर बाद उन्होंने धीरे धीरे कहा 'उतनी रातम अकितने फिर खाना नहीं चाहा और मैं भी छाने कहा गया; तुम तो प्यारे ही सो गई थी—न जाने क्यों ही सो सकता है, हम कोमोक्ष तरहसे ही कोई सम्परवाही बाहिर हुई हो। उनका मन आज बैसा प्रसन्न नहीं साकम होता।'

मनोरमाने कहा 'वे अगर सप्ती रात राहमें बिताया चाहे तो हम कोमोक्ष भी क्या उनके किम् बरमें जमते रहना होगा। यही क्या अतिथिके प्रति पुरस्कार कर्तव्य है बापूजी?'

आशु बाबू हँस दिने। अपनी तरफ इशारा करके बोले 'पुरस्कारके मानी अगर यह मठिवाका रोगी हो बेडा तो उसका कर्तव्य है कि आठ बजेके अन्दर ही सो जाय। नहीं तो वह भी बहुत बड़ सम्मानित अतिथि मठिवाके प्रति असम्मान दिखाना होगा। और उसके मानी अगर और किसीके हो तो उसका कर्तव्य बतानेवाला मैं कोई नहीं। आज बहुत दिन पहरेकी एक पदना बाद जा गई मणि तुम्हारी मा तब त्रिन्दा थी। एक बार मैं मछली पकड़ने गुलियाका जो गया छे लौट नहीं सक्ता। सिर्फ एक रात ही नहीं—तुम्हारी माने बसोतर पुरोधी वृत्ती तीन रातें त्रिन्दाके बैठे बठे बिता दीं। उसको वह कर्तव्य किन्तुने सुझावा वा तब पूछ नहीं जा सका; मगर वहि फिर कभी कुमकाल हुई तो वह बल पूछना मूर्खिया नहीं।' इतना कहकर उन्होंने सब मरके किए मुँह डेरकर लड़कीकी सिगाइसे अपनी औत्तोंकी डिगा किया।

यह स्थानी कोई नहीं नहीं। किस्सेके तौरपर इस क्तनाथ ने बहुत बार मन्त्रीके सामने उद्देश्य कर चुके हैं मगर फिर भी वह पुरानी नहीं होती। जब कभी बाबू या जाती है तभी वह नहीं बनकर दिखाई दे जाती है।

इन्नेमें नौकरानी आफ्तर दरवाजेके पास खड़ी हो गई। मनोरमा उठ खड़ी हुई, बोली, बाबूजी, तुम जरा बैठे मैं रसोईका इन्तजाम कर आऊँ। और वह बसरीसे खड़ी गई। बातचीत बहुत आगे न बढ़ पाई, इससे उस आराम पाछम हुआ।

दिन-भरमें आठ बाबूने कई बार अजिनके बारेमें पूछा; एक बार माछम हुआ कि वह किताब पढ़ रहा है, फिर खबर मिली कि वह अपने कमरेमें बैठ किछी-पत्री किछ रहा है। सोफरके मोहनके समक उसने सगमग बात ही नहीं की और जाना सतम होते ही वह उठकर चल दिया। और और दिनके देखे वह किसना सता या उठना ही आदर्शजनक।

आठ बाबूके सोमरी सीमा नहीं रही। बोले 'बात क्या है मणि ?'

मनोरमा आठ बराबर पिताजी हरिसे बचकर पक रही थी जब भी खासकर किसी तरह बिना देखे ही बोली 'माछम नहीं बाबूजी।'

ये सुन-भर अपने मनमें कुछ सोच-विचारकर मानों अपने आपसे ही अपने को, उसके बापस जाने तक मैं जाय ही रहा था। जानेके लिए भी क्या था पर बहुत एत हो जानेसे उसने खूद ही नहीं जाना। गुम्हार से जाना ठीक नहीं हुआ बैठे—केकिन इसमें देखा क्या अपराध हो गया मेरी तो कुछ समझमें नहीं आता। इससे बड़कर आश्चर्य और क्या होगा कि इस गुच्छ करबको उसने इतना बड़ा मान किया।"

मनोरमा चुप रही। आठ बाबू खर भी कुछ बेर मीच रहकर मीठरकी कज्जाको दबाते हुए बोले 'बात तुमने उससे पूछी क्यों नहीं ?'

मनोरमामे जबाब दिया, पूछनेकी औन-सी बात है—पिताजी ?

पूछनेकी बहुत-सी बातें हैं, पर पूछना भी कठिन है, खासकर मन्त्रिके लिए। इसे वे समझते थे फिर भी उन्होंने क्या "यह तो निष्कुण छाक है कि वह पाराज है। शायद उसमें सोचा है कि तुमने उसकी उपेक्षा की है। इस तरहकी बेजा बाराजा तो उसके मनमें रहने नहीं ही जानी चाहिए।"

मनोरमामे क्या "मेरे बारेमें अगर बेजा बाराजा उन्होंने कर ली हो तो वह उनका अपराध है। एक आदमीके अपराधको सुधारनेकी मरक क्या दूसरे आदमीको अपने कर के देनी चाहिए बाबूजी ?"

पिता इस प्रश्नका उत्तर नहीं दे सके। कड़कीचो ने जिस ढंगसे पाससे जाने ही उससे उसके आत्म-सम्मानपर चोट पहुँचे ऐसा कोई आदेश ने नहीं कर सकते। उसके उठ जानेपर इसी बातपर मीठर ही मीठर झगड़ोह करत करते थे अस्वस्थ उपास हो गये। बार बार इस बातको दुहराते हुए भी कि ऐसा हुआ ही करता है और यह मन खिन्न है, उन्हें मीठरसे जोर नहीं मिल। अजितको भी वे आलते थे। यह शिर्क सब तरहसे सुधिसित ही नहीं है, बल्कि उसमें ऐसी एक चारित्रिक मूल्यपरता ठहरेनी चाई थी कि आजके अक्षरम विरागसे किसी तरह भी उसका सामंजस्य नहीं बैठता था। इसका निर्णय करना कठिन हो गया कि क्यों सबके असीम उद्देश्य कारण बनकर भी वह अस्मिन्दा इन्हेके बदले माराज हो गया और ऐसी अहम्मव बात कैसे उसमें सम्भव हुई।

घामके समय एक लोकोसे गेहके अन्दर घुसते एक आशु बाबूने दर्शित किया ता माहस्र हुआ कि वह अजितके लिए जाना है। अजितको उन्होंने बुला भेजा और उसके आनेपर मुश्किलसे जा-ता हैसकर पूजा लोकोका क्या होमा अजित।”

जरा एक दफे घूमने निकसिया।”

क्यों मंजर क्या हुई? फिर विगव भई क्या?”

वही। अजित उसकी आप कोनोंसे जबरत पव सज्जी है।

अगर पड़े भी तो उसके लिए बानी मीठर है।” और फिर एक क्षणपर चुप रहकर बोले किटा अजित मुझे सब बता दो। मीठरके बारेमें कोई बात हुई है क्या।”

अजितने कहा क्यों मुझे तो नहीं माहस्र। अजित आज भी तो आपक वहाँ गान-बजानेका आनन्दन है। कोनोंसे सारेके लिए, सबका पर पहुँचानेके लिए मंजरकी ही जवाबा जबरत है। बासीमें डीक न रहेगी।”

कबरेसे तरह तरहकी सुधिनताओंके कारण आशु बाबू इस बातको मूल-ने गवने। जब बाद आई कि कम घमा मद्र होनेके बाद आजके लिए भी अब सबको आमन्त्रित कर दिया गया था और घामके बाद ही मन्त्रिस बैठेगी। साम घाय यह भी पताच आ गया कि सबको विनामे लिखनेकी कल्पना भी मनोरमाक मनमें उदित हुई थी पर वे मन ही मन जरा हैसकर रह गये। कारण हैकी हुई कन्दकी मालसिक अस्वपठन्त्यापी बदले इस

बातका खवाक उन्हें खूब ही नहीं रहा था और जब याद भी आई तो उससे एनीवत प्रसन्न नहीं हुई। उस समय लक्ष्मीके लिए ये सब बातें किननी विरक्तिकर हैं, इस बातको स्वतःसिद्धाधि मूर्ति अनुमान करके वे बोले “आज यह सब कुछ नहीं होगा अश्वित।”

अश्वितने कहा क्यों ?

क्यों ? मयिचे ही पूछ बेचो एक बार।” कहकर उन्होंने बेदराखे ओरसे पुकारकर लक्ष्मीको बुलाने में प्रयास किया और फिर जरा हँसकर कहा “तुम माराज हो बेटी याग-आना सुनेगा कीन ? मयि ? अग्ला यह सब और किमी दिन होगा अमी आओ तुम मोटर केकर जरा बूम आओ। डेकिन कवावा बेर नहीं उगा सकत। और कहे देना हू कि तुम्हारा अकडे जाना भी नहीं होमा। इन्द्रवर नामकक बिलकुल आलसी हुआ जा रहा है। इतना कहकर वे एक अठिन घरवाकी अश्वितनीव यीमांसा करके उज्ज्वल आनन्द आराम-दुरसीपर बित पड़ गये और जोरकी एक सन्तोषकी साम छोड़नेके साथ साथ बोले “तुम आओगे लौगा फिराने करके बूमने ? टि।”

मनोरमा कमरेमें पैर रखत ही अश्वितके बख गान्गन देखी करके खड़ी हो गई। बाहर पाकर आशु बाबू फिर चीन होकर बैठ गये और सकोयुक खिन्न हँसीसे बेदरेको समझकर बोले “मैं पूछता हूँ, आजकी बाग बाव तो है बेटी या बिलकुल मूल-भाकके विभिन्न बेटी हो।”

क्या बार्जी ?

“आज सबको निमन्त्रण दे रखा है। तुम ज्योगोच पाग-आना कठम होनेके बाद इन ज्योगोचो जो आज मिमाना है—सो भी कुछ खयाक है।”

मनोरमाने फिर हिलाकर कहा है क्यों नहीं। मोटर में ही है उन ज्योगोचो के खानेके लिए।”

“मोटर में ही है के खानेक बिन् ? मपर खाने-पीनेक इन्तमाम ?”

मयिने कहा “सब ठीक है, आई बुटि न होगी।”

“अच्छ।” कहकर वे फिर ऊपरपर पड़ रहे। उनके सुँवर पाओ अश्वितने स्वाही-सी पेट की।

मनोरमा खली गई। अश्वित भी बाहर जा रहा था कि आशु बाबूने उसे इतारैसे मना किया और वे बहुत दलक चुन रहे। बाबूने उठके बैठे और करने लगे, अश्वित लक्ष्मीकी तरफसे खमा मौपनेमें मुझे सजा आती है।

पर उसकी माँ किन्ना नहीं है—वे होतीं तो मुझे यह बात ख्याली नहीं करती।

अश्विनुप रहा। आशु बाबू बोले यह बात वे ही तुम्हारे हुँदसे निकल सकती कि उससे तुम क्यों गुस्सा हो मगर वे तो हैं नहीं—मुझसे क्या यह बात ख्याली नहीं का सकती ?”

उमरु स्वर ऐसा कड़क था कि सुनकर हृदय स्पर्शित हो उठे। फिर भी अश्विनुप रहा।

आशु बाबूने पूछा उससे क्या तुम्हारी कोई बातचीत नहीं हुई ?”

अश्विनुने कहा “हूँ भी।”

आशु बाबू स्वयं हो उठे “हूँ भी ! फिर हुई ! मणि अथानक कम ज्ये सो गई भी सो क्या तुमसे बचने कहा था !”

अश्विनुने कुछ देर चुप रहकर सामने खड़ी सोच लिया कि क्या जवाब देना चाहिए, फिर आश्विनुने कहा उतनी रात तक जागृत रहना न आता ही था, और न उचित। सो जाती तो अविचार न होता मगर वे छोई नहीं थी। आपके सोने के अन्तरे धोड़ी देर बाद ही उमसे मेंद हुई थी।”

फिर !”

फिर और कोई बात आपसे नहीं खूँया। कड़कर वह चला दिया। दरवाजेके बाहरसे वह ख्याता गया, सामने कम-परसों तक मैं बहोसे क्या बाँटेंगा।”

आशु बाबू कुछ भी समझ न सके किर्क इतना ही उनके समझमें आया कि कोई भयंकर दुर्घटना हो गई है।

अश्विनुको फेकर टीना बाहर चला गया और उसकी आवाज उन्हेने सुन ली। कुछ मिनटोंके बाद मोरका घोर मचाती हुई मोटर निर्मिश्रितोंको फेकर आ पहुँची। उसका सौर भी उन्हेने सुन लिया। पर वे दिखे-बुझे नहीं बहोके तहाँ मूर्तिकी तरह निश्चल बंठे रहे। बैठक बैठनेपर बीकाने जाकर संवाद लिना बाबू साहबकी तबीयत ठीक नहीं है, वे सो गये हैं।”

उस दिन माना नहीं जमा खाने पीनेका उत्साह भी मर्याद हो गया,—सबको बार बार बहो सवाक जाने लगा कि बरका एक व्यक्ति घूमनेके बहाने बाहर चला गया है और वृत्त व्यक्ति अपने विपुल खरीर और ब्रह्म विग्य हास्यके साथ समझी शिष्ट अपहृष्टो उज्ज्वल बनाने रखता था, जान यह सुनी पही है।

१०

इस अकितका ठोसा कमलके चरक सामने आकर खड़ा हो गया। कमल सफरनाले संघीने बरामदेर खड़ी की आँखें बार होते ही हाथ उठकर उसने नमस्कार किया। ठोसेको इशारेसे बघाते हुए चिन्ता र बोझी उसे चिन्ता कर दीशिए। सामने खड़ा खड़ा बार बार लौटनेकी जन्ती मचाएगा।”

भीनेमें सामने ही फिर मेट हुई। अकितने कहा, चिन्ता तो कर दिया पर लौटत बच हमरा मित्र तो बामना।”

कमलने कहा, नहीं। ऐसी कितनी ही है पैरल ही चले बाइएगा।”

“पैरल जाइगा।”

क्यों कर लगेगा क्या। न हो तो मैं खर जाऊँ आपको पर तक पहुँचा जाऊँगी। बाइए।” खरकर वह उसे साथ केकर रसोई घरमें गई और बैठनेके सिम्प कमवात्म बही भासन बिठाकर बोझी ‘बरा खेचिए तो सही सारे दिन मैंने कितने व्यंग्य बजाये हैं। आप न आते तो मैं गुस्सेमें कह सब मोक्षियोंको दुसकर बोट देती।

अकितने कहा “आपको गुस्सा तो कम नहीं है। मगर उससे इन व्यंग्य बोझ हमकी अपेक्षा विशेष अण्ड उपयोग होता।”

इसके मानी।” खरकर कमल कुछ देर तक अकितके खरेकी तरफ देखती रही और फिर अन्तमें खर ही बोझी ‘अर्थात् आपके तो कितनी चीजकी कमी नहीं—आपद इसमेंसे ही बहुत कुछ वैकला परेगा—केवल उन लोगोंके बही मारी कमी है। वे तो इसे खरके जैसे नवा जीवन प्राप्त करेंगे। सिद्धान्त, उन्हें कियाना ही रसोईका सर्वोत्तम उपयोग है नहीं न।”

अकितने गरदन झिझकर कहा “इसके चिन्ता और क्या मानी हो सकते हैं।”

कमलने कहा, ‘यह हुआ साधु सखलोच मन्थार-मुर्दाईका विचार,—पुत्रवत्सलार्थकी धर्म-मुद्रिणी मुक्ति। परलोकके जातमें वे मोक्ष इसीको सायक व्यक्त मानकर निश्चय रखना चाहत हैं। यह नहीं समझत कि अकितमें यही अन्त सारभूतय घोषा स्वय है। इस बातको वे कहींसे जानेंगे कि सखले जलान्द्रका मुखा-मात्र तो अभ्ययके अविचारसे ही ऊपर तक मर उठता है।”

अकितने आश्चर्यके साथ कहा, “मनुष्यके कर्मोंकी माफनाके अन्तर क्या जलान्द्र है ही नहीं।”

कमलने कहा 'नहीं नहीं है। कर्मण्डके अन्दर जो आनन्द माध्यम होता है वह आनन्द नहीं आनन्दका भ्रम है, वास्तवमें वह शुद्धक ही नामान्तर है। उसे बुद्धिके सासनसे अवरुद्धती आनन्द मानना पड़ता है। पर वह तो बन्धन है। नहीं तो वह जो स्थिरताका सासन साकर आपको बिठाया है, प्रेमके इतने अपराधमें मैं आनन्द करीसे पाती ? वह जो दिनभर भूले रहकर मैंने इतनी बीजे बनाई हैं — आप आकर खायेंगे इसलिये ही तो ? फिर इतने बड़े अकर्तव्यके अन्दर मुझे वृत्ति करीसे मिलनी ? अजिन बानू आज मेरी सब बातें आप नहीं समझेंगे, समझनेकी कोशिश करनेसे भी कुछ चमका नहीं होगा; मगर इतनी बड़ी ठकती बातके मानी अगर कभी अपने आप आपकी समझमें आ जाय तो तो उध दिन मेरी बाह भीखिया। पर यह सब जाने हीखिए आप जाने बशिए।" और उसने बाह मरकर बहुत तरहके व्यञ्जन उसके सामने रज दिये।

अजितने बहुत बेरतक चुप रहकर कहा, 'वह ठीक है कि आपके कुछ अन्तिम उपशोध अर्थ मैं क्यासमें नहीं आ सक्य लेकिन मास्स होता है कि मैं मिलकुन ही अशोभ्य हो तो बात नहीं। समझा देनेसे समझ मी चकटा हूँ।"

कमलने कहा "कीन समझा देगा अजित बानू ? मैं ? मुझे बकरत ?" और हँसते हुए उसने बाकी पात्र उसके आगे बढ़ा दिये।

अजिन खानेम पन ख्यावर बोला आपकी सायब मास्स नहीं कि कम मेरा आना नहीं हुमा।"

कमलने कहा 'जानती तो नहीं पर मुझे डर था कि इतनी रातमें आकर सायब आप खायेंगे नहीं। बड़ी हुमा। मेरे अपराधसे ही कम आपने तकलीफ पाई।"

लेकिन आज क्याक-समेत बसूल हो रहा है।" बात करते ही उसे बाह आ गई कि कमल अभी तक भूली है। मन ही मन अजिन होकर बोला पर मैं मिलकुन जानवरो कैसा स्वार्थी हूँ। दिन-भर आपने कुछ खाया नहीं, उसघ्न मैंने जरा भी खयाम नहीं किया और मजेसे खाने बैठ गया।"

कमलने हँसते चेहरेसे बचाव दिया पर वह तो मेरे अपने खानेसे मी बहकर है। इसीसे तो मरुप्य आपकी विडम विडा दे अजिनबाहू।" फिर जरा उठकर कहा "और यह सब मान-मछलीका मामला — मैं तो खाती नहीं।"

फिर लावैती क्या आप ?"

बह है न।" उसने एक ओर इकट्ठर रक्ते हुए पनामेकके कटोरेको हाथके इधारेसे दिखाते हुए कहा और उसके अन्दर मेरे छिपे चावल-दास-मांस उबके हुए रहे हैं। वही मेरा रात्र-भोग है।'

इस निपनमें अहितकर कुप्रास पूर नहीं हुआ साथ ही ससे संक्षेपने रोका भी। इस वरसे कि कहीं वह गरीबीका किङ्क न कर बैठे उसने बुरी ही बात केल दी, कहा, 'आपको देखकर मुझे दुःखसे ही ऐसा आश्चर्य हुआ कि कुछ यह नहीं सकता।'

कमल ईस फी बोली वह तो मेरा रूप है। पर उसने भी हार कबूक कर भी अकन बानूके आगे। वह उन्हें परास्त नहीं कर सका।"

अहित धर्मिन्दा होकर भी ईस दिवा बोसा मासूम तो नहीं होता। वे मोलमुगडाके माधिक हैं। उनके ऊपर खरौन नहीं पड़ती। केवल मुझे तो सबसे बड़कर आश्चर्य हुआ या आपकी बात सुनकर। चाहया मानों धैर्य-सा छूट जाता है—गुस्ता या जाता है। मासूम होता है, किन्ती भी सत्यको आप दिखने नहीं देना चाहती। हाथ बड़ाकर रास्ता रोचना ही जैसे आपका स्वभाव हो।"

कमल शायद सुप्य हुई। बोली हो सकता है। पर मुझसे भी बड़ा एक आश्चर्य नहीं था—वह था बुरा पहास। बेसी विपुल देर की बेसी ही विराट सान्ति। धैर्यका जैसे हिमाचल हो। उचापकी माप तक नहीं नहीं पहुँचती। ऐसा भी होता है कि मैं अगर उनकी सक्ती होती—

बात अहितको बहुत ही अच्छी लगी। आसु बानूके प्रति वह अन्तःकरणमें केमताकी मूर्ति मखि रखता है। फिर भी उसने कहा आप दोनोंकी ऐसी विपरीत प्रकृति किसी कैसे ?"

कमलने कहा मासूम नहीं। मैंने सिङ्क अपनी इच्छाकी ही बात कही है। मनिकी तरह मैं भी अगर तनकी सक्ती होकर पैदा होती।" फिर कुछ देर चुप रहकर बोली मेरे अपने पिताजी भी कम नहीं थे। वे ऐसे ही थीर ऐसे ही सान्त आदमी थे।"

कमल दासीकी कन्या है, छोटी बातकी कडकी है,—सबके मुँहसे अहितने यह बात सुनी थी। अब स्वयं कमलके मुँहसे उसके पिताके गुणोंका उल्लेख सुनकर उसका अन्तःहृत्न जाननेकी आकांक्षा प्रबल हो उठी; मगर इस वरसे कि पुत्रने-दाहनेसे नहीं उसकी स्वपाके स्वागपर असावधानीसे थोड़ न

पहुँच वह कुछ पूछ न सख्य, परन्तु मन उसका मीतर ही मीतर स्नेह और करुणासे ढरपर तक भर आया।

बाला खतम हुआ, किन्तु उठनेके लिए कहनेपर अकितने इन्कार कर दिया बोला "वहके आप का हैं। उसके बाद।"

क्यों तकलीफ पा रहे हैं अकित वाचू उठिए। बसिक हाक-मुह जो जाइए फिर बैठिए,—मैं खा रही हूँ।"

"नहीं छो नहीं होगा। बगैर जाने मैं आसन छोड़कर एक कमर मी इकर उभर न होऊँगा।"

जन्मे जायमी हैं आप। कइकर कमक हैसली हुई अपना मोहन उवाइकर खाने बैठ गई। अकितने देखा कि इतने रंग मात्र मी असुखि नहीं की बी। बालक बाल और उसके हुए आइ ही थे। सुखकर बपरम हो पये थे। और दिव वह क्वा खाती-पीती है उसे नहीं भास्य। पर आज इतनी तरहकी और काकी तैबारियोंके बीच मी उसके इध स्नेहाइत आत्म-पीडनसे अकितकी आँखोंमें पानी भर आया। कक उसने सुना था कि दिनमें वह सिर्फ एक बार ही खाती है और ब्याज जाना कि कइ नहीं है वो सामने बीस रहा है। सिद्धान्त बुधि और तर्कके छन्दे कमल मुँहसे पाहे जो मी हैं, वास्तवमें मोयके क्षेत्रमें उसके इध बखेर आत्म-संभमसे अकितकी अमिमूत और मुख्य आँखें मातुर्न और भयासे अर्ध-सुम्बर हो उठीं और बँबना असम्मान और अनादरसे जिन अकितनेसे उसे अकित किया था उन सबके प्रति उसकी पूमाकी सीमा ग रही। कमकके खानेकी तरह देखा देखकर अपने इस भावको वह बवा न सख्य। उचतते हुए आँसुके छाप करने लगा

अपनेको बड़ा मानकर जो श्रेय असमान करके आपको दूर रखना चाहते हैं, जो श्रेय अकारण अग्रि करत फिरते हैं, वे तो आपके पाँव छूने योग्य भी नहीं। संसारमें देवीका आसन अगर किसीके लिए हो तो वह आपके लिए है।"

कमलने अकितके निस्मरके साथ मुँह उमरकर पूछ "क्यों।"

"क्यों, छे मैं नहीं जानता, मगर अकितके साथ कइ सजना हैं।

कमलका विरमयक भाव बरु नहीं हुआ मगर वह चुप रही।

अकितने कहा, अगर क्षमा करें तो एक बात पूछें।"

क्या बात।"

“ पप्रिष्ठ सिवनाथके द्वारा अन्तमान और बंजना पत्निके बाप ही क्या आपने यह झण्डू-मठ किया है ? ”

कमलने कहा, नहीं तो । मेरे पहले पतिके मरनेके बादसे ही मैं यह काम्या करती हूँ । इससे मुझे कष्ट नहीं होता । ’

अभितके मुँहपर जैसे झिठौने स्वाही पेट दी । उसने कुछ बेर स्तब्ध रहकर अपनेको सँभालते हुए धीरे धीरे पूछा, ‘ आपका एक बार पहले और भी विवाह हुआ था क्या ? ’

कमलने कहा “ हाँ । वे एक आसामी किम्बियन थे । उनके मरनेके बाद ही मेरे पिता भी मर गये अफसमात् बोसिसे गिरकर । उस समय सिवनाथके एक भावा थे चाय-बपीकेके हेड-क्वार्टर । उनको भी नहीं भी माओ उम्होंने अपने यहाँ आश्रय दिया । मैं भी उनके घरमें आ गई । इस तरह तरह तरहके दुःख-कष्टोंके बीच रहते रहते एक कस्त खानेकी ही मेरी आरत प्य गई है । झण्डू-मठ तो क्या पर इससे सरीर और मन दोनों अच्छे रहते हैं । ”

अभितने एक चौंस डेकर कहा मैंसे छुना है, बाति आपकी दुष्महा है ! ”

कमलने कहा ज्येस तो यही बताते हैं । पर ना कहती थी कि उनके पिता आप कोसोंकी अतिके ही एक अदिरान थे । अर्थात् मेरे वास्तविक मातामह कुम्हारे नहीं बेश थे । ” और यह जरा हँसकर बोली सो वे चाहे ज्ये भी रहे हों अब फुस्सा होना भी स्वर्ग है और अफसोस करनेसे भी कोई काम नहीं । ”

अभितने कहा, सो तो ठीक है । ”

कमलने कहा माके स्व वा पर खि नहीं थी । म्याहके बाद कोई बदनामी हो जानेके कारण उनके पति उन्हें डेकर आसामके चाय-बपीकेके माय गये थे । पर यहाँ वे जीने नहीं — कुछ ही महीनेमें बुखार ही बुखारमें मर गये । उनकेका ताठ बाद मेरा जन्म हुआ बापीकेके बड़े लड़केके घर । ”

कमलके बँध और अन्तम्य वर्णन सुनकर अभितका हृदय-भर प्यकेका स्नेह और भयानके किता हुआ हृदय अखि और संश्लेषके मारे सिद्धुनकर बूँद-सा रह गया । उसे सबसे ज्यादा यह बात अच्छी कि अपनी और माकी इतनी बड़ी सम्यकी बात करनेमें मी इसे रची-मार करना नहीं आई । अनावास ही कह गई, माके स्व वा पर खि नहीं थी । किस आचारपर एक ही मारे अर्पके

बाहर हाथ पसारकर मौन सफ़ती हूँ। पर आपको तो रात हुई या रही है। साथ बककर पहुँचा हूँ क्या ?”

अमित बचक होकर बोला ‘ नहीं नहीं मैं अकेला ही जा सकूँगा ! ”

तो जाइए। नमस्कार । ” कहकर वह अपने खेनेके कमरेमें लौट गई।

अमित दो-एक मिनट वहाँ खम्प होकर खड़ा रहा। फिर पुनःपाप धीरे धीरे नीचे उतर गया।

११

दिनभर तीसरा पहर है। खीसखी सीमा नहीं। आशु बाबूकी बैठककी खीसखी खिचकिची सारे दिन बन्ध रहती हूँ। मैं आरामपुरसीके दोनों हथेलीपर पैर फैलाकर गहरे मनोयोगके साथ पत्र पढ़े कुछ पढ़ खड़े थे। हाथके कागज़पर पीछेके दरवाज़ेकी तरफ़से एक छाया पड़ते ही मैं समझ बने कि अब ठमके नीकरकी दिवा-निशा समाप्त हुई है। बोले, कभी नींदमें तो नहीं उठ बैठे खुद, नहीं तो फिर बुझेया। खास तकसीफ़ न माक्स हो तो रजाईले बरा इस गरीबके पैर हक़ हो।”

नीचे कार्पेटपर रजाई पड़ी थी आगज्जुछने उसे ठठाकर उमके पैर नीचे तकनों तक अच्छी तरह हक़ दिये।

आशु बाबूने कहा “ हो गया, हो गया जवादा कतनकी खबरत नहीं। अब एक खुद देकर और बोझा तो भेजे—अभी तो दिन बाकी है। पर समझ रखना कि—कल, हौं, कल। ”

अर्थात् कल तुम्हारी नींदकी कभी ही जावगी। कोई जवाब नहीं जाया कारण मासिकके इस तरहके मन्तव्यसे नीकर अन्वगत हो चुका है। ऐसे उत्पन्न प्रतिवाद करना स्पष्ट है जैसे ही विवक्षित होना भी किञ्चन है।

आशु बाबूने हाथ बढ़ाकर खुद के सिवा और दिवातथाई अकनेके सम्बन्धे साथ करार मुँह ठठाकर देना। कुछ छन अमिमूलकी तरह हीग रहकर बोले नहीं तो खोब रहा या कि वह क्या खुदबाका हाथ है। इस तरह पैर हक़ना तो उसकी बीरह पीढ़ीकी भी न जानती होगी।”

कमरने कहा “ पर इपर जो हाथ जमा जा रहा है ! ”

आशु बाबूने स्पष्टताके साथ उसके हाथसे जम्ठी हुई दिवातथाई केकर देकर देकर और उस हाथको अपने हाथमें केकर उसे जोरसे छामने सीध सिवा। बोले, ‘ इतने दिनोंसे तुम्हें देया क्यों नहीं देती ? ”

वह उन्हें निश्चय-पूर्वक उसे बेटी कहकर पुकारा। परन्तु वह उन्हें कहनेके बाद स्वयं मात्स्य हो गया कि उनके प्रसङ्ग कोई माली नहीं होते।

कमल एक कुत्सी खीचकर बरा इत बैठना चाहती थी, पर उन्होंने उसे ऐसा नहीं करने दिया क्या 'वहाँ नहीं बेटी तुम मेरे बिलकुल पास आकर बैठो।' और उसे बिलकुल पास खीचकर बोले, 'आज भवानक कैसे कमल !' कमलने क्या आज बहुत ही चाहने क्या आपसे देखनेका—इससे बन्नी आई।"

आजु बाबूने उत्तरमें लिई क्या "अच्छ किना।" और इससे जवादा वे न बोळ सके। अग्यान्व सभी जोगोंके समाप्त उन्हें भी मात्स्य ना कि कमलका कोई संगी-साथी नहीं है, कोई उसके चाहता नहीं किसीके घर जानेका उसे अधिकार नहीं,—लिशान्त निःसंभ जीवन ही इस लक्ष्मीके बिलाना पक्ता है; फिर भी वह बात उनके मुँहसे न निकली कि कमल, तुम्हारी बल अभीमत हो छड़ीसे बन्नी आना करो और चाहे बिससे हो पर मेरे पास तुम्हें कोई संशेष नहीं होना चाहिए। इसके बाद शायद अपनेके अगावसे ही वे दो-तीन मिनट तक मानों अन्वमनरुद्धि तरह मीन रहे। उनके हावके अन्वय नीचे लिखक बानेपर कमलने उन्हें ठठ किना और उनके हावमें बैठे हुए क्या "आप प्य रहे से, मैंने असमयमें ही आकर साबद विप्र काम दिया।"

आजु बाबूने क्या नहीं। मैं प्य पुका। वो कुछ पोडा बहुत बानी है उसे बयेर प्ये भी काम पक सकता है और फनेकी इच्छा भी नहीं है।" बरा ठहरकर फिर क्या इसके सिवा तुम्हारे पके बानेपर मुझ अकेला रहना प्येमा; उससे अच्छा तो वह है कि तुम बातेँ करो, मैं सुनूँ।"

कमलने कहा मैं आपसे बिल-भर बातेँ कर सकूँ तो कहना ही क्या है। पर और सब जो नाराज होंगे।"

उसके मुँहपर हँसी होनेपर भी आजु बाबूने जोर पहुँची बोले बात तुम्हारी छठ नहीं कमल। पर जो जोग नाराज होंगे उनमेंसे यहाँ कोई मीचर नहीं है। जहाँके नवे मन्त्रिस्ट्रेट एक बंगाठी हैं। उनकी जैसे मन्त्रिणी मित्रता है, दोनों साथ साथ ककैरमें पकी हैं। दो दिन हुए वे यहीं पतिके पास आई हैं,—मधि उम्हेंके यहाँ बूने गई है, शायद रातको सीरेगी।"

कमलने हँसते हुए पूछा "आपने क्या कि जो जोग नाराज होंगे—सो एक तो मनोरमा हुई, और बाकीके और कौन हैं ?"

आशु बाबूने कहा "समी हैं। यहाँ ऐसी-सी कमी नहीं। पहले मासूम होता था कि अखिलेश्वरी तुम्हारे प्रति नाराजगी नहीं है, पर अब देखता हूँ कि उसका विरोध ही सबसे बड़का है। उसने तो अक्षय बाबूको भी मात कर दिया है।"

बह देखकर कि कमल चुपचाप झुल रही है, वे कदमे मये अब आवा बाँ तब उसे ऐसा नहीं देखा था अचानक दो छे तीन दिनों में मामो बह निकलून बदल गया है। अब अदिनाश्वरी भी ऐसा ही देखा रहा हूँ। इन सबोंने मिलकर मामो तुम्हारे विरुद्ध पड़वन्त्र-सा रच रखा है।"

अबकी बार कमल हँस दी बोली अर्थात्, कुकाकुके ऊपर बजावत। पर मुझ कैसी समाज और दुनियाके बहिष्कृत एक दुष्क भीरवके विरुद्ध पड़वन्त्र किन्तु। मैं तो किसीके घर जाती नहीं।"

आशु बाबूने कहा, "छो तो ठीक है। घरमें बह भी कोई नहीं आगता कि तुम्हारा घर क्यों है, पर इसकिए तुम दुष्क नहीं हो कमल। और इसीकिए वे लोग न तुम्हें मूल ही सकते हैं और न मात ही कर सकते हैं। तुम्हारी बर्बा कपूर किये तुम्हें कोसे बगैर इन्दे न बैन मिश्रता है न शान्ति।" कहते कहते वे अचरित्याय हाथके कापजोंको उठाकर बोले बह क्या है आगती हो। अक्षय बन्धुकी रचना है। अमेजीमें नहीं छोटी तो तुम्हें सुनावा। नाम धाम नहीं है पर झुस्ते आखिर एक सिर्फ तुम्हारी ही बातें हैं, तुम्हींपर इमत्य है। एक मजिस्ट्रेट साहबके घरपर सुनते हैं नारी-अस्वाभ-समितिवा उदाहरण होया, यह उसीका मंगल अनुष्ठान है।" बह कहकर बन्धोंने उसे पूर बैक दिया और कहा "बह सिर्फ निरन्त्र ही नहीं है, बीच-बीचमें किस्तेके तीरपर पात्र-यंत्रियोंके मुहसे इसमें तरह-तरहकी बातें भी कहलवाई गई हैं। इसकी मूल नीतिके साथ किसीका विरोध नहीं—विरोध हो भी नहीं सकता। पर इसमें बही बात नहीं व्यक्ति विशेषपर कबम-कदमपर आगत करते रहनेमें ही मामो इसका आनन्द है। पर असबका आनन्द और मेरा आनन्द एक नहीं है, कमल। इसे तो मैं बख्ख नहीं कह सकता।"

कमलने कहा पर मैं तो इस डेराको सुनने नहीं आईगी—किर सुलतार चोट करनेकी सार्यक्या क्या हुई।"

आशु बाबूने कहा 'कुछ भी सार्यक्या नहीं, इतीसे साबर उन ज्येनेने मुझे फनेने दिया है। खेबा होया हबतमेंसे मुझी-भर ही राठी।' इस बूतेके हु-क देकर अिठना खोम मिश्रता का चके उठना ही बख्ख।" कहते

हुए उन्होंने हाथ बढ़ाकर फिर एक बार कमलको अपनी ओर खींचा। इस स्पर्श मात्रमें फिटनी उन्हें थोड़े कमल सबकी सब तो मछी समस्त सबी फिर भी उसका अन्तःकरण न जाने कैसा हो उठा। वह जरा ठहरकर बोली आपकी कमबोरीको तो उन लोगोंने ताड़ लिया पर आपके भीतरके असल आत्मीको ये नहीं पहचान सके।”

“क्या तुम्हने पहचान लिया है बेटी।”

आवह उन लोगोंसे जवाब।

आम्र बाबूने इसका उत्तर नहीं दिया बहुत बेर तक मीरब रहकर ये धीरे धीरे करने लगे, सभी सोचते हैं कि हमेशा कुछ रहनेवाले इस बूढ़के समान सुखी कोई नहीं। बहुत रसना है, अपनी जमीन-जाबदाद—

“पर वह तो छूट नहीं।”

आम्र बाबूने कहा छूट नहीं। धन और सम्पत्ति मेरे अपनी है, पर वह आत्मीके लिए फिटना-सा है कमल।”

कमल हँसती हुई बोली बहुत है आम्र बाबू।”

आम्र बाबूने गरदन फेरकर उसकी तरफ देखा फिर कहा “अगर कुछ खावा न करो तो तुमसे एक बात कहूँ,—

कहिए।”

“यै बुढ़ा आत्मी है, और तुम मेरी मन्थिरी उमरकी हो। तुम्हारे मुँहसे अरना नाम मेरे बूढ़के कमलमें न जाने कैसा कटकना है कमल। तुम्हें कोई एतराब न हो तो तुम मुझे जाबानी कहा करो।

कमलके आश्चर्यका ठिकाना न रहा। आम्र बाबू करने लगे, ख्यालत है कि रिक्तपुत्र मामा न होनेसे तो क्या मामा ही अच्छा; मैं क्या न सही पर सँगहा कर हूँ, गठिनासे साधार। बाजारमें आम्र बेचकी कानी कानी कीमत मछी।” फिर उन्होंने हँसकर बौतुको साब हाथका बैंगुठा दिख्यते हुए कहा “न हो तो क्या है बेटी लेकिन जिसके फिता जिन्दा नहीं उसके इतने छडी होनेसे काम नहीं बढेगा। उसके लिए बैंगुठा खावा भी अच्छा।

दूसरे पलसे जाब न पाकर ये फिर करने लगे, कोई अगर बिनाये कमल, तो उसे बिनबके साथ करना मेरे लिए इतना ही बहुत है। करना मरीबके लिए रीव ही सेना है।”

बनकी दुरसीके पीछे बैठे कमल छतकी ओर बाँके किये मौसू रोक्नेकी कोशिश करने लगी कुछ खावा न दे सही। इन दोनोंमें कहींसे भी कोई मेल नहीं और सिर्फ अनात्मनीय-आपरिपयका ही चर्चस्त चलता नहीं है बल्कि

शिक्षा संस्कार, रीति-नीति गार्हस्थिक और सामाजिक व्यवस्थाओं में जो जोनों में कितनी अवस्थाएँ सुदृढ़ हैं। जहाँ कोई सम्बन्ध ही नहीं वहाँ किन्हीं एक सम्बोधनके लक्ष्य ही सहे बौध रचनेकी पुरातनके देव कमपत्नी जीवोंमें बहुत दिनों बाद मात्र बौध मर जाये।

आप्त बाबूने पूछा क्यों विटिया कह सकेगी ?

कमलने समझते हुए बौधुओंके संन्यास हुए किन्हीं इतना कहा नहीं।

“ नहीं ! नहीं क्यों ? ”

कमलने इस प्रश्नपर उत्तर नहीं दिया दृष्टी बात ठेक ही। बोझी अश्रित बाबू कहते हैं :—

आप्त बाबू कुछ देर चुप रहकर बोले “ क्या मासूम शावर करपर ही होना। ” फिर कुछ देर मौन रहकर धीरे धीरे कहने लगे, कई दिनोंसे मेरे पास विशेष आठा जाता नहीं और शावर वह नहींसे कभी ही जायगा। ”

“ क्यों जायेंगे ? ”

आप्त बाबूने हँसकर प्रवास करत हुए कहा बड़े भारीको सब लोभ क्या सब बर्से बटाते हैं, विटिया ! नहीं बटाते। शावर करपर ही नहीं समझते बटानेकी। बरा ठहरकर बोले “ सुना होगा शावर, मयिके साथ उद्यम सम्बन्ध बहुत दिनोंसे सब था, सहासा मासूम हो रहा है कि दोनोंमें किनी बस्तपर झगडा हो गया है। कोई किनीके साथ अच्छी तरह बात ही नहीं करता। ”

कमल चुप हो रही। आप्त बाबू एक गहरी साँस लेकर बोले ‘ जयशंकर मासूम हैं, जगदी इच्छा। एक माने-बचानेमें उन्मत्त है और दूसरा अपने पुराने अन्धरासोंके मव प्यासके ठीक करनेमें लग गया है। इस समय यही तो चल रहा है। ”

कमलसे अब चुप नहीं रहा गया कुदरतके मारे पूछ बैठे “ पुराने अन्धरास क्या ? ”

आप्त बाबूने कहा “ बहुत-से हैं। पहले गेझा पहलकर संन्यासी हुआ फिर मयिके प्रेम किना देसोदारके अममें बैक मवा वितायत आकर ईश्वरिभार हुआ वहाँसे वापस आनेके बाद पुरस्व होनेकी इच्छा हुई,—पर किन्ध्यात शावर वह कुछ बदल गई है। पहले मौस-मछली नहीं खाता था उसके बाद जाने क्या या अब देखता है कि कम-वरसेसे फिर छोड़ बैठा है। अब

बहता है, बाबू ज्ये ज्ये भर कमरेमें बैठे नाक मूँदकर योगाभ्यास किया करते हैं।”

“ योगाभ्यास करते हैं।

‘ हों। नौकर ही कह रहा था, बेशक झूठते समय शामप काही बतरकर समुद्र-यात्राके लिए प्रावबिध करता जायगा।

कमलने अत्यन्त आश्चर्यके साथ कहा “ समुद्र-यात्राके लिए प्रावबिध करेंगे। अर्धित बाबू ?’

आशु बाबूने फिर हिसात हुए कहा “ वह कर सकता है। उसमें सबैगोमुखी प्रतिमा है।”

कमल हँस ही। कुछ कहना ही पाहती थी कि इतनेमें दरवाजेके पास किसी आदमीकी छाया दीख पड़ी और जिस नौकरने इतने विभिन्न प्रकारके संवाद मास्किन्धो पहुँचाने से बड़ी सतर्कता या खडा हुआ, और उसीने एतसे बढ़कर फट्टेर संवाद यह दिया कि अविनास अख्य इरेन्द्र अर्धित आदि बाबुओंका एक आ रहा है।—मुनकर सिर्फ कमलका ही नहीं बल्कि बन्धुसर्वके आममन होनेपर अष्टवर्धित ब्रह्मासे अभ्यर्चना करना अिनका स्वभाव है उन आशु बाबू तकका मुँह खल गया। अन्ध-भर बाद आममुक्त शिष्टसमुदाय कमरेमें जुमते ही आश्चर्यचकित हो गया। अरण यह बात उनकी अल्पनाके बाहर थी कि यह औरत नहीं इस तरह मिल सकती है। इरेन्द्रने हाथ उठाकर कमलको नमस्कार करके कहा ‘ अर्धित तो हैं। बहुत दिनोंसे आपसे सेवा नहीं।”

अविनासने हँसने जैसी मुखाल्पति करके एक बार हपर और एक बार हपर परदन हिन्दाई अिसका कोई अर्थ ही समझमें नहीं आया। अख्य सीधा आदमी ठहरा। वह सीधे मार्गसे आया और सीधे अमिप्रामसे एकरकी तरह अन्ध-भर सीधे असे रहकर एक अँकसे अदहा और दूसरीसे विरक्ति बरसावा हुआ एक कुर्सी अँककर बैठ गया। आशु बाबूसे अझने पूछा ‘ मेरा अर्धिकल क्या ?” यह पूछनेके बाद ही अकी नजर मिष्टीमें खेचते हुए अझने केअपर पड़ी। उसे यह अद ही अठामे आ रहा था कि इरेन्द्रने उसे रोकते हुए कहा ‘ रहने दीजिए न अख्य बाबू, साइ अमाते एक नौकर ही कँक देगा।”

उसका हाथ अलग करके अख्यने अमन उठा अिने।

हों पड़ अिना।” अते हुए आशु बाबू अठके बैठ गये। अँक उठाकर देखा कि अर्धितने अरके खीफेर बैठकर अके अख्यारपर नजर डौकाना शुरू

कर दिया है। अविनाशने कुछ करनेका मौका पा जानेसे एक छन्तीकरी सीध
की और चला। धिरे भी लड़क्या के लड़क्ये आखिर तक प्यानसे पदा है
आसु बाबू। अविनाश बाते सब और गून्ववात् हैं। देखके सामाजिक
स्वरत्वाका अमर सुधार किना बाब तो उसे अच्छी तरह जाने हुए और परके
मार्गपर ही करता चाहिए। हम मानते हैं कि मोरोपके समायमसे हमने बहुत सी
अच्छी चीजे पाई हैं और अपनी बहुतेरी त्रुटियोंके हमने देखा है परन्तु हमारा
सुधार हमारे अपने मार्गपर ही होना चाहिए। हमरोके अनुकरमसे हमारा
कम्मान नहीं हो सक्ता। भारतीय नारीकी जो शिक्षिता है जो उसकी अपनी
पीठ है अवर ओम और मोहके बंध होकर हम उससे उसे ब्रह्म करे तो हम
हर तरफसे अघब्रह्म होंगे।—ठीक है कि नहीं अलग बाबू।”

बाते अच्छी हैं और सब अच्छे बाबूके देखके हैं। विनय-वज्र उम्होंने मुँसे
और कुछ नहीं कहा पर आरम-औरकी अनिर्वचनीय सुमिते आये मुँसे नेत्रोंसे
कई बार सिर हिलाया।

आसु बाबूने निश्चयतासे स्वीकार करते हुए कहा इस विषयमें तो कोई
तर्क नहीं अविनाश बाबू। अनेक समीची अनेक निमित्तोंसे यह बात कहते आये
हैं, और शाब्द भारतका कोई भी आदमी इनका विरोध नहीं करता।”

अच्छे बाबूने कहा करनेका रास्ता ही नहीं और इनके अन्तका और भी
एक विषय है जो इस क्षेत्रमें लिखा नहीं गया है किन्तु यह नारी-अन्तका
समित्तोंमें मैं अपने मापनमें कहूँगा।”

आसु बाबूने कमलकी तरफ मुँह फेरकर कहा तुम्हारे लिये तो समित्तोंकी
तरफसे निर्ममण जाना नहीं है तुम वहीं नहीं आओगी। मैं भी पठितासे
जाचार हूँ। मैं मझे ही न आरु पर है यह तुम्ही स्वेपोकी मन्मई पुराईकी बाल।
अच्छे कमल तुम्हें तो इन बातपर आपत्ति नहीं होनी।”

और किमी समय होता तो आरुके दिन कमल चुप ही रहती पर, एक तो
उसका मन यों ही अमानिसे मरा हुआ था सुने इनके आदमियोंकी इन पीछे
हीन संवदता और अन्तकी प्रतिपत्तासे उसके मनमें एक आव-नी अम उठी।
परन्तु अपनेको नकामात्वं संवत करके यह मुँह उठाकर हैसती हुई बोली
कीन-सी बातपर आसु बाबू! अनुकरमर या भारतीय विच्छिन्नपर।”

आसु बाबूने कहा मान लो कि दोनों ही पर।”

कमलने कहा, ‘अनुकरम चीज अपर किर्के बाहरकी अच्छे हो तो यह

बोका है अनुकरण है ही नहीं; क्यों कि तब वह भावस्थिति मेल करते हुए भी प्रकृतिसे नहीं मिलती। मगर, मीनर-बाहरसे वह अगर एक-सी हो तो अनुकरण होनेके कारण सजिष्ठ होनेकी उधमें कोई भी बात नहीं।”

आहु बाबूने फिर दिखाते हुए कहा है क्यों नहीं कमल है। उस तरह सर्वांगीण अनुकरणमें हम अपनी विशेषता को बैठते हैं। उसके साथी है अपनेसे बिल्कुल ही को बैठना। इसमें अगर कुछ और मज्जा नहीं, तो किसमें दिक्ताओ ?”

कमलने कहा ‘ मझे ही को बैठे आहु बाबू। भारतके वैशिष्ट्य और ओपेपके वैशिष्ट्यमें क्या मारी मेव है, परन्तु किसी देशके किसी वैशिष्ट्यके लिए मनुष्य नहीं है बल्कि मनुष्यके लिए ही उस वैशिष्ट्यका आधार है। असल बात बिना-नहीं वह है कि वर्तमान समयमें वह वैशिष्ट्य उसके लिए क्या-क्या है या नहीं। इनके सिवा और सब बातें सिर्फ अन्व-मोह हैं।”

आहु बाबूने स्पष्टि होकर कहा सिर्फ अन्व-मोह ही हैं कमल उससे पता कुल नहीं ?”

कमलने कहा नहीं उससे जवाब कुल नहीं। किन्तु इसीलिए कि किसी एक बातकी कोई एक विशेषता बहुत दिनोंसे कमी आ रही है क्या उस देशके मनुष्योंके अपने बस्वाक-अवस्वाकका ख्याल किये बगैर कहीं सीधेमें हमेशा बसते रहना होगा ? इसके क्या मापी ? मनुष्यसे बढ़कर मनुष्यकी विशेषता नहीं हो सकती और इस बातको जब हम मूल बात हैं तब विशेषता भी खती रहती है और मनुष्यको भी हम को बैठते हैं। नहींपर तो वास्तविक मज्जा है आहु बाबू।”

आहु बाबू माओ इतनुदि-से हो गये बोले तब तो फिर सब एकाकार हो जायगा ? भारतीयके कर्ममें तो फिर हमें पहचाना भी नहीं आ सकेगा। इतिहासमें ऐसी कथाओंकी सखी भी मौजूद है।”

आहु बाबूके कुम्भित और विस्तृत चेहरेकी तरफ देखकर कमलने ईसते हुए कहा तब मुनि-श्रुतियोंके बंधनके कर्ममें मझे ही पहचाना या ज्ञान पर मनुष्यके कर्ममें तो हमें पहचाना ही जायगा और जिसे आप ईश्वर कहा करते हैं, वह भी पहचान लेगा बसते भी गमती न होगी।”

कमलने बड़ासके टंगसे चेहरेको बन्दे बनावकर कहा ईश्वर सिर्फ हम ही स्वेयोद्य है ? आपका नहीं ?”

कमलने बचाव दिया नहीं।”

जलबने क्या " वह सिर्फ शिनाबकी प्रतिष्ठा है दिखाई हुई बात है। "

हरेन्द्र बोले उठा " बूढ़ । (हिस पस ।)

" देखिए हरेन्द्र बाबू — "

देख रहा हूँ । पीछे । " (पस ।)

जाधु बाबू खड़ा मानो स्वप्नोन्मत्तकी नौति जाग उठे । बोले " देखो कमल, इसरोकी बात में नहीं क्या बाधता पर हमारा भारतीय वैशिष्ट्य सिर्फ बात ही बात नहीं है । इसका क्या जाला किन्ही कबरस्तल छति है, उद्यम स्थान जगाना दुस्ताथ है । किन्ने बर्मे, किन्ने जावर्ष किन्ने पुराण-दृष्टिदास कमल उपासमान छिप्य — किन्नी किन्नी अमुक्त सम्पदाएँ, — सब कुछ इसी वैशिष्ट्य पर ही तो आश्रित जीवित है । फिर इनमेंसे तो कुछ भी नहीं रह जायगा । "

कमलने क्या रहने रखनेके लिये जाँचिए इतनी स्वाभुक्तता क्यों ? जो जानेके नहीं सो नहीं जाँचेंगे । मनुष्यकी स्वाभुक्तताओंके अनुसार फिर वे नवीन रूप नवीन सौन्दर्य नवीन मूक केकर दिखाई देंगे । बड़ी होमा उनका सपना परिषय । कमलचा लिये इमीलिय कि बहुत दिनोंसे कोई जीव है उसे और भी बहुत दिनोंतक पकने रहना होगा — वह वही बात है । "

जलबने क्या इसके सम्मन्नेकी शक्ति नहीं है आपमें । "

हरेन्द्रने क्या " आपके अक्षिय व्यवहार पर मुझे भावित है अजन बाबू ।

जाधु बाबूने क्या " वह मैं नहीं करता कमल कि तुम्हारी बुद्धिमें सत्य नहीं पर जिसकी तुम अज्ञाते उपेक्षा कर रही हो उसके भीतर भी बहुत-सा सत्य है । जाला कारणसे हमारे सामाजिक विधि-विचामोतर तुम्हारी अज्ञा हो गई है । मगर एक बात मत भूलो कमल कि बाहरके बहुत-से सत्यात हमें सत्ये पके हैं, फिर भी ये आश्रित हम अपनी सम्पूर्ण विशेषताओंके लिए विन्दा हैं तो केवल इमीलिय कि हमारा आचार सत्य वा । संसारकी बहुत-सी बातोंको विस्तृत सत्य हो चुकी हैं । "

कमलने क्या " तो इसमें भी कुछ किम बातछ है ? हमेंसा उन्हें जगह देते नठे रखनेकी भी क्या आवश्यकता है ? "

जाधु बाबूने क्या " यह दूसरी बात है कमल । "

कमल करने लगी " मझे ही हो । जिलाधीसे मैंने सुना था कि जावर्षकी एक शाखा योरोपमें बाहर रहने लगी थी जाला वह नहीं है । मगर उनके

बढ़के जो हैं, वे और भी बढ़े हैं। ऐसा ही अगर नहीं होता तो उनकी तरह ही हम लोग भी आज पूर्व-पितामहोंके लिए शोक करने न बैठते और न अपने लगातन वैशिष्ट्योपर धम्म करते हुए दिन ही गुमारते। आप यह रहे वे जती उनके उपद्रवोंकी बात पर यह भी तो सझ नहीं रहा था सझता कि उनसे भी बढ़कर उपद्रव मन्दिमें हमारे मागमें नहीं बढ़े हैं या हमारी घाटी ही अजबके सज चुकी है। तब हम लोग जीवित रहेंगे किसके बलपर बतलए मझ।”

आस्र बाबूने इस प्रसन्न उत्तर नहीं दिया; मगर अखर बाबू बहैस हो उठे बोले तब भी हम जीवित रहेंगे अपने उस आदर्शकी निश्चिताके बलपर जो कि हजारों पुत्रोंसे हमारे मनमें अविच्छिन्न बना हुआ है। जो आदर्श हमारे दानमें हमारे पुत्रोंमें हमारी तपस्यामें मौजूद है जो आदर्श हमारी नारी जातिके अक्षय सतीत्वमें निहित है हम उसीके बलपर जीवित रहेंगे। हिन्दू कभी नहीं मरते।”

अजित हायकर अखबार बँककर उनकी तरह जौंसे चढ़ चढ़कर देखता रहा और सज-भरके लिए कमस भी चुप हो रही। उसे क्यास जा मवा कि निबन्ध लिखकर इसी आदमीने उपपर अक्षरान आक्रमण किया है। उसे यह सज नारी जातिके अक्षयके लिए अनेक नारियोंके समस ईमके साथ फेगा और उसमें घारेके घारे फटास सिर्फ उसीको अक्षर-करके किये हैं। दुर्भव कोचसे उसका बेहरा सुर्ल हो उठा परन्तु इस बार भी उसने अपनेको सँभाल किया और स्थानान्तरण करके कहा आपके साथ बात करनेकी मेरी इच्छा नहीं होती अखर बाबू मेरे आत्म-सम्मानमें चोट लगती है।” यह कहकर वह आस्र बाबूकी तरह मुँह फेरकर बहने लगी बही बात मैंन आपसे कहनी चाही थी कि कोई भी आदर्श सिर्फ इसीलिए कि वह बहुत कमस तक स्थानी रहा है निरस स्थानी नहीं हो सझता और उसके परिवर्तनमें भी सझाकी कोई बात नहीं उससे जातिकी विशिष्टता भी अगर जाती हो तो भी। एक उदाहरण देती हूँ। अतिथि सखर हुआ एक बड़ा आदर्श है। कितने काय्य कितने क्यानस, कितनी धर्मकथाएँ इसपर रची जा चुकी हैं। अतिथिको सज करनेके लिए शता कर्मि पुत्र तककी हसा कर दी थी। इस बातपर न जाने कितने आदमियोंने जौंसु बहाये हँसि। फिर भी वह धर्म आज सिर्फ इतिहास ही नहीं बल्कि धीमस्य माना जाववा। एक सती स्त्रीने पतिको अखर रखकर मन्दिअस्य पहुँचा दिया था,—सतीत्वके इस आदर्शकी भी बिती दिन गुमना नहीं थी—मगर आज

ऐसी घटना क्यों हो जान तो वह मनुष्यके हृदयमें सिर्फ पृथा ही उत्पन्न करेगी। आपका अपने जीवनका जो आदर्श जो ध्यान श्रेणोंके मध्यमें भ्रष्टा और विरमयका कारण हो रहा है, किसी दिन ऐसा जा सकता है जब वह सिर्फ धनुष्मपाकी बात रह जायगी और उस निष्कल आत्म-निग्रहकी व्यावृत्तीपर श्रेय उपहास करके चले जायेंगे।”

इस आपत्तकी विरमयतासे अहमे मरके किए आशु बानूका बदरा बेरनाये पीला वह गया। वे बोले कमल इसे निग्रहके रूपमें ले क्यों रही हो वह तो मेरा आत्मन् है। वह तो मेरा उत्तराधिकार-सूत्रसे प्राप्त अनेक सुपौत्र पन है।

कमलने कहा हो अनेक सुपौत्र। सिर्फ बर्ष मिनकर ही आदर्शका मूल्य नहीं बौंधे जाता। जबकि अत्यन्त बलप्रियसे भरे समाजक हमारों बर्ष भी सम्भर दे, मनुष्यके इस कार्यके पति-विगमि वह जायें। वे हम कर्य ही उन हमारों बर्षोंमें बहुत उवादा बने हैं आशु बानू।”

अभिहित अक्षरमान् बनुष्मसे श्रेयें हुए तीरकी तरह सीधा खड़ा हो गया। बाला आपकी बातोंकी उमत्तासे इन श्रेणोंके धारक आश्चर्यका ठिठकना न रहा होना; मगर मुझे जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ। मैं जानता हूँ कि इस विज्ञानीय मनोमावका मूल स्रोत क्यों है। किन्तु किए हमारे समस्त संकल-आदर्शोंके प्रति आपकी इतनी अक्षरदस्त पृथा है। मगर जबकि अब हमारे पास स्वर्भ हेर करनेका बच नहीं है, शीव बच बचे।”

अभिहित पीछे पीछे सचके सब सुनबाण कमरेसे बाहर निकल बने। किन्तीन उससे अभिवादन तक नहीं किया, और न किसीने उसकी तरह मुचकर देला ही। बुद्धिजी अब हार मानने लगीं जब इस तरहसे पुष्पकेक दकने विज्ञय बोधका करके अपने पीप्यसो कायम रखा। उन श्रेणोंके चले जानेपर आशु बानूने पीरे पीरे कहा “कमल मुझपर ही आज तुमने सचसे उवादा बोध पहुँचाई है किन्तु मैंने ही आज तुम्हें मानों संपूर्ण हृदयसे प्यार दिया है। मेरी मजिसे मानों किसी अंसमें भी तुम कम नहीं हो मेरी।”

कमलने कहा “इसका कारण यह है कि आप सचमुचमें महाम् पुष्प हैं बाबाजी। आप तो इस सचों जैसे निष्ठा नहीं हैं। पर मेरा भी उमय निष्कल जा रहा है मैं जानती हूँ।” इतना बटकर उठने उनके पीरोंके पाम बाहर सुकने

प्रथम वह साधारणतः किरीको भी नहीं करती। आज उसके इस बनहोने व्यापारसे आहु बानू अचल हो उठे। आशीर्वाद देते हुए बोले अब वह आम्बोयी बेटी !

“अब साबद मेरा आना न होगा चाचाजी।” इतना कहकर वह कमरेसे बाहर चली गई और आहु बानू उसकी तरफ देखते हुए चुपचाप बैठे रहे।

१२

आपरेके नये मखिष्टेदकी क्रीडा नाम है माकिनी। उन्हीके प्रकलसे और उन्हीके मकलपर मारी अन्वान पमिठिनी रचापना हुई। प्रथम अविबैतनकी तैवारियों बरा कुछ समारोहके साथ ही हुई थीं; किन्तु अविबैतन अच्छी तरह सम्पन्न तो हुआ नहीं, बल्कि उसमें न जाने कैसी एक विशङ्कन-सी पैदा हो गई। बात मुकलतः यह थी कि यद्यपि आन्दोलन सब किबोके लिए ही था पर पुरुषोंके शरीर होनेकी भी मनाही नहीं थी बल्कि देखा जाय तो इस आन्दोलनमें पुरुष ही कुछ विशेषतासे निर्मित हुए थे। इसका मार वा अविनाशपर। मनमहीक केचकके शीरपर अल्लकल नाम था; और केबोका दानित उन्हीने प्रकल किया था। अतएव उन्हीके परामर्शके अनुसार एक दिनमाचके सिवा और किरीको भी छोड़ा नहीं गया था। अविनाशकी छोटी छोटी नीतिमा पर पर बाहर बनीसे केकर गरीब तक शहरकी सभी बंपाकी विष्ट महिअ कोसे आनेके लिए अनुरोध कर जाई थी। सिर्फ, जानेकी इच्छा नहीं थी आहु बानूकी पर मठिमाके दर्दने आज उनकी रक्षा नहीं की माकिनी वह आकर उन्हें पकड़ के गई। अद्यय अपना व्याख्यान हायमें सिने तैवार वा मामूली विनक-भादपके प्रचलित से-चार शब्दों बाह वह सीपा और फडोर होकर बजा हो मवा और व्याख्यान पपने लया। बोली ही देरमें ऐसा लया कि इसका बचक्य विषय बैसा अद्ययिकर है बैसा ही लया मी। साधारणतः मता हुआ करता है, प्राचीन कालकी सीता-सावित्री आदिक उल्लेख करके उसने आधुनिक मारी-मठिनी आदर्श-हीनतापर फटाफट किये थे। एक आधुनिक और सिधिता महिमाके परपर उन्हीकी तबाकपित सिद्धाके विरुद्ध कबरी बातें करनेमें उसे संकोच नहीं हुआ। अरुण असायको पर्व वा कि अश्रिव सत्य करनेमें वह करता नहीं। सिद्धा व्याख्यानमें सत्य हो जाहे न हो अश्रिव बचनोंकी कमी नहीं थी।

धीर उस तपाकवित सम्पत्की स्वास्वाकं स्वयमे विच्छिन्न उदाहरणकी जड़ी
 वी कमक । इस अनिमन्त्रित स्त्रीके प्रति अध्वयके स्वास्मानमे इतना
 अपमान या कि जिसकी हर नहीं । अन्तके अन्तमे वह गहरे दुःखके साथ य
 धन्य करनेके सिन् मन्त्र हो गया कि इसी स्त्रिये ठीक एसी ही एक स्त्री
 भीख है, जो सिद्ध समाजमें बराबर प्रभव पा रही है । ऐसी स्त्री जिसने
 अपने दाम्पत्य जीवनके अनेप नामकर नी लज्जित होना तो बुरा खा सिर्फ
 बनेछाकी हसी हसी है, जिसके सिन् विवाह-अनुष्ठान सिर्फ अर्बहीन संस्कार
 मात्र है और पति-पत्नीका अत्यन्त एकनिष्ठ प्रेम जिसकी इष्टिम महज मानसिक
 कमजोरी है । उपसंहारमें अध्वयने इस बातका भी स्मरण किया कि नारी होकर
 भी जो नारीके सम्मीरतम आदर्शको अस्वीकार करती है, तपाकवित उस विच्छिन्न
 पारीके अप्सुष्ट विक्षेपक और वास-स्वानके निर्णयमें बचक्ये अपनी तरफसे कोई
 संभव न होनेपर भी सिर्फ संश्लेषक्य वह उसे बतानेमें असमर्थ है । इस दुष्टिके
 सिन् वह सचसे क्षमा चाहता है ।

वर्तमान महिला-समाजमें मनोरमाके विवा और किसीने उसे आँखोंसे नहीं
 देखा था । परन्तु उसके रूपकी स्वाति और चरित्रकी अस्वातिने हरेक पुरुषके
 मुहपर चङ्कर व्याप्त होनेमें कसर नहीं रखी । वही तक कि इस नव प्रतिष्ठित
 नारी-कम्पाक-समितिकी समानेत्री मास्त्रीके कानमें भी वह पहुँच चुकी थी
 और इस विषयको लेकर नारी-सङ्घमें परदेके भीतर और बाहर कुतूहलकी
 सीमा न रही थी । इसलिये, यदि और नीतिके सम्बन्ध विचारके उदाहरते
 उचित प्रश्नमात्रकी प्रसरतासे स्पष्टिगठ आत्मेचना तीव्र हो उठनेमें सावर
 देर न लगाती किन्तु बचक्य परम मित्र हरेक ही इसमें कठोर प्रतिबन्धक
 हो उठा । वह सीधा उठके पड़ा हो गया और बोला अध्वय वाचूके इस
 निबन्धक्य में पूर्णतः प्रतिहार करता हूँ । सिर्फ अप्रार्थिक होनेकी वजहसे ही
 नहीं—किन्ती भी महिलापर उन्की धर्मोद्धारणीमे आक्रमण करनेकी इति
 नीत्यन्ती (पासविक) और उसके चरित्रका अकारण उल्लेख करना अतिशय
 और देव है । नारी-कम्पाक-समितिकी तरफसे "म निबन्धक्य-केन्द्रकी विचार
 देना चाहिए ।"

इसके बाद ही एक महामारीक-सा कण्ड उठ गया हुआ । अध्वय दिवाहित
 ज्ञानशून्य होकर जो मनमें आया करने लगा और उसके उत्तरमें रस्य-भावी
 हरेन्द्र वीच-वीचमें बीरट ' और ' हू ' चङ्कर उच्चार देने लगा ।

माझिनी गई गई ही इनके सम्पर्कमें आई थी, उहसा इस तरहके बाबू-
नित्यवादी उम्रतासे बची बाकतमें पढ़ गई और इस उतोबवाके प्रबाहमें अपना
मतामत प्रकट करनेमें किटीने भी कंबूलीसे काम नहीं किया। चुप रहे सिर्फ एक
आसु बाबू। निबन्ध पढ़े जानेके प्रारम्भसे ही जो वे गरदन झुकाकर बैठे सो समा
बतम होने तक फिर उठने में ही नहीं उठया। और भी एक आदमीने इस
दर्शनमें छाप नहीं दिया और वे वे हरेन्द्र-अशुबकी बातचीतके नित्य-अभ्यस्त
अविवाच बाबू।

इस बातको माझिनी जानती थी कि व्यक्ति-विशेषके चरित्रकी भर्त्सना-पुराई-
निरूपण करना इस समितिका कर्म नहीं है और इस प्रकारकी आलोचनासे
नर नारीमेंसे किसीका भी कल्याण नहीं होता। इस बातको भी किसी तरह
माझिनी समझ गई कि निबन्धमें आसु बाबूपर भी विशेष कटाख किया गया
है और इससे उनको अत्यन्त क्रोध हुआ है। तमा मंग होनेके बाद वह
चुपकेसे अपना आसन छोड़कर इस प्रीति व्यक्तिके पास आकर बैठ गई और
कश्चित्त धुंध कपटसे बोली “ निरर्थक आत्र आपकी शक्ति नष्ट करनेके लिए
शुक्ति है आसु बाबू। ”

आसु बाबूने हंसकेरी बोधित करते हुए कहा “ करमें भी मैं अकेल ही
बैठा रहता। वही कर्मसे कर्म समय तो कट गया। ”

माझिनीने कहा “ वह इससे अण्डा या। ” फिर जरा ठहरकर कहा “ आज
वे ही नहीं यहाँ मणि यहाँसे खा-पीकर जायगी। ”

अपकी बात है, मैं यहाँसे आकर पाकी मेज हूँ। [केकिन और एक किराँ।]”

वे भी सब आज नहीं जीमेंगी ! ”

अकिवाच और अकिस्के छात्र आसु बाबू गाँवमें बैठ ही रहे वे कि हरेन्द्र
और अशुब का घमके। उन्हें भी पहुँचा देना होगा। राजी होना पया। उरते
नर आसु बाबू मीन रहे। निरन्तर उन्हें इस बातका खबल होता रहा कि
कमबको कर्म करके त्रिविकि शीव अशुबने उनपर अहित कटाख किया है।

पाकी घरपर पहुँची। नीचेके बरामदेमें एक परिचित आदमी बैठा या।
बम्बईवाले किसी उसकी पोसाक थी। पास आकर आसु बाबूका उरने अनेकीमें
अविवाच किया।

“ क्या है ? ”

जवाबमें उसने एक परना हाथमें बैठ हुए कहा "बिट्टी है।"

बिट्टी उन्होंने अश्रितके हाथमें दे दी। अश्रितने उसे मोटरकी बत्तीके सामने के जाकर पढ़ा बोला "कमलकी बिट्टी है।"

"कमलकी? क्या मिया है कमलने?"

"मिया है पत्र के जानेवालेसे सब मासूम होगा।"

आशु बाबूके पिताशु खेदसे उसकी तरफ देखत उसने कहा "उनकी इच्छा नहीं थी कि वह बिट्टी और बिट्टीके हाथ पड़े। आप उनके अपने आदमी हैं। मेरे तमपर कुछ रुपये चाहिए थे।

बात खतम भी न हुई थी कि आशु बाबू उसका अत्यन्त क्रोध हो उठे बोले "ये उसका अपना आदमी नहीं है, अतलमें वह मेरी कोई नहीं होती। उसकी तरफसे मैं क्यों रुपये देने लया।"

गाड़ीमेंसे अश्रितने कहा 'कसर लाइक हर। (ठीक उरीकी तरह)

बात समीक क्षणमें पूरी। पत्रवाहक भस्म आदमी था। स्वरिक्त होकर बोला 'इसमें आपको नहीं देने होंगे, ये ही रंगी। आप तिरुं कुछ दिनोंके लिए जायिन हो जामें लो—"

आशु बाबूका गुस्सा और भी बढ़ गया। उन्होंने कहा "अश्रित होनेकी गर्ज मेरी नहीं है, उनके प्रति है कर्मकी बात उगड़ीसे करिएगा।"

भस्म आदमी अत्यन्त विरिमत हुआ बोला "उनके पतिकी बात लो भिने सुनी नहीं।"

'पता लगानेसे मुन लगे। गुड़ मारू। जानो अश्रित अब रेर न करो। कहकर वे उसे कैर ऊपर चढे गये। ऊपरके साहबवाले बराबरेसे चौककर फिर एक बार साहबवाले बाद दिना दिया कि मखिरदेउ साहबकी खेटीवर मासी पतुंवालेमें डेर नहीं होनी चाहिए। अश्रित लीबा जामे कमरेमें जा रहा था पर आशु बाबू उसे जगनी बैठकमें से गये, बोले "देने। देख मिया मया।"

दुन बाबूके मानी क्या हुए, अश्रित समझ गया। वास्तवमें उनकी सामा-
रिक लक्ष्यता, धाम्तिरिक्ता और विराभरत सहिष्णुताके साथ उनकी इन
छान-भर पदकेकी अक्षरन और अचकेनी इरादाने एक अछकके सिवा शानद
और सिगीको भी आपत पतुंवालेमें कमर नहीं रखी। बरैर कुछ जामे एक
दिन इस रहस्यमयी तरकीके प्रति अश्रितका अस्त-करम भया और विरमवसे

मर उठा था। मगर विष दिन कमरने निश्चीन रात्रिमें अपने सिगत गारी जीवनका कथा विद्या बनायास ही खोसकर रख दिया उस दिवसे अश्रितके विराग और पूजाकी सीमा न रही। इसी तरह उसके ये कई दिन बीते हैं, और इसीसे आज गारी-अन्याय-समितिके उद्घाटनके अवसरपर आदर्शवादी अख्यप्ने जो गारीलक्ष्य आदर्श दिखानेके बहाने इस खीपर अितने मी कटम और कट्टिखी की थीं उनसे अश्रितके मुखा नहीं हुआ था। मानों उसने ऐसी ही आशा कर रखी थी। फिर भी अख्यपकी अपमान्य बर्बरतामें बाहे अितना मी तीक्ष्ण दृष्ट नवीं न हो आसु बाबू जमी जमी जो कर बैठे उससे कमरके मालों कल मरु रिये पये — केवल अनपेटी होनेके कारण ही नहीं पुरुषके अनोम्ब होनेके कारण मी। कमरके वह अरुठा नहीं करता। उसके मतामत और सामाजिक आचरणकी सुखीय मिन्दामें अश्रितने अन्याय नहीं देखा। वह अपने अन्दर इस रमणीके विरुद्ध कठोर पूजाका माध ही परिपुष्ट होता देखा रहा है। वह करता है, शिष्ट समाजमें जो करता नहीं उसे छोड़ देनेमें अपराध पूरा तक नहीं। मगर इससे क्या हुआ !—दुर्दशामें पही एक कर्जदार खीकी बुरे दिनमें मींगी गई मामूली-सी कुछ शायकी भीखके अत मार देनेमें मानों वह पुरुषमात्रके गरम असम्मानका अनुभव करके मन ही मन जमीनमें गड गया। उस रातकी घाटी बातबीत उसे बाध आ गई। उसे बने अतगसे किस्तते बरु कमरने जो उसे बाध-जमी-येकी आप-अिती घाटी चटनाएँ सुनाई थीं; उसकी माध किस्ता, उसका अपना इतिहास अंग्र-अैनेजर साहबके घर पैदा होनेका वर्णन — सब बातें उसके दिमागमें घूमने लगीं। वै अितमी अदुस्त थी, अतनी ही अरुभिकर। मगर वह सब कर्ममें उसे अवरुध क्या थी ? और शिवा रखती तो बुकसान ही क्या होता ? मगर बुनियाकी इस अइत सुखिके अना-अर्षद्व दिसाव शायद कमरके अनात्ममें नहीं आया। अमर आया मी हो तो उसने उसकी परवाह नहीं की।

और उससे बड़कर आदर्शजनक उसका कठोरसे कठोर वैय है। देवकमसे ठीके मुँहसे उसे पहले-पहल माझन हुआ कि अिननाय कहीं बाहर नहीं गया इसी अरमें शिवा हुआ है। और मुनकर वह गुप रही। बेहरेपर न तो बेदनाका आमास दिखाई दिया और न अवानसे शिक्कबतकी माया निकली। इतने बने मिप्याचारके विरुद्ध उसने दूसरेके अामने शिक्कयत करकेका माध तक नहीं

झिन्ना ।—इस दिन सम्राट्-महिषी सुमतामके सृष्टि-सौचके किनारे बैठ कर जो बाते कहने हैंसवे हुए हैंसी-हैंसीमें मुहसे निकलती थी तनका विचकुक बहुरया पावन झिन्ना ।

आद्य बाबू बुर भी धायर क्षम-भरके किए जनमने हो नये ये सहसा सपेट होकर पड़े मरती पुनरावृत्ति करते हुए बोले “ मजा बेव झिन्ना न अचित्त । मैं निजयके साथ करता हूँ कि यह इस किनाराकी ही चालकी है । ”

अचित्तने कहा नहीं भी हो । किना जाने कुछ कहा नहीं था उफटा । ”

आद्य बाबूने कहा हों हो उफटा है । मगर मेरा विश्वास है कि यह चाल किनाराकी है । मुझे यह क्या आदमी जानता है न । ”

अचित्तने कहा ‘ यह तो समीचीन माखन है । कमल बुर भी न जानती हो, ये बात नहीं । ”

आद्य बाबूने कहा ‘ तब तो और भी ज्यादा बुरा है । पतिसे छिपाना तो अच्छी बात नहीं । ”

अचित्त चुप रहा । आद्य बाबू कहने लगे ‘ पतिसे छिपाकर और धानर पसली रामके खिलाफ बुरसे बुरने उधार केना श्रीके लिए छिपती बुरी बात है । इसे हरबिच प्रभव नहीं दिया था उफटा । ”

अचित्तने कहा ‘ बहूनि रूपने तो मींगे नहीं सिर्फ कामिन होनेके लिए अनु-रोध किया था । ”

आद्य बाबूने कहा ‘ दोनों बाते एक ही हैं । ” क्षम-भर मौन रहकर ने फिर बोले ‘ और फिर मुझे अपना आदमी बठाकर इस आदमीको बोला कि वह लिए दिया । वास्तवमें मैं तो उरुच्य कोई समता नहीं । ”

अचित्तने कहा ‘ धायर मैं आपको सपसुच ही अपना समझती हो । माखन होता है, इनका किमीको बोला बेनेध स्वभाव नहीं है । ”

नहीं नहीं मैंने छीक बैठी बात नहीं कही अचित्त । ” कहकर मानो बहूनि अपने कई बचाबेही की । उस आदमीको सहसा लोकोमें जाकर बिदा कर देनेसे उगड़े भी मन ही मन नहीं माटी सम्पत्ति-सी हो रही थी । बोले “ अगर वह मुझे अपना ही समझती थी और हो-भार भी रूपकोही अस्तर ही था पसी थी तो वह सीधी बुर आकर के जाती । साम्राट् एक बाहरके आदमीको उनके सामने भेजकेही क्या अस्तर थी । और बाड़े जो हो पर इस लक्ष्मीमें विवेक बिलगन नहीं । ”

नीकरने आकर कहा कि मोरन तैयार है। अश्विठ उठना चाहता था कि आशु बाबूने कहा तुमने उस आदमीको मार्क किया था अश्विठ केरा महा खेरा था,—मनी-केकर खरा न। वही आकर शायद तरह तरहकी बातें बनावर करेगा।

अश्विठने हँसकर कहा, बनानेकी जरूरत ही नहीं पड़ेगी,—सब सब कर देना ही काफी है।” वह खरखर ज्यों ही वह जानेको तैयार हुआ कि आशु बाबू सबमुख विचलित हो उठे, बोले यह अद्यय तो किमकुल ही मुईतन्त्र मास्त्र होता है। आदमीकी छहन-छछिणी सीमा कौप जाता है। बसिक एक कम न करे अश्विठ बहुतको मुन्धकर उस झोंकरको खोखके देखो तो क्या है। कमसे कम पौब-सात सी रुपया—फिरहास जो हो भय हो। अपना ब्राह्मर शायद उन खेगौंध पर जानता है,—खिनापको कमी कमी पहुँचा आमा है। खरकर उम्हने खुद ही ओर ओरसे नीकरको पुखरना सुरु कर दिया।

अश्विठने रोक्ते हुए कहा, “ जो होना था सो हो चुका —अब रातमें यह रहने शीकिए, कस सरेरे विचार कर देखिएगा। ”

आशु बाबूने प्रतिवाद किया, तुम समझते नहीं अश्विठ कोई कास जरूरतके बिना रातहीको वह आदमी हरगिज न भेजती। ”

अश्विठ क्षण-भर स्थिर खड़ा रहा। अन्तमें बोला ब्राह्मर तो अभी है नहीं यहाँ मनोरमाको डेकर न जाने कतक लींटे। इस बीच कमरको सब मास्त्र हो ही जायगा। उसके बाद इन्सा भेजना अश्विठ न होना। शायद आपसे जब वे छात्रता केमी भी नहीं। ”

“ मगर वह तो सिर्फ तुम्हारा अनुमान ही है अश्विठ ! ”

ही अनुमान तो है ही। ”

‘ केकिन पारेत्रमें अपनेकी जरूरत तो बसके लिए इससे भी ज्यादा हो सकती है ! ’

‘ तो हो सकती है, मगर वह जरूरत शायद आत्म-सम्मानसे बड़कर न भी हो। ’

आशु बाबूने कहा “ केकिन यह भी तो तुम्हारा सिर्फ अनुमान ही है ! ”

अश्विठने खरसा कोई उत्तर नहीं दिया। क्षण-भर फिर झुझने हुए खरकर वह बोम्ब “ नहीं यह अनुमानसे भी बड़कर है। वह मेरा विरासत है। ” इतना खरकर वह पीरे पीरे कमरेसे बाहर निकल गया।

माझ बाबूते जवळी उधे रोका नहीं सिर्फ़ केरनाभी होनों आँके केरनाकर के उधकी ओर देखते रहे । इस बातको मे हृद मी जानते हैं कि कमरको सम्बन्धमें ऐसा विश्वास होना न असम्भव है और न असम्भव । निस्संशय पश्चात्ताप उनके अन्तःकरणको मानों खरोचने लगा ।

१३

नारी-कल्याण-समितिके सँदनेपर श्रीमिमा अविनाश बाबूको के पैठी मुकामी महाशय, कमरको एक दफे मिलीगी । मेरी बड़ी इच्छा है, उसे निमन्त्रण देकर बिसाऊँ । ”

अविनाशने आश्चर्यके साथ कहा “ तुम्हारी इम्मत तो कम नहीं है छोटी माम्दिकिम् । सिर्फ़ जान-सहजान ही नहीं, एकबारगी निमन्त्रण तक कर देना चाहती हो । ”

क्यों, वह कोई बाब-माख है ? उससे इतना डर किस सिध् ? ”

अविनाशने कहा बाब-माख इस प्रान्तमें नहीं मिलते नहीं तो तुम्हारे हुकमसे उन्हें मी निमन्त्रण दे आता । मगर इन्हें नहीं दे सकता । अद्यय सुन केना तो फिर रौर नहीं । मुझे देण-निश्चय देकर ही लिख छेविगा । ”

श्रीमिमा बोली “ अहाय बाबूसे मैं नहीं डरती । ”

अविनाशने कहा तुम्हारे न डरनेसे कोई मुकमान नहीं; उधकी कम मेरे अकेलेके डरनेसे कम जानगा । ”

श्रीमिमाने जिद करते हुए कहा नहीं सो नहीं होगा । तुम न जानोगे तो मैं हृद बाहर उगड़े सिवा मरूँगी । ”

“ मपर मैं तो उमझ पर जानता नहीं । ”

श्रीमिमा बोली मरनाभी जानत है । मैं उनके साथ बनी जाऊँगी । ये तुम कैसे करपोक नहीं है । ”

फिर उध सोचकर बहने लगी “ तुम लोपोके मुहसे जो सुना करती हैं, उधसे तो माखस होता है कि अविनाश बाबूका ही डरूर है । तो उन्हें तो मैं म्बोतना नहीं चाहती । मैं चाहती हूँ कमरको देखना उनके बाठकीन करना । कमर अगर आनेसे रागी हो जाय तो मरिदूट काहककी ली — ये मी आनेके सिध् करती है, समझे ? ”

अविनाश समझ तो एव गये पर ताट गाक सम्बन्धि न दे मके और न

तनकी रोक्नेकी ही विम्वत हुई। नीकिमानपर वे सिर्फ स्नेह और अदा ही करते हैं सो बात नहीं, मन ही मन तससे बरते नी बे।

बुधरे दिन सवेरे हरेन्द्रको बुझवाकर नीकिमाने कहा 'अम्माजी तुम्हें एक काम और करना होगा। तुम कुम्भारे आदमी ठहरे बरमें वधू तो है नहीं जो सदाभारके नामपर तुम्हारे काम पूँठ देखी। बासेमें रखते हो, बिना मा-बापके अमाव अम्मेके दुखदये,—तुम्हें बर किस बातका है ?”

हरेन्द्रने कहा बरकी बात पीछे होटी रहेगी पहले बतवाए, काम बना करना होना।

नीकिमाने कहा, कामअसे मैं मिछेसी, बातचीठ करीमी बर बुझकर बिअम रेंगी। तुम तनक बर जानते हो क्या। मुझे साब केकर तन्हीं विमन्त्रण बे आना होना। किस वच अन्नेमे बतानो ?

हरेन्द्रने कहा “किस वच हुकम करोगी उची वच। केकिन बर-मासिक, माई साइवका अमिप्राव क्या है ?” कहकर ससने बरामयेके उस तरक बैठे हुए अकिनाअकी तरक इभारा किना। वे इमी नेवरपर फेे हुए 'पाबोभियर' पत्र रहे ये। मुमा सब कुछ पर बोके कुछ नहीं।

नीकिमाने कहा वे अपना अमिप्राव अपने पास रक्ये—मुझे उसकी बहरत नहीं। मैं तनकी साकी हूँ सत्कीकी बहन नहीं जो पति परमगुठ की बदा पुमाकर मुसपर सासन करेमे। मेरे जीमें किसे आयेगा उचे विअमर्या। मैकिस्त्रेडकी बहने कहा है कि तन्हीं सबर मिल गई तो वे नी आवेंगी। तन्हे अचछा न अगे, तो बतना समन बे और कहीं बाकर बिता आवें।”

अबिनाहने अकवारपरसे इधि बिना इटामे ही अबाव दिया 'केकिन यह काम अचछा नहीं होगा हरेन्द्र अम्की बात याद है न ? आसु बाबू कैसे सदाशिव आदमीको नी साबबाव होना पकता है।’

हरेन्द्रने कुछ अवार नहीं दिया और इस बरसे कि कहीं कम्की वह अम्कीकी बात न ठठ कड़ी हो और नीकिमाने नी न मासुस हो बाव तसने इस प्रसन्नको अरसे इवाकर कहा 'इससे तो बसिक एक काम न करे मानी अन्हीं मेरे बरपर आनेका निमन्त्रण बे आइए और आप हो आइए उस बरकी मासिकिन। अम्की-हीन बरमें अम्के काम एक दिन तो अम्कीका आदिर्भाव हो जान। मेरे त्पके नी बोदी बहुत बुधि-अमी पीमें ताकर सुधी मना छे।”

आशु बानूने लक्ष्मी उसे रोका नहीं किई किनासे दोनों बाँधें हैस्यकर के ससंधी और देखत रहे । इस बातको वे सुन भी जानते हैं कि कमलके सम्बन्धमें ऐसा विश्वास होना न असम्भव है और न असंभव । निरन्तर पयाचाप उनके अन्तःकरणको मानों खरोबने लगा ।

१३

नाति-वस्त्राग-प्रभितिसै सीटनेर नीलिमा अविनास बाबूको छे बैठी, मुकुरी महाशय कमलसे एक बके निकली । मेरी बही इच्छा है, उसे निमन्त्रण देकर बिठाऊँ । ”

अविनासने आश्चर्यके साथ कहा “ तुम्हारी हिम्मत तो कम नहीं है छोटी मास्किडिन । किई नाम-ब्रह्मान ही नहीं, एकबारगी निमंत्रण तक कर देना चाहती हो ! ”

“ क्यों, वह खेर बाप-मातृ है ! उसके इतना कर किस लिए ! ”

अविनासने कहा बाप-मातृ इस प्रातमें नहीं मिलत नहीं तो तुम्हारे हुकमसे उन्हें भी निमन्त्रण के आना । मगर इन्हें नहीं के सकता । अक्षय सुन केगा तो फिर खैर नहीं । मुझे देख-निश्चय देकर ही निम्न छोड़िया । ”

नीलिमा बोली, “ अक्षय बानूसे मैं नहीं करती । ”

अविनासने कहा तुम्हारे न करनेसे खेर मुकमान नहीं, उगल्य कम मरे बनेकेके करनेसे बस आयागा । ”

नीलिमासे फिर करत हुए कहा “ नहीं सो नहीं होगा । तुम न जानो तो मैं खर आकर उन्हें लिखा लाऊँगी । ”

“ मगर मैं तो उगल्य पर आयागी नहीं । ”

नीलिमा बोली “ ताल्पत्री जानते हैं । मैं उनके साथ कभी जाऊँगी । वे तुम बसे करपोक नहीं हैं । ”

फिर अच सोचकर कबने लगी “ तुम जोगीक मुँहसे खे पूना करती हैं, उसके तो माहस होता है कि किनास बाबूका ही कुम्हर है । तो उन्हें तो मैं खोलना नहीं चाहती । मैं चाहती हूँ कमलको बचाना उनसे बातचीत करना । कमल अपर आनेको टापी हो जाय तो मरिस्तुं साहबकी जी — वे भी जानेके लिए चली हैं, कमलसे ! ”

अविनास समझ तो सब मये पर ताक साक सम्पति न के सके और न

उमकी रोझनेकी ही हिम्मत हुई। नीसिम्यापर वे चिर्के स्लेड और भदा ही करते हों सो बात नहीं, मन ही मन उससे डरते भी थे।

बुधरे दिन सधेरे हरेन्द्रको बुझाकर नीसिम्याने कहा 'आकाशी तुम्हें एक काम और करना होगा। तुम मुँहारे आदमी छारे, करने बहुत तो है नहीं जो सदाकारके नामपर तुम्हारे काम ऐंठ देगी। बासेमें रहते हो, बिना मा-बापके अनाथ बच्चके सुण्डमें—तुम्हें डर किस बातका है ?'

हरेन्द्रने कहा " डरकी बात पीठे होती रहेगी पहले बताइए काम क्या करना होगा ? "

नीसिम्याने कहा, कामसे मैं मिलेगी, बातचीत करेगी पर बुझकर विस्तारेंगी। तुम उनका घर आगते हो क्या ? मुझे साब केकर उन्हें निमन्त्रण के आना होगा। किस बच करोगे बताओ ? '

हरेन्द्रने कहा 'बिच बच हुकम करोगी उसी बच। केकिन गर-माकिच, भाई साहबका अमिप्राय क्या है ?' कहकर उसने बरामदेके उस तरफ बैठे हुए अविनाशकी तरफ इधारा किया। वे इसी बेतरपर पके हुए 'पानोमियर' पक रहे थे। सुना सब कुछ पर बोधे कुछ नहीं।

नीसिम्याने कहा 'वे अपना अमिप्राय अपने पास रखें—मुझे उसकी जरूरत नहीं। मैं उमकी साली हूँ, सालीकी बहन नहीं जो पति परमण्ड की मया बुमाकर मुझपर सासन करेंगे। मेरे जीमें किसे आयेगा उसे खिलाऊँ। मैंकिस्टेयकी बहने कहा है कि उन्हें खबर मिल गई तो वे भी आवेंगी। उन्हें अच्छ न सगे, तो उतना समय वे और कहीं जाकर बिता आवें। "

अविनाशने अपकारपरसे इष्टि बिना हटाने ही बचाव बिना 'केकिन वह काम अच्छा नहीं होगा हरेन्द्र कम्की बात याद है न ? आसु बाबू कैसे स्यासिब आदमीको भी साबधान होना पड़ता है। "

हरेन्द्रने कुछ बचाव नहीं बिना और इस डरसे कि कहीं कम्की वह सपनोंवाली बात न ठठ काड़ी हो और नीसिम्याको भी न माहस हो जाय बचन इस प्रसङ्गके बरसे बचाकर कहा 'इससे तो बकिच एक काम न करे मासी उन्हें मेरे बरपर आनेका निमन्त्रण है आइए और आय हो आइए उस बरकी मानिकिन। कम्की-ईन परमें कसै काम एक दिन तो कम्कीका आबिर्भाव हो जाय। मेरे अकके भी बोधी बहुत बुरी-भसी पीजे खाकर खुशी मना के। '

मीक्षिमाने जमिमानके स्वरमें क्या जल्दी बात है, ऐसा ही लगी,—मैं भी मविष्ममें हस्तगोष्ठि बंध जाऊँगी ।”

अविवाहा उठके बैठ गये बोले “ अर्थात् लीलाकेरार होनेमें फिर कोई कसर ही न रह जायगी । अरण, शिवनाथको छोड़कर विरिष्ठ छोड़ीको तुम्हारे बर निमन्त्रित करनेकी फिर कोई वैधियत ही नहीं ही था सकेगी । इससे तो बल्कि नहीं सुकनेमें बहुत अच्छा समोसा कि भीरतों आपसमें जान पहचान करना चाहती हैं ।”

बात सबसुन ही सुखिसंस्त थी । इसकिए नहीं तब हुआ कि कम्पैजकी सुत्री होनेके बाद हरेन्द्र मीक्षिमाको साथ के आकर कमलको म्योता दे आये ।

सामको हरेन्द्रने आकर क्या कि अब तककी उठाकर वहाँ आनेकी कोई जल्दत नहीं । एक रातको म्योतेकी बात उनसे कही जा चुकी है और वे आनेको रागी हो गई हैं ।

मीक्षिमा उत्सुक हो उठी । हरेन्द्र करने क्या कम पर बीरते बंध जन्मानक लक्ष्मी घरतेमें भेंट हो गई । घाबमें कोशरके घरपर एक माटी मरकम बरस वा । मैंने पूछ कि इसमें क्या है ? क्यों जा रही हो ? उम्होंने क्या का र्ही हैं बरा समसे । तब फिर मैंने आपका परिवय देते हुए क्या मामीने आपको कम सामके लिए म्योता मेका है । भीरतोंका मामका ठहरा, आपको जाना ही पड़ेगा । बरा तुम रहकर उम्होंने क्या अच्छा । मैंने क्या तब हुआ है कि मेरे साथ ककर के आपको बाकबदा म्योता दे आयेँ —अब उनके आनेकी जल्दत है क्या । बरा हैकर उम्होंने क्या नहीं । मैंने पूछ जनेकी तो आप जा नहीं सकेगी कन किस बंध आकर मैं आपको सिना बाऊँ । सुनकर वे कैसे ही हैंसने लगी । बोली जनेकी ही मैं पूँच जाऊँगी अविवाहा बानूअ मकम में जागती हूँ ।”

मीक्षिमा रिक्त गई, बोली कबकी ऐसे तो बहुत अच्छी मासूम होती है । मकम विरक्त नहीं ।”

बगलके कमरेमें अविवाहा बानू करके बहकते हुए अण अणके सब सुन रही वे वहीसे पुझे लगे ‘ और लक्ष्मीके घरपर वह माटी बरस ! उलझ इतिहास तो बताया ही नहीं मछी !”

हरेन्द्रने कहा ' तो सकता है । आपके पास गिरवी रखने जानें तो आप इतिहास पृष्ठ खींचिएगा । " इतना बहकर वह कहा ही जा रहा था कि सहसा दरवाजेके पास खड़ा होकर बोला ' माभी अपनी गारी-कस्थान-समितिमें बसयद्य भ्याकथान तो आपने सुन ही लिया होगा ? हम लोग इसे 'मूट' कहा करते हैं । मगर उस बेचारेमें और बोरी-सी पाकण्ड-मुद्रि होती तो वह समाजमें बड़ी आसानीसे ठाणु-भईतके सममें चक जाता, क्यों ठीक है न माई साहब । "

अविनाश भीतरसे ही गरज उठे ' हों बी नित्यानन्त भीतौरात्र महामसुमी इसमें सन्देह ही क्या है ? बन्धुवरको वह चौपस सिखा दो न जाकर । "

' कोशिश करेंगा । डेकिन अब चक दिया माभीजी चक फिर यथासमय हाथिर होलेंगा । " बहकर वह चला गया ।

मस्तिमाने तैयारीमें कोई कपूर नहीं उठा रखी । मनोरमा छुस्से ही कमलके बहुत खिन्नाक थी । वह जानकर कि वह किसी भी हास्यमें नहीं आयेगी बाणु बाणुके करमें किसीसे भी नहीं कहा गया था । मासिबीको खबर मेत्री गई थी पर अज्ञानक अस्वल्प हो जानेसे वे भी नहीं आ सहीं ।

कमल ठीक बचपन आ गई । गान-बाहनपर नहीं अकेली और पैरक आ पहुँची । घर-मास्रकिमने इसे आदरके साथ बिठाया । अविनाश सामने खड़े थे । कमलको उन्होंने बहुत दिनोंसे देखा नहीं था, काम उसके चेहरे और कपड़ोंकी तरह देखाकर आश्चर्यचकित रह गये । यदीबीकी कमल तनपर साक पड़ी हुई थी । आश्चर्य प्रकट करते हुए बोले ' रातको अकेली ही पैरक चली आ रही हो क्या कमल ? "

कमलने कहा ' इसका कारण अत्यन्त साधारण है अविनाश बाणु समझनेमें बरा भी कठिनाई नहीं । "

अविनाश बाणु सजिबत हो गये, और कज्जा छिपानके लिए चरसे बोक उठे ' नहीं नहीं, क्या कह रही हो तुम ? काम ठीक नहीं हुआ डेकिन,—छोटी बहू, ये ही हैं कमल । इन्हींका पुत्रा नाम है विनाशी । इन्हींको देखनेके लिए तुम इतनी उतावली कर रही थी । खबो भीतर बहकर बैठे । तैयारी तो तुम्हारी सब हो चुकी होगी छोटी मास्रकिम फिर निरर्थक बेर करनेसे क्या चयन ? ठीक समयपर इन्हें फिर घर भी तो पहुँचना है । "

इस तन अपेक्ष और पुत्र-शास्त्रमें बहुत कुछ प्यास्ती थी । न तो इसमें बराबरी कोई बरत थी और न इसकी कोई सम्मीर ही करता था ।

हरेन्द्रने आकर कमलसे नमस्कार किया। बोला, अठिबिसे स्वागतके साथ प्रहस करते बच मैं पहुँच नहीं पाया मामीजी, कष्ट हो गया। अलग आया था उसे यथोचित मीठे वाक्योंसे परिशुद्ध करके बिना करनेमें डर हो गई।" और वह हँसने लगा।

भीतर जाकर कमलने जो मोहन-सामर्थियोंका प्राचुर्य देखा तो अच-भर पुनश्चय खाड़ी रह गई और बोली "मेरे लिए चीजे तो मे खूब बचाई हैं, लेकिन मैं तो वह सब खाती नहीं।" इसपर सब स्मस्त हो उठे तो वह बोली "आप स्नेह जिसे इच्छिप्पाव करते हैं मैं सिर्फ़ नहीं खाती हूँ।"

पुनश्च भीक्ष्मा हँस रह गई बोली 'बह बना बात कही आपने? आप इच्छिप्पा खातेयों किन्तु दुःखके कारण।"

कमलने कहा 'बात ठीक है। दुःख नहीं है तो बात नहीं। लेकिन यह सब खाती नहीं हूँ, इच्छिप्पा मेरी बस्तरमें भी कम हूँ। आप कुछ खावाक न करें।"

"पर बिना उवास किसे कम भी तो नहीं करता।" भीक्ष्माले सुन्य होकर कहा 'नहीं खानेसे इतनी चीजे मेरी गह जो होनी?'

कमल हँस रही। बोली 'जो होना था तो तो हो चुका बसे खीटना नहीं था सफ़ता। तस्पर फिर आकर खर क्यों नष्ट होके?'

भीक्ष्माले बिचपके साथ अन्तिम चेष्टा करते हुए कहा 'सिर्फ़ आच-भरके लिए, सिर्फ़ एक दिक्के लिए भी क्या निवम भंग नहीं कर सकती?'

कमलने तिर दिक्काकर कहा "नहीं।"

बसके हँसते हुए मुँहके सिर्फ़ एक ही लच्छके पुनश्च सहसा फितीके कुछ भी ठीक बचाना नहीं आ सफ़ता कि उसमें रफ़ता फितीनी बचरबस्त थी। परन्तु इस रफ़ताकी मनक पही इरीन्द्रके काममें और सिर्फ़ वही समझा कि इसमें फिती तपहका केरफ़र नहीं हो सफ़ता। इसीसे परयाकिफितीकी तरफसे अतुरोधकी पुनश्चि होये ही उसने टोक दिया बोला "रहने हो मामी अब मत करो। चीज आपकी कोई कमिदेगी नहीं मेरे बहोंके बचके आकर पोंछ-मोंछके सब साफ़ कर जायेंगे। पर इसी अब आपमह मत करो। बसिक जो कुछ खावें बसफ़ इन्तशाम करो।"

भीक्ष्मा गुस्सा होकर बोली "तो किसे खेती हूँ। पर मुझे अब तसही बेनेने बस्तर नहीं खजाजी तुम रहने दो। यह बास-भूत नहीं है जो तुम अपने सुनडके सुनड मेह-बफ़रोंको बरा दोने। इसे मैं रास्तेमें फेंक हूँगी पर वहाँ न बिचनईगी।"

हरेन्द्रने हँसते हुए कहा “ कबो, इनपर आपकी इतनी नाराजगी क्यों है ?” नीलिमाने कहा “ उन्हींकी बहीसत तो तुम्हारी बह दुःखिणी है । आप अपना छोड़ गये हैं, खुद भी पैसा कम नहीं करत;—अब तक बह जाती तो लफड़े-बासिसे घर भर जाता । ऐसा अभावमा खण्ड तो न होता । खुद भी जैसे कुंभारे धार्मिक महाराज हो बल भी पैसा ही सबकु ठैवार हो रहा है । तुमसे कहे बनी हैं, उन्हीं में हर्मित्र न खिसाऊँगी ।—अग्ने दो मेरा सब निगड़ जाने दो !”

कमल कुछ भी न समझ सकी आश्चर्यसे देखती रह गई । हरेन्द्र बर्जित होकर बोस्य माभीबीकी बहुत दिनोंसे मुझपर जो नासिन्ध चल रही है, बह उठीकी सजा है ।” कहते हुए संछेपमें मामला मुझसना जाहा बोस्य मे बिना मा-बापके मेरे अनाप छात्र हैं । मेरे पास रहकर स्कूल और खेजमें पढ़त हैं । उन्हींपर इनका साराका सारा दुस्सा का पडा है ।”

कमलने अज्यन्त आनर्बके साथ कहा बह बात है क्या ? कहीं मैंने तो आज तक कमी सुना नहीं ।”

हरेन्द्रने कहा “ सुनने कायक इममें कुछ नहीं । लेकिन ये हैं सब बरिबवान् अगळे लफड़े । उनपर मेरा खेद है ।”

नीलिमा कुछ स्वर्नें बोल उठी उनका प्रण है कि बड़े होकर ये सब बेग-सेवा करेंगे ।—अबलि खुद जैसे ब्रह्मचारी और बनकर विविधव करेंगे ।”

हरेन्द्रने कहा ‘ बडेगी एक दिन उन्हे देखने । देलके प्रमत्त होगी ।’

कमल उठी बच राखी होकर बोस्य, अपर आप के जाये तो मैं कल ही का सज्नी हूँ ।”

हरेन्द्रने कहा “ नहीं कल नहीं और किसी दिन । हमारे आभयके राकेन्द्र सतीस बारी गये हैं उन लगेके आ जानर आपको से जाऊँगा । मैं आपके साथ कहता हूँ, उन्हे देखकर आप खुश हो जाँकी ।”

अदिनास अभी अभी आके खड़े हुए थे । उमकी बात सुनकर ये भीनि फाड़कर बके कुछ अमलो आकारोंका अहा अभीसे आभय भी हो गया क्या ? न जाने कितना पाखण्ड रचना हुने आता है र हरेन्द्र ।”

नीलिमा नाराज हो गई । बोस्य “ यह तुम्हारी बेबा बात है मुझकी साहब । काकाकी तो तुमसे आभयक लिप् कमना मीगने आये नहीं जो पाखण्डी बहके गाकी र रहे हो । अपने घरकेमे परामे लडखेके आदमी बनाना पाखण्ड

नहीं है। बल्कि जो ऐसा आशेष करते हैं, उन्हींको पाखण्डी करना चाहिए।”

हरेन्द्र ईसटा हुआ बोला “भाभी जमी जमी आप ही तो उन्हें मैत्र-वर्तोंका सुम्ब बटाकर शिरस्थार कर रही थीं जब आपकी ही बातकी प्रतिष्ठा करनेमें भाई साहबको यह पुरस्थार मिला रहा है।”

नीकिमाने क्या मैं क्या रही बी सुस्तेमें। केवल उन्हे ऐसा क्या सोचकर क्या। पाखण्ड जिसे करते हैं, परहे अपने बन्दर रख कर छे छिद्र करनेसे करें।”

कमलने पूछा “आपको तो सभी तरहके लज्ज-शर्करमें पड़ते होंगे।”

हरेन्द्रने क्या “हो बाहरसे तो ऐसा ही है।”

अभिनास बोला छडे और मीठारसे क्या सब प्रान्तानाम और ऐशक कुम्भ-कषी बर्षा करते हैं। उसे भी साब साब क्यों नहीं यह पेटे।”

सुनके सब हँस दिये। नीकिमाने अनुभवके स्वरमें कमलने क्या “सुखकी महाकल्पना आरम्भ मित्राज वैश्वर उलके निपवमें कोई चारणा न बना कीर्तिपुत्रा। कमी कमी इसका विभाग बहुत उठा रहता है, नहीं तो बहुत परहे ही सुखे बहोसे भागकर जाय बचानी पड़ती।” कहकर वह हँसने लगी।

कहीपर अरु-मुक्त उतापकी माय कमली जा रही थी, इस सिगम परिहासके सब मानो वह उब गई। इत्नेमें महाशयने आकर कबर ही कि कमलका मोहन तैवार है। अत्यन्त वर्तमान आसोवना स्वयिठ रखकर सबको छठना पडा।

* * *

करीब दो घन्टे बाद मोरगाइदि हो कुम्भनेपर सब आकर जब बाहरके कमरेमें बैठे कमलने सब पूर्व-प्रसंगके सिम्बलिकमें पूछा “कनके आपके ऐशक, कुम्भक नहीं करते तो न पड़ी, पर कनकेकी पुस्तकें कठोर करनेके सिवा और जो भी कुछ करते हैं सो क्या है।”

हरेन्द्रने क्या “करते बकर हैं। इस बातकी खेतिमें मी वै आपरबाही नहीं करते जिससे कि मन्विष्यमें वास्तवमें आसनी बन सके। मगर किछ दिन आपके पोंसेकी पूछ बहो फेगी उस दिन सब बातें समझा दूँगा। आज नहीं।”

इस कौशल इतना ज्यादा सम्मान किना जा रहा था कि अभिनासका धारा बदन ईष्यसे काने क्या, मगर वै चुप ही बने रहे।

नीकिमाने क्या आज कनेमें अक्षिर अइसन क्या है, कालकी।

अपनी शिक्षा-प्रवृत्तियों सामने नहीं खड़ेना चाहते तो न छोड़ी पर यह बतानेमें क्या दोष है कि प्राचीन कालके भारतीय आदर्शपर अपनी तरह सबको प्रवृत्त करी बननेकी सिद्धांत रहे हो ? तुम्हें तो मैंने जानासके रूपमें नहीं सुना था । ”

हरेन्द्रने बिनबके साथ कहा ‘ झूठ सुना है, यह तो मैं नहीं कह रहा मालूमगी । ’ कहते कहते उसे उस दिनकी कहसकी बात याद आ गई । कम-कमसे बेचकर बोला, “ आपको भी साबद मेरे कमसे सहानुभूति न होगी । ”

कमलने कहा ‘ काम जानकर क्या है बगैर ठीकसे मात्स्य किने तो कुछ कहा नहीं था सचता हरेन्द्र बाबू । मगर यह तो कोई पुक्ति नहीं है कि प्राचीन कालके हीमें एक देना ही वास्तवमें मनुष्य बना देना है—”

हरेन्द्रने कहा परन्तु वही तो हमारे भारतीय आदर्श है । ”

कमलने बनाव दिना पर यह किन्ने तब कर दिना कि भारतका आपस ही विर-मुगल करम आदर्श है—बताए । ”

अविनाश जब एक कुछ बोले नहीं थे अब मुसेको एकाकर बोले हो सकता है कि करम आदर्श नहीं भी हो लेकिन कमल यह हमारा पूर्व पुरखोंका आदर्श जो है । भारतवासियोंका यह हमेशाका कल्प है वही उन लोगोंके कल्पका एक-मात्र मार्ग है । हरेन्द्रके आत्मकी बात मैं नहीं जानता लेकिन उसने वही कल्प करम प्रवृत्त किना है तो मैं उसे आशीर्वाद देता हूँ । ”

कमल कुछ बेरतक चुप बैठी उनके मुँहकी तरह देखती रही फिर बोली मात्स्य नहीं, क्यों आदमीसे यह पकटी होती है । अपने सिवा मालो से और किसी भारत-वासीको आँखोंसे देखते ही नहीं । भारतमें और भी तो बहुत-सी जातियों रहती हैं, वे इस आदर्शको मकम क्यों अपनाते नहीं ? ”

अविनाश मुस्मि हो उठे बोले “ खुशमें जानें वे । मेरे पास ऐसा आदिन निष्कल है । मैं तो सिर्फ अपना ही आदर्श अगर स्वयंसे देख सक तो उसीको आपकी समझूँगा । ”

कमलने धीरेसे कहा “ यह आपकी बहुत ही मुस्मि की बात है अविनाश बाबू । नहीं तो आपको इतना बड़ा अन्धमक समझनेकी मेरी प्रवृत्ति नहीं होती । फिर जरा ठहरकर करने क्यौ, ‘ मगर क्या मात्स्य जानकर पुरुष सबके सब इसी तरह विचार किना करते हों । उस दिन अविनाश बाबूक सामने भी अन्धमक वही प्रसंग छिप गया था । भारतकी सनातन विविधता और

मेरी आर्षद लो वे हैं। इन्दीची तरह हम श्रेय स्वामादिष्ठाके पवित्र हैं। वेपयका कोई वाक्य प्रकाश इनमें नहीं है—बाहरसे मान्य होना कि गन्ने विनाशितामें वे मग हो रही हैं मगर मैं जानता हूँ इनका सुधात्म आचर-विचार इनका कठोर आत्म-वासन—”

कमल मीन रही। हरेन्द्र मक्ति और भद्रासे विगलित होकर अपने कम “आप भारतके अतीत युगके प्रति भद्राछात्रता नहीं हैं, भारतका धर्म आपको सुम्प नहीं करता; परन्तु बताइए तो मन्त्र कि गारिष्ठी इतनी ही महिमा—इतना बड़ा आर्षद और किस रेखमें है? इस परकी वे चर्चिणी हैं, भाईताइवकी मातृहीन सन्तानकी वे बचनीके समान हैं। इस परकी करी त्रिम्बेवारी इन्दीपर है। यह सब होते हुए भी इनका कोई स्वार्थ नहीं, कोई मन्यन नहीं। बताइए न, किस रेखकी विषयार्थें इस तरह पराने काममें अपनेको धपा सक्ती हैं।”

कमलका चेहरा स्मित हास्यसे विचरित हो उठा; सजने कहा “इसमें मझाईकी कीन-सी बात है हरेन बाबू? हो सक्ता है कि पराने करकी विःस्वार्थ पुहिनी और पराने कर्षोकी निःस्वार्थ कननी होनेका इजान्त संसारमें और करी न हो। नहीं होना अद्भुत हो सक्ता है, मगर अद्भुत होनेके कारण ही अच्छ हो जानपा किस तरह?”

सुनकर हरेन्द्र बग रह कमा-और भीमिमा मारे आर्षदके एकटक उठने चेहरेकी तरह बेलती रह गई। कमलने बत्तीको मझन करके कहा, “बाकवोकी छायासे विस्तेपकोके आर्षदसे श्रेय इसे बाहे त्रिजना वीरवाचित कनो न कर बाके, पर पुहिणीकेके इस मिथ्या अभिनयमें सम्मान नहीं है। इस वीरको श्रेय देना ही अच्छ है।”

हरेन्द्रने गम्भीर वेदनाके साथ कहा, “यह लो एक सुधात्म पर-पारकीको यह करके कके जानेका उपदेश है। इस वाक्यी लो आपसे कोई आशा नहीं रखता था।”

कमलने कहा ‘मगर पर-पारकी लो इनकी अपन ऐसा उपदेश न केटी। और मन्त्र यह कि इती पुरुष हर्ष मलकाकी बनाने रखते हैं। इनकी बाहबाही हमारी औषोपर नका छन बाता है। छेक्ती हैं, यह अरम सार्थकता है। हमारे नहींके जानके कगीकोके ह

जा गई। उसकी अब सोचने सामर्थ्य खेती बहिनका प्रति मर गया था उसे पर
 काकर से अपने हृदयके हृदय बाह्य-बन्धे दिखाके रोते हुए बोले, कस्मी, बहन
 मेरी, अब ये ही तेरे बाह्य-बन्धे हैं। फिर किस बातकी बहन इन्हीं पाल-पोसकर
 आदमी बनाओ, इनकी अपनी मांकी तरह।—इस बातकी सर्वे-सर्वा बगकर आक्से
 ए सार्थक हो पड़ी मेरा आधीबाँध है। इरीष बाबू बड़े मझे आदमी हैं,
 बगीचे-भरमें सब श्रेय फल्य बन्ध कर डटे।—समीने कहा कस्मीके माय
 भण्डे हैं।” —बण्डे तो हैं ही। सिर्फ़ बियों ही समस्त सफ़्टी हैं कि इतना बड़ा
 दुर्मान्य —इतनी बड़ी पोषेबाकी थीर कुछ हो ही नहीं सफ़्टी। मगर एक दिन
 जब वह विदम्बना पकड़ी जाती है, तब प्रतिशरत्त समय निकल जाता है।”
 हरेन्द्रने कहा फिर।”

कस्मीने कहा फिरकी बात मुझे नहीं मानस हरेन्द्र बाबू। कस्मीकी
 सार्थकताका बन्ध में नहीं देख पाई,—उसके पहले ही नहींसे मुझे क्या माना
 पड़ा था।—केवल तब अब तो गाती जाके खड़ी हो गई। बसिए,
 उस्तेमें बाते बाते बतानेकी। ममस्कार।” कहकर वह उसी क्षण उठके
 खड़ी हो गई।

पीछिमा पुनःपाप ममस्कार करके खड़ी रही। उसकी आँखोंके तारे मानों
 अंगारोंकी तरह जलने लगे।

१४

जाजम शब्द कस्मीके सामने हरेन्द्रके मुँहसे अचानक ही निकल गया था।
 उसे हृदयक अस्मितासे जो मजाक उठाना था वह बेव्य नहीं था। अमेमोचे यही
 पाक्ष्य था कि कुछ परीष विषापी नहीं रहकर बिना खर्चके स्तूक-काष्ठकेमें पड़ते
 हैं। वास्तवमें अपने वास्तवानके बाहरवालेके सामने इतने बड़े मौरके पदपर
 प्रतिष्ठित करनेका संकल्प हरेन्द्रके मनमें नहीं था। वह बिरुद्ध ही एक मामूली
 बात थी थीर मुरु हस्में बसका भीयमेस भी साधारण तीरपर ही हुआ था।
 परन्तु इन सब चीजोंका समाव ही ऐसा है कि हाताकी कमबोरीसे अगर एक
 बार भी इनमें प्रति पैदा हो गई तो फिर उस यथिमें विराम नहीं जाता। क्येर
 अंगली पीनेकी तरह मिठीका धाराका धारा रस खींचकर अपने कंधर पत्ते तक
 व्याप्त होनेमें फिर डेर नहीं करता। हुआ भी नहीं। इस निचवमें यहाँ कुछ थीर
 कह देना ठीक होगा।

हरेन्द्रके कोई माई-बहन नहीं है। पिता बकाबत करके धन-संचय कर घड़े थे। इनकी मृत्युके बाद घर मरममें रह गईं चिर्क हरेन्द्रकी विधवा मा। वे भी तब परबोध सिंवार गईं जब हरेन्द्रकी पत्नी खतम हुई। विद्याया अपना करने समय परमें ऐसा कोई न रहा जो उसे ब्याह करनेके लिए तैय करता अवस्था स्वयं मेहनत और आयोजन करके उसके पौरोमें बेड़ी बतल देता। इसलिये पत्नी जब खतम हो गई तब मरुज कोई काम न करनेके कारण ही हरेन्द्रने केस और केसवासियोकी सेवामें मन लगाया। काफ़ी साधु-संपत्ति की बेचमें पत्नी रकमका ब्याज निश्चय निश्चय कर एक दुर्मिष्ट-निवारक-समिति काममें की, बाढ़-पीड़ितोंकी सहायताके लिये आचार्यदेवने दसमें शामिल हो गया सेवक-संघमें मिलकर कौ-संगके कानै-बहारे गृह-भूतोंको ला-बाकर उनकी सेवा करने लगा। इस तरह जैसे जैसे इसका काम बाहिर होने लगा जैसे जैसे मके आरमियोंको दस ला-आकर उससे करने लगा रूपया हो परेषकर करें। बड़ती रुपये खतम होनेको वे पूँजीमें हाथ लगाये बिना अब कोई चारा नहीं था। ऐसी अवस्था जब आ पहुँची, तब अच्युताए एक दिन अविनासके साथ उसकी भेंट हुई और परिचय हो गया। सम्बन्ध पाहे कितनी दृष्ट हो पर उही दिन उसे पड़े पड़े पता चला कि उसकी बुनियामें अब भी एक जादवी ऐसा है जिसे वह आत्मीय कर सकता है। अविनासके कहेमें तब एक अन्धापत्नी बगह खाली थी, कोशिश करके वे उस कामपर उसको निरुक्त कराकर अपने साथ जायरा के गये। इस प्रान्तमें आनेका बही उसका इतिहास है। फर्सेहकी तरह सुसज्जानी राज्यके शहरोंमें पुराने जमानेके बहुत-से बड़े बड़े मकान अब भी कम फिरयेपर मित्र बना करते हैं, और उन्हेंमिसे एक हरेन्द्रने के किया। नही उसका आशय है।

मगर वहाँ आकर जो कई दिन उसने अविनासके घर किताने ठहराके बीच नीकिमाके साथ उसका परिचय हो गया। उस समयमें उसे बिना जान प्युचलका जादवी समझकर एक दिन भी ब्येस्टमें रहकर नीकर नीकरानीकी मारकट आत्मीयता विवाचनकी कोशिश नहीं की।—एकबारही पड़े ही दिन सामने निकल आई। बोसी 'तुम्हें कम क्या बाहिए कसबाकी मुससे कहेमें शरमाना मत। मैं बरकी सुहिची नहीं हूँ मगर सुहिची-मनकर मार सब मेरे ही ऊपर है। तुम्हारे माई साहब करते वे छोटे बाबूकी खातिरदारोंमें

कमी रह यह तो तनया का चापसी। सा हम गयींकिन्ना नुकसान मत कर
हना मार भस्मी बरुगोम शक्ति करत रहना। ”

हरेन्द्र क्या बराब दे उतकी कुछ कमसमें न आया। माग घनके यह
ऐसा सिद्ध ग्या कि बा इन मीठी बलोका बनायात ही हैमती हु यह
न उतक मुँहको छक देख मी नहीं लका। पर हम दूर हानेमें मी उन
हा-एक दिनमें क्यादा देर न लगी। मायूम हुआ बैम उन बिना घूर किने
दूमा कई चाग ही नहीं। इन गमयींकी बैरी रूपन्द और अनामक
मीति है बैरी ही सहब न्यामाविक मरा। एक तरफ बैम यह बात उनक
बाह-माह बादाद-यहनात और मधु माथ्यन-माथ्यननाम नहीं मायूम हा
कली कि व दिवरा है इन फमें उनका यह कालविक भाभव नहीं, व मी
हम परमें गैर है—बैम ही यह मी नहीं मायूम पत्रा कि उनका परी सब
कुछ है बा बाह-म हीन रहा है।

उमर मी उनकी विचकुल कम हा सा बात मी नहीं है। सायद ठीक
कामग पहुँच चुकी है। उत उतक याम्य गम्माना उनमें न्याव निघामना
मुम्किल है—ऐसा हलका उनका हैम-मुर्दाका मेम्य है। और मरा यह कि
कानना घ्यान बेमन ही यह बात गाठ सनही बा मकती है कि एक ऐला
अहम आप्परदन उन्हें दिन-रात परे गहा है किन्क मीतर प्रपय घनका
बाह गला ही नहीं। न सा परक नौकर-बाकर या हल-दासी ही वही दुन
मकने है और न मातिक ही।

हम फमें हमी आन-हराक बीन हन्द्रक दा सतार बीन ग्य। सहसा एक
दिन यह मुनकर कि उतन अम्य एक मघन चित्तपल मे लिया है नीतिमान
नागाव हाकर कहा, “इतनी बस्ती क्यों कर मयी लखायी, वही ऐला बीन
मुमें पकड़ रक्ता बाहला या ?”

हरेन्द्रन लमिन हाकर कहा, “ एक दिन तो बाना ही पत्रा मानीवी ! ”

नीतिमानने बराब दिया “ ना तो सायद बाना पहा। मगर बंर-महाक
नगका ग्य अमी तक मुम्हायी औप्याम मरा नहीं लखयी, और मी कुछ दिन
मानीवी दिघामने रह लेत तो अप्पर या। ”

हरेन्द्रने कहा, “ ना तो रौंग ही मानीवी। परी तो है, दमक मितका
उला है परीत भापी निगाह क्याक बाऊना कही ? ”

अभिनाथ परक मीतर बैठे काम कर रह प बहिन घा बाभग

बहनुमते । बहुत मना किया कि और कहीं मत जा र, वहीं रह । मगर ल
 केने हा ?—इन्कल कही है वा माह साहसकी कल कही है ? वा नवे भेदुमें
 बाहर बरिह नारायणकी सभमें पढ़ा वा कुछ फल है ता ।—छटी-मासिकिन
 टमस करना-मुनना स्वय है । वह टहरा पाइकका संन्यासी—पीठ छिपार
 पालीकी तरह भूमे और इन समाधि बीना ही मस्त है । ”

नये मकानमें आकर इन्द्रने नीकर मगहवा कौरह लम्बर अमस्त शान्त
 मित्र निरीह मास्तरोंकी तरह आत्मक काम मन समाया । बहुत बड़ा मकान
 है ऊपर बहुत-से कमर हैं । दो एक कमरके सिवा बाकीक लक वा ही लाली
 पड़ रहे । महीमे-मर बाह ही वे लूने कमरे ठस पीड़ा देने लगे । फिरवा बेना
 ही पत्रा है और काम कुछ आठ नहीं । सिवावा सिद्धी गई राजेन्द्रके फल ।
 यह वा उज्ज्वी बुभिक्ष-निवारिनी-उमितिभ्र मंत्री । देवादारके छिए बिहार
 आग्रहके कारण हा साजसी तथा सुगलक पीप छै महीने हुए लूय वा आर
 पुराने कबु-कबवाकी ललाछमें भूम रहा वा । हरेन्द्रकी सिद्धी और गम्का
 फिरवा लकर यह उठी बल पक भावा । इन्द्रने कहा, देखीं अगर
 तुम्हारे छिए अर्थ नौकरी-बीकरी दिख लई । राजेन्द्रने कहा, अर्थ बल
 है । लका काम मित्र वा लीक । वह किरी तरह इच्छावले कबकर
 मेदिनीपुर बिलेक किरी एक गौमें ब्रह्मवर्षाभ्र लोभनेकी मगद बुनमें स्या
 वा, राजेन्द्रका पत्र पाठ ही वह एक हस्तक अन्दर अपने ललु-लकनकी
 स्थिति लक सीबा आगे कला भावा और अकथ्य ही नहीं भावा, कृप करके
 गौने एक मकबो मी नाप लया भावा । लीकने इन लक सुदि और
 शाब-कननाक कलर कही लूकीक साथ साहित कर दिया कि मगदरप ही
 एकमात्र धम-भूमि है । मुनि-अपिगल ही इनक देका हैं । हम कल लकनारी
 जाना भूम गये हैं इसीसे हमारा लक कुछ कस्य गया है । इस देकके नाप
 लकारके किरी मी देकनी तुकना नहीं ही लकनी । कारण, हम ही धेग एक दिन
 प बाहके शिकक और इन ही लय प मगुलके गुद । सिवावा, कर्मामने
 मास्तराठिवाकि छिए एकमात्र करने लकक काम है गौक-वीक और नगर मकमे
 अर्थात् ब्रह्मवर्षाभ्र स्थापि करना । देवादार कनना अगर कभी समक हुआ,
 लक वह इसी लकस समक हल्ला ।

उज्ज्वी कर्ते मुलक इन्द्र मुक हा गया । लीकका नाम तो कन लुन
 लवा वा, फनु परिच न वा इनकिए इन लीमात्यके छिए उकने मन ही

मन राजेश्वरको धर्मवाद दिवा और इसके लिए भी अपना धर्म धर्म समझा कि पहले उसका ब्याह नहीं हो गया। कर्त्तव्य सन्नादि-सम्पन्न अच्छी अच्छी बातें जानता था और कई दिनों तक बड़ी बातें चर्चा नहीं। हम ही खेप हम पुण्यभूमि के मुनि-श्रद्धालुओं के कंधार हैं हमारे ही पूज्यपुत्र एक दिन संसार के गुरु थे—अपने एक दिन गुरु-पद पर हम ही उच्चरधिकारी हो सकते हैं। कौन आनन्द-रक्त उदर पानेवाली इस बात का विरोध कर सकता है?— नहीं कर सकता। और कर सकने वाले दुर्मतिगन्ध आदमी भी वहाँ नहीं न था।

हरेन्द्र उमर-सा हो गया, परन्तु उसका आर सौजन्य और हीन के धर्म आत्मिक सारी बातें यथास्थान गुप्त रखी जाने लगीं, सिर्फ राजेश्वर और कर्त्तव्य हीन-हीनमें बाहर बाहर धर्म के उदर करके संसार लगे। बा उमरमें खर प वे स्त्रियोंमें मन्ती हो बात और स्त्रियों की पूर्ण करके उत्पीड़ हो बात व हरेन्द्र की कश्चित् किसी न किसी कश्चित् शक्ति का दिव बात। हम तरह पाड़े ही समझमें समाया सारा मन्त्र नाना उमर के लक्ष्मि मर गया। बाहरके खेप विरोध कुछ जानते भी न थे और न कोई जाननेकी कश्चित् ही कन्ता था। उड़ीसी हुई लक्ष्मि सिर्फ इतना ही सुन सत व कि हरेन्द्र के धर्म रहकर कुछ यथावत बैगाकी कटके पद-लिखत है। हमस ब्यादा भविनाशक मी मान्य न था और न नीतिमान्य पता था।

कर्त्तव्य के कठोर धर्ममें धर्मों मंस-मसखी आनन्द काइ रस्ता न था, बाह्य सुदुर्गमें ठठकर सन्नाह सोच-पाठ, ध्यान, प्राणायाम आदि धाम्-निहित प्रक्रियाएँ करनी पन्ती थी उनका बा पढ़ना-लिखना और निष्कर्म। मगर अधिकारी याका नाम मी मन नहीं मर, और साधन-मार्ग धर्म का कठोर हो गया। गुरुवा महाराज मंग लगे हुए, नाइका कम्पास कर दिवा गया भ्रम उनका धर्म पारी-पारीसे लक्ष्मि भा पड़ा। किसी दिन एक ही कन्तारा हमी ल किन्ती दिन वह मी नहीं लक्ष्मि पढ़ना-लिखना जाग रहा — स्त्रियोंमें उनका कन्तार भी पढ़ने लगी किन्तु कठोर है हुए निष्कर्म धिपिन्ता नहीं भाइ। सिर्फ एक विषयमें अनिवार्य था और वह बाह्य कर्त्तव्य निष्कर्म जानेकर। नीतिमानके किन्ती एक अर उदात्तके उदरमें हम अतिमान्य हरेन्द्रने बाहरदली धर्मम किवा था। हमक किवा और कहीं मी किन्ती विषयमें समाटे लिए स्थान न था। बाइके नंग पौर रहने और बाप

रत्न रखत । इस विषयमें स्त्रीशक्ती अत्यन्त उत्कृष्ट थीं। हरदम पहलू देने लगीं कि कहीं किसी छिद्र-पथसे उनमें कित्यकितान्ना अन्नचिक्कर प्रवेश न हो जाय । इसी तरह आश्रमक दिन बीत रहे थे । स्त्रीशक्ती तो कहना ही क्या, हरदमके मनमें भी भात्म-गौरवकी सीमा न रही थी । बाहरके किसी अत्यमीकं सामने बं विदेशे कार्य करत प्रकृत नहीं करत थे परन्तु अपने अन्दर हरदम आत्म-प्रताप और परिशुतिके उच्छ्वसित आशेगमें अकलर बह कह दिया करत कि इनमेंसे एक मी सङ्केत अथवा वे आदमी बना लके ता सम्झेंगे कि इन बीजन्तकी परत साधकता उन्हें प्राप्त हो गई । यह सुनकर स्त्रीशक्ती कुछ डेकता नहीं, विनयसं किंच भयना तिर हाथ सेता ।

किंच एक विषयमें हरदम और स्त्रीशक्ती दानात्त पीडात्त अनुभव हाता था । दानो ही इन कालक अनुभव करत थे कि कुछ दिनोंसे हरदमके आश्रम पहले कैय नहीं रहा है । आश्रमक किसी काममें अब वह उन्नी दिक्कपार्थ नहीं सेता सबेरेके साधन-मन्त्रमें मी अब वह प्राय अनुपरिषद गता है और पूछनेपर कहता है कि तभीकत ठीक नहीं है । इसपर मजा पर कि तभीकत लखन जानेक कार्य कलम नहीं दिक्कत देत । क्या उन्नी शिक्कपत्त है क्या वह ऐसा हुआ बा रहा है — पूछनेपर मी कुछ कलम नहीं मिळता । किसी दिन सुबह ही उठकर कहीं कलम जाता है दिनभर आता ही नहीं, और उन्नी कलम कर बीटा है तब उन्नी पहलू देता हाता है कि हरदम तभीकत कलम पूछनेकी दिक्कत नहीं पड़ती । और मजा यह कि वे तब कलम आश्रमके निबसोंके सर्वका दिक्कत है । तब कलमक राक्कत अन्नी तरह जानता था कि एक हरदमके सिवा शान्तक बाद और किसीके मी बाहर रहनेक अविचार नहीं है, — फिर मी उस बाह परवाह नहीं । आश्रमक सबेरी या स्त्रीशक्ती, उन्नीपर दुःखसम-रसात्त मार है । इन सब भनावात्तके विक्कत वह हरदमसे ठीक शिक्कपत्तके तौरपर तो कुछ कह लकता नहीं; किन्तु बीच बीचमें आश्रम और इधारेसे यह माय प्रकृत कर देता है कि उसे आश्रममें लकना अब उचित नहीं है । — लकत किंग लकते हैं । यह कल नहीं कि हरदम सुद मी न सम्झता हो, किन्तु मूँह लोक्कपर कुछ कहनेकी दिक्कत उसमें नहीं थी । एक दिन तागी उत यह कपता रहा, सबेरे कलम कर बीटा तब उन्नीकी कलम लकत कलम बात्तकी आशेपना जाने लकी हरदमने आश्रमके साब उन्नी पूछ, “कलम क्या है, रामेन, कलम उत-मर के कहीं ?”

उन्नी कलम ईकन्नी कलमिच करते हुए कहा, “एक पेड़के नीचे पड़ा बा ।”

‘पड़के नीचे ! पड़के नीचे क्यों !’

“ बहुत रत हा गई यी । उस बरत घोर मया आप खोगका जगाकर परेधान नहीं किया । ”

अप्य । इतनी रत कैसे हो गई ? ”

“ ऐसे ही घूमते-घामत । ” कहकर वह अपने कमरेमें पका गया ।

सतीश पास ही बैठा था । हरेन्द्रने पूछा, “ बात क्या है क्याभां ता ? ”

सतीशने कहा “ आपकी बात टकरा पका गया । कुछ फबाह ही नहीं की । फिर मया में कैसे जान सकता हूँ ? ”

बात ता ठीक है मार, इतनी ब्यादती तो ठीक नहीं । ”

सतीश मुँह मारे करके कुछ देर तक चुप रहा फिर बाप आप एक बात रत जानते हागे कि पुलिसने उसे दो साल जयमें रत्ता या ! ”

हरेन्द्रन कहा “ जानता हूँ, लेकिन वह ता छडे कन्देहपर रत्ता या । उनका कोई अपराध नहीं या । ”

सतीशने कहा “ मैं सिर्फं उसका मित्र हानेकी बजहसे ही जय जातं जात कच गया या । पुलिसकी दृष्टिन उसे आप मी चुकाकरा नहीं दिवा है । ”

हरेन्द्रन कहा, “ असम्भव कुछ नहीं । ”

उत्तरमें सतीशने का बियमयी हँसी हँसकर कहा, “ मैं खचता हूँ, उनका कागज कहीं हमारे आभमक पुलिसको मार न हा बाप । ”

मुनकर हरेन्द्र चिम्पिल चेहरेमें चुप रहा । सतीश खुद मी कुछ देर चुप रहकर मरसा पूछ बैठा ‘ आपका बापए मायम होगा कि राजन्द्र ईशका अभिलष तक नहीं मानता । ”

हरेन्द्र बंम रत गया, बोका, “ नहीं तो । ”

सतीशने कहा “ मुझ मायम है, वह नहीं मानता । आभमक काम-काज और बिभि-निपेबाँपर उनकी रंजमात्र मरदा नहीं । हमम ता बरिद उसकी कहीं नौकरी-भौकरी क्या दीबिए ता अप्य । ”

हरेन्द्रने कहा “ नौकरी तो पन्ध फज नहीं सतीश, कि बच चाहूँ तब तोइकर हाथमें रे हूँ । उनका छिप बाकी काशिघ कयनी पढ़ती है । ”

सतीशने कहा, “ तो बही कीबिए । आप बच कि आभमक प्रविद्यया और प्रसिडेण हैं और मैं सकेटरी हूँ, तब सनी बियम आपको जगत रत्ता मरा कल्प है । आप उनमें अत्यन्त स्नेह करत हैं और मरा मी वह मित्र है । ”

इसीलिये उनके विरुद्ध कोई बल करनेकी आवश्यकता नहीं हुई, मगर अब आपका साधनान का देना में अपना क्याय समझता हूँ।”

हरेन्द्र मन ही मन इच्छा करता “किन्तु मैं जानता हूँ कि उनका परिणाम निम्न है—”

श्रीगण गणन हिचककर कहा, हाँ। इस लक्ष्यसे तो उनका उद्देश्य बड़ेस बड़ा धनु भी दगरी नहीं ठहरा सकता। गजबन्ध आत्मीयता कुँवला है लेकिन वह अस्वभाव्य भी नहीं है। अन्ततः परत यह है कि इस अस्वभाव्य साधनेका भी उनका पान तक नहीं कि जो नामकी कोई बीज भी संसारमें है।” फिर मन-मन चुप रहकर बोला “उत्तम परिणामी सिद्धयका मैं नहीं करता वह अस्वभाव्यिक कर्म निम्न है किन्तु—

हरेन्द्रने पूछा “आपके दुम्हारे किन्तु का मतलब क्या ?”

श्रीगणन कहा “कर्मकेक नामसे हम जाना एकमात्र रहा करता है। वह तब केवलके मेडिकल कॉलेजका छात्र था और परपर भी एक-सी पढ़ता था। उसी वकालत में कि वही एक पान हागा लेकिन परीक्षाके पहले अस्वभाव्य न जाने वह क्यों कस गया—”

हरेन्द्रने विगिप्त हाकर पूछा “वह डॉक्टरी पढ़ता था क्या ? मगर मुझसे तो कहता था कि वह निरपुत्र ‘जीनिपिंगि काठकेमें मरती हुआ था, पर वहीँका पढ़ाई वहीँ सफा हानसे उस माग आता पया।”

श्रीगणने कहा “किन्तु लकाघ करे तो मापूम हागा कि अस्वभाव्ये यह ईश्वरमें वही अस्वभाव्य आता था और जिना कालके लगे अनेक अस्वभाव्य बहोंके मनी सिद्धके अन्ततः दुःखित हुए थे। उसकी बुझा बनी परम म्वाही है, वे ही पढ़नेका लक्ष्य वे रही थी।” उस तरहकी इच्छासे नाराज होकर उन्होंने पत्र देना बन्द कर दिया उसका बाद ही शायद आपसे उनका परिचय हुआ है। समाप्त हो गला एम-फिलके लक्ष्य वह पर पहुँचा तब उनकी बुझाने उसीकी शयस उस डॉक्टरी स्कूलमें मस्ती कर दिया। इसलिये अस्वभाव्य किन्तुमें वह फल हा रहा था कि मैं तीनोंके साल बाद लक्षा एक दिन तक छान-छान अन्ततः हो गया। वही उत्तम एक ऐश है। बना करता है। मैं उनसे पर नहीं पा सकता। वहीँसे छान-छानकर हमारे यहाँ आके लक्ष्य गाना है। मुझसे कहा ‘मन्त्र पढ़ाकर ही एक-सी पान करेगा और वहीँ किसी वकालतें जाकर मापुमें करके बिकन विचारेंगा।” मैंने कहा, ‘अस्वभाव्य

बाल है यही कर।” उसके बाद पन्द्रह-बीस दिन पढ़नेमें ऐसी मेहनत की कि न नहानेका ठीक न खानेका और शौकी नींद तक गायब हो गई,—ऐसी मेहनत की कि देखकर आश्चर्य होता है। सब कहने लगे ऐसा और किसे क्या कई प्रत्येक विषयमें फल हा सकता है ?”

हरिश्चन्द्रो पूरा हास मालूम न था उसन सँस राके हुए ही कहा “फिर ?”
छतीश कहन लया उसके बाद वो कुछ उसने शुरू किया वह भी अद्भुत ह। कितना तो फिर उसन घुई ही नहीं। न बाने कहीं रहता है—कुछ फल ही नहीं। अब सौठकर आता है तब उसका चेहरा देखनेसे हर स्यंग लगता है। मानो इतने दिनतक उसन नहाना-खाना ही न हा।”

फिर ?”

फिर एक दिन दसकडक साब पुष्पित भा बमर्द्ध और उसने मन्थनमरमें बड़े बस-बस शुरू कर दिया। इसे छड़कर उस बन्धनी उसे खालकर इसे बन्द करती किसीको मँटती किसीका राफती ऐसा ऊपम मन्थना कि किना अपनी औरों देख कई उलझ अनुमान भी नहीं कर सकता। मेसमें रहनेवाक प्राय सभी बन्धनीका काम करत वे मारं उनके दो बन्धा तो बुझा हा गया। ममीने सोच लिया कि अब कचना मुश्किल है पुष्पितकाले आज सभीको पकड़कर पौलीकर लटका देंगे।”

फिर क्या हुआ ?”

फिर सगामा तीसरे पहर पुष्पित रासनका और राबेनका मित्र हानक काम नुस पकड़क छ गई। मुस नाकेक दिन बाद छड़ दिया, पर उसका फिर कह पना नहीं लया। छेड़त बस साहबने महरबानी करके मुस बार बार मादधान कर दिया कि बन गटप, औरस्य बन गेटप।—जुहारे परस इस जेमका फल्लन सिध एक कामका रहा है। गा।” मैं रीगा-म्यान करके, मा वालीक बखान करक पर सौट आया। उसन कहा खीस, तुम बड़े माम्य बन हा। औरस्य पँडुना ताहबने हा महीनकी ठन्ला हायमें कमाकर कहा गा। मुना कि नम बीचमें मरी बहुत-कुछ लयशी हा चुकी है।”

इसमें गवध रह गया। कुछ देर तसी तरह रहकर अन्तमें पीर पीरे शब्द तो क्या मुर्वे निश्चिन मालूम होता है कि राबेन—

मर्त्याने बिनतीक खरमें कहा, “मुझन मन पृच्छि। मा वह मित्र है”

इन्द्र मुस नहीं हुआ, शब्द, “मय मी तो वह मारिकी तरह है।”

छतीसने कहा “ एक बात निश्चय देखनेकी वह है कि उन छोटेने मुझे बेकसू पकड़कर परेशान कर दिया था पर छोड़ भी दिया। ”

हरेन्द्रने कहा ‘ बेकसू परेशान करनेपर भी तो क्षम्य नहीं है। था स्पेय वह कर सकते हैं वे यह क्यों नहीं कर लेंगे ? ’ वह कहकर वह उस क्षम्य तो झटके बस गया, परन्तु मनमें उसके अशांति बनी रही। सिर्फ राजकुमार अश्विनीकी चिन्ता करके ही नहीं, बल्कि इसलिये भी कि देश-सबाक क्षम्य देशके अड़बड़के बादमी बनानेपर वह जो आशयन बस रहा है, कहीं किना करण नष्ट न हो जाय। हरेन्द्रने तब किया कि बस छूट हो वा सब पुस्तिकाकी शक्ति अक्षरक आत्मन आकर्षित करना हरिण उचित नहीं। लाकर वह कि वह एक एक यहाँके नियम भंग करता जा रहा है। तब कहीं नीकरी ध्याकर या और किसी बहाने उसे बन्धन हटाने की सोचनी है।

इसके कई दिन बाद ही मुकद्दमानाक किरी लोहापर दो दिनकी चुड़ी थी। छतीस काशी बालकी अनुमति लेने आया। भारतमें सर्वत्र आर्य-आत्मके अनुक्रम आर्यपर संस्थापित करनेकी विद्यास क्षम्यता राजकुमार मनमें थी और उसी उद्देश्यके लक्ष्य छतीस करती जा रहा था। राजकुमारने मुना तो वह भी आकर करने लगा, हरेन्द्र मरना छतीसके साथ म भी कुछ दिनोंके लिये काशी बस आऊँ। ”

हरेन्द्रने कहा ‘ ठीक क्षम्य है इसलिये जा रहा है। ’

राजेन्द्रने कहा ‘ मुझे क्षम्य नहीं है इसीसे जाना चाहता हूँ। अपनेका रेकमाका मेरे फल है। ’

हरेन्द्रने पूछा ‘ लेकिन बापन जानेकर ! ’

राजेन्द्र चुप रहा। हरेन्द्रने कहा, ‘ राजेन्द्र, कुछ दिनोंके तुम्हें एक धन कहना चाहता हूँ, पर वह नहीं पाया। ’

राजेन्द्रने बस हँसकर कहा ‘ करनेकी बसत नहीं हरेन्द्र मन्ना, मैं जानता हूँ। ’ कहकर वह चला गया।

उसकी यादोंसे वे जानेवाले थे। परते निश्चयत बस हरेन्द्रने दरवाजेके फल आकर बकसमात् उनके हाथमें एक बगवन्की पुकिया कमाते हुए चुपकत कहा, ‘ तुम बापन न आओगे वा मैं बहुत दुःखित होऊँगा राजेन्द्र। ’ भीतर श्मना कहकर वह लक्ष्मी भस्में अपने कमरेमें चला गया।

इसके दस-बाराह दिन बाद होनों ही बने और आवे। हरेन्द्रजी पकान्तने कुम्हार स्त्रीधने प्रफुल्ल बेहरेसे कहा, उस दिन आपका उटना ही कहा जान कर गया हरेन्द्र माया। काशीमें आत्म स्थापित करनेके लिए राजेनने इन कुछ दिनोंके अमानुषिक परिष्म किया है।”

हरेन्द्रने कहा, परिष्म करता है तो वह अमानुषिक ही करता है।”

हाँ, यही किया उसने। पर उसका चौपाई हिस्ता मी अगर हमारे हम आत्मके लिए मेहनत करे तो क्या करने हैं।”

हरेन्द्रने आश्चर्यकृत हाथर कहा करेगा भई करेगा। अब एक घण्टा वह ठीक बातका ध्यानम नहीं कर सका। मैं निश्चयसे कहता हूँ तुम देख केना, अबसे उसके कामकी हद न रहेगी।”

स्त्रीधने खुद मी वह विश्वास कर लिया।

हरेन्द्रने कहा, तुम्हारे बापका आनेकी बातमें एक काम स्थगित पड़ा हुआ है। जानते हो मैंने मन ही मन क्या तय किया है? हमारे आत्मका अस्तित्व और उद्देश्य छिपाये रखनेसे अब काम नहीं बच सकता। देवकी और इन बनोंकी सहानुभूति प्राप्त करना हमारे लिए बकरी है। इसकी विशिष्ट काय-पद्धति का बन-साधारणमें प्रचार करना आवश्यक है।”

स्त्रीधने समीपच कण्ठसे कहा “परन्तु उससे क्या काममें शिष्ट न आयेगा?”

हरेन्द्रने कहा, नहीं। इसी रविवारको मैंने कुछ व्यंग्य आमंत्रित किया है वे सब देखने आयेगे। पेशा करना हागा कि आत्मकी शिक्षा, साधना, संयम और विद्वत्ताका परिचयसे उस दिन हम उन्हें मुग्ध कर दे सक — तुम्हारे ही ऊपर सब शक्ति है।”

स्त्रीधने पूछा, “कौन कौन आयेगा?”

हरेन्द्रने कहा “अज्ञि बाबू अविनाश-महारा, मामीजी। शिक्नाथ बाबू शिक्नाथ बाबू हैं नहीं मुना है कि किसी कामसे कथपुर गये हैं। पर उनकी श्री कर्मकाय नाम मुना हागा वे आयेगी, और लक्ष्मीयत ठीक हुई तो साकद आशु बाबूको मी पकड़ कर लईगा। जानत था हो, ये लोग कई ऐत-नैस आत्मी नहीं हैं। इस बातका सत्यता रखना है कि उस दिन इन व्यंग्यसे हम सामकिक अज्ञा कर सकें। इसका मार मुझीपर है।”

स्त्रीय किनवने मिर दिखला हुआ था “आधीवार हीविण कि पेना ही हा।”

रविबारके घामक पहले ही अम्बागत अंग भा पहुँचे। आब नहीं सिफ आगु थाबू। हरेन्द्र दम्बाजसं उन सकस्य सम्मानक साथ स्वागत-पूर्वक भीतर ल भाया। अन्क उठ नमब आभमक नित्य-कार्यमें लग हुए व। कई क्ती कस्य रहा रहा था कई काहू अंग रहा था कोई कून्हा मुस्यग रहा था, कई पानी भर रहा था आर कई र्लोर्की कैपारियों कर रहा था। हरेन्द्रने अकिनाघक प्रति कस्य करक ईतत हुए कहा भाई साहब, आप किमें अमागे आबाराका हल कहा करत है ये ही हैं वे हमारे आभमके लखक। हमारे यहाँ नोअर रखरवा नहीं हैं य ही ल्येग लब काम अपने हाथसे करत हैं।—मामीजी कसिय हमारी म्भजनघालमें। आब हमारे यहाँ पर्वकर दिन है यहाँअ मायोबन दम्ब आगु एक बार कसिय।”

नीसिमामे पीठे पीठे सब ग्माई-परके सामने बा लबे हुए। एक दस-बागह साम्भर कस्य कून्हा मुस्यग रहा था और उठी उमरक वूसरा सखक ईकिवास आबू बना रहा था। हानाने उठकर नमस्कर किया। नीसिमामे सङ्कास लइत मन्धोपन करत हुए पूछ आब तुम खयाक यहाँ क्या क्या ग्माई बनगी बटा ?”

एक सङ्केन प्रसन्न मुसबन उत्तर दिया आब रविबारक दिन हमारे यहाँ दम-आगु कनत है।”

और क्या क्या कनता है ?”

और कुछ नहीं।

नीसिमाने आकुल हाकर पूछा किउ दम आगु कन ? दस, हागु वा और कुछ—

अन्कन कहा दस हमारे यहाँ कठ कनी थी।

स्त्रीय पस हो लंग वा उमल लमसाल हुए कहा हमारे आभममें एक पीबन न्याया कानेअ निपम नहीं है।”

हरेन्द्रने ईसल हुए कहा, हानकी गुंबाग्य भी नहीं मामीजी, हागा

• आगुअ एक न्बेबन।

कहाँसे ? हमारे माई साहब इसी तरह वृत्तोंके आगे भावमत्ता गौरव बढ़ाना चाहत हैं।”

नीहिमाने पूछा ‘ नौकर-औकर भी नहीं हागं शायद ? ’

हरेन्द्रने कहा नहीं। उन्हें रत्ना शायदा तो दम-आपको बिदा कर देना पड़ेगा। सड़क ठसे पसन्द नहीं करेगा।”

नीहिमाने आगे कुछ नहीं पूछा उन सन्ध्याकी सूर्यकी तरफ देखकर उसकी अर्धे इशबदा था। धाडी समझनी और करी चले।

उसने इस बातक मानी समझे। हरेन्द्र पुष्पिष्ठ हाकर बोला ‘ चखिये, मैं निश्चयके साथ जानता था मामी कि यह आपसे सहा नहीं जायगा।” फिर उसने कमलकी तरफ देखकर कहा लेकिन आप तो खुद ही इसमें अम्बसा हैं—सिर्फ आप ही समझेंगी इस संयमकी साथकठाने। इसीसे उस दिन इस ब्रह्मचर्याधममें आनन्द विनयके साथ आपका आमन्त्रण दिवा था।’

हरेन्द्रके गम्भीर चेहरेकी तरफ देखकर कमल हँस पड़ी बोली, मरी खुदकी बात और है, लेकिन इन सब कथनाका इतने आश्चर्यके साथ उस तरहकी निष्पक्ष दरिद्रताका आचरण करनेका नाम क्या आदमी बनाना है हरम्रशास्त्र! य ही है शायद वहीँके ब्रह्मचर्या ? इन्हें आत्मी बनाना हा ता साधारण आर स्वाभाविक भागसे बनाएए। हाँ तुम्हका बात सिरपर आदकर अस्मयमें ही इन्हें बीना या कुबड़ा न बना हाखिये।”

कमलक धम्दोकी कठोरतासे हरेन्द्र तिलमिल गया अकिनाउमे कहा कमलको बुझना तुम्हारा ठीक नहीं हुआ हरेन्द्र।”

कमल धरमा गई बोली, “सबसे मुझ बुझाना किरीक छिये मी ठीक नहीं।”

नीहिमाने कहा, “ मगर मैं उन किरीमे शामिल नहीं हूँ कमल। मरे धरमे कमी तुम्हारा अनादर न हागा। चखे, हम अग ऊपर चखक बैठे। देखे, एम्बरीक आधममें और क्या क्या आतिशयाकिर्वा निकलती है ?” यह कहकर उगने अपने दिनक हाथक आसनक कमलकी जगह एक दी।

दूसरी मंत्रिमपर कर्पूर लम्बा चौग आधमका स्वास कमल था। पुराने कमानक नकाशीक काम उक नीचे और दीवारपर अब मी मौजूद है। बठमेके छिये एक बेघ और चार-पाँच कुर्तियाँ हैं पर साधारण उनपर बठना कई नहीं। पछापर एक बड़ी सतराँकी किरी हुई है। आज आज दिन

“ पर आपने मुना किससे ? ”

“ आशु बाबूजी बुझने गया था उन्होंने कहा कि शावर कम आप का रह है । ”

अकिलन कहा शावर । पर कम नहीं, फलो । यह भी निश्चित नहीं कि पर बाईगा या और करी । हा सच्चा है कि शाम एक रेघन पहुँच बाई और उत्तर-दक्षिण पूर्व-पश्चिम किन तरफकी गाँगी मिल बाप उठीपर यात्रा शुरू कर है । ”

हरेन्द्रने ईमठ हुए कहा समाग बीसगी हानके रंगपर । अयात् यमाय रवानका कोई निश्चय नहीं । ”

अकिलने कहा नहीं । ”

तकिलन छात्रनेका ? ”

नहीं, उसका भी फिदास कोई निश्चय नहीं । ”

हरेन्द्रने कहा, ‘ अकिल बाबू आप भागवान् आदमी है । परन्तु शरिवा-कम्पा होनेक सिध अगर बाहिप ता मैं एक आदमी के सक्ता हूँ परदेनके सिध पेसा मित्र मिलना मुश्किल है । ’

अकिलने कहा, “ और स्वेरदकी बकरत हो ता मैं भी एक पेसा व्यक्ति के सक्ती हूँ किन्की बाड़ी मिलना मुश्किल है । आप भी स्वीकार करेगे कि हों है का अहंकार करने लयक ही । ”

अकिनाछने कुछ भी अण्ड नहीं समा रहा था के जाने हरेन्द्र, अत्र देर कोही है यदनेकी तैबारी करो न । क्या कहत हा ? ”

हरेन्द्रन किनयक साब कहा सड़ककि साब क्या परिवचन न कीकिपगा ? याहा बहुत उपदेश उम्मे न के बाणण्या, माँ साहब ? ”

अकिनाछने कहा, “ उपदेश देने तो मैं भाता नहीं आता या सिध इन अगोत्र ताबी बनकर । तो उठनी भी अब शावर बकरत नहीं रही । ”

लतीस बहुत-से अकिलके साथ ऊपर आ पहुँचा । इस-शरद पर्यमे लेकर उनीम-बीस बरके पुकक एक उम्मे व । बाइके दिन और बदनफ सिध एक कुठला, पौकी बूते एक नहीं—शावर इतसिध कि बीकन भारतके सिध उनका कोई विशेष प्रभावन नहीं । लाने-पीनेकी व्यवस्था पहल ही दिख ही गई है । ब्रह्मचर्याक्रममे यह सब सिधाने ही अंग है । हरेन्द्रन आज एक मुन्दर मायन रक्षण था, वह मन ही मन उठीका दुखते हुए बधोचित

गाम्भीर्यके साथ बोला ' इन सड़कनि देशके क्रममें जीवन अर्पण कर दिया है। यही मातीपात्र आप खेग हमें हीबिए कि आभमका यह महान् आश्रय मास्रके नगर नगर और गाँव गाँवमें ये प्रचार कर लके। "

मकने मुक्त कण्ठसे मातीवाद दिया।

हरनूने कहा अगर समय मिला तो अपना बक्तव्य मैं पीछे सुनाऊँगा।

यह कहकर उठन कमरका कम करके कहा आपका ही आज सास तौरसे आमत्रण बेकर हम खेगाने बुझवा है, कुछ सुननेकी आवासे। सड़के आदा खेगाने हुए हैं कि आपके मुँहसे आज वे पेशी काह बात सुनेंगे बिसते उनके जीवनका शत अघिकतर उम्कस हा उठे। "

मार सख्त आर दुविधाके क्रमस मुल हो उठी। धाखी, 'मैं तो ब्यासवान नहीं दे सक्ती हरेन बाबू। "

इसका उत्तर लिखा खीचने, बोला " ब्यासवान नहीं उपदेश चाहत है हम। देशके क्रममें जो चीज उनके सक्ते ब्यादा क्रममें आयेगी, लिफ उलीके बारेमें। "

क्रममें उलीस पूछ देशके क्रमसे आपका उत्तर क्या है पहल यह ब्याहए ? "

खीचन कहा, क्रिमसे देशका सर्वांगीण कस्याव हा वही तो देशका काम है। "

क्रममें कहा, मगर कस्यावकी पारणा तो सक्ती एक-सी होती नहीं। आपके साब मेरी पारणाका अगर मेख न बैठा तो मेरा उपदेश आपके क्रम नहीं आ सक्ता। "

खीच संकटमें पड़ गया। उस बक्तव्य ठीक उत्तर उसे पूँदे न मिया। उलका इस संकटस उदार क्रमके लिए हरनूने कहा ' देशकी मुक्ति क्रिमसे मिले बही है देशका एकमात्र कस्याव। देशमें पेना कौन हागा जो इस कस्याव न मानता हो ? "

क्रमने कहा, क्रममें हर सज्जा है हरेन बाबू कि सक्ते सब मन्क उठेगे। नहीं तो मैं ही कहती कि अपने आपका और दूसराथ भूखमुखाने हालनेवाका इस मुक्ति सक्के समन आर काई छड ही नहीं। क्रिमस मुक्ति हरेन बाबू ? क्रिमस हु-कस या मक-कवनसे ? ब्याहए कि क्रिमसे देशका एक मात्र कस्याव समसकर आभम-प्रतिष्ठामे आप खेग निमुक्त हुए हैं ? यही क्या आपकी स्वदेश-सेवाका ब्याहए है ? "

हरन्द्र व्यस्य होकर बोला, " नहीं, नहीं, नहीं, यह तब नहीं, यह तब नहीं, यह कामना हमारी नहीं। " कामन्ने कहा, ' तो फिर ऐसा करिए कि यह हमारी कामना नहीं, करिए कि हमारा आदर्श इसने मिश्र है। करिए कि मन्तव्य-स्वाग और वैराग्य-साधन हमारा स्वरूप नहीं। हमारी साधना है संसारका सम्पूर्ण ऐश्वर्य सम्पूर्ण सौन्दर्य सम्पूर्ण जीवन लेकर बीकित रहना। मगर उसकी शिभा क्या बची है ? क्यनपर कपडे नहीं पहनते, फटे पुगने कपडे पहन रखे हैं, कन्ने बाल हैं एक एक अच-येर साफर बा सफर अन्वीकणक बीच बंध रहे हैं प्रातिब मानन्वका बिनक मीटर चिह्नक नहीं रहा है देवकी कम्पनी क्या ठन्कीके हाथ अपने माध्यात्री वाली सीप देगी ? हरेन्द्र बाबू संतारकी तरफ एक बार मुंह उठाकर देखिए तो लही। किन्ने बहुत मिया है उन्हने ही मालानीसे दिबा है। उन लोगको ऐसी अकियनताका सूख साफर स्वागका प्रेरणक नहीं बनाता गया वा। "

स्त्रीका हस्तकुट्टि-सा हा गया, बाबा क्या आप करना चाहती है कि देवका मुक्ति-मार्गमें कामकी साधना और स्वागकी हीसाकी कार्य करत नहीं ? " कामन्ने कहा, मुक्ति-मार्गमका अर्थ तो पहले तय हो जाय ? " स्त्रीका काले सौन्दर्ये स्मा। कामन्ने हैलही हुंरें बोधी, आपका मायास मान्मस होता है कि आप बिदेची रखणकिके कथनसे मुक्त हानेका ही देवका मुक्ति-मार्गम कर रहे हैं। मगर यही हा स्त्रीका बाबू का मेने न वा कमी धर्मकी साधना की है और न स्वागकी हीसा ही सी है कि मी आपसे करे देती है कि मुसे आप सबसे आगे सामना करनेवालाके रथमें पाएएण — आप आप श्लेष तब हुंरें मी न मिलेगे। "

स्त्रीका कुछ बोधा नहीं, वह न जाने कैसा बका-सा गया और उसकी पंचक दृष्टिअ बहुतकर कती हुंरें कामन्ने कुछ देरके किय किस ब्यक्तिकी आरसे कति न पर लकी वह वा रजेन्द्र। स्त्रीकाक सिवा किरीन उपर सस्य ही नहीं किबा वा कि कब वह गुणकेसे दरवाजेके पास बा कड़ा हुआ वा। वह माता-पुत्रकी नीति निष्पत्तक दृष्टिसे अकलक कामन्ने ही और देख रहा था, भीर अथ मी ठीक उनी तरह देकना रहा। उसका बोहर एक बार देखकर फिर मूकना मुश्किल वा। उमर घाबर पचीस-अन्वीकके समयमा होगी, रंग किंकुडक लक गेर, तहला देकनेसे अलामादिक-सा मान्मस पकता

है। ऊँचा प्रसस्त लम्बान् इसी धमरमें बाल उड़ जानेके कारण सामनेकी तरफ बहुत बका दिखाई देता है। शींसे पहरी ओर एक छोटी छोटी है जैसे धंधरे किस्मसे खुलेकी शींसे कमक रही हो। नीचेका मोटा शींठ सामनेकी ओर झुककर मानो धमताकरबके कठोर संकल्पको किसी तरह बचाने हुए है। छद्मा बचनेसे ऐसा धमता है कि इस भावमीसे बचकर बसना ही अच्छा है।

हरेन्द्रने कहा ये ही मेरे मित्र हैं राजेन्द्र —सिर्फ मित्र नहीं बल्कि छोटे भाई जैसे। इतना कर्मठ कार्यकर्ता इतना बका लवरेस मध्य, इतना निडर और साधुचित्त पुरुष मैंने कुरा नहीं देखा। मामीमी इहीके निकट मैं उस रोज आये कर रहा था। वह उसे ईसते-जेसते पाठा है जैसे ही ईसते-जेसते चेंक देता है। आश्चर्यजनक भावमी है। अशित बाबू, इहीको मैं आपके साथ ले रहा था मार बहन करनेके लिए।”

अशित कुछ कहना ही चाहता था कि एक झड़केने आकर खबर ही असुन बाबू आये हैं।

हरेन्द्र विस्मित होकर बोला अशुभ बाबू ?”

असुनने बरमें जुसते हुए कहा हों जी, हों —तुम्हारा परम मित्र अशुन कुमार।” फिर वहसा चौंकर कहा, “ऐं। आज बात क्या है ? यहाँ तो सभी अने इकठे हैं। आशु बाबूके साथ धरमें बूझने निकलना या छद्मा खयाल आना, हरि गोपकी मोक्षाम तो बरा देखते आये। इसीसे बका आया बको अच्युता ही हुआ।”

इन सब बातोंका किसीने बचाव नहीं दिया, कारण उसमें न तो कुछ बचाव देने मानक का भीर न अछपर किसीने विश्वास ही किया। अशुनका न तो यह रास्ता ही है और न इधर वह कमी भाठा है।

अशुनने कमलकी तरफ देखकर कहा ‘तुम्हारे वहाँ कम सभरे ही जानेकी सोच रहा था लेकिन मध्यन तो मुझे माखन नहीं —अच्छ ही हुआ जो मैं हो गई। एक छम संवाद है।”

कमल चुपचाप देखती रही- हरेन्द्रने पूछा ‘छम संवाद क्या है, सुनाओ तो पही। वह नियम है खबर अब छम है तो गायनीय तो होगी नहीं।”

अशुनने कहा “नहीं, छिपाने कायक जब रह ही क्या गया है। रास्तेमें

आज उस सिखाईकी मशीन बेबनेवाके कमरके पारसीसे भेंट हो गई जो उस दिन कमरकी तरफसे अपने उबार देने गया था। माफी रोकर मासका पूजा गया।” फिर कमरकी तरफ इधारा करके कहा आप उबारमें एक मशीन पढ़ीकर चट्टी-चट्टी चीकर कर्न बना रही थीं।—सिखाव तो मीठसे जापटा है।—मगर इधरके मुठाबिह किन्तु तो कपूर चुकनी ही चादिए, इधरसे वह मशीन चीन के गया। भाइ बाबूने आज उसे पूरी चीमठ इधर पढ़ीर किया है।—कमर कम चबेरी ही आदमी मेककर मशीन मंगा कैना। जाने पहरनेसे भी तप हो हम ज्येगोसे तो यह बात कहनी थी ?”

इसके कहनेकी बर्बर निपुणताके लवके सब समाहित हुए। कमरके भावभावहीन चीन बेहरेका कारण जानकर मारे शर्मके अविनाश तकक्त खेरा त्यर हो ठठा।

कमरने यह कण्ठसे कहा, मेरी तरफसे कृतज्ञता बताकर उन्हें मशीन वापस कर देनेको कह दीजिएगा। अब मुझे उसकी बहरत नहीं।”

हरेन्द्रने कहा “अजन बाबू, आप बड़े जाइए इस करसे। आपकी भिने दुखवा नहीं वा और न बाहा ही वा कि आप नहीं आर्ये। फिर मी आप बड़े जाये। आदमीकी झुंकेकी (पण्डा) को क्या कहीं कोई हद ही नहीं।”

कमरने सहसा मुँह ठठते ही बेका कि अहितकी दोनो ओंके ज्येगोसे सर आई हैं। दोमी ‘अहित बाबू कना आपकी बाही साब है, कृपा कर मुझे पढ़ेवा दीजिएगा।”

अहित कुछ बोका नहीं उसने सिर्फ सिर हिकार हों कर ही।

कमरने नीसिमामे नमस्कार करके कहा अब सायब सन्दी भेंट न होनी मैं नहींसे वा रही हैं।”

पुण्डेकर निस्तीको साहस नहीं हुआ कि कहीं। नीसिमामे सिर्फ उसका हाथ केकर अपने हाथमें दबा दिया और दूसरे हाथ कमर हरेन्द्रको नमस्कार करके अहितके पीछे पीछे कमरेसे बाहर निकल गई।

१५

मोटरमें बठकर कमर अम्बामरक-सी होकर आघाघकी ओर देखा रही थी। माफी समते ही इधर-उधर देखकर उसने पूजा यह कहीं वा गये अमित बाबू, मेरे बरका रास्ता तो यह नहीं है।”

अकितने ठहर दिया नहीं वह परका रास्ता नहीं । ”

नहीं है ! तो लौटना पड़ेगा साबद ! ”

छो भाव जाने । हुकम करते ही झूट पहुँचा । ”

सुनकर कमल आश्चर्यमें पड़ गई । इस अद्भुत उत्तरके कारण घतनी नहीं कितनी उसके अन्तर्नि अस्वामाविच्छासे वह विचलित हो उठी । सुन-भर मीन रहकर उसने अपनेको हड़ किया और फिर बैठते हुए कहा राह भूखनेका अनुरोध तो मैंने किया नहीं अकित बाबू, जो संशोधनका हुकम मुझको ही देना होगा ! ठीक जगह पहुँचा देनेका दायित्व आपका है,—मेरा कर्तव्य है किर्क आपपर विश्वास किने रहना । ”

मगर दायित्व-बोधकी धारणामें अगर भूख कर बैठे होतें कमल तो ! ”

मगर के छपर तो कोई विचार कम नहीं सचता अकित बाबू । मूलके बारेमें पहले निःसंशय हो जाने दो, उसके बाद हकका विचार करेंगी । ”

अकितने अस्तुष्ट स्वरमें कहा “ तो विचार ही कीजिए,—मैं प्रतीका कर रहा हूँ । ” इसके बाद वह सुन-भर लक्ष्म्य रहकर सहसा बोक ठठा ‘ कमल उस निवन्धी बात बाद है तुम्हें ! उस दिन मी ठीक ऐसा ही अन्वकार था । ”

“ हाँ ऐसा ही अन्वकार था । ” कहकर कमलने गाड़ीका दरवाजा खोला वह पीछेसे उतरी और अकितकी बगलमें सामनेकी सीटपर जा बैठी । सुनघान अन्वकार, रात्रि निवन्धुन नीरव थी । कुछ बेरतक दोनोंमें कोई कल बोस्य नहीं ।

“ अकित बाबू ! ”

हूँ । ”

अकितकी छतीके नीवर औंधी उठ रही थी अबाव देनेमें बात उसकी सुँहकी सुँहमें ही दिसा रही ।

कमलने फिर पूछा क्या सोच रहे हैं, बताएँ न ! ”

अकितका कंठ झोंपे जमा बोका ‘ उस दिनका आशु बाबूके मकलनका मेरा आचरण तुम्हें बाद है ! उस दिन सोचा था कि तुम्हारा अटीत ही साबद तुम्हारा सभसे बड़ा अंग है मैं उसके साथ समझौता कैसे कर सचता हूँ ! पीछेकी ही छवाको सामने बढाकर मैंने तुम्हारा प्येरा हक सिन्धा या और इस बातको भूल गया था कि सूर्य जूना करता है । मगर अब जाने दो—केकिन भाव क्या सोच रहा हूँ, तुम नहीं समझ सचती ! ”

कमलने कहा जो होकर इसके बाद भी न समझ सकोगी मैं क्या इतनी निर्दोष हूँ। यह जब मूके बने तो तनी समझ लिया था।
 अश्विनी बीरे बीरे उसके कंपसर बायी हाथ रखकर चुप हो रहा। कुछ देर बाद बहने कहा "कमल मासूम होता है, आज जब मैं अपनेको समाप्त नहीं सकेगा।"

कमल हटकर नहीं बैठी। उसके आचरणमें विस्मय का विद्युत्प्रकाश नाम तक बचा। सहज-स्वामाधिक शान्त बचसे बोली, इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं अश्विनी बानू ऐसा तो हुआ ही करता है। लेकिन आप तो बिल्कुल पुरुष ही नहीं हैं, श्याम-निष्ठ सिद्ध पुरुष हैं। इसके बाद फिर मुझे बहिसे उतारि एसा कैसे। इतना बड़े काम तो आप कर नहीं सके।
 अश्विनी गाँव स्वर्गमें बोला "ऐसी आसछा तुम करती ही क्यों हो कमल मैं ऐसा काम करना ही पड़ेगा।"

कमल हँस ही और बोली, "आशंका मैं अपने लिए नहीं करती अश्विनी बानू, करती हूँ सिर्फ आपके लिए। आपसे करते बनता तो मुझे कोई डर न था सोच यही है कि करते नहीं बनेगा। सिर्फ एक रातकी गलतीके बच्चे इतनी बड़ी सजा आपके लिए लाद देनेमें मुझे तरस आता है। अब नहीं बसिये जीत लें।"

बात अश्विनीके कमलतक पहुँची, पर डरन तक नहीं पहुँची। लक्ष्मी-मरने बचकी नसोंका लक्ष्य प्राप्त हो उठा—अपनी छातीके पास मोरसे उसे चीककर मरत बचसे बोस उठा मुसपर क्या तुम विश्वास नहीं कर सकती कमल।
 लक्ष्मी-मरनेके लिए कमलकी सास रुक गई, बोली कर सकती हूँ।
 तो किस लिए छींटना चाहती हो कमल। यन्त्रो हम लगे लगे।
 बसिये।"

गाड़ी बजाते तक अश्विनीने सहसा बचकर पूछा "बरसे साम कैसे लानक क्या तुम्हारे पास कुछ भी नहीं।
 नहीं। लेकिन आपके।"

अश्विनीको लोचना पडा। केबमें हाथ बाककर बोला बपये-मैसे तो कुछ लानमें हूँ नहीं—उसकी तो जहरत पौगी।
 कमलने कहा "याही वैच देनेसे आसानीसे लाने जा जायेंग।"

अभितने आश्चर्यके साथ कहा ' गाड़ी बेचूंगा । मगर वह तो मेरी नहीं है,—आधु बाबूजी है । ”

कमलने कहा इससे क्या । आधु बाबू मारे सज्जा और कृपाके गाड़ीका नामठक बवालपर न कायेंगे । कोई विन्ता मत कीजिए,—बड़े बकिए । ”

सुनकर अभित स्तब्ध हो रहा । उसका बायीं हाथ अब भी कमलके कंधेपर था, वह किसकंधर नीचे था पथा । बहुत देर चुप रहकर वह बोला ' तुम क्या मेरा मजाक उठा रही हो । ”

' नहीं तो सब क्या रही है । '

' सब क्या रही हो और सब ही समझ रही हो कि मैं गाड़ी चुरा सकता हूँ । यह काम तुम कर कर सकती । ”

कमलने कहा ' सचने न सचनेपर अगर आप निर्भर करते अभित बाबू, तो मैं इसका बवाल देती । परन्तु चीज हरूप केनेकी क्षिमत आपमें नहीं है । बकिए, गाड़ी कुमाकर मुझे पर पहुँचा दीजिए । ”

सौदते वक्त अभितने धीरेसे पूछा ' पराई चीज हरूप केनेको क्या बहुत बड़ी बात समझती हो तुम । ”

कमलने कहा ' बड़ी-छोटीकी बात नहीं की गिने । वह साहस आत्ममें नहीं है बस बड़ी क्या है । ”

' नहीं नहीं है और उसका सिए मैं सज्जाका अनुभव भी नहीं करता । ” यह कहकर अभित बरा दम और फिर बोला ' बलिह होता तो उसे मैं सज्जाकी बात समझता और मेरा तो विश्वास है कि सभी शिष्ट व्यक्ति इस बातको स्वीकार करेंगे ।

कमलने कहा ' क्योंकि स्वीकार करना बहुत आसान है । उसमें बाहबाही को मिकती है । ”

' बिल्कुल बाहबाही ही । उससे ज्वारा कुछ नहीं । शिष्टा और संस्कार नामकी क्या कोई चीज ही नहीं बेची तुमने कभी । ”

' अगर बेची भी हो, तो उसकी आम्नेकना अगर कभी मौका आना तो और किसी दिन करैगी आज नहीं । और वह एक-भर मौन रहकर बोली ' आपके तर्कपर अगर और कोई होता तो बर्गसे करता कि ' कमलको हरूप केनेकी कोशिसमें तो शिष्टा और संस्कारको संश्लेष हुआ नहीं । ' मगर मैं ऐसा नहीं कर सकती, क्योंकि कमल किसीकी सम्पत्ति नहीं है । वह सिर्फ आपकी ही है और किसीकी भी नहीं । ”

‘ कितनी दिन खावद हो भी नहीं सकती ! ’

‘ वह तो भविष्यकी बात है अश्विन् बाबू — आज कैसे इसका जवाब दूँ ? ’

जवाब खावद कितनी भी दिन नहीं दे उन्हेगी । मासूम छटा है, इमीतिव्
स्मितावकी इतनी बड़ी निरममता भी तुम्हें नहीं खरकी । बहुत ही चाछानीसे उसे
तुम्हें साह केँध । ’ अक्षर अश्विन्ने ओरकी एक सौत से ली ।

मोटरके ठकाठेसे दिखा कि सामने कई एक बैकगाडिवाँ खड़ी हैं । पास ही
खावद मौँव है, किसान बेचीकी पैठी गाडिवाँ एकदगर डीककर बैक लेकर भर
बडे पये हैं ।

अश्विन् चावधानीसे उस जगहको पार करके बोसा कमळ तुम्हें समझन
करिज है । ”

कमळने हँसकर कहा करिज कैसे ! ठीक ही तो समझे थे कि राह भूलत
ही मुझे मुलाकर के जावा वा सफटा है । ”

खावद वह समझना मेरी मूल थी ।

कमळने फिर हँसते हुए कहा “ रास्ता भूलना मूल मुझे मुलाकर के जानेकी
कोशिस मूल और फिर अपनी भी मूल । इतना बड़ा भूलन बोसा आफन बूट
होगा कन ! अश्विन् बाबू अपनेपर बरा भया रहना सीखिद । इस तरहसे
अपने सामने अपनेको छोटा मत बनार । ’

मगर अपनी मूलको अस्वीकार करना ही क्या अपनेपर भया रहना
है, कमळ ! ’

नहीं सो नहीं । पर अस्वीकार करनेकी भी एक रीति है । संसार सिर्फ
अपनेको केकर ही तो है नहीं । ऐसा होता तो फिर सब संसार ही मित्र बाठा ।
परी और भी बस अनोका बास है, सनकी भी इच्छा-अविच्छा — उनके भी
अपमकी बारा हमारी केरसे वा टकराती है । इसीसे अश्विन् पलायन अगर
मनके भाकिड न हो तो उसे मूल बावकर बिहार बेते रहना अपना ही अपमान
करना है । अपने प्रति इससे बचकर अथछा बतारए, और क्या प्रकट की वा
सफती है ! ”

अश्विन्ने धन-भर रुप एकर पुर, बैकिज जहाँ सबमुबकी मूल हो !
सिखनाचके समन्यमे भी क्या तुम्हें आराम-पयाताप नहीं हुना कमळ ! और
वही क्या मुझे तुम विधास करनेको खती हो ! ”

कमळने इस प्रश्नका खावद मीचमे उत्तर नहीं दिवा बोली “ विधास

करने व करनेकी गर्म तो आपकी है। उनके विरुद्ध तो किसीके पास किसी दिन मैंने सिखावत की नहीं।”

‘सिखावत करनेवासी तुम की ही नहीं। पर मुझे किये क्या अपने आप भी कभी आपनेको नहीं बिचारा?’

‘नहीं।’

तो इतना ही चिर्च में वह चकता है कि तुम बहुत हो, तुम असाधारण हो।

इस मन्तव्यका कमलने कोई जवाब नहीं दिया वह पुन हो रही।

इसेक मिनट बीत जानेके बाद अश्रित सहसा एक बैठ ‘कमल ऐसी भूख अगर फिर भी कर बैठें तो भी क्या तुमसे मेंट होगी?’

अगर वह जबाब तो अगर से ही दिया जा सकता है व्यक्ति बापू। अनिश्चित प्रस्तावके निश्चित समाधानकी भासा नहीं करनी चाहिए।”

“अपना, यही तुम्हारा विचार है कि यह मोह भेरा कम तक सिचेगा नहीं?”

“मुझे लगता है, ऐसा होना कमसे कम असम्भव तो नहीं।”

अश्रित मन ही मन आहत होकर बाबा मैं और बाहे को भी होऊँ कमक सिचनाय नहीं है।”

कमलने जबाब दिया तो मैं जानती हूँ व्यक्ति बापू, और धारक आपसे भी ज्यादा जानती हूँ।”

अश्रितने कहा “जानती होती तो यह विचार व कर लेती कि आज मैंने तुम्हें इतने बहकाना बाहा था, इसमें सत्य कुछ भी नहीं था।”

कमलने कहा इतनी बात तो हो नहीं रही अश्रित बापू, मोहकी बात हो रही थी। ये दोनों एक चीज नहीं। आज मोहक वच होकर अगर आपने किसीको बहकाना बाहा हो तो वह अपनेको ही बहकाना बाहा है। मुझको बहकाना नहीं बाहा —जानती हूँ।’

पर अन्तमें उमाई तो तुम ही जाती कमल। इसे निश्चित समासकर भी कि मेरा रातका मोह दिनक अत्रालेमें बट आयागा तुमने साथ बचनेसे इनकार नहीं किया। यह क्या सिद्ध उपहास ही था।”

कमल जरा हँस ही। और कर देख क्यों नहीं लिना। रास्ता खुला था, एक बार भी तो मैंने मना नहीं किया था।”

अभिष्ट बोरकी एक सीस खेचकर बोला 'अगर नहीं किया तो मैं नहीं
 करूँगा कि तुम्हें समझना बास्तबमें ही कठिन है। एक बात मैं तुमसे कहता
 हूँ कमल कि जैसे नारीका प्रेम इतरको आच्छन्न कर देता है वैसे ही उसके
 रूपका मोह भी बुद्धिको बेहोस कर डालता है। किया करे पर हमसे एक
 कितना बका छल्य है, दूसरा उल्ला ही बका अछल्य है। तुम तो जानती थी
 कि वह मेरा प्रेम नहीं है सिर्फ कनिक मोह है। फिर जैसे तुम इसे बकाना
 देनेसे तैयार हो गईं ! कमल, दूसरा चाहे कितने बंध समारोहके साथ सर्वके
 प्रकथको कह के, फिर भी वह अछल्य है। तुम छल्य तो सर्व ही हैं।"

कमल अन्धकारमें कल-भर विभिन्न विधिये उसकी तरह देखती रही उसके
 बाद सान्त कण्ठसे बोली यह तो क्विची उपमा है अभिष्ट बाबु, कोई
 मुक्ति नहीं सत्य भी नहीं। मास्त्रम नहीं किन खादिम कालमें दुहरेकी सृष्टि
 हुई थी पर आज भी वह वही तरह मौजूद है। सर्वको बसने बार बार बका
 है, और बार बार डफता रहना। मास्त्रम नहीं सर्व हुए है ना नहीं, पर दुहरा
 भी अछल्य प्रमाचित नहीं हुआ। दोनों ही नष्ट हैं और हो सकता है कि दोनों
 ही निरल हो। इसी तरह मझे ही मोह कनिक हो कर भय भी तो अछल्य
 नहीं। कल-भरका सत्य खेचर ही वह बार बार बापस आना करता है। मास्त्रती
 कृष्णकी भावु सर्वमुखीकी तरह कम्बी नहीं पर उसे अछल्य क्वचर कीम उवा
 सकता है ! नहीं अगर मास्त्रकी सिफायत हो कि मैंने एक रातके मोहको बकाना
 क्यों देना चाहा था, तो मैं पूछती हूँ कि जानुप्य प्रान्तकी कम्पाई ही क्या जीव
 नचा इतना बका छल्य है !"

यह जानकर भी कि मैं वार्ते अभिष्ट समझ नहीं रहा है वह करने कयी
 आपके लिए मेरी बात समझनेका दिन अब भी नहीं आया। इससे फिर
 बाबके प्रति आपके क्रोधकी सीमा नहीं मगर मैंने उन्हें भ्रमा कर दिया है।
 इसकी मुझे बरा भी सिफायत नहीं कि कितना उनसे मैंने पाया है उसके जवाब
 मुझे क्यों नहीं मिला।"

अभिष्टने कहा "पानी मनको इतना निर्किचर बना डाला है ! मन्छा,
 संभारमें कितनीके निरुद्ध बना तुम्हें कोई भी सिफायत नहीं है !"
 कमल उसके दुहकी ओर देखकर बोली "है कि एकके निरुद्ध।"
 किनके निरुद्ध बताओ तो सही कमल !"
 "क्या करेगी आप पराई बात सुनकर !"

पराई बात ! कोई भी हो फिर भी कमसे कम निश्चित हो सकेगा कि सुधर सुम्हार गुस्ता नहीं है ।”

कमलने कहा निश्चित होनेसे ही क्या आप पूरा हो जायेंगे ? पर उसके लिए अब समय नहीं रहा हम क्षेप का पहुँचने पाकी ऐकिय, मैं उतर जाऊँ ।”

याही बह गई । कैपेरेमें सड़कके किनारे कोई कड़ा का पास आते ही दानों थोक पड़े । अश्रित बरा हुआ बोला “कौन ?”

‘ मैं हूँ राजेन्द्र । वही जिसे आज हरेन्द्र-भइयाके आश्रममें देखा था ।”

अच्छा राजेन्द्र ! इतनी रातमें यहाँ कैसे ?”

‘ आप स्नेहोष्ठी ही बात देख रहा था । आप स्नेहोष्ठी जानके बाद ही जगु बालूक यहाँसे आरमी आया था आपसे हीवन ।” यह बहकर वह कमलकी तरफ देखने लगा ।

कमलने कहा मुझे हरेन्द्रका कारण ?

उसने कहा आपने शायद सुना होगा कि चारों तरफ आरथ इन्कडरंका पथ रहा है। और बहुतसे स्वयं मर रहे हैं । शिवनाथ बाबू बहुत ज्यादा शीमार हैं । अचानक उन्हें मैं बालीमें शिवाकर आशु बाबूके घर पहुँचा आया हूँ । आशु बाबूने साधा होगा कि आप आश्रममें होंगी इसीसे यहाँ बुकाने भेजा था ।”

अभी क्या बच होगा ?”

“छाबद तीन बच चुके हैं ।”

कमलने हाथ बड़ाकर पाकीअ दरवाजा खोलना और कहा “नीतर बठिय, रास्तेमें आपसे आश्रममें उतरात चले ।”

अश्रितने एक शब्द भी मुँहसे नहीं निकाला । अठके पुनःकेरी तरह सुपचाप पाकी पलाठा हुआ हरेन्द्रके घरके सामने आकर ठहर गया । राजेन्द्रके बतरनेर कमलने कहा “आपसे अन्यथा । मुझे खबर इनके मियू आज जानघे बहुत बय हुआ ।”

यह तो मेरा काम ही है । खबरत होते ही खबर सीधिया ।” बहकर वह कमल गया । न कोई मूर्खिअ न कोई आदम्बर — सीधे-सारे राधेमें कहा गया कि यह उसके कर्मिक अन्तर्यन है । आज ही सामने हरेन्द्रके मुहसे इस अदके विषयमें जो कुछ अपने सुना था सब याद आ गया ।

एक तरह उलझी बगिचा गल करवेकी अज्ञाधारण दृशता और दूसरी तरह उलझावे सामने पहुँचत ही उधे झान देनेकी असीम उदासीनता । उमर मी कम हाथ ही बीजमम करम रखा है,—और इही उमरमें अपना' कल्पनेचे कुछ मी हाथमें नहीं रखा पराये काममें लव बाँध दिया ।

अभिहित करनेसे पुत्र ही था । यह सुननेके बाद कि रातके तीन बज चुके हैं किसी वातावर ध्यान देने समयक छवि उममें नहीं थी । एक अलम्बद अचरानिक प्रशोत्तर-वाक्काके भाषण-व्यतिपातके बीचे इस निश्चीन अधिवाककी निरावधिप्रत बुझिगतासे बलव्य अन्त करन आरम्भ हो उठा । अतीतक सम्मर है, खेई मी यलसे कुछ कुटोना नहीं और हो सक्ता है कि पुत्रनेकी हिम्मत मी किसीकी न रहे पर सिर्फ अपनी इच्छा अधिपति और विद्रोपकी तुमिच्छाके लोप अज्ञात कतनाकी कल्पनी आच्छेपान्त पूरीकी पूरी बना केने । और इससे भी पबारा उधे आबुल कर रखा था इस सन्महाहीन नाटीकी निर्मम सदाधारिताने । इस दुनियामें कुछ बोझनेकी स्ते आक्यकता ही नहीं । यह जानो घाटी दुनियाक संकटमें डालने और अकित करनेके लिए ही पैदा हुई है ।

उमर उधे नहीं मात्स कि विनवाककी बीमारीमें बीज और केसे केसे लोप जावे होगे । यह कल्पना करके कि इस बीजे सब लोप इतकी बेर होनेका कारण पूछ रहे हैं, उलझा लल उठता हो गया । सहसा उधे खवाक आया कि यह कमजोरे पूजा करता है और इहीके सुम्प आवाकलते उलने अज्ञान-विस्मृत उम्मातकी तरह सज-मरके लिए ही उही अपना होष लो दिया था । मन ही मन यह कहकर यह बार बार अपनेको अधिज्ञाप देवे लगा कि जरूर इसकी उधे सखा मिलनी चाहिए ।

मेडके अन्वर सुगत ही उलझी बजर पड़ी चुकी विदकीके सामने खरे हुए आहु बाबूर । सजद मे उलझी मतीझामें उलकठित हैं । गानीकी आहउधे नीपेकी ओर देखकर बोले, अधिहित जा नवे ! ताकमें बीज है कमल ! ”

हाँ । ”

“अनु, कमजोरे विनवाकके कमरेमें के आओ ।—सुना होया ताबद मे बीमार हूँ । ” कहते कहते मे लुर ही उठर आये और बोले “यह अनु यहलनेका समय देना करतव है कि अवाकक जाली तरह बीमारी छूक हो गई है, और आपकी लोप जर रहे हैं । मेरी अपनी उलीकत मी आब खेरेके लीक नहीं इतरक-की मात्स लव रही है । ”

कमल उठिभ होकर बोली ' तो आप जाय क्यों रह हैं । यहाँ देख-रेख करनेवालोंकी तो कमी नहीं है ।

" कौन है, बताओ । डॉक्टर आकर देख-माक लये हैं, मुझे सोमि मेककर मणि स्वयं ही बेटी जाय रही है । पर मुझे नींद ही नहीं आती थी और तुम्हारे आनेमें डेर होने लगी ।—कमल पतिकी वीमारकि समझ भी क्या अमिमान रखा जाता है । स्त्राई-स्त्राका तो होता ही रहता है, पर तुमने खबर तक नहीं की कि तीन-चार दिनोंके कहीं किस मकानमें वह बुखारमें पड़ा हुआ है । छि । वह कम अस्वस्थ नहीं हुआ अब अकेली तुम्हींको तो सब सुनतना पड़ेगा । "

हुनकर कमलको बड़ा आश्चर्य हुआ और समझ गई कि इस अरुणभित्त पक्षिको भीतरकी कोई भी बात माकल नहीं । वह चुप रही आठ बाबू बसके अमिमानको शान्त करनेके अमिप्रायसे करने लगे ' इरेन्क बाबूके सुँहसे मुना कि तुम फरपर नहीं हो तभी मैं समझ गया कि अकितने तुम्हें ओका नहीं । वह बुर बुर बूमना पसन्द करता है, तुम्हें भी छे गया होगा । केकिन सोचो तो जरा, केपेरेमें अबाकल कोई पुँडतना हो जाती तो तुम सोच केती आउतमें पडते ? "

अकितकी अतीपरसे एक पत्थर-सा उतर गया । आठ बाबूके लिए वह सोचने लगा : किती बालकी पुराईकी तरफ मानो उमका मन बाधा ही नहीं चाहता किन्तु अन्तःकरण हरदम अकमल हृदयसे अमका करता है । स्नेह ओर अस्थसे उसने मन ही मन उन्हें नमस्कर किया । केकिन कमलने उमकी सब बातोंपर ध्यान नहीं दिया अन्तर्द इसकी अस्तरत भी नहीं समझी । उसने पूछ कि अस्तरक न बाकर कहीं क्यों जाये ? "

आठ बाबूने आश्चर्यके साथ कहा " अस्तरक ! यह देखो, अभी तक तुम्हारा पुस्ता नहीं गया । "

" गुस्सेकी बात नहीं कर रही आठ बाबू, जो संकत और स्वामाकिक है, वही कर रही है । "

' वह स्वामाकिक नहीं है और संकत तो है ही नहीं । हों इतना माकता है कि मजिओ उकित या कि वहाँ न अकर वह तुम्हारे पास मेक देती । "

कमलने कहा ' नहीं, उकित नहीं जा । मणि जानती है कि इकाअ करानेकी शक्ति नहीं दे मेरी । "

इस बातसे उन्हें और एक बात बाद आ गई और उससे वे अत्यन्त अचिन्त-ही हो पड़े। कमल कहने लगी, 'सिर्फ मनोरमा ही नहीं किन्नाथ बाबू भी जानते हैं कि सेबासे ही रोग नहीं जाता बचा-दाइकी भी अस्वस्थ पकती है। शानर वह शक्या ही हुआ कि शहर मेरे पास न जाकर मयिके पास पहुँची। उनकी आयुष्म और समझिए।"

आशु बाबू कज्जासे म्हातन होकर सिर दिखाते हुए बार बार कहने लगे, 'यह बात मझी कयक—सेबा ही सब कुछ है। तीमारदारी सबसे बड़ी दवा है। नहीं तो बॉलर-बैथ तो मझक एक उपलब्ध हैं।" उन्हें अपनी स्वर्गीया पत्नीकी बाबू आ गई, बोले 'मैं तो मुक्तमोयी हूँ कमल बीमारी मुफ्तसे मुफ्तसे मुझे इलकी दिखा यिन चुकी है। भर कस्मे दुम्हारी पीत्र है जेसा हम ठीक समझोयी बेमा ही होया। मेरे रहते बचा-दाइकी तकसीक नहीं होगी।" और उसे वे रास्ता दिखाते हुए भागे के चले। अचिन्त किर्तम विगुल होकर बयैर समझे ही उनके साथ हो लिया। इस वरसे कि रोमीके कमरेमें खोर होमेसे कहीं उसके विभामम विग्र न हो, कस्मे बने-बौर प्रवेत किया। देखा शक्याके पास कुरवीर बैठी मनोरमा रात्रि-आगरककी झाम्तिसे रोमीकी कस्तीपर अपना पक्य हुआ मस्तक रककर शक्य कयी कयी सो गई है और उसकी गरदनमें परस्पर सबक दोनों बाँहे बाने किन्नाथ भी सो रहा है।

इस स्फातीव इस्कर अवरमात् जैसे ही रिताकी बाँके नहीं जैसे ही उक्पर मानो मनान्यकरक्य बात सतर आया। खप-भर बाप ही वे बाँसे माग लगे हुए। अचिन्त और कमल बाँक उठाकर परस्पर एक दूसरेका मुँह ताकने लगे और उनके बाह जैसे आने से जैसे ही पुत्राप बाहर चले पड़े।

१६

आने आनेके एस्तेके पास ही एक छपाहार बरम्बा है। रोमीके कमरेसे निकलकर अचिन्त और कमल वहीं रुक गये। एक छोटी-सी किसे बाँककी लाकटेन बनी झुक रही थी जिसके अस्ति प्रक्यरमें स्पष्ट शीक पता कि अचिन्तय खेरत सकेर एक पत्र गया है; अइसमात् कबा धाकर मानो सारा क्ल कयी हट गया है। तीघरा कोई म्मखि नहीं नहीं बा फिर भी अचिन्तने एक अनालीबा सिद्ध मझिमके बोम्ब सम्मान दिखाते हुए कमस्से पुत्र

“ भाप क्या अभी घर बैठ जाना चाहती हैं ? अगर जाना चाहें तो मैं उसका इस्तबाम कर सकता हूँ । ”

कमल उसके मुँहकी तरह बेबखर चुप रह गई । अकितने कहा, इस मकसदमें अब तो आपका एक क्षण भी रहना ठीक न होगा । ”

और आपका रहना ठीक होगा ? ’

“ नहीं मेरा रहना भी नहीं । कमल सबेरे ही मैं और कहीं चला जाऊँगा ।

कमलने कहा यही वाक्य है । मैं भी तभी चालूँगी । फिमदाब इस कुर्सीपर बैठकर रात बिता देसी भाप जाकर काराम करें ।

छोटी कुर्सीकी तरह बेबखर अकित बगलें झोंकने लगा बोला “ लेकिन कमलने कहा ‘ लेकिन ’ रहने दीजिए अकित बाबू, उसमें क्या ईशक है । इस बात न कर जाना ही सम्भव है और न आपका कमरेमें । भाप जाइए फिर न कीजिए । ”

सबेरे बेहरा जाकर अकितको बाबू बाबूके सोनेके कमरेमें बुझ के गया । अब तक वे खाटसे उठे भी न वे । पास ही एक कुर्सीपर कमल बेठी थी उसे पहले ही बुझ किया गया था ।

बाबू बाबूने कहा ‘ तबीयत कमसे ही ठीक नहीं थी आज माफस होता है मानो,—अच्छ बैठे अकित ।

उसके बैठनेपर वे कहने लगे, “ मैंने सुना कि आज सबेरे ही तुम जा रहे हो पर तुम्हें रहनेके लिए भी मैं नहीं कहता, ठीक है,—शुभ रात । मरिच्यमें शायद अभी मेट न हो पर यह निश्चय समझो कि मैंने तुम्हें सर्वान्तःकरणसे आशीर्वाद दिया है कि हम स्नेयोद्ये क्षमा करके तुम जीवनमें सुखी हो लो । ’

अकितमें अब तक उनके मुँहकी तरह बेबा नहीं था अब अबाब बेनेके लिए ही उठकर ही उससे कुछ कहते नहीं बना । बलिक वो कहना चाहिए कि अकरमात मनो वह अपनी बातको मूल बना । इन बातकी वह कल्पना भी न कर सका कि एक रातके कुछ ही पलमें किसीमें इतना अवरदस्त परिवर्तन हो सकता है ।

बाबू बाबू अब भी हो तीन मिनट मीन रहकर कमलसे कहने लगे, तुम्हें बुझवा तो क्या पर तुम्हारी आँखोंसे आँके मिथानेमें भी मेरा सिर भीजा हुआ था रहा है । राती रात मेरे मनमें क्या क्या होता रहा है —क्या क्या सोचता रहा हूँ सो मैं किउसे कहूँ ! ”

फिर बरा ठहरकर बोले "असलमे एक दिन कहा था कि तिमनाथ साबर तुम्हारे महा अफसर नहीं रहत । उस बातपर मैंने ध्यान नहीं दिया था खेपा था कि वह साबर उसकी आसुक्ति है,—उसके बिदेयगी ज्यादाती है । तुम इतनीही कमीके कारण सँकटमें थी, तब उसका कारण मैं नहीं समझता था, मगर आज सब कुछ स्पष्ट हो गया है,—कहीं भी कोई सन्देह नहीं रहा । "

बोनों ही चुप हो रहे । बोधी बर बाद आज्ञा बाबू कहने लगे तुम्हारे साथ मैं कई बार अन्धकार व्यवहार नहीं कर सका पर कुछ दिन प्रथम परिवर्तनके विमसे ही मैं तुमपर स्नेह करने लगा था कर्मण । इसीसे आज बार बार यही जवाब आ रहा है कि मैं आगरा न जाता तो अन्धकार था । "

कहते कहते बनधी ऑकर्मिं औषु था गये उन्हें हाथसे पोंकत हुए ये बोले अन्वरीधर ।

कमल सठकर उनके सिरहाने जा बठी; और माथेपर हाथ रखकर बोली, 'आपको तां कुवार है आज्ञा बाबू । "

आज्ञा बाबूने उसका हाथ अपने हाथमें केकर कहा " रहने हो कमल मैं चाहता हूँ, तुम अत्यन्त बुद्धिमती हो । मेरा कोई एक किनारा तुम कर हो । इस घरमें उस आदमीका अस्तित्व मेरे सारे शरीरमें जाग-सी कमाये से रहा है । "

कमलने अचिन्तनी ओर देखा, वह नीचले सिर लुकाये बैठा है । उसकी तरफसे कोई शक्या न पाकर वह अन्ध-मर मौन रही फिर बोली, " मुझे आप क्या करनेको कहत हैं ? बहिय । " परन्तु बाई अनाथ न पाकर वह अन्ध-मर चुप बैठी रही फिर बोली " तिमनाथ बाबूको आप महो रखना नहीं चाहते पर मैं बीमार हूँ । इस हालतमें वा तो उन्हें अस्पताल भेज दीजिए वा फिर उनका घर । और अगर आप समझते हैं कि मेरे घर भेजनेसे ठीक रहेगा तो वहाँ भेज सकते हैं मुझे कोई आपत्ति नहीं; पर आप तो जानते हैं कि इलाज करनेकी शक्ति मुझमें नहीं है; मैं बी-बाबसे सिर्फ सेवा ही कर सकती हूँ, उसके क्यारा कुछ नहीं । "

आज्ञा बाबू कुछकालसे मर उठे बोले " कमल माझम नहीं क्यों पर फेरे ही बचकरभे मैंने तुमसे आशा की थी । यह मैं जानता था कि पाखण्डीको अनाथ देनेमें तुम सब परपर न हो सकेगी । तुम अपनी बीम अपने घर के जाने, इन्धकके जर्बेकी तुम फिर मर करो, इसका मार मेरे ऊपर रहा । "

कमलने कहा, पर इस विषयमें एक बात पहलेसे ही स्पष्ट हो जानी चाहिए ।

बाबू बाबू कटसे कह उठे तुम्हें कहनेकी जरूरत नहीं कमल मैं जानता हूँ । एक न एक दिन सारी गन्दगी बुर हो जावगी । तुम कोई चिन्ता मत करो, मेरे जीते की इतना क्या अन्याय अत्याचार तुमपर मैं नहीं होने देगा । ”

कमल उनके मुँहकी तरफ देखाती हुई स्थिर बैठी रही, कुछ बोली नहीं ।
क्या सोच रही हो कमल ! ”

“ सोच रही थी कि आपसे कबसेकी जरूरत है, या नहीं । पर माझम होता है कि जरूरत है; नहीं तो कुछ भी स्पष्ट न होगा, उम्मेदग बढ़ती ही जायगी । आपके पास रुपया है, इन्क है, दूसरेकि लिए सबै करमा आपके लिए कोई मुक्ति नहीं, लेकिन वह जम जयर आपके अन्दर हो कि इस तरह आप मुझपर क्या कर रहे हैं, तो यह बुर हो जाना चाहिए । किसी भी कहने में आपकी ही हुई मीच नहीं देसी ।

बाबू बाबूने सिखाईकी मधीनकी बात बाद आ गई, वे स्वयिज होकर बोले “ मुझसे मळती अयर कमी हो भी गई हो तो क्या उसके लिए क्षमा नहीं कर सकती ! ”

कमलने कहा गळती घानर इतनी लज नहीं की खिती कि आप सब करने आ रहे हैं । आप सोचत होनि कि विपनाज बाबूको बचाना प्रखरान्तरसे मुझको ही बचाना है — मुझपर ही अनुग्रह करना है । मगर जसममें बात पेशी नहीं । इसके बाद आपकी जो इच्छा हो कर सकते हैं, मुझे कोई आपत्ति नहीं । ”

बाबू बाबूने फिर विस्मयत हुए कहा, ऐसा ही गुस्ता जाता है कमल यह कोई अत्याचारिक बात नहीं और न अन्याय ही है । अच्छी बात है, मैं शिवायकी ही बचाना चाहता हूँ, तुमपर अनुग्रह नहीं करता । सब तो यीक है न ! ”

कमलके चेहरेपर विरिच्छि माव दिखाई दिवा । उसने कहा नहीं यह ठीक नहीं । आपकी जब कि मैं समझा नहीं सकती तो फिर कोई उपाय नहीं । उम्हें आप अस्पृशक नहीं मेझना चाहते तो इतने बाबूके आत्ममें भेज दीजिए । वे बहुतेकी सेवा किया करते हैं, इनकी मी करेंगे । आपकी जो

हुआ कार्य करना हो वही क्षमिया। मैं उस भी बहुत फ्यादा मक गई हूँ, अब बकती हूँ।” इतना कहकर वह सबमुच ही जानेके तैयार हो गई।

उसकी बात और आचरणसे आशु बाबू मन ही मन क्रुद्ध हो उठे बोले यह तुम्हारी जवाबदारी है कमस। तुम्हारे दोनोंक कम्याबके लिए जो कुछ मैं करने आ रहा हूँ, उसे तुम अक्षरम विरुध करके देस रही हो। एक ओर तो मेरे लिए कजाकी सीमा नहीं—और मैं जानता हूँ कि इस कदाचारके जंजुरसे नद किने बिना मेरी असीम म्बानि बनी ही रहेगी—दुसरी ओर वह भी सब नहीं कि मेरी लक्ष्मीका इससे सम्बन्ध है इसीलिए मैं किनी तरह मच निश्चिन्नेका रास्ता देस रहा हूँ। शिषनामके मैं बहुत तरहसे मचा लकटा हूँ, मगर सिर्फ इतना ही मैं नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि ऐसे संकटके दिनमें तुम लान्ताकरणसे उसकी सेवा करके उसे फिर पूनम पा बाओ। इसीलिए मेरा यह प्रस्ताव है।—सिर्फ अपने स्वार्थमच ही मैं ऐसा नहीं कह रहा।”

बातें सब सब थी लकडच और आन्तरिकतासे पूनी। मगर कमकके मनपर कोई अरु नहीं पका। उचने कहा मिक नहीं बात मैं जगके सम्बन्धना चाहती थी आशु बाबू। सेवा करनेसे मैं इनकार नहीं करती। जगके बपीपेमें रहते हुए मैंने बहुतोंकी सेवा की है, इसका मुझे अम्बास है। केकिन मैं उन्हें फिरसे पाना नहीं चाहती, न सेवा करके और न बिना सेवा किने। वह मेरी अभिमानकी जाम नहीं, और न झूठा र्वर्प ही है—असममे हम दोनोंक सम्बन्ध टूट गया है; उसे मैं जोड़ नहीं सकती।”

जो कुछ उचने कहा उसमें न तो किसी तरहकी गरमी थी न उच्छ्वास — निरकुल सीधी-साही बात थी। परन्तु इधने आशु बाबूके रंग मर दिना। क्षम-मर बाबू उन्हेनि कहा “यह कैसी बात कह रही हो कमक। इस मामूकी-सी बालपर पतिके जाम देना चाहती हो। वह सिखा तुम्हें किनेने ही।

कमक चुप रही। आशु बाबू कहने लगे बचपनमें यह सिखा तुम्हें चाहे बिले भी ही हो उसने मकत सिखा ही है। वह अन्याय है असेपत है,— वह माटी अमराव है। चाहे किनी भी मरमें तुम पैदा हो तुम भारतीय कम्या हो। यह मार्ग तुम्हारा-हमारा नहीं है—स्से तुम्हें भूकना ही होना जानती हो कमक एक देसका मर्म हमरे देसके लिए अचर्म है। और स्व-मर्ममें मृषु भी भेस है।” कहते कहते उनकी धीकें मकक उठी।

और बात बतम करके वे हँसने लगे। परन्तु भित्ति कल्प करके वे बातें कहीं पर्यं वह रंज-भात्र भी निश्चित नहीं हुई।

आष्टु बाबू कदम लगे, यह मोह ही एक दिन हमें रसातलकी ओर खींचे किन्ने का रहा था। पर भ्रान्ति पकवाई दे गई कुछ मनीषिनोंकी दृष्टिमें। इच्छामिनोंके बुझाकर बार बार वे सिर्फ एक ही बात कहने लगे—तुम स्नेह उन्मत्ताकी तरह का क्यों रहे हो? तुम्हें किसी बातकी कमी नहीं धीमता नहीं किसीके आगे हाथ पसारनेकी जरूरत नहीं सिर्फ एक बार धरने करकी तरह मुझकर बेजो। पूर्वपुत्र्य तुम्हारे लिए एक कुछ छोड़ क्ये हैं, सिर्फ एक बार हाथ बढ़ाकर उठ मर लो। निश्चयतक तो सभी कुछ मैं अपनी बाँहोंसे दख आया हूँ अब छोड़ता हूँ कि ठीक समनपर ऐसी सानधान-बाणी अमर वे नहीं बाधित कर गये होते तो आन देसकी क्या पचा हाटी? कबलकी संगी तो बातें याद हैं—ठूटू—सिद्धि लगेकी तब देसी दख बी।” इतना कहकर उन्होंने स्वर्गीय मनीषिनोंके कल्प करके हाथ आँसुकर नमस्कार किना।

कमलन मुँह उठाकर देखा कि बाधित मुग्ध दृष्टिसे आष्टु बाबूकी ओर दख रहा है। कल्पनाके आकेसमें मानो उसे होच ही नहीं रहा—ऐसी हास्य बी।

आष्टु बाबूका मायावेध जब तक दबा नहीं जा कदने लगे “कल्प और कुछ भी अमर वे न कर बात तो भी सिर्फ इतनेके ही कारण देसवासिनोंके हृदयमें वे प्रातःस्मरणीय बने रहते।”

क्या सिर्फ इतनी ही बातके लिए वे प्रातःस्मरणीय हैं ?”

हो सिर्फ इतनी ही बातके लिए। बाहरसे हवाकर सिर्फ परकी तरह बाँह उठाकर देखनके कहा था—इसीके लिए।”

कमलने पुनः “बाहर अमर प्रकाश हो रहा हो और पूर्व-आकाशमें अगार सुर्लोदय हो रहा हो तो भी पीठे मुझकर पश्चिमके स्वदलकी ओर देखना पयेगा ? और कही होया स्वदेश-प्रेम ?”

अगर यह प्रश्न धरकर आष्टु बाबूक कानों तक नहीं पहुँचा, वे अपनी ही सोचमें कदते गये “हमारे देसका कर्म, देसके पुराण-इतिहास देसका आचार-व्यवहार पीठि-नीति निश्चयक एबावसे छुट होने का रही बी, कसक प्रति हमारे अन्दर जो भात्र फिरसे अज्ञा और निष्ठास बापस आना है, सा सिर्फ उन्हींकी मनीष्य-दृष्टि का फल है। आठिके विश्वाससे हम स्वदेशी और

बदल कहे जा रहे थे, उससे बच जला क्या मामूली बचना है कमल ! वह ज्ञान हमें किससे दिया कि उसे फिरसे सब प्राप्त किये बगैर किसी भी तरह हम बच नहीं सकते — बतानो तो !'

अखिल उठोठनाके मारे अक्षरमात्र बठ पडा हुआ बोझ मैंने कभी इसकी कल्पना भी नहीं की थी कि इन सब बातोंका विचार भी आपके मनमें कभी रखना पा सकता है। मुझे बड़ा भारी दुःख है कि अब तक मैंने आपको प्याराना नहीं आपका खरबोंमें बैठकर कभी उपदेश नहीं किया। वह भीर भी बहुत कुछ करने का रहा था पर बीचमें मिया का पना। नीकरने आकर खबर दी कि हरेन्द्र बालू गौराह भेड़ करने का रहे हैं। और दूसरे ही वक हरेन्द्र सतीस और राजेन्द्रके साथ जा पहुँचा। क्या मास्टर हुआ कि सिम्लाह बालू खे रहे हैं। जाते बठ डॉक्टरके नहीं भी होता जाना है। समझ करना है कि सीपियस (खतरनाक) नहीं बल्की आराम हो जानया।" कहते हुए उसने कमलका गमसवार किया और अपने साथियोंके साथ एक तरफ बैठ गया।

आज बालूने सिर हिलाया, पर उनकी दृष्टि भी अखिलकी तरफ, और उसीको कस्य करके वे बोले मेरा सारा जीवन सिम्लाहमें बीता है, इस बातको तुम क्यों भूल क्यों जाते हो ? ऐसी बहुत-सी चीजें हैं जो नकलीकसे नहीं दिखाई देती बुझ जानकर खड़े होमैरे ही दिखाई देती हैं। मैंने जो स्पष्ट देखा है वह है क्रिश्चियन मानसका परिवर्तन। इन्हीं हरेन्द्रके आशयको ही देखो न इनका जो नगर नगरमें शब्दा-प्रस्तावार्थ विस्तार करनेका भावोत्पन्न है उसके मूलम क्या बड़ी भावना नहीं है ! विश्वास न हो, इन्हींसे पृष्ठ देखो। नहीं प्रत्यर्थ नहीं संयमकी साधना नहीं पुरानी रीति-नीतिका पुनः प्रवर्तन—वह सब हमारे उस अनीत काकाकी पुनः प्रतिष्ठाका उदय नहीं तो और क्या है ! उसीके अन्तर हम भूक जायें उसीके प्रति अन्तर हम अपनी आत्मा को बैठें तो फिर आसा करकेके किये हमारे पास बाकी ही क्या रह जाता है ! लोचनका आदर्श सिर्फ हमारे ही यहाँ था। संसार अन्त बाक्यैर भी क्या उसका जोड़ नहीं मिल सकता है अखिल ! किसी कमलकेमिं मिल जोग्येमे हमारे समाजका निर्माण किया था हमारे न शासनकार व्यवसायी नहीं थे संन्यासी थे, उनका बालको बिना किसी संयमक मतमस्तक होकर प्रवृत्त करनेमें ही हमारी चरम सार्बक्यता है—वही हमारे अन्तःकरण मार्ग है कमल इतक किया दूसरा कोई मार्ग नहीं।'

जन्मिण स्तम्भ हो रहा। सटीस और इरेन्डके आदर्शका विषयवा न रहा —यह साहसी नाम-बसलका आदमी भाव कह क्या रहा है। और रत्नेन्द्र तो समझ ही न पाया कि अहस्तात् कनो और कैसे यह प्रसंग छिड़ गया। समीके मुँहपर एक निष्कण्ड भद्राका भाव प्रस्तुति हो ठठ।

स्वर्न बन्धाको भी कम आश्चर्य नहीं हुआ। छिर्क कहनेकी छठिके छिर् ही नहीं बल्कि इसलिये कि इस तरह किसीसे कहनेका ठहै पहले कभी मौच ही नहीं मिल्य —उनके मनमें एक तरहकी अनिर्बन्धीर तृप्तिकी सहर बीरने लगी। क्षण-भरके छिर् से क्षण-भर पहलेका दुःख मूठ गये। बोले “समसी कमल कनो मैं तुमसे ऐसा अनुरोध कर रहा बा ?”

कमलने सिर हिलकर कहा ‘नहीं।’

‘नहीं ? नहीं कनो ?’

कमलने कहा छिर्क मही एक समाचार आप परमानन्दके साथ सुना रहे थे कि बिदेसी शिक्षाके प्रभावको दूर कर फिर पुरानी व्यवस्थाकी ओर धीरेधीरे बढ़ा सिद्धिमें प्रवर्तित होती जा रही है। आपकी धारणा है कि इससे देशका कल्याण होगा परन्तु कारण आपने कुछ भी नहीं बतलाया। बहुत-सी प्राचीन नीतियों छुन होती जा रही थीं हो सकना है कि यह सब हो कि उनके पुनरुद्धारका उद्यम हो रहा है, मगर मना इसका प्रमाण क्या है आद्य बाबू कि इससे हमारा मना ही होगा ?—छोँ—यह तो आपने बताया ही नहीं।

“बताया ऐसे नहीं ?”

नहीं नहीं बताया। जो कुछ आप कह रहे थे वह तो सभी सुधार-विरोधी और प्राचीनताके अन्ध स्तुतिकार कहा करत हैं। इसका छोरे मी प्रमाण नहीं कि सभी दृष्ट वस्तुओंका पुनरुद्धार अच्छा ही होगा। मोहक नष्टमें नुरी श्रीरोंका पुनरुद्धार भी संसारमें दोष क्या जाता है ?”

आद्य बाबूको इसका जवाब छिँदे न मिला परन्तु अखितने कहा नुरी श्रीरोंका उद्धार करनमें छोरे दाखिअ क्षय नहीं करता।”

कमलने कहा बहुत लोच करत हैं। नुरीके छिर् नहीं बल्कि पुरानी वस्तु-मात्रको स्वतःकिन्द अच्छी नीच समझकर करत हैं। एक बात आपसे पहले ही कहना चाहती थी पर आपने प्यान नहीं दिया। चाहे लीटिक आचार अनुष्ठान हो और चाहे पारसीकिड धर्म-धर्म, अन्ने देखाकी श्रीर

समझकर उसे यकीन न्याये रहनेमें स्वयं-मच्छिन्नी बाइबाही तो मिला सचती है, पर स्वयंके कल्याणके हेतुता उससे कुछ नहीं किने का सचते । किन्तु वे इससे नाराज ही होते हैं ।

आहुत बाबू ईन रह बड़े बोले तुम यह क्या रही हो क्यत । अपने वैयक्त्य बने अपने वैयक्त्य आचार-व्यवधान आत्मकर यदि हम बाहरसे मीय मीयने सये तो फिर अपना कहनेको हमारे पास बाकी ही क्या रह जायया । फिर हम संसारमें मनुष्यात्मक हाका करनेके सिध् अपना क्या परिचय होंगे ?

क्यसने कहा हाका कर हमारे कर का जायया परिचयकी जरूरत न होगी । फिर विद्य अणत् हमें किना परिचयके ही जान जायया ।”

आहुत बाबू आहुत होकर बोले “ तुम्हें तो मैं समझ ही न सच्य कमक ।” क्यसनेकी बात मी नहीं आहुत बाबू, ऐसा ही होता है । इस बचनकी संसारमें प्रगटिहीन मालव-वित्तको कर्म-कर्मपर जो उत्पन्न निरव नये नये कर्मों विचार्य होता है, उसे समी नहीं पहचान सचते । सोचत हैं यह आहुत क्योंसे आ गई । आपको उस विचयी ताकमदककी छानाके नीचे कहीं सिवाजीकी नाद है । आज क्यसने मी-तर उसे पहचाना भी नहीं का सचता । मन ही मन क्येसे, जिसे उस दिन देखा या कह गई क्यो । किन्तु नहीं मनुष्यक स्या परिचय है —मैं तो नहीं चाहती हूँ कि हमेशा इसी माससे ज्येसे परिचित हो सचें ।”

करा ठहरकर फिर बोली “ पर तर्क वितर्ककी औषधीमें हमारी अछत बात तो उब ही नई—मूक विषयसे हम बहुत बुर का पये हैं । किन्तु मैं बहुत कभी हूँ, जब जाती हूँ ।”

आहुत बाबूके कुछ क्यव्य बैठ न बना विद्यकी भीति देखते रह गये । इस बोलीके कयी सचने अत्यन्त समझा और कयी विच्युत ही नहीं समझ पाया । उम्हें ऐसा क्यने कया कि क्यमी क्यमी उससे जिध् औषधीय जिध् किना या, क्यकी प्रचय संझामें किनकेकी तरह कनक एक तरहक्य आविर्क-निने-न उदकर कयीक्य कयी क्यम मया ।

कमल उठ खडी हुई । अजितकी इसारेसे मुठाकर बोली ‘ साब काये ये जब क्यिय न पहुँचा बीकिय ।”

मपर आज यह मारे संझेके फिर मी न सच्य सच्य । क्यक मन ही मन करा हैंकर भागे कयी और सहसा राक्यके क्येस हाव रहकर बोली राक्य बाबू, तुम क्ये न मारै, तुसे पहुँचा जाक्ये ।”

इस आकस्मिक मार्गके सम्बोधनसे राजेन्द्रने विस्मित होकर एक बार उसकी तरफ देखा और उसके बाद कहा "कल्पि।"

हरनामेक पास आकर कमक सहसा बड़ी हो गई, बोली "आइ बाबू, अपना प्रस्ताव देने बापस नहीं किया है। उसी धर्तपर इच्छा हो तो मेरा दीक्षिणा मैं बचासाध्य कोशिश कर देखूंगी। जब बायें तो अच्छा ही है व बचें तो सगच्छ भाग्य।" इतना कहकर वह बड़ी गई। उसके सब स्तम्भ होकर बैठे रहे। अस्वस्थ आइ बाबूकी धौंढोंके आगे प्रमातका प्रकथन मी दिवर्ण और विस्वाव हो उठा।

आगे रास्तेमें राजेन्द्रने विश के डी और कहा "मैं कण्ठे-मरमें अपना एक काम निबटाकर बापस आता हूँ।" कामने अन्वयमनस्त्राके कारण ही शान्त कोई आपत्ति नहीं थी या हो सकता है कि और कोई बन्ध हो। अन्धी बन्दी पर पहुँचकर उसने देखा कि सीप्रीवाके दरनामेने ताका बन्द है, पर खोला नहीं गया है। रास्तेके उस तरफ मोड़ीकी बुझनमें तकास करनेपर माकूम हुआ कि मीकुरानी बीमार पड़ गई है, काम करने नहीं आई और उसकी छोटी नातिग सुवेरे आकर परधी बाधी रख गई है।

पर खोसकर काम करके काम-काममें लग गई। एक तरहसे कामसे ही वह बनेर-लामे थी; उसने तब किया था कि सत्यत किसी तरह कुछ बना-बाकर आराम करेगी आराम करनेकी उसे बहुत अस्वस्थ मी थी पर परका काम इतना पका था कि वह खतम ही नहीं होना था। न्यारों तरफ इतना कुहाकर कट बना हो रहा था कि उसे देखकर वह हैरान हो गई।—इतनी किशोरावलीमें उसके दिन बच रहे थे कि इधर उसका प्यान ही नहीं बना था। आज किस किसी बीमपर मी उसकी नजर पड़ी नहीं मानो उसका शिरस्धार करने लगी। उनके नीचेसे पुराना गुना सड़कर खादपर आ पड़ा है उसे साज करना बहरी है; थिकियोंके कोठलोंका बना हुआ मसान्त किछीनेपर पका है उस मी साज करना है; बाहर बरसनी है तकियोंके कोठ बहुत मके हो गये हैं उन्हें मी बदलना है; देवम-पुरसी स्वागप्रथ हो रही हैं, दरनामेपर पके पावेदाबभर मिष्टि बनी हुई है; आइनेकी ऐसी हाकत है कि साज करते-करते काम हो जावगी; दावातकी स्वाही स्या मई है कम्मक पता ही नहीं; पैदक अर्मिंग पैर कापता है—इस तरह बिपर बीक उठकर देखा ठहर ही ऐसी गन्दगी माकूम हुई कि उसे तब ही लगा कि इतन दिनसे नहीं कोई आदमी रहता है या और कोई। महाना-पाना से ही पका रहा किबते केते और कब दिन बीत गया —

कुछ माहस ही नहीं पड़ा। सब काम निबटाकर जब वह नीचेसे गहा-बोकर ऊपर आई तब शाम हो चुकी थी। इतने दिनोंसे वह निश्चित समझ रही थी कि नहीं उसे नहीं रहना है। रहना सम्भव भी नहीं और उचित भी नहीं। महीनेके महीने फिराना कबसे दिना काय ? बाग तो परेमा ही पर सिर्फ जानेके दिन तक पहुँचना ही मानो उसके लिए सुरिच्छ हो रहा था—रातके बाद सबेर और सबेरेके बाद रात आ-आकर उसे कदम बढ़ायेका समय नहीं दे रहे थे।

बसि उसे कोई ममता नहीं; फिर भी कुछ लिए वह दिन-मर मेहनत करती रही। अक्सरमाइ इसकी क्या बहरत आ पड़ी—इसी तरहकी एक पुँककी-सी विद्याशा उसके मनमें बूझ रही थी। काम खेवकर वह छत्रकेर का बैठती और हृष्य दृष्टिसे सड़ककी तरफ देखती हुई म जाने क्या मूकनेकी कोशिश करती; और फिर भीतर आकर काममें डूब जाती। इसी तरह आज उसका काम और दिन दोनों खतम हुए। दिन तो रोब ही खतम होता है पर इस तरह नहीं। कामके बाद बत्ती जलाकर उसने रखी पड़ा थी और महज समझ जावनेके लिए एक किताब उलकर विस्तरके सहारे बैठी बैठी उसके पन्ने उलटवने लगी। लेकिन आज उसकी बढाबढकी कोई हद न थी इसका पता भी नहीं ज्ञान कि कब किताबके पन्नेसे साय साय उसकी आँखोंके पलक बन्द हो गये। जब पता लगा तब कमरेकी बत्ती बुझ चुकी थी और खिड़कीमेंसे अरुण प्रकाशने आकर सारे कमरेको आरक्त कर दिया था। दिन बकने लगा, पर मखरी नहीं आई। इसलिये बासा तत्काल करके उसकी भी खबर हुए केनेकी आवश्यकता महसूस हुई। अपने बहसकर वह निश्चय ही रही थी कि इतनेमें जीनेपर किसीके कदनेकी आहूत हुई। उसका कब्रिया बरक सदा।

वहीसे किसीके पुकारा “र हैं क्या ? आ उफता हैं ?”

आइए।”

जो आये तत्काल नाम है इरेन्द्र। इसी खीचकर उसपर बैठ गये और बोले “क्या बाहर आ रही थी क्या ?”

हाँ। जो बुनिया मेरे नहीं काम करती थी वह बीमार है। उसीको देखने जा रही थी।”

“अच्छी खबर है। इन्कलरुआके टिना और कुछ नहीं। माहस होता आगरेमें भी जामब एपिथेमिक काम (संभवतः काम) छूट हो गया।

है। बस्तियोंमें तो मीठे मी छुड़ हो गई हैं। यदि मसुर-बुन्दामनकी तरह छूड़ हुआ तो भावना पड़ेगा या मरना पड़ेगा। बुझिना पड़ती क्यों है ?”

मामूम नहीं। सुना है कि नहीं पास ही क्यों रहती है, हुँदना पड़ेगा।”
हरेन्द्रने कहा, वही छुटेस बीमारी है, जरा सावधान रहिएगा। इमरकी खबर मिली हागी क्षम्य ?”

कमलने परहन हिजाकर कहा “ नहीं तो।”

हरेन्द्र उनके सुँहकी तरह देखकर लज-भर चुप रहा फिर बोला “ डरो मत बरकी ऐसी क्यों बात नहीं। कम ही आना चाहता था पर समय नहीं मिला। हमारे अक्षय बाबू कजेज नहीं जाने, सुना है कि उनकी मी तबीयत बराबर है। आज बाबू बिस्तरपर पड़े हैं, तो आप कम देख ही जाई हैं,—
उपर अविनाश मइयाको कम शामी बुखार है, भाभीका चेहरा मी देखा कि सुखा सुखा-सा हो रहा है। ये सब कमी बीमार न पड़ जायें।”

कमल चुप बैठी बसकी तरह देखती रही। इन सब खबरोंपर मानो वह अच्छी तरह ध्यान ही न दे सकी।

हरेन्द्र खड़ा गया ‘ इसके अलावा अिननाथ बाबू मी पड़े हैं। इन्फ्लुएन्साका मामूम है, कुछ कहा नहीं जा सकता। अस्पताल मी नहीं जाया चाहते। कम शामको उनका बरपर ही उन्हें रिमूव कर दिना गया है। आज एक बार जाकर खबर लेनी है।”

कमलने पुनः क्यों है बीन ?”

एक मीकर है। अरकी कोठरीमें कुछ पंजाबी रहते हैं, जो ठेकेदारीका काम करते हैं। सुना है कि आरमी अच्छे हैं।”

कमल एक उलास केकर चुप रह गई। मोरी बेर बाह बोली, एक बार राजेन्द्र बाबूको मेरे पास मेत्र लफते हैं ?”

‘ मेत्र सकता हूँ, पर वह मिलेगा क्यों ? आज तककेसे ही निकल पडा है। उपर कहीं मोचिकोंके सुहस्केमें जोरकी बीमारी फैल रही है, वह गया है उनकी सेवा करने। आजममें अगर जाने जाया तो वह हुआ।”

उन्हे बर पहुँचाया किम्ने ? आपने ?”

नहीं राजेन्द्रने। वसीके सुँहसे सुना कि पंजाबी कोष बनकी देख-आठ कर रहे हैं। फिर मी ये करें या न करें, पर राजेन्द्रको अब कि फता कम गया है तो वह किसी बस्तकी बुझि नहीं होने देगा — कम्य है, खर ही टीमारबारी

करने लग्य जाव । एक बल्लभ पद्या भरोसा है, कि उसे रोग नहीं पकड़ता । पुष्टिच न पकड़े तो वह जकेला ही एक सीके बराबर है । वह केनन वन्हीं खेपेसे बहराता है,—नहीं तो उसे क्यू कर बके ऐसा तो बुनियातमें कोई दिखाई नहीं देता । ”

“ पकड़े जानेकी आशंका है क्या ? ”

“ आशा तो की जाती है । कमसे कम इससे आशयकी तो रक्षा हो जायगी । ”

“ उन्हें क्या क्यों नहीं बते कि बके जाई ? ”

यही तो मुश्किल है । वहनेसे उची बल्ल बक्य जावया और ऐसा जावया कि फिर सर से मारनेपर भी वापस न जावया ।

“ न जावें तो मुकसान ही क्या है ? ”

मुकसान ! उसे तो आप जानती नहीं बपैर बाने उस मुकसानक्य बन्दाक्य नहीं क्याना जा सकता । आशय न रहे तो सहा जा सकता है केकिन मुकसे उसक्य मुकसान न स्या जावया । इतना बहुर हरनेत्र मिनद-भर पुप रदा फिर सहा प्रथम बरसकर बोळ उठ्य एक बके मजेकी बल्ल हो गई है । किसीकी मज्जक नहीं कि बसकी कल्पना भी कर सके । कम माई साहबके बहोसे बौद्धकर राठकी पर आवा तो देखता क्या हैं कि अजित बाबू पचारे हैं । मैं तो बर गया कि अजित मामक्य क्या है ? बीमारी बह गई क्या ? माक्य मुया कि नहीं ऐसी कोई बात नहीं बकन-बिलार बपैरह एक साब के आवे हैं । आशयमें रहनेके लिए । इस बीचमें सटीकसे बनकी बात पक्यी हो गई है कि आशयके निबमानुसार आशयक कममें ही वे जपना जीवन कितायेंगे । वह सनकी प्रतिज्ञा है, इसमें कोई भी ब्यतिक्रम नहीं हो सकता । ऐसे बके जावमी यिके तो हमारे लिए अक्य ही है, पर अक्य होती है कि मीकर कोई पक्यब न हो । सधेरे भाडू बाबूके पास क्या मुनकर वन्हीने क्या कि संकल्प तो बहुत ही बल्ल है, पर मारतमें आशयकी कोई कमी नहीं वह आगरा खेबके और कहीं जाकर बह कृति अक्यमन करत तो मैं कुछ दिन और नहीं दिख रहवा । देखता हूँ, जब मुसे बहोसे बाना ही पक्यगा । ”

कनकने किसी तरहक्य आशय प्रक्य नहीं किया पुप रठी ।

हरनेत्रने क्या “ वन्हीके पहोसे सीधा जा रहा हूँ, वापस जाकर अजित बाबूके क्या क्यूंवा ? ”

कमल समझ गई कि शिवनाथ बाबूको स्थानान्तरित करनेके निपयमें बहुत ज़ोर बाधबिबाध हो गया है। शामद प्रकटमें और स्पष्ट रूपसे एक शब्द भी न कहा गया होगा। सब कुछ चुपचाप ही किया गया होगा; फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि कर्मकलामें वह सब तरहके कर्मको खींच गया होगा। परन्तु एक बातका भी उसने सार नहीं लिया। बचीकी तैसी चुप बनी रही।

हरेन्द्र कहने लगा “माऊस होता है, आधा बाबूने सब कुछ सुन लिया है। शिवनाथका आपके प्रति जो आश्चर्य हुआ है उससे वे मर्माहत हुए हैं। कमला का बरबस्ती ही उन्हें बरसे जिबा किया है। मनोरमाकी शामद ऐसी इच्छा नहीं की—शिवनाथ उसके संगीतके गुठ हैं—पास रखकर इलाज करनेका ही उसका विचार था पर वैसा हो नहीं सका। अश्विनी बाबूने शामद इस पक्षका अवलोकन करके ही अपना कर जमा है।”

कमल बरा हँस ही बोली “आश्चर्य नहीं। पर आपने यह सब सुना किन्तों ? राजेन्द्रने कहा था।”

“राजेन्द्र ? मला राजेन्द्र कहेगा। वह ऐसा आदमी ही नहीं। जानता होगा तो मी न बतायेगा। यह मेरा ही अनुमान है। इसीसे शेष रहा है, आखिर समझीया तो होगा ही। फिर अश्विनीके निदानसे क्या कमल ? चुपचाप रहना ही ठीक है। जितने दिन वह आश्रममें रहेगा हमारी तरफसे आशिर-उपजम्हमें त्रुटि न होगी।”

कमलने कहा “यही ठीक है।”

हरेन्द्रने कहा, “अच्छा तो अब चला। माई साहबके किय विन्ता है बहुत बौधमें बहरा आते हैं। समय मिल्य तो कम एक बार आऊँगा।”

“आइएगा। कहकर कमलने उठकर नमस्कार किया और कहा राजेन्द्रको मेजना न मूँछिएगा। कइएगा मैं बड़ी मुसीबतमें पड़कर बुका रही हूँ।”

मुसीबतमें पड़कर बुका रही हूँ।” हरेन्द्र आश्चर्यके साथ बोला “मेंट होत ही उसी बच भेज रूँगा;—किन्तु वह मुसीबत क्या मुझसे नहीं बड़ी या सखी ? मुझे मी आप अपना अहमिम बहू समझिएगा।

ओ समझती हूँ। किन्तु उन्हीके भेज दीशिएगा।”

“भेज रूँगा जरूर भेज रूँगा।” कहकर हरेन्द्र आपे बात न बचाकर चला गया।

ठीसरे प्यार राजेन्द्र का पहुँचा ।

राजेन्द्र मेरा एक काम करना होगा ।

कर दूँगा । पर एक तक तो मेरे नामके साथ बन्धु या श्राव वह भी उठा दिया गया । ”

अच्छा ही तो हुआ हल्के हो गये । मंझूर न हो क्यों खोब दूँ ? ”

“ नहीं खोबे कस्करत नहीं । मगर आपको मैं क्या कहकर पुकारा करूँ ? ”

‘ छमी कमल ’ कहके पुकारत हूँ और इससे मेरे सम्मानकी हानि नहीं होती । नामके आगे-पीछे बोझ कादकर अपनेसे मारी बचानेमें मुझे कज्जा जाती है । श्राव ’ कहनेकी भी कस्करत नहीं । मुझे सहज नामसे ही पुकारा करूँ । ”

इसके स्थल जवानको बचाते हुए राजेन्द्रने क्या मुझे क्या करना होगा । ”

मेरा बन्धु होगा होगा । श्लेष कहत हूँ, तुम कान्तिप्यारी हो । यह अगर सच हो तो मेरे साथ तुम्हारी मित्रता बहाय रहेगी । ”

यह अच्छय मित्रता मेरे किस काम आवेगी । ”

कमल विरिमत हुई । वह संस्रन और उपेक्षाकी ज्वनि उसके कानोंमें खटकी बोझी ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए । मित्रता कैसी नीच संसारमें दुर्लभ है, और मेरी मित्रता उससे भी ज्यादा दुर्लभ है । जिसे पहचानत नहीं उसपर लभदा करके अपनेसे छेदा मत बनाओ । ”

मगर इस शिष्यवतने सच बुझको छुपित नहीं किया उसने मुझकराते खदेसे स्वाभाविक स्वरमें ही कहा अबदाके कारण नहीं — मित्रताकी अलम्बकता नहीं समझनेके कारण ही कहा ना और अगर आप समझे कि यह नीच मेरे काम का सज्जी है, तो मैं जखीकर भी नहीं करूँगा । लेकिन श्लेष बही रहा हूँ कि क्या काम आवेगी । ”

कमलका खेहरा सुर्ख हो उठा । जैसे किसीमें बाकुफ मारकर उसे अपना मिठ किया हो । वह जखन सिद्धिदा महम्मद सुन्दरी और प्रखर बुद्धिसाक्षिनी है । उसकी चारणा की कि वह पुढनके सिध कमलाकर बन है, उसका निष्क-प्य विधास या कि उसका हत तेज अपराजेय है । संसारमें नारिजेमे उससे पूजा की है, पुख्तने भासनेकी जागसे मस्त करना चाहा है, और अबहाकर बोंग भी न किया हो सो बात नहीं; मगर वह तो कुछ और ही नीच है । आज इस बुझके सामने अपनी दुष्कता महसूस करके मानो वह जमीनमें

वह गह गई। सिवनाथने उसे थोका दिया है, बंधित किया है, मगर इस तरह पीवताका और उसके शरीरपर नहीं सपेटा।

कमलके मनमें एक सन्देह प्रबल हो उठा उसने पूछा मेरे सम्बन्धमें सावध तुमने बहुत-सी बातें सुनी होंगी ?

रामेश्वरने कहा हाँ, वे लोग प्रायः कहा था करते हैं।”

“ क्या करते हैं ? ”

उमने जरा हँसनेकी कोशिस करत हुए कहा देखिए, इन बातोंमें मेरी स्मरणशक्ति बहुत ही खराब है। प्रायः कुछ भी याद नहीं है।

‘ सच करते हो ? ’

“ सच ही कह रहा हूँ। ”

कमलने खिरह नहीं की विश्वास कर लिया। समझ गई कि जिनोधी जीवन वात्राके मकसदमें जब तक हम आधुनिकोंके मनमें किसी तरहका कुतूहल ही पड़ा नहीं हुआ। उसने कैसे सुना है कैसे मूल भी गया है। और भी एक बात उसकी समझमें आई। तुम कहनेका अधिकार दिये जानेपर भी क्यों उसने उसे स्वीकार नहीं किया और जब भी आप कहकर सम्बोधन कर रहा है। असम्भव उसके अदर्शक पुस्तक-विशेषी मूढिपणपर जब भी गारी-मूर्तिकी धरया नहीं पड़ी है,—इसीसे तुम कहकर अभिन्न होनेके स्वमेका उसे मान नहीं हुआ है। कमलने मन ही मन मानो सम्बोधकी सीम ली। बोधी बेर बाद वह बोली, सिवनाथ बाबूने मुझे त्याग दिया है, माफ़म है ! ”

‘ माफ़म है । ’

कमलने कहा उस दिन हमारे विवाहके अनुष्ठानमें तो थोका था पर मनमें थोका नहीं था। उमने सन्देह करके तरह तरहकी बातें कही, क्या कि यह विवाह पड़ा नहीं हुआ। लेकिन मैं जरी नहीं मैंने कहा होने दो कृपा। हमारे मीतरके मन्त्र जब मान लिया है तब हमें यह वेकनेकी जरूरत नहीं कि बाहरकी मीठमें कितने फेरे पड़े बल्कि मैंने तो छोटा यह अच्छा ही हुआ कि कितने पतिके रूपमें स्वीकार किया है उसे करसे भीके तक कमकर बोधा नहीं। कसभी मुक्तिकी आशा अगर थोड़ी थोड़ी ही रह गई तो रहने दो। मन ही बापर विवाहिया हो जाय, तो फिर पुणेदितक मंत्रको महात्म बनाके खड़ा करकेसे सूद मके ही अया हो जाय पर अफस तो इस ही जायगा। मगर वह तब तुमसे कहना व्यर्थ है, तुम समझो नहीं। ”

राजेन्द्र चुप रहा। कमल कहने लगी 'तब सिर्फ़ नही बात मैं पही जानती थी कि इन्हें स्वयंसेवक लोग इतना जबरदस्त है। जानती हामी तो कमसे कम जाहलनाभी आफ़उसे बच जाती।'

राजेन्द्रने पूछा "इसके मानी।"

कमलने सहसा अपनेसे रोक लिया बोली "रहने दो मापी। तुम मुझे क्या करोगे।"

कुछ बेर हुईं स्वयंसेवक हो-जुझ है परमें बाहरका कैबेरा घना होता जा रहा है। कमलने बत्ती जलाई और उसे डेबिचके एक निनारे रखकर अपनी जगह पर आते हुए कहा "बेचर जो मी हो मुझे एक बार उनके परपर के बसो।"

"क्या करोगी बाबर।"

"अपनी औबोसे एक बार देखना चाहती हूँ। अगर बरकरत होमी तो रह जाऊंगी। नहीं तो तुमवर मार सीपकर निबिन्त हो जाऊंगी। इसीलिए तुम्हें बुझना था। तुम्हारे सिवा यह काम और कोई नहीं कर सकता। उनके प्रति ज्येगोभी नफरतकी हृद नहीं।" कहते कहते कमल सहसा बत्तीको जरा बजा देनेकी गरजसे उठी और राजेन्द्रकी तरफ़ पीठ करके खड़ी हो गई।

राजेन्द्रने कहा "अच्छी बात है बसिये। मैं एक तीया कर आऊँ।" और वह बस गया।

तंगिरर सवार होकर राजेन्द्रने कहा सिननाय बाहूची सेबाध मार मुझपर सीपकर आप निबिन्त होना चाहती हैं सो मैं यह मार तो से सकता था; केकिन अब यहाँ मेरा रहना नहीं होगा बहुत जल्द बका जाना पड़ेगा। आप और कोई इन्तजाम करनेकी ज्येसिज करें तो अच्छा हो।"

कमलने उद्दिम होकर पूछा 'क्यों, पुसिमि छाबर पीछे लयक परेछान कर रही है।'

उसकी आत्मीयताय तो मैं आरी हो गया हूँ,—इसके लिए नहीं।"

कमल इरेन्द्रकी बातें याद करके बोली तो क्या आत्ममके लोप जानेके लिए कहत हैं। केकिन पुसिमि डरसे जो ज्येग इस तरह आर्दकिन रहते हैं, उन्हें अपने समारोहके साथ देखने काममें उतरना ही नहीं चाहिए। मगर, इसीलिए तुम्हें पहीसे फले ही क्यों जाना पड़ेगा। इसी भागरे छडमें ऐसा व्यक्ति है जो तुम्हें जगह देनेमें जरा मी नहीं करेगा।"

राजेन्द्रने कहा "छो छाबर छड आप ही हैं। बात मुने रहना हूँ, छड

जमें भूखनवा नहीं लेकिन इस सपत्नसे डरते न हो भारतमें ऐसे जादमी बिरसे ही हैं । होते तो क्यारी समस्या बहुत कुछ सहल हो जाती ।”

जरा ठहरकर फिर बोला मगर मैं इस बजहसे नहीं आ रहा हूँ । आभमको भी शोप नहीं ब गफना । और चाहे बिमके मुँहसे निकल जाय पर मेरे लिए बड़े जानकी बात इरेन्द्र-भद्रबाके मुँहसे नहीं निकल सकती ।”

तो क्यों आ रहे हो ?

आ रहा हूँ भयन ही लिए । वह है बकर कष्टक कम पर मेरा सक्के साथ मत नहीं मिलता, और न कामकी धारा ही मेक खाती है । मेक है सिर्फ प्रेमकी ह छ्मे । इरेन्द्र-भद्रबाके मैं सहोदरसे प्रिय हूँ उससे भी ज्यादा अपना हूँ । किसी दिन इसका व्यक्तिगत भी नहीं होनेका ।”

कमलकी बुझिन्ता रुट हो गई । बोली ‘ इससे बड़कर और क्या हो सकता है राजेन्द्र ? मन नहीं मिल गया नहीं मलका मेक न हो न सही कमकी धारा न मिले न सही इससे क्या आता-जाता है ? सब कोई एक ही तरहसे सोचने एक ही तरहका काम करेंगे और तभी एक साथ रहेंगे — यह क्यों ? और हम अगर दूसरेके मतपर अट्टा न कर सके तो फिर निष्ठा ही क्या हुई ? मन और कर्म दोनों ही बाहरकी चीजें हैं राजेन्द्र एक मन ही सम्भ है । और इन बाहरकी चीजोंके ही बसा मानकर अगर तुम रुट बड़े जाओ तो तुम को बड़ रहे ये कि तुम्हारे प्रममें कोई व्यक्तिगत नहीं होनेका तो इन तरह तो उसे मस्कीकार करना होगा । वह जो किनाशमें बिखा है कि कामका लिए क्या छोड़ो ’ सो यह भी ठीक वैसी ही बात होगी ।”

राजेन्द्र कुछ बोला नहीं सिर्फ हँस दिया ।

रहे क्यों ?”

हँसा इसलिए कि तब हँसा नहीं था । आपने अपने खुदक विवाहक मामलेमें मनके मेकके ही एकमात्र सल स्थिर करके बाय अनुष्ठानके बेमेक कुछ नहीं बड़के उता दिया था । वह साथ नहीं था इधीलिए आज आप दोनोंका सब कुछ अवल्य हो गया ।”

‘ इसक मामी !”

राजेन्द्रन कहा मक मेकके मैं कुछ नहीं समझता मगर उसीको ब्रिटीस बड़कर उच रचरस पोषित करनेकी भी आजकल एक ठीके टंगकी केशन हो गई है । इससे बदारता और महता दोनों ही प्रकट होती है, परन्तु

उत्पन्न नहीं प्रकट होता । यह कहना गलत है कि संसारमें सिर्फ एक मन ही है और उसके बाहर जो कुछ है, सब छाया है ।”

जरा छरछर वह फिर कहने लगा, जाय अभी अभी विभिन्न मनुष्योंके प्रति भदा रथ सज्जनेको ही बड़ी भारी सिखा बता रही थीं मगर अन्त जानती हैं कि सब तरहके मतोंपर भ्रमा बंधन रख सकता है । जिसके अपने मतका बोझ बस नहीं बड़ी रथ सज्जता है । सिखाके द्वारा विद्वत् मठकी पुपचाप उपेक्षा की जा सकती है पर उसपर भ्रमा नहीं की जा सकती ।”

कमलको अत्यन्त विरमन हुआ वह भवाङ्ग रह गई । राजेन्द्र कहने लगा — हमारी ऐसी नीति नहीं है, हमें भदासे हम संसारका सर्वनाश नहीं करत — मित्रक मतपर भी नहीं — उस भदाको ठोक-धोकर बचानाचूर कर सकते हैं । यही हम जोगोंका काम है ।”

कमलने कहा “ इसीको तुम जोग काम करते हो ।

राजेन्द्रने कहा “ हौं करते हैं । मतका वैमेल अन्तर हमारे काममें बाधा पहुँचता रहे तो मनके मेमसे इसे नष्ट करना है । हम चाहते हैं मतकी एकता कामकी एकता — हमारे किन्तु भाषोंके विस्मरणको बोझ भी मूल्य नहीं सिबाली —”

कमल जायसर्व-बधित होकर बोधी मेरा वह नाम भी तुम्हें माकूम हो गया है ।”

“ हौं । कर्मके जगतमें जादमीके स्वबहारका मेक ही बसा मेक है । मनका नहीं । मन हो तो बना रहे, अन्तःकरणका विचार अन्तर्प्राप्ति करने, हमारा काम स्वाभाविक एकताके बिना नहीं चल सकता । बड़ी हमारी कसौटी है, — इसीसे हम जीव करत हैं । बाहरसे अन्तर खरमी मेक न हो तो वैदिक वा बनेके मनके मेमसे संगीतकी सधि नहीं होती वह तो सिर्फ बोझाहक ही कहलावेगा । राजाकी जो सेनाएँ मुक्त करती हैं उनको बाहरकी एकता ही राजाकी सधि है । मनसे उसे कोई मूल्य नहीं । नियमका शासन संवम है — और यही हम जोगोंकी नीति है । इसे छोड़ा बनानेसे मनके नज्जेके किन्तु सुत्तक तुम्हारे जा सकती है, और कुछ नहीं । वह तर्कबलताका ही नामान्तर है । — उमिबाके रोखे रोखे — सिबाली यही है उनका पर ।

सामने एक पुण्डरीक दृढ-मूढा मन्थन है । दोनों जुलुसे उतरकर नीचेकी एक कोठीमें पहुँचे । जाह्नव मुनकर सिबालीके भीक छोड़ने देखा पर

दिये। पुत्रके उजाड़ेमें शायद पहचान न सक्य। सब-भर बाव ही उधने बीके मीन भी और उन्नाच्छन हो रहा।

१७

बारों तरफ देख-मालकर कमल सब हो गई। बरसी घकल क्या हो रही है। चहसा किसीके विधास नहीं हो सक्ता कि यहाँ कोई आशमी भी रहता है। किसीके आनेकी आहट सुनाई ही थीर एक सत्रह भठारह सालका लकड़ आ गया हुआ। रामेन्द्रने उसका परिचय देते हुए कहा यह सिवनाथ बाबूका नीकर है। पच्य बनानेसे डेकर दवा बिछानेतक सब इसीकी छप्टीमें है। सर्वास्तसे ही शायद सोना छुरु किया या इनने अभी उठके आ रहा है। रोपीके सम्बन्धमें अगर कुछ उपदेश देना हो तो इसीको हीबिए। माहस होता है कि समस्त तो बायगा बिलकुल बेबकूत नहीं है। नाम कम पूछ तो या पर बाव नहीं रहा। क्या नाम है ?”

शुभा।

आज दवा ही थी ?

कहनेने बावें हाथकी दो टैपडिनीं बिखाते हुए कहा “ये साराच ही है।”

भीर कुछ दिया है।”

हाँ —रूप भी फिना दिया है।”

‘ बहुत अच्छा किया। ऊपरके वंजारी बाबुभूमिसे कोई आया था ?’

कहनेने बाव करके कहा “शायद शोहरको एक बाबू माने ये।”

शायद ? तब तुम क्या कर रहे थे सो रहे थे ?”

कमलने कहा “शुभा यहाँ साह साह कुछ है या नहीं ?”

शुभा सिर झिन्करके साहू केने बक्य गया। रामेन्द्र बोला “साहूका क्या करेगी ? उसे पीठेगी क्या ?”

कमलने गम्भीर होकर कहा “यह क्या मजाकका बक्य है ! माया-ममता क्या तुम्हारे बिलकुल है ही नहीं ?”

पाठे थी। फलतः और फेमिन रिस्कीजमें उन्हें साह-पीठकर अक्य फेंक आया है।”

शुभा साह डेकर हाथिर हुआ। रामेन्द्रने कहा “मैं भूलके मारे मरा आ रहा हूँ, यही जाकर कुछ खा जाऊँ। तब तक साहू भीर इस कहनेका जो

उपयोग कर सके, भाप खींचिए, वापस भाकर आपको मैं बर पहुँचा दूँगा। हरिष्ठा नहीं मैं बेक-दो फलेमें लीड जाता हूँ।” कहकर वह ज्वाबकी परवाह किये बगैर ही चला गया।

सहरके निगारेका यह स्वाम मोही ही डेरमें लिम्बन्द और निरज हो गया। जो ज्योम छपर रहते हैं उभयकोलाहल और बजने-फिरनेका ज्यो मी बन्द हो गया। माहस होता है कि वे सब सो मये हैं। जिन्हापकी खबर क्ये कोई नहीं आया। बाहर बैचेटी रात्रि और मी गहरी होने लगी। जमीनपर ज्योमक विजकर पशुका छेपने लगा। बाहरका दरवाजा बन्द करनेका समय हो रहा था कि सक्कर साहिबकी पत्नी सुनाई दी और दूसरे ही क्षण दरवाजा बन्दकर राकेन्द्र मीतर आ गया। उसने इधर उधर देखा और इस बोले-सी समयमें आरे कमरेमें आकी परिवर्तन देखकर कुछ देर चुपचाप खड़ा रहा फिर हाथकी पोछकी बपककी त्रिपाईपर रकता हुआ बोका आपको बैठा छोड़ा या गहरी निमोकी तरह, बैसी आप नहीं हैं। आपमार मरोसा किया जा सकता है।”

कमलने कुछ जवाब नहीं दिया चुपकेसे उसके मुँहकी ओर देखा। राकेन्द्रने कहा “इस बीचमें आपने तो विस्तार तक नरक डाल्य है। और सब कुछ तो आपने हूँद खोकर निजक सिवा पर इन्हीं उठाकर उसपर टुक्का कैसे।”

कमलने जाहितेसे कहा “तरकीब माहस हो तो वह कम मुसिक नही।”

“मगर माहस भेजे हो। माहस होनेकी तो कोई बात नहीं थी।”

कमलने कहा “माहस करना क्या सिर्फ तुम्हीं ज्योमके हाथको बात है। बचपनमें जब गणीबेमें मैंने बहुत-से रोम्बिकी सेवा की है।”

“अच्छा यह बात है।” कहकर उसने चारों तरफ नजर डीवाई, फिर कहा “जाते बक छाबमें कुछ खानेका छेता आया है। देख गया था कि छराहीमें पानी है, खींचिए, या खींचिए, मैं बैस हूँ।”

कमल उसके खेरेकी तरफ देखकर जरा हँस दी, बोली ‘खानेके बारेम तो मैंने कहा नहीं था अचानक यह बात सुन कैसे गई।”

राकेन्द्र बोला ‘बाग छप है, सुझा तो नजानक ही। जब मीठ फेद मर गया, तब न जाने क्यों ऐसा ज्यो कि आपको मी मूल लगी होनी। जाते बक छुजानसे बोझ-ठा छेता आया। डेर न खींचिए, खाने बैसिए।” कहकर वह खर ही छराही उठा गया। पास ही कम्बोहार सिमलत रखा था बोका

‘ ठहरिए बाहरसे इसे मौन छाँटे । ’ खड़ा हुआ उसे बाहर ले गया । वह कुछ ही जान गया था कि इस घरमें क्यों क्या रहा है । झोटा तो खोबकर सलूनका दुकान ठहर खया और बोला ‘ आपने बहुत उठ-बठी की है, जरा सावधान रहना अच्छा है । मैं पानी देता हूँ, आप पहले हाथ धो लीजिए । ’

कमलको अपने पिताकी याद आ गई । उनकी भी बाल्यमें इसी तरह रस-कच कुछ नहीं होता था मगर वे हार्दिकतासे मरी रहती थीं । उसने कहा ‘ हाथ धोनेमें मुझे कोई आपत्ति नहीं पर ज़ा नहीं सँभूगी माई । तुम्हें तो खबर माझम है कि मैं खुद अपने हाथसे बनाकर खाता करती हूँ और चुपके, वह सब कीमती अच्छी बरछी मिठाइयों भी मैं नहीं खाती । मेरे लिए व्यस्त होनेकी जरूरत नहीं मैं तो हमेशाकी तरह पर आकर ही खाऊँगी । ’

‘ तो फिर ज्यादा रात न करके सब बर ही लौट बसिए, आपकी पहुँचा हूँ । ’
 आप फिर नहीं लौट कर आएँगे ? ’

हाँ । ’

‘ अब तक रहिएगा ? ’

कमसे कम कम सवेरे तक । कमरके पंखकी माइबोके हाथ कुछ अपने दे गया था उससे एक बार मुखावित्त बगैर किये नहीं हिलनेका । अब थक गया हूँ पर इसकी कुछ परवाह नहीं । मुझे नहीं माझम था कि इतनी लपरबाही होनी उठिए, फिर लौगा नहीं मिसेगा पैरम जाना पड़ेगा । झीटत बल मोखिबोके मुझेमें भी जरा देखने जाना है । बोके मरनेकी बात भी देखना है उन लोपेने क्या किया ? ’

कमलको फिर उस बातका जबाब आ गया कि इस आदमीके हृदयमें अनुमृति नामकी कोई बल्य ही नहीं । लयमग बन्ध-ना काम करता है । न जाने कौन-सी अज्ञात प्रेरणा इसे बार बार धर्ममें जोत देती है और यह काम करता बला जाता है । धरन किए नहीं मार खबर कोई आपा केकर भी नहीं करता । धर्म इसके रखने और धारे करीरमें उस-बायुकी मीति ही म्द-स्वामाविह हो गया है । और मजा यह कि औरोके आधर्यका ठिक्कना नहीं ब सोचते हैं कि एसा होता क्ये है ? कमलने पूछा ‘ रामेन्द्र जान तुम भी तो डॉक्टर हैं ? ’

‘ डॉक्टर ? नहीं तो । सिर्फ जरा डॉक्टरों स्कूलमें कुछ दिन पढ़ा था । ’

‘ तो फिर उन लोपेका ह्वाय कौन करता है ? ’

यम।”

और आप क्या करते हैं।”

मैं उनके कार्यमें मदद करता हूँ, उनका गुण-सम्पन्न परम भक्त हूँ।”
 क्यूँकर वह कमलके विस्मयाच्छन्न चेहरेकी तरह डूब-भर बंझता रहा; फिर जरा
 हँसकर बोला यम नहीं वे हैं यम-राज। बन्ध्याही है उसकी प्रतिभाकी किरने
 रामा क्यूँकर इन्हें पहले अभिलिखित किया था। सम्पुत्र है तो रामा ही।
 वैसी दवा है वैसा ही विवेक। मैं होकर बहकर क्यूँ सकता हूँ कि विध-जगतमें
 कोई अमर सृष्टिकर्ता है तो वे उसकी सर्वभूष सृष्टि हैं।”

कमलके आक्षिप्ततेसे पूछा आप क्या मनाक कर रहे हैं राजेन्द्र।

क्या नहीं। मुनकर सतीश भइया मुँह पम्पीर बना केत हैं इन्द्र भइया
 गुस्सा हो जाते हैं, मुझे 'सिनिफ' कहते हैं। और अपने आश्रममें उन अपने
 मित्रकर सुष्कृता संनम, स्वाग और अद्भुत कठोरताके तरह तरहक भक्त-सक्त
 पैनाकर मानो यम-राजके विरुद्ध विद्रोह घोषित कर रक्खा है। वे समझते हैं कि
 मैं उनका उपहास कर रहा हूँ। मगर सो बात नहीं है। गरीब दुखियोंके
 मुँहमें वे बात नहीं, अमर जाते तो मेरा विश्वास है कि वे भी मेरी तरह परम
 राज-भक्त हो जाते और अन्तमें छुटकर यम-राजका गुण-मान करते अक्षयान
 समझकर उन्हें पायी देते न फिरत।”

कमलन कहा नहीं अगर तुम्हारा वास्तविक मत हो तो तुम्हें सिनिफ
 कहमें बुराई क्या है।

बुराईका विचार पीछे होगा। अन्तमें एक बार मेरे सान मोचिनोके मुँहमें
 कगारकी कतार पकी है विरुद्ध आश्रमके एम्पुदवाकी बगल ही नहीं—हैजा
 नेक प्येन —कोई भी बहाना-भर मिलना चाहिए। भीषण नहीं प्येन नहीं
 सोनेक किय मिलत नहीं कमलके किय कपवा नहीं मुँहमें पानी बेलक किय
 आदमी नहीं—देखते ही सचयक बहरा जाना पड़ता है कि आक्षिप्त
 इसका किनारा कर्ता है। पर कभी कय किनारा नकर आ जाता है,
 किन्ता पूर हो जाती है और मन ही मन क्यूँने कपता हूँ,—कोई कर नहीं
 भाई कोई कर नहीं।—कमलका बाहे किन्तनी ही पम्पीर क्यों न हो कसक
 समाधान करनेकी शिष्यर किन्नेदारी है वे आ ही रहे होंगे। सुब सुबे बसोम
 सुपी सुपी बगलत्वापै हैं पर हमारी इस बेल-भूमिमें घापीघी घापी किन्नेदारी
 बयराजने के रक्की है, स्वयं रामाविद्यक बसराजने। एक दिवापक

हम बहुत ज्यादा सीमात्मक हैं।—लेकिन न जाने क्योंसे यह सब बाधें निकल आईं। जर्मिया, बहुत रात होती जा है। बहुत-सा रास्ता पैदल तै करना है।'

मगर तुम्हें तो फिर वही रास्से वापस भी आना है।

सो तो आना ही है।

तुम्हारा मोपी-सुरक्षा है किन्ती बुर।'

पास ही है, याने यहींसे एक मीलके भीतर।"

तो तुम साइकलसे घूम आओ—मैं बैठी हूँ।

रामेन्द्रका आश्चर्य हुआ बोस 'सो कैसे! आपने तो दो दिनसे आना नहीं है।'

किन्ने ही तुम्हें यह खबर।"

अभी अभी जनाकरी बात हो रही थी न लसीसे। पर खबर मेंन खुर ही प्राप्त की है। आठे बज आपका रसोईपर एक बार हाँककर देख आया जा आइ मात तबार रखा था—बटमोईका खेरा देखनेसे समझ नहीं रहा कि वह गत रात्रिच बनाया हुआ है। जर्मिया जो दिनसे आपका खेरा लपकास कर रहा है। जिदामा मा तो जर्मिया या फिर जो आना हूँ उस का लीजिए। आम हावसे बनाईका बहाना बनेच है।"

अबैच।" कमस बरा हँसकर बोली, "मगर मेरे लिए तुम्हें इतना फिर-बर्न क्यों।"

सो नहीं जानता। खरपड़ी अभी खुर ही लसस कर रहा हूँ, फता जगत ही आपका गबर दे दूँगा।"

कमस बोली बेर कुछ सोचती रही उसके बाद बोसो अखर देना। घरमाणा मन।" फिर कुछ बेर खुर रहकर बसने कहा "रामेन्द्र तुम्हारे आभमके माई-साइबन तुम्हें बहुत कम पहचाना है इनीसे बे तुम्हें लपकास समझते हैं। पर मैं तुम्हें पहचानती हूँ। जिदामा मुझे भी पहचान रखमा तुम्हारे लिए करती है। लेकिन बसके लिए समस चाहिए, वह परिचय बाद-विवाद करनेसे नहीं होगा।" और फिर बरा दिबर रहकर बन्दे लगी 'मैं खुर बसने हावसे बनाकर गानी हूँ, एक बेर ग्राती हूँ, सो भी अज्ञम्त बरीबीच खाना—सुद्धी-भर बाम-भाठ बस। पर वह मेरा मन नहीं दे, इसलिये लोड भी सफ़ी हूँ। लेकिन किर्के इसीलिए दिबम भंग नहीं करूँगी कि जो दिन्से आया नहीं है।

तुम्हारे इस स्नेहमें मैं नहीं मूँहूँगी पर तुम्हारी बात भी न रख सकूँगी रत्नेन्द्र ।
इसके लिए तुम बाराह मत होना मन्त्र । ”

नहीं । ”

क्या सोच रहे हो बतानो तो सही । ’

सोच रहा हूँ, परिवर्तकी भूमिकाएँ वह अंध बुरा नहीं रहा । देखना हूँ,
सहजमें मुझका नहीं का सकेगा । ”

सहजमें मैं तुम्हें भूमने क्या हूँगी ? ” अचर कमल सहसा हँस पड़ी ।
बोली, मगर जब बेर मत करो जानो । कितनी जल्दी हो सके लीज जाओ ।
उस बड़ी आराम कुर्सीपर कमलस निहा रहेंगी—दो-चार बड़े सनेके बाद जब
उबेरा होगा तब हम खेव भर खेने,—क्यों डीक है न ? ”

रत्नेन्द्रने फिर हिकाकर कहा अच्छी बात है । मैंने सोचा था कि आरम्भ
राठ भी खेरी औखी जितानी पड़ेगी लेकिन छुटी मंजूर हो गई,—सैबाएँ मार
आपने सुद अपने ही ऊपर के किया । अचर हुआ बीननेमें छापर सुसे जवारा
बेर न खेनी, पर इस बीनमें आप सो मत जाइएना ।

कमलने कहा नहीं । पर वह कवर आपको किमसे ही कि से मेरे फल
है ? क्योंकि मने आपमिबने जानर ? कितने मी ही हो अपने मबाक किवा
है । विश्वास न हो तो कित्ती निन इन्हीसे पूज लीजिएना मासम हो जायगा । ’

रत्नेन्द्रने कुछ बचान नहीं बिबा । तुम्हेंसे बाहर बचन गया ।

किवनाम मालो इसीकी बाब देख रहा था । अपने करमद बहन अँखि खोल
कर देखा जीर कहा यह खीन है !

सुनकर कमल पीक पड़ी । कण्ठका स्वर स्पष्ट था बफ़ताका निह भी न था ।
औखीकी जितवनमें बोड़ी-बहुत हुस्ती कवर पी पर खेरा विजयुक्त स्वामाजिक
था । अपूरी नीद बचत जानेसे बैसा आच्छन्न मान रहता है तससे जवारा कुछ
नहीं था । पर कमल सहसा इस बातपर विश्वास न कर सके कि इतनी
बकरदस्त बीमारी इतनी आसानीसे जीर इतनी कवर खत्म हो गई । इसीसे
बचान खेनेमें उसे बेर कमी । किवनामने फिर पूजा ‘ यह खीन जादमी दे
किवानी ? तुम्हें साब खेकर यही आये है ? ’

‘ हों । सुने मी खने हैं और तुम्हें मी कक बही पढ़ेना मने हैं । बरी है । ”
नाम क्या है ? ’

राजेन्द्र ।”

“तुम दोनों क्या अभी एक ही मकानमें रह रहे हो ?”

कोशिय तो बही कर रही हैं। मगर रह जायें तो मेरा माम्र ।”

हैं। उसे नहीं क्यों काई हो ?”

कमलने इसका कोई जवाब नहीं दिया। शिवनाथने भी फिर कोई प्रश्न नहीं किया, बौद्ध सीने पसा रहा। बहुत देरतक सन रहनेके बाद शिवनाथने पुनः ‘मह बात तुमने किसके सुझसे सुनी कि मेरे साथ तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं रहा ? मैंने क्या है,—एसा लोग क्या रहे हैं क्या ?”

कमलने इस बातका कोई जवाब नहीं दिया किन्तु जबकी उसने खर ही प्रश्न किया सुझसे तुमने क्या नहीं किया तो मैंने इसपर भले ही विश्वास न किया हो तुम तो करते थे। पर सुझे छोड़के कसे जाते कथ यह बात तुम सुझसे क्या क्यों नहीं आये ? यही सोच रक्खा था क्या तुमने कि मैं तुम्हें बीबकर रोक सकती हूँ या रो-पीटकर अनर्थ कहा कर सकती हूँ ? ऐसा मेरा स्वभाव नहीं तो तुम जल्दी तरह जानते ही थे फिर क्यूंके क्यों नहीं आये ?”

शिवनाथ बोधी बेर मीरब रहकर बोला ‘कामकी शंकाके मारे या रोबगारके काठिर कुछ दिनोंके लिए जकम मकान केकर रहने कमना ही क्या त्यागना हो गया ? मैं तो मोक्षता था—”

शिवनाथकी बात सुझसे सुझसे ही रह गई। कमल बीबने ही बोळ उठी रहने हो मैं नहीं जानता थाइती।” पर क्यूंके साथ ही वह अपनी लोभनासे आप ही लजिमत हो गई। कुछ बेर पुर रहकर अपनेको शांत करके अन्तमें बोली ‘तुम क्या सचमुच ही बीमार थे ?”

“सच नहीं तो क्या झूठ ?”

“सचमुच ही अगर बीमार थे तो नहीं न जाकर भागु बाबूके घर किस लिए गये ? तुम्हारे एक कामन तो सुझे जना ही पहुँचाई है, पर हमरे कामने मेरा इनता अपमान किया है कि बितरकी हर नहीं। मैं जानती हूँ मह सुनकर कि सुझे कुछ हुआ है तुम हँसेगे, पर यह जानना ही मेरे लिए साम्त्वना है। तुम इतने बोले हो सिर्फ इरीकिए, मैंने छद किया नहीं तो सुझसे नहीं सहा जाता।”

शिवनाथ पुर रहा। कमल उसके चेहरेकी तरह पृष्टक देखती रही और

१६६

बोली, "तुम जानते हो मुझे सब सहज हुआ पर तुम्हें पारसे निश्चय देना मुझसे नहीं छाड़ा गया। इसीसे तुम्हारी सेवा करने आई थी,—तुम्हें रिहा नहीं।"

सिंहनाथने पीरे पीरे कहा "तुम्हारी इत ब्याक सिप में इतना है सिवाही।" कमलने कहा "तुम मुझे सिवाही कहके मत पुकारो कमल कहके पुकारा करो।"

'क्यों ?

तुमनेसे मुझे पूजा होती है इसीलिए।

मगर एक दिन तो तुम इसी नामको सबसे उबावा पसन्द करती थी।" कहते हुए सिंहनाथने कमलका हाथ अपने हाथमें छे किया। कमल चुप रही। अपने हाथको छेकर बीकठानी करनेमें भी उसे छेलेब मासूम हुआ।

"तुप हो रही क्याब क्यों नहीं देती ?'

कमल पूर्ववत् चुप रही।

"क्या सोच रही हो बटाको न सिवाही।"

क्या सोच रही हूँ जानते हो ? सोच रही हूँ कि इन बातोंकी बार सिन्धनेनाथ आरभी किठना क्या पाकण्डी होना चाहिए।

सिंहनाथकी आँखोंमें आँसू छटक आये, उसने कहा 'पाकण्डी में नहीं है सिवाही। एक दिन जायेगा जब अपनी मूख तुम जाय ही समस्त बाबोगी — जब दिन तुम्हारे पक्षात्तापकी सीमा न रहेगी। क्यों मैंने कहाब कमरा फिराबैर किया है—"

केलिन कहाब कमरा फिराबैर केनेब कारण तो तुमसे मैंने एक बार भी नहीं पूछा। मैंने तो सिर्फ इतना ही जानना चाहा था कि यह बात तुम मुझे बताकर क्यों नहीं आये ? तुम्हें एक दिनके लिए भी मैं पकड़के नहीं रखती।" सिंहनाथकी आँखोंसे आँसू बहक पड़े उसने कहा, "क्या मैंने सुझ हिम्मत नहीं पकी सिवाही।"

"क्यों ?"

सिंहनाथ कुपतेकी आत्मीनसे बोके पोलटा हुआ बोकर "एक तो दरबोली लगी तबपर आये दिन बाहर आना पकटा फरार करीबने। माक लहरने-बतार केके लिए स्टेशनके पास एक—"

कमल निस्तारसे तठकर बूट एक करसीपर जा बैठी। "मुझे अपने लिए

अब दुःख नहीं होता। होता है एक दूसरे आदमीके लिए। पर आज तुम्हारे लिए भी दुःख हो रहा है शिवनाथ बाबू।”

बहुत दिन बाद फिर आज उसने नाम लेकर पुकारा। बोली ‘ देखो कोरी बचनान्धे ही मूल-मूल मानकर बुनियातमें रोजगार नहीं किया जा सकता। मेरे साथ हो सकता है कि फिर कभी तुम्हारी मुसक्यात न हो लेकिन मेरी तुम्हें याद आयेगी। जो होता या सो तो हो चुका वह अब वापस नहीं आ सकता; परन्तु मस्तिष्कमें जीवनको और एक परससे देखनेकी कोशिश करोगे तो हो सकता है कि तुम्हारा ममा हो तुम अच्छी तरह रहो।

कमलने वही मुस्किनासे अपने मौजू रोके। यह बतकर कि आज बाबूने क्यों उसे अपने बरसे हटा दिया उसका असली कारण क्या था,—यह इतनी बड़ी बात, इतनी बात हो जानपर भी उसे न पहुँचा सकी।

बाहर साइकिन्की बणी सुन पड़ी। शिवनाथ बिना कुछ बोले चुपचाप करबट बरबट छो रहा।

भीतर आकर रामेन्द्रने घीने त्वरसे कहा अच्छा सबकुछ ही जग रही हैं आप। रोगीका क्या हाल है? क्या-क्या कुछ खिबाई-पिबाई क्या?

कमलने गिर हिकाकर कहा “ नहीं, कुछ नहीं सिखाया।”

रामेन्द्रने तेगतीसे इधारा करके कहा “ चुप। मीठ उबट आयमी —मीठ पचाव होना अच्छा नहीं।”

‘ नहीं। पर तुम्हारे मोबिलेने क्या किया?’

वे मझे आदमी थे; बाल रण ली। मेरे पहुँचनेके पहले ही समराजक मैसे आकर हो आत्माओंको ले गये सबेरे दोनों सुरोंको म्युनिसिपलमिडीके मैसेके हवाले कर सुटी पाईगा। भीर मी आठ वन सौसे मर रहे हैं, कम एक बार आपका मे आकर दिना जाईगा। आशा है आपको पर्याप्त ज्ञान प्राप्त होगा। ममर आराम कुरमीर मेरा कमलका विछिना कहीं है? मूल मरै!”

कमलने कमल विछा दिया।

“ ओःपू—जानमें जान आई।” बहकर उसने एक लम्बी सीस ली भीर इपेन्नेर पौर पसारकर वह पव रहा। बोला “ शीव-भूर करत करत पत्नीसे कथरप हो गया है —पंचा-बंवा कुछ है क्या?”

कमल हाथमें पंखा लेकर कुरसी लीबके बसके तिरहाने बैठ गई भीर

१६८

बोली मैं बहार बर रही है, छम सो बालो। ऐसीक किय दुखिन्ता करनीकी
 जबरत नहीं, वे कथे हैं।”
 बाह ! तब तो सब तरफ छम ही छम समाचार हैं।” कहत हुए उसने
 ओंके बीच की।

१८

स्वस्वसुखेवा इस देशमें विजयुज नई बीमारी नहीं है, क्यूं ना लड़ी तोप
 बुकारके नामसे बहोबाके इसे बहुत कुछ अप्रज्ञा और तप्यासकी दृष्टिसे
 देखते रहे हैं। स्नेहोकी यही कारण थी कि वो तीन दिन तकमीक देवेक
 सिवा तसफ और कोई पहरा उरेख नहीं होता।—परन्तु इसकी किसीको
 कल्पना तक न थी कि सहासा ऐसी दुर्भिचार महामारीके रूपमें उसका प्रकोप
 हो सकता है। सिवाया इस कार कल्पनाइ इसकी अपरिमेय शक्तिकी
 सुनिश्चित कठोरतासे बोग पहले तो इतदुखि-सी हो गये, बादमें जिससे बिबर
 बन सफ मान बड़ा हुआ। अपने और परायेमें क्याबा मेर-नाब न रहा।
 बीमारकी तीमारबारी करना तो बुर रहा मरत बच सुँहमें पानी देनेनाम भी
 बहुतेके भागमें न सुना। कहर और गीब सर्वत्र ही एक-ही दबा थी।
 जानरेके भागमें भी कल्पना कुछ नहीं हुआ—उस समय बन-बहुत
 प्राचीन नपरीकी शक्य कुछ ही दिनोंमें विजयुज ही बरल गई। लूक-कोकैत्र
 बन्द हो गये हैं, बाजार और मण्डियोंकी दृष्टान्तमें ताके लग गये हैं जमनाका
 किनारा दुनमान है—दिन्दू और सुयलमान इन-बाइकोके शक्युज प्रल
 पैतकी भावाजके सिवाय सखेपर विजयुज सवादा है। किसी भी तरफ
 देखनेसे वही माकूम होता है कि मारे भव और भारतकोके सिर्फ बादमियोंकी
 ही नहीं बल्कि मकूमों और पेड़-पौधों तककी शक्य-सुरत विमड गई है।
 धरतीकी ऐसी हाकतमें किन्ता दुःख और कोकरी जनाकाके कारण बहुतेके
 साथ बहुतेका समसौता हो गया है,—कोकरी करके बातचीत द्वारा वा
 मध्यस्व मानकर नहीं बल्कि यों ही अपने आप। आज भी जो स्नेय किन्दा
 हैं, अभी तक इस दुर्भिचारों सुने नहीं हुए, वे सभी माओ परदार एक दूसरेके
 परम आत्मीय हो गये हैं। बहुत दिनोंसे जिनमें बातचीत तक बन्द थी सना
 रास्तेमें मेट्र होते ही उनकी भी बीजोंमें मोरु कक बाते हैं।—किसीय

माई मर गया है तो कि किसीका कड़वा किसीकी स्त्री मर गई है तो किसीकी कड़वी नाराजीसे मुँह फेर देनेकी ताकत अब किसीमें नहीं रह गई,—कभी किसीसे बात हुई और कभी वह भी नहीं हुई, सुपबाप मन ही मन एक दूसरेकी सम्मान-कामना करके बिदा ले ली है।

मोचियोंके मुँहमें अब क्यासा आसानी नहीं बचे हैं। जितने मरे उतने ही माग गये हैं। बाकीके लिए रामेन्द्र जकेजा ही काफी है। उनकी गति और सुखिच्छा मार स्वयं उसीमें अपने जिन्मे के लिया है। सड़कारिणीके तीरपर कमल हाथ बैठाने जाई थी। उसीका उसको मरोमा था कि बचपनमें बायक बर्षोंमें बीमार कुष्ठियोंकी उसने सेवा की थी पर दो-ही-तीन दिनमें वह समझ गई कि उस दूँहसे नहीं काम नहीं चल सकता। ठन् मुचियोंकी वह बैसी दुर्दसा थी। मापामें उसका बर्षन करके विवरण बना अलम्बन है। श्लोपविमोमें पौष परत ही सारा शरीर खीप उठता था—कहीं भी बैठनेको जगह नहीं। वहाँ जानेक पहले कमल नहीं आगती थी कि पम्बगी बैसा मर्वकर रूप धारण कर सकती है। इत बालकी कम्पनाको भी वह अपने मनमें खाल न दे सकी कि इन सबक मध्यमें हरदम रहत हुए, अपनेको सावधानीसे बचाए रखकर रोपियोंकी सेवा और बेख माक थी वा सकता है। बड़े दर्पके साथ वह रामेन्द्रके साथ यहाँ जाई थी। दुस्साहसिकतामें वह किसीसे कम नहीं थी—संसारकी किन्नी बातसे वह डरती नहीं थी,—मीतसे भी नहीं और उसन झूठ भी नहीं कहा था; पर नहीं जाकर उसने समझा कि इसकी भी एक सीमा है। कुछ दिनोंमें ही हरक मार उसकी बहका लून सुन्ने लया। फिर भी बिसतुल ही विशानिया होकर पर सीर आनक पहले रामेन्द्र उस आश्रामन बते हुए बार बार करने लया एही निर्भीकता मेंने अपने जीवनमें नहीं बली। ठीक लुघनके मुँहको ही आपन समझल लिया। पर अब जबरन नहीं—आप पर जाकर कुछ दिन आराम कीजिए। इनक लिए जो कुछ आप किये जा रही हैं उसका जल्द य आपन जीवनमें न कुछ सकेंगे।”

“ और तुम ? ”

रामेन्द्रने कहा इन बचे तुमोंका महायात्रा कराकर मैं भी माँगूँगा। नहीं तो क्या आप चाहती हैं कि इनक साथ मैं भी मर जाऊँ ? ”

कमलको जबाब हुई न मिला अप-भर उमरी तरह देखती रही फिर कभी जाई। मगर इसके मानी यह नहीं कि वह इन कई दिनोंमें अपने पर बिल-

बुझ आ ही न सकी हो। रघुई बगलकर साब के जानेके किए लसे रोम एक बार, अपने भर आना पड़ता था। पर आज वह जानकर कि लसे फिर लस मयाजक स्वाभमें बापरा न आना पड़ेगा एक ओर कैसे लसे लसकी हुई, कैसे ही बुरी ओर बगलक होवेसे उलझ घारा जी मर उठा। आते बल वह राजेन्द्रसे जानेके बारेमें पूछना मूल पड़े थी। मगर वह बुद्धि चाहे किन्तमी ही बड़ी क्यों न हो नहीं लसे वह छोड़ आई है, उसके कैसे कुछ नहीं थी।

रघुई-रघुई बन्द होनेके समकसे इरेन्द्रका ब्रह्मचर्याभ्रम भी बन्द है। ब्रह्मचारी बाबुकेके किसी निरापद स्वाभमें पहुँचा दिया गया है और बेखारेसके किए लसीक समके साथ है। अमिनासकी बीमारीके कारण इरेन्द्र बुर नहीं आ सख, आज वह कमकक भर आना और कमस्वर करके बोझ ' पीन-छा' रोससे रोम आ रहा है, आपसे मेट ही नहीं होयी। क्यों थी ? "

कमकन मोषिकेके सुहृदेक नाम सिवा तो वह अक्षयत विरिमत हुआ बोझ नहीं ! क्यों तो सुनते हैं, बहुत लोप मर रहे हैं ! वह सखह आपसे ही किमन ? पर किसीने भी ही हो अथवा काम नहीं किया।

क्यों ? "

क्यों क्या ! क्यों जानेके मानी है अममा आत्म-हत्या। मैं तो वह सोच रहा था कि सिमनाच बाबू आपसेके कसे मरे हैं लो लकर आप भी क्यों क्यों गई होमी। पर गई होमी अथवा ही कुछ दिनोंके लिए ही नहीं तो मझन खाकी किये बमैर नहीं आती—अथवा राजेन्द्रका पता है कुछ ! वह क्या यहीं है या और क्यों कल गया ! अथवाक एका गोता मारा कि कोई पता ही नहीं मिळता। "

लसे क्या आपसे कोई खास काम है ! "

नहीं खास कामके मानी से साधारणतः समसे आते हैं बसा तो कोई काम नहीं। फिर काम ही समझिए। कारण मैं भी अथर लसकी लोम-बनर केना बन्द कर हूँ तो सिवा पुकिसेके और कोई लसक आत्मीय-जन नहीं रह जाता। मुझे विश्वास है आपसे माझन है कि वह क्यों है। "

कमकन क्या मुझे माझन है। पर आपसे बतानमें कुछ जानना नहीं, वह अनुसन्धान करना अनुचित अनुकूल है कि लसे परसे मया दिया है अथ वह बाहर निकलकर क्यों गया।

हरेन्द्र कुछ बेर चुप रहा फिर बोला " मगर वह मेरा घर नहीं आधम है । नहीं उसे खान नहीं के साथ । मगर इसकी विचारणा दूसरेके मुँहसे सुनना भी मुझे खतरा नहीं । जल्दी बात है मैं जाता हूँ । उसे पहले भी बहुत बार ईश निरामा है, और उस बार भी पूरा खैरा — भाप डकके नहीं रख सकेंगी । "

वह बात सुनकर कमल हँस ही जाती कैसा कि भाप वह रहे हैं हरेन्द्र बाबू, फिर अगर सन्ध में डक रहेंगी तो क्या भाप समझते हैं कि उससे मेरा कुछ पूरा हो जायगा ? "

हरेन्द्र पुर मी ईश दिया पर उस ईशके ईर्द गिर्द बहुत-सी ऐब ख गई घसने लडा मेरे सिवा इस मझक्य जहाज केनाके आगरेमें जीर मी बहुतेरे हैं । वे क्या करेंगे माझम है ? कहेंगे—कमल आइसीक्य दुक तो एक तरइका है नहीं बहुत तरइका है । उनकी प्रकृतिमी मी भिन्न हैं और कुछ पूर करनेके रास्ते मी भिन्न हैं । सिवाइका, उन कुबी लीयोके साथ अगर कमी मुझाक्यन हो जाय तो बातबीत करके सईसि मिलीय कर बीजिएगा । फिर वह बरा ठहरकर बोला ' केकिन असकने भाप गूक रही हैं । मैं उस दकक नहीं हूँ । स्वयं परेधान करने मैं नहीं जाता क्योंकि, सँसारमें कितने लोग आपपर सचमुच भ्रडा रखते हैं उईसि मैं मी एक हूँ । '

कमलने उइके खरेकी तरक एक मकर बालकुर धीरेसे पूछा " मुझपर भाप सचमुच भ्रडा रखते हैं सो किस बीसिसे ? मेरे मत या आचार्य किन्तीके मी साथ तो भाप अपेयोक्य मस नहीं । "

हरेन्द्रन उही बक उतर दिया नहीं कह मेक नहीं । मगर फिर मी मैं पहरी भ्रडा रखता हूँ । क्यों ? यही आश्चर्यकी बात मैं अपने आपसे बारबार पूछा मी करता हूँ । "

कोई उतर नहीं पाते ? "

' नहीं । मगर विधान है कि किन्ती न किन्ती दिन पा सैना बहर । " फिर जरा ठहरकर कमल भापका इतिहास कुछ कुछ आपके निरक मुँहसे सुना है कुछ अकिन बाबूसे माझम हुआ है — हाँ, आपणे माझम हांमा जावक वे अब हमार आधममें ही रहने लगे हैं । "

कमलने सिर हिकाकर कहा ' से तो आप पहले ही बता चुके हैं । "

हरेन्द्र चढ़ने लगा आपक जीवन-इतिहासके विचित्र अध्याय ऐसी उदार सरलतासे सामने आ रहे हुए हैं कि उनके विरुद्ध सरसरी राव बाहिर

करनेमें हर कथता है। जब तक किन बातोंको बुरा मानना सीखा है, आपके जीवने मानो जन्हीके विषय मामल्य दामर कर दिया है। इन बातोंका ज्वाब करनेवाला कहीं मिलेगा और उतका मतीया क्या होगा सो मुझे कुछ भी नहीं मालूम, किन्तु मया बताएँ तो सही कि इस तरहसे जो निर्भवतासे जा सकती हैं और ईच्छाकी कोई आपसकता ही नहीं समझती उनके प्रति भद्रा किने बगर कैसे रहा जा सकता है।”

कमरने क्या निर्भवतासे जाके सामने बड़ा हो जाना ही क्या कोरे बहुत बड़ा काम है। दो कम-बटोकी कदाभी क्या आपने नहीं सुनी? वे भी बीच लड़कसे बचते थे। आपने नहीं देखा कैपिन मीने बाक-बमीचोके साहबोंको देखा है। उनका निर्भव निःसंशेष वैदवाचन देखकर बुनियामें मज्जाको भी लज्जा आती है। कजाको जन्हीने मानो गर्दमिया देकर बाहर निकलस दिया है। उनके दुःसाहबकी तो सीमा नहीं — मगर बनकी यह बात क्या आदमीके लिए अच्छाकी चीज है।

हरेन्द्रको ऐसे लहरकी आधा और जाहे किलीसे रही हो इस लीसे नहीं थी। सहता मानो उसे कोरे बात हुई न मिली, बोला “यह और बात है।”

कमरने क्या कैसे जाना कि और बात है? बाहरसे मेरे स्तिाको भी लोग जन्हीमेंसे एक समझा करते थे। मगर मैं जानती हूँ, यह सच नहीं था। कैपिन सच तो किर्क मेरे बालनेपर ही निर्भर नहीं है — बुनियाके जाने उसका प्रमाण क्या है?

हरेन्द्र इस प्रसङ्ग भी लहर न के सखा और चुप रहा।

कमर करने लगी “मेरा इतिहास आप सबने सुना है और अब सम्भव है कि इस कदागीका परमाण्वके साथ उपमोच भी किया है। पर इन निश्चयमें आप मौन हैं कि मेरे काम सच अच्छे हुए या बुरे जीवन मेरा बन्ध है या बहपित — मगर हों वे काम गुणरुसे न होकर सब खेपोकी लीखोंके सामने — लखी उपेक्षा इतिके नीचे हुए हैं, — मेरे प्रति आपकी अच्छाक आकर्षकका कारण नहीं है। हरेन्द्र बाबू, बुनियामें आदमीकी मझा मीने इतनी उमारा नहीं पाई कि आपरबाहीसे बिना कहे-मुने उसका अपमान कर सकें पर आप मेरे सम्बन्धमें कैसे और भी बहुत कुछ जानते हैं कैसे ही यह भी जान लिये कि लखन बाबुकोकी आभवासे लखर यह मझा ही मुझे पीका पहुँचाती है। अबका मुझे सही जाती है पर इस अच्छाक मार मेरे लिए दुःख है।”

हरेन्द्र प्यरेकी तरह ही क्षम-भर मीन रहा। कमलके बापकोसे — बासकर उसके कण्ठस्वरकी शान्त-कठोरतासे मन ही मन उसे अपने अपमानका बोध हुआ। बोधी बेर बाद उसने कहा 'क्या इसपर आपको विश्वास नहीं होता कि विचार और व्यवहारमें अनेकव होत हुए भी किसीपर भ्रष्टा की जा सकती है कमसे कम मैं कर सकता हूँ।'

कमलने बहुत ही सरलतासे उसी एक जवाब दिया 'ऐसा तो मैंने नहीं कहा हरेन्द्र बाबू कि विश्वास नहीं होता। मैंने तो सिर्फ़ यही कहा है कि ऐसी भ्रष्टा सुनो पीका फूँचाती है।' फिर जरा ठहरकर कहा 'आचार और विचारके बिहाजसे अक्षय बाबू भीर आपमें कोई विकेप मेव नहीं। तममें बहुत मन्द अभावस्थक और अत्यधिक कठोरता न होती तो आप सब एक-से ही होते। और अभावके सिहाजसे भी आप सब एकसे हैं। मेरे सिर्फ़ इस साहसने कि मैं मन्द्य और संश्लेषके मारे छिपी छिपी नहीं फिरती आप अयोग्य आदर प्राप्त किया है। मगर इसकी फितनी-धी क्षमता है हरेन्द्र बाबू। बसिक यह सोचकर कि आप कय इसीके सिव् अब तक मेरी बाहवाही करते आ रहे हैं मेरे मनमें एक अहमि ही पैदा होती है।'

हरेन्द्रन कहा 'इसके सिव् बाहवाही अगर हो ही तो क्या यह अक्षम है। साहस क्या दुनियामें कोई चीज नहीं।'

कमलने कहा 'आप अनेक हर एक प्रश्नको इतना एकदमी करके क्यों पूजते हैं। यह तो मैंने नहीं कहा कि माहम कोई चीज ही नहीं मैंने तो कहा था कि यह चीज संसारमें दुर्लभ है और दुर्लभ होनेसे ही यह आँखोंमें चकराव पैदा कर देती है। पर इससे भी नहीं एक और चीज है और यह चीज असा बाहरसे साहसके अभाव कैसी ही माहम देती है।'

हरेन्द्रने फिर दिखाते हुए कहा "समस्त नहीं सध। आपकी बहुत-सी बातें बहुत-से पहेली-सी माहम देनी हैं, लेकिन आजकी बातें तो उन्हें भी सीप पर हैं। माहम होता है, आज आप बहुत ही अत्यमरक हैं। इसअ आश्वे कुछ खवास ही नहीं कि किमका जवाब किसे दिये जानी जा रही हैं।"

कमलने कहा "ठीक यही बात है।" फिर क्षम-भर स्थिर रहकर बोली 'हो भी सकता है। सबसुनकी भ्रष्टा पला क्या चीज है जो क्षमद अब तक मैं पूर ही नहीं जानती। उस दिन सदा चीक-सी गई। हरेन्द्र बाबू

आप दुखी न हो परन्तु उसके साथ दुस्मना करनेसे और सब बातें आस-पास-सी ही मान्य होती हैं।" कहते कहते उसकी आंखोंकी प्रखर रश्मि समापन्न-सी हो आई, और धीरे धीरे ऐसी एक स्निग्ध सख्यता प्रवाहित हो उठी कि हरेन्द्रजी अनुभव हुआ कि कमलजी ऐसी मूर्ति उसके पहले कभी देखी ही न थी। अब उसे जरा भी संशय न रहा कि ये बातें कमल किसी अनुदिष्ट व्यक्तिसे कल्प करके बर रही हैं। वह सिर्फ निमित्त मात्र है, और इसीकिये धारण आखिर तक सब कुछ उसे पहेली-सा मान्य हो रहा है।

कमल करने लगी अभी अभी आप मेरी दुर्दम निमीक्याकी प्रशंसा कर रहे थे—अच्छी बात है आपने सुना है कि शिवनाथ मुझे छोड़के चले गये हैं।

हरेन्द्रजी मारे धर्मके सिर मुक मया बोला है।

कमलने कहा हम दोनोंमें मन ही मन एक शर्त थी कि सम्पन्न-विच्छेदका दिन अगर कभी आवेगा तो सब ही दोनों मरना ही जायेंगे। नहीं नहीं—किसी दस्तावेजपर सिद्धा-न्वी करनेकी जरूरत न होगी—यों ही।

हरेन्द्रने कहा बूढ़ !

कमलने कहा तो तो आपके मित्र अक्षय बाबू हैं। शिवनाथ गुणी आदमी हैं उनके विच्छेद मुझे अपनी तरफसे कोई बड़ी शिफायत नहीं। और शिफायत करनेसे काम ही क्या है। इतकी अवसर्गमें तो इस्तरफ कैमला ही होता है उसकी तो कोई अपनी कोई है नहीं।

हरेन्द्रने कहा इसका मतलब यह हुए कि प्रसन्न सिखा और किसी बन्धनको आप नहीं मानतीं ?

कमलने कहा, पक्षी पात तो वह कि हमारे मामकेमें कोई और बन्धन था या नहीं और हमारी बर्हि होना भी तो उसे मंजूर करनेसे फायदा क्या था। केवल जो हिस्सा लक्ष्मीके बेधम हो जाता है उसके किये बाहरका बन्धन जारी बंध हो उठता है। उसके द्वारा काम करना ही सबसे उपाय अच्छा है।" कहकर सब-भर वह चुन रही थीर फिर करने लगी आप सोचते होंगे कि सबमुषका क्याह नहीं हुआ इसीसे ऐसी बात सुनते निकल रही हैं, हुआ होता तो न निकल सकनी। परन्तु वह बात नहीं है। हुआ होता तो भी निकल सकनी थी; पर ही सब इतनी आसानीसे इस समस्यका हक न कर पाती। माध्यम हिरसा भी आबर बेहसे जुग रह जाता और व्यक्तिगत

शिवोंके सम्बन्धमें ऐसा होता है, मुझे भी उसी तरह आनन्द उभ हुआका बोझा लिये यह विन्दगी बितानी पड़ती। मैं बच गई हरेन्द्र बाबू माम्से छुटकारेका परबाबा लुका या सो मुक्ति पा गई।

हरेन्द्रने कहा "आपको शाब्द मुक्ति मिल गई। लेकिन इस तरह समी अगर मुक्तिपर हार लुम्प रचना चाहे तो संसारमें समाज-व्यवस्थाकी बुनियाद तक उलट जावगी। ऐसा कोई नहीं जो उस व्यवस्थाकी सर्वकर मूर्तिको क्षमतामें भी अंकित कर सक। इस सम्भावनाको सोचा मी नहीं जा सकता।"

कमलने कहा 'सोचा जा सकता है और एक दिन ऐसा आवेगा जब सोचा जावगा। इसका कारण यह है कि मनुष्यके इतिहासका श्लेष अन्धाय अभी तक पूरा लिखा नहीं गया। एक दिनके किसी एक अनुष्ठानके जोरसे अगर उसका छुटकारेका रास्ता सारे जीवनके लिए रोक दिया जान तो वह भ्रमकी व्यवस्था नहीं माना जा सकता। संसारमें समी भूक-बूझके सुधारकी व्यवस्था है, कोई उसे बुरा नहीं बताता, फिर मी वहीं भ्रमितीकी सम्भावना सबसे ज्यादा है और उसके निराकरणकी आवश्यकता मी उतनी ही अधिक है, यही श्लेषोंने अगर सारे उपायोंको अपनी इच्छासे बन्द कर रखा हो तो वह अच्छे कैसे मान सिमा जाय बताएँ मम !

इस तीर्थी तरह तरहकी दुर्भाग्योंके कारण हरेन्द्रके मनमें गहरी सहायुमूर्ति थी—विच्छेद आत्मोपनामें वह असी शामिल यही होता और उन विरोधी दल तरह तरहकी गवाहियों और प्रमाणोंसे उसे हीन साबित करनेकी कोशिश करता तब वह प्रतिबाह भी करता। विरोधी अथ कमलके प्रकट आचरण और वैसी ही निर्मल्य अक्षियोंकी नज़रों से ब कर उन विकथरत तब हरेन्द्र सर्व-जुद्धमें परास्त होकर मी जी जानसे यह समझानकी कोशिश किया करता कि कमलके जीवनमें हार्मि यह सब नहीं हो सकता। यही व यही कोई एक निगूड रहस्य है जो एक न एक दिन अन्वय ही स्पष्ट होगा। इसपर वे स्वंगते करते कुगाकर उसे स्पष्ट कर शीघ्र तो प्रवासी बंवाभी समाजमें हम लोग बदनामीसे बच जायें। और यदि यही अज्ञान मौजूद होगा तो कोपसे पागत होकर करता आप मग समी गमाव हैं। मेरे जैसी विरवावकी शक्ति किमीमें भी नहीं है; जान लोग उसे अपना भी नहीं लकत छोड़ मी नहीं सकते। आवश्यकक कुछ उप विद्यायनी विचारोंके मूलने आप श्लेषोंसे प्रस्त कर रखा है।

अविनाश करते वे विचार कमलके मुखसे नये ही सुने हों तो बात भी नहीं है। अलग दिने तो वे पढ़ते ही सुन रक्के हैं। आत्म-कर्मकी तो-वार अविनाशी अनुवाहित पुस्तकें पढ़ केना ही इससे किए अच्छी है। विचारोंकी इसमें कोई कठिनाई नहीं।”

अधम कठोर होकर पूछता तो किसी कठिनाई है। कमलके रूपकी अविनाश बाबू इरेन्द्र अधिवाहित छोकरा है उसे माफ किया जा सकता है; यमर आशय तो यह कि सुझावेमें आकर आप लोगोंकी व्यक्तियों भी चौपिना पढ़।” इतना कह कर वह कर्मविनोद आठ बाबूकी तरफ देखता और कहता “यमर यह श्रेय-नीर * का उदाहरण है आठ बाबू उसे बीच-बसे इसकी पैदाइश है। एक दिनाई दे रहा है कि उस बीच-बसे ही किसी दिन बहुतोंको बीच के आकर धारणा यह सिर्फ अक्षयको यह सुझावा नहीं दे सकता — वही अक्षय-नकल पढ़ानता है।”

आठ बाबू मुसकराकर रह जाते पर अविनाश मारे बीचके अक्षय-तात हो जाते। इरेन्द्र कहता “आप नये बहादुर हैं अक्षय बाबू आपकी कर्म-कर्मर हो। हम सब मिलके अब बीच-बसे हुए-विनों केने सन्ने तब आप किनारेपर जाके जाके बयसे बजाकर नापिएगा हममेंसे कोई भी आपकी निन्दा न करेगा।

अक्षय बहादुर देता “निन्दा-अक्षय में करता ही नहीं इरेन्द्र। शूरत्व आदमी हूँ, मैं सहाय-कीकी सुझावे समाजको मानकर चलता हूँ। न तो मैं व्याहरी कोई नई व्याख्या करना चाहता हूँ और न दुनिया-भरके बाहिरात अक्षयकी उमाहर अक्षय-वारी-विरी ही विज्ञाता फिरता हूँ। आत्ममें बरनोकी पूरुषा बजन और जरा बड़ा सेनेकी अक्षय बरो मझा फिर साधन-भजनकी सिद्ध किया न करनी होगी। देखते देखते नारायण वारा आत्म निश्चयिन्न अक्षय तपोवन ही ठठेगा और आयत हमेशाके सिद्ध दुम्हारी एक कीर्ति रह आवनी।”

अविनाश गुस्ता मूल्कर जोरस हूँस पढ़ते और निर्मल वही मुसकानते आठ बाबूके छोकरा कमल ठठता। इरेन्द्रके आशयपर किसीकी भी आत्मा नहीं की उसे सबने एक अक्षयगत आत्म-कर्मकी भर समझ रखा था।

* Will o the wisp या बल्बुलकाके स्वानमें बजाकर देहा होवेकाका और सुल आत्म-वाच्य प्रकृत जो एक वैद्यकीक अक्षयकर है।

जवाबमें हरेन्द्र मारे गुस्सेके लक्ष होकर कहता, “ वशुके साथ तो बुद्धि-वर्धक बल नहीं लक्षता उसके सिर्फ वृद्धरी विधि है । मगर उसकी व्यवस्था करते नहीं बनती इसीलिए आप चाहे जिसे सींग मारते फिरते हैं । छोटे-बड़े नीच-ऊँच स्त्री-पुरुष किसीका भी खवाब नहीं करते । ” और यह कहते हुए अन्य दो-चार अनोखे नक्षत्र करके कहता “ पर आप क्यों इसे प्रथम क्यों कर बेते हैं ? इतना बड़ा एक कुत्सित इंसान भी माना कोई परिहासक विषय हो ।

अविनाश अप्रतिम-से होकर कहते नहीं नहीं प्रथम क्यों देन लगे पर तुम आगते ही हो असह्यके सामने बल उपमुख करल और खेदका ज्ञान नहीं रहता । ”

हरेन्द्र कहता “ यह अण्ड-ज्ञान सब पुरुष काय तो उसकी अपेक्षा आप ओपेओ और भी कम है । मनुष्यके मनका खेरा तो दिखाई देता नहीं भाई साहब नहीं तो ईश्वी-मन्त्रक कम ही ओगोके मुँहसे सोमा देता । दिवाहक बहान शिवनामने कमकओ ठग किया मगर मेरा हृद विश्वास है कि उस बायेओ भी कमकन सम्पक समान ही मान किया । गार्हस्थिक छेने-देनक नके-गुरुप्रानध बखेबा करके उसने उसे ओगोकी निगाहमें नीच नहीं गिराना बाहा । पर ठगक न बाहनेपर भी आप ओच क्यों छोडने लगे ? शिवनाम उसके प्रेयकी विधि हो सफ़टा है पर आप ओगोओ कीन है ? जमाका अपभ्रन आप ओच न सह सके । यही है न आप ओगोकी पृथाका मूल कारण — असक पूँजी ? सो उतीओ मैजा मंजा कर आप ओपेओे जिनता बलाया जाय बलाए, पर मैं विदा देता हूँ । ” इतना कहकर हरेन्द्र उस दिन गुस्सा होकर चला गया ।

उसके मनमें इस बातका हृद विश्वास था कि किसी दिन कमकके मुँहसे यह बात स्पष्ट होगी कि छैन-विवाहओ बालनिक विवाह मानकर ही वह ओतेओे लनी गई थी । अपनी इच्छसे सब कुछ जानत हुए एक गविच्छकी तरह उसने शिवनामका आश्रय नहीं किया था । परन्तु आप उसके विश्वासकी यह मील भी मिष्टीमें मिल गई । हरेन्द्र ओई अलग या अविनाश नहीं था । जिना किसी भेदभावक नर-नारी मबके प्रति उसकी तबीनतमें एक तरहकी विलुप्त और गहरी उदारता थी । इसीलिए देस और उसके बन्ध्यापके सिर्फ सब तरहक असाधनोमें उसने बचपनसे आस्येओे लगा रखा था । उसके अन्धधर्म-आश्रम उसका उदार

दान उसके साथ अपना सब कुछ बौट देना — इन सबकी बचमें उसकी वही उधार मानना काम कर रही है और उसकी इस प्रवृत्तिने ही उसे उसके कमरके प्रति व्यथित कर रखा था। परन्तु इसकी उसने क्षमता भी नहीं थी कि भाव वह उसकी सुहृद पर उसकी प्रसन्नतामें ऐसा भवानक उदाह दे बैठी। भारतके बर्म कीति आचार — उसके स्वात्म्य और विशिष्ट सम्पत्तिके प्रति हरेन्द्रके मनमें अत्यन्त स्नेह और अपरिमेय भाव था, फिर भी कम्पनी पराधीनता और वैयक्तिक कमजोरियोंके कारण उत्पन्न होनेवाले उसके व्यक्तिकर्मोंको भी वह नसवीकार नहीं करता था। परन्तु कमरके द्वारा ऐसी उग्र अवस्थाके साथ उसके मूकमूल सिद्धान्तों उसके अस्वीकार किने जानके कारण उसकी वैदनाकी सीमा दुखदा थी — उसकी नसमें व्यभिचारका जल डोका रहा है, मारे चुकाके वह मन ही मन स्वाह पक गया। वो तीन मिनट चुप रहकर बीरेसे बोला, ' तो अब जाता हूँ—'

कमर हरेन्द्रके मनके भावको छीकते ताक न सकी सिर्फ एक परिवर्तनपर उसका रुक्य गया। बीरेसे उसने पूछा ' मगर अिध कामके लिए जाने से उसका तो कुछ किया ही नहीं ?'

हरेन्द्रने सिर उठाकर पूछा ' क्या काम ?'

कमरने कहा " राकैन्द्रकी खबर जानने जाये से पर अगर जाने ही चले जा रहे हैं। अच्छा, यही उनके रहनेके कारण क्या आज जेपमें बहुत मरी आबे बना हुआ करती है। सब क्लारणा ?"

हरेन्द्रने कहा बकि कम्पनी होती मी है तो उसमें करीक नहीं होता। मेरे लिए मरी काफी है कि वह पुष्पिके हावमें न पके। उसे मैं पहचानता हूँ। "

' लेकिन मुझे ?'

" लेकिन आप तो ऐसी बातोंका खयाल करती नहीं और न आपके ऐसे विधास ही हैं।

बहुत कुछ ऐसा ही है। बली ऐसी कोई कम्पनी उत्पन्न होने नहीं के रयी है कि इन बातोंका खयाल करेगी ही। पर मिनका ही खयाल करनेसे काम नहीं चलता हरेन्द्र बाबू, और एक आदमीका मी खयाल करना बस्ती है। "

" उसे मैं स्वर्ण समझता हूँ। बहुत दिनोंके बहुत काम-काजमें जिसे मैंने

बिना किसी संशयके पहिचान किया है, उसके सम्बन्धमें मुझे कोई आशय नहीं। उसकी नहीं तबीयत हो, रहे, मैं निश्चिन्त हूँ।”

कमलने उसके चेहरेकी तरह धन-मर चुप रहकर देखा और कहा आर मीको बहुत फीसार्ण बेनी पकड़ी है इरेन्द्र बाबू। उसका एक दिन पहलेका प्रस सम्भव है कि हमारे दिनाके उत्तरसे मेक न काम। किसीके सम्बन्धमें मी बनने बिबारेको इस तरह शेष बनाकर नहीं रहना चाहिए, मोला खाना पकता है।”

इरेन्द्रने अनुमान किया कि कमलने ये बातें सिर्फ तार-दृष्टिसे ही नहीं कही इनमें कुछ एक इशारा भी है। परन्तु पुष्टताक करके उस इशारेको स्पष्ट करनेकी उसे क्षमता नहीं पही। एरेन्द्रके प्रसंगको बन्द करके उसने सहसा दूसरा प्रसंग लेक दिया। बोला “ हम जोगेनि सिखर किया है कि किन्मापको उचित दण्ड दिया काम।”

कमल सपमुच ही आश्चर्यमें पड गई। उसने पूछा “ हम जोगेनि किससे ?”

इरेन्द्रने कहा “ जो मी हों उनमें मैं मी एक हूँ। आछु बाबू बीमार हूँ, उन्होने बचन दिया है कि अच्छे होनेपर वे मेरी छायाता करेंगे।”

“ वे बीमार हूँ ?

“ ही आर सात-आठ दिन हुए उनकी तबीयत बराब है। मनोरमा पहलेसे ही बली गई है। आछु बाबूके जाका कसीनास कर रहे हैं; वे ही आकर उसे ले गये हैं।”

सुनकर कमल चुप हो रही। इरेन्द्र कहने लगा, सिमलाब जानता है कि कमलकी रस्ती उस तक पहुँच नहीं सकती। इसी बकपर उसने अपन मरे हुए मित्रकी स्त्रीको खोसा दिया अपनी बीमार स्त्रीको खाम दिया और फिर बेकरके आपका सर्वनास किया। कमलको वह बहुत अच्छी तरह समझता है, फिर नहीं नहीं खलता तो कि दुनियामें कमल ही एक कुछ नहीं है उसने बाहर मी कुछ और मौजूद है।”

कमलने हैसत हुए बीतुके साथ पूछा “ केकिन आप जोगेनि दण्ड उनके सिप बना तक किया है ? उन्हें पकड करके फिर एक बार मेरे साथ जोड नेगे, पही न ?” और वह बरा हैंस ही। उसका यह प्रस्ताव इरेन्द्रको भी ऐसा हासकर प्रतीत हुआ कि उससे भी बमैर हैस न रहा गया। बोला

मगर वह भी तो नहीं हो सकता कि वह त्रिमूर्तियोंको इस तरह खोखल करने मजके माफिक बिना किसी बाधा-विघ्नके बचकर निकल जाय और उसके भी कोई मानी नहीं कि आपके साथ बसे जोर ही देना होगा।”

कमलने कहा “ तो बाखिर उन्हें नाकर आप करेंगे क्या ? मुझपर पहरा देनेके अममें क्याबेंगे, या उनको गरदन पकड़ेंगे और मुझसाथ बसल कर मुझे दिमाबेंगे ? पहली बात तो यह कि अपने में खिपी नहीं दूसरी यह चीज उनके पास है भी नहीं । शिवाय कितने मरीज हैं तो और कोई मझे ही न जाने में तो जानती हूँ । ”

तो क्या इतने बड़े अचर्यापक्ष कोई एक ही न होना ? और कुछ हा बाहे न हो पर यह तो उन्हें उता देना जरूरी है कि बाजारसे धाम भी बाबुज करीदा जा सकता है । ”

कमल व्याकुल होकर कहने लगी नहीं नहीं ऐसा न कीजिएगा । उसके मर इतना बड़ा अपमान होगा कि मैं उसे सह नहीं सकूँगी । ” फिर उसने कहा, इसी दिन मैं मुस्सेमें ही बस-सुन रही थी कि इस तरह थोरकी मूर्ति भागे छिपेकी क्या जरूरत थी और साफ साफ मुझसे कइके बाते तो क्या मैं उन्हें रोक देती ? तब मुझे यह सुनकर-धोरीध अमममान ही मानो पर्वतके बराबर बनकर खिसाई देता या उसके बाद सदा एक दिन मीतके सुहारेसे मुझइत आई । यहाँ न जाने कितनी मूर्तियाँ अपनी जीवों देखकर आई । आज मेरी किन्ताकी धारा एक दूसरे ही रास्तसे बहने लगी है । जब खोबली है कि उनमें जो बहकर जानेका साहस नहीं था, तो नहीं तो मेरा सम्मान है उनको सुनकर-धोरी उठ-कपट और सारे दिव्यावारने मेरी मर्वादा बड़ा देनेका ही काम किया है । पावेके दिन उन्होंने मुझे चोखा देकर ही बामा वा धिक्कि धेक्केके दिन उन्हें मुझे म्वाक और गूठ सब मुझता करके जाना पड़ा है । जब मुझे कोई शिकायत नहीं मेरा सबका सब बसल हो गया है । आज बाबुजे नमस्कार बताकर कहिएगा कि मेरी मर्वाई करनेकी अममनासे यही वे मेरा मुझसाथ न करें । ”

हरेन्द्र एक नी बात न समझ सका अवाहू होकर देखता रहा ।

कमलने कहा संसारकी सब चीजें उसके अममनेकी नहीं होती हरेन्द्र बाबु, आप आश्रित न हो । पर मेरी बात जब न कीजिए । मुमिदामें किर्त शिवाय और कमल ही हों वो बात नहीं । यहाँ और भी श्लेष रहते हैं,

बीर उनके भी कुछ-कुछ हैं।" करते हुए उसने अपनी निर्मल बीर प्रधानत
हैंसीसे मामों कुछ और बेरनाही घनी भाव एक सुहृत्-भरमें रु कर थी।
बोले "और कैसे हैं तो खबर भी तो दीजिए।"

हरेन्द्रने कहा "पूछिए।"

"अच्छी बात है। पहले बताइए कि अविनाश बाबूध कया हाल है। सुना
या कि वे बीमार हैं, अब अच्छे हो गये।"

"हाँ। पूरी तरह अच्छे न होनेपर भी बहुत अच्छे हैं। उनके एक बच्चे
मात्र रहते हैं आदौर स्वारथ्य ठीक करनेके लिए वे लखनऊ घायल कही गये
हैं। लखनऊमें शायद दो-एक महीनेकी बेर होगी।"

"बीर भीमिमा ! वे भी क्या साथ गई हैं।"

'नहीं, वे नहीं हैं।'

कमलने आश्चर्यक साथ पूछा 'नहीं हैं ! अफेसी, उस मरदानमें !'

हरेन्द्रन पहले तो अरु इतर उपर किया, फिर कहा 'मामीकी समस्या
अबमुक्त ही अरु कठिन हो गई थी पर भगवानने क्या किया, आशु बाबूकी
तीमारदायीके बहाने उन्हें यहीं छोड़ जानेका सुयोग मिल गया।"

यह संवाद इतना बेजोह या कि कमल आगे कुछ पूछ न सकी निर्भरिस्त
विशालकी आशसे जिज्ञासु-मुक्तसे उसकी तरह देखती रह गई। हरेन्द्रकी बुनिया
मिट गई और अब वह बोका तब उसके लरसे गुड़ खोजका बिह प्रकट हुआ।
कारण इस मामलेमें अविनाशके साथ उसका अरु-कुछ कथ-सा भी हो गया
या। हरेन्द्रने कहा "परदलमें अपन डेरेपर जो चाहे सो किया जा सकता है,
पर इसी कारण बपलक विपदा साक्षीके डेकर बचने माईके बर बाहर नहीं रहा
जा सकता। उगोंने कहा, तुम भी तो मेरे अपने जन हो तुम्हारे पर
क्या— मैं अथाप गया कि पहले तो मैं तुम्हारा अन्मा आदमी हूँ, जो
बहुत दूरके गाँवसे—तब उनका कोई भी नहीं। हमरे वह मेरा पर नहीं
आभय है; वही रखनेका नियम नहीं। तीवरे जिज्ञास कथके मन बाहर बजे
गये हैं मैं अकल्प हूँ। सुनकर माई साहबके ऐसी बिता हुई बिसकी ह
नहीं। आवरेमें भी नहीं रहा जा सकता—बारी तरह मरी पैर रही है, और
उनके माईके बहीसे बार बार चिठी और तार आ रहे हैं—माई साहब बने
रुझने पर कथ।"

कमलने पूछा "तब सुना है कि भीमिमाका मायका भी तो है।"

हरेन्द्रने सिर हिकार कर कहा है। और सुनते हैं, एक बड़ी मारी-सी सुखराल भी है। पर उन सबको कोई शिक ही नहीं छटा। बचानक एक दिन इसको विभिन्न समाधान हो गया। प्रस्ताव किन्तु तरफसे पेश हुआ था सुख महीं मासूम; पर, बीमार आहू बाबूकी सेवाका मार मानीने के किना।”

कमल चुप रही।

हरेन्द्र हँसता हुआ बोला मगर ही आशा है कि भानीकी नीकरी नहीं जायगी। उन कोयेकि बापस जानेपर फिर वे अपने पुराने पड़िनी-मन्दपर बहाक हो सकेंगी।”

कमलने इस श्लेषका भी कोई उत्तर नहीं दिया बैसे ही मौन बनी रही।

हरेन्द्र अपने कमा मैं थानठा हूँ माभी वास्तवमें सञ्चरित्र महिक्य हूँ। अधिनावा-मन्त्राको वे उनके बुरेसे बुरे दिनमें छेदकर नहीं जा सकी थी और उस रह जानेके कारण ही उधरके उनके सब रास्ते बन्द हो गये हैं। मगर इधर भी बचा कि विपत्तिने दिनमें उनके लिए रास्ता खोल नहीं है। इसीसे धोखता हूँ कि बिना किसी आश्रयके भी इस देखनी सिवों कितनी बेबस हूँ।”

कमल उसी तरह चुप मारे बैठी रही, कुछ बोली नहीं।

हरेन्द्रने कहा ‘ वे बातें सुनकर आप धायद मन ही मन हँस रही हैं क्यों।”

कमलने सिर हिकार कर कहा नहीं।”

हरेन्द्र बोला मैं अक्सर जाना करता हूँ आहू बाबूकी देखने। वे दोनों ही आपकी खबर जानना चाहते थे। माभीके आमहकी तो कोई सीमा ही नहीं — एक दिन बकिया नहीं।

कमल उसी मन्त्र राकी हो गई, बोली जान ही बकिय न हरेन्द्र बाबू उन्हें देख आवें।”

जान ही बकेंगी। बकिय। अगर किन्तु ज्ञान तो मैं तौमा के जाऊँ, ” कहकर वह बाहर जा ही रहा था कि कमलने उसे बापस मुझकर कहा तौगिमें हम दोनोंके साथ जानेसे धायद जानमके हितैवी योग बाराज होगे। बकिय फैसल ही बके कसे।’

हरेन्द्रने पीछेको मुझकर कहा “ इसके माभी।”

“ माभी कुछ नहीं — बैसे ही। बकिय कसे।”

१९

अप्यमम तीसरे पहर इरेन्द्र और कमल दोनों आगु बाबूके घर पहुँचे । खानपर जबकेटी जबस्वामें पड़े हुए अस्वल्प अर-मासिक इस दिनका पायोनिबर पढ़ रहे थे । कई दिनसे उन्हें सुखार नहीं है, अम्यान्स शिकारतें भी छूट होती जाती हैं, सिर्फ तारीरिक कमजोरी अभी तक नहीं गई । इन दोनोंके अन्दर पहुँचते ही वे अखबार पढ़, उठकर बैठ गये और चितने कुछ हुए सो उनके चेहरेसे साफ मात्स्य हो गया । उनके मनमें हर ना कि कमल साम्ब अब न आयेगी । इसीसे हाथ बड़ाकर उसे प्रश्न करते हुए बोले 'आम्हो मेरे पास आकर बैठो ।' और हाथ फड़फड़ उसे जपनी खादक पास पड़ी कुर्सीपर बिठाते हुए कहा, 'कैसी हो बताओ तो कमल ?'

कमलने हँसते चेहरेसे जवाब दिया, 'अच्छी ही हूँ ।'

आगु बाबूने कहा 'ये तो ममशासक आशीर्वाद है । नहीं तो जैसे कुछ दिन आये हैं, उसमें यह बोधा भी नहीं आ सकता कि कोई अच्छी तरह होगा । इतने दिन भी कहीं बताओ तो ? इरेन्द्रसे रोम ही पकटा हूँ और रोम ही वह जवाब देना है—'परमें ताका पका है, तनक्य कोई पका नहीं । नीकिमाओ सफ हो रहा ना कि तुम कुछ दिनोंके लिए कहीं बाहर चली गई हो ।'

इरेन्द्रने उसका जवाब दिया कहा 'और कहीं नहीं इली आगरेमें मोषिवोंके मुहामें सेवा अर्चमें लगी हुई थी । अत्र भेद हो गई सो पकड़ क्या ।'

आगु बाबू मर-भ्याकुल अठसे बोले 'मोषिवोंके मुहामें ! पर अखबारमें खबर है कि वह मुहामें बिलकुल ठगाव हो गया है । इतने दिन कहीं थी ! अकेली !'

कमलने फिर हिस्रत हुए कहा 'नहीं अकेली नहीं सो साबमें रामेन्द्र भी थे ।'

सुनते ही इरेन्द्रने उसके मुहामें तरक देखा पर कुछ कहा नहीं । इसका तारपर्य यह था कि तुम्हारे बगैर कोई ही मैंने अन्दाजा क्या किया था । इस बातको मैं नहीं जानूँगा तो और कौन जानेगा कि जहाँ देवका इतना खबरपस्त निग्रह शुरू हो गया है वहाँके उन अभागोंको छोड़कर वह एक कदम भी खबर खबर नहीं आ सकता ।

आशु बाबू ने कहा ' अस्तुतः आबमी है यह लक्ष्य । उसे मैं नो-टीलसे क्वादा दफे नहीं देखा उसके बारेमें कुछ जानकारी भी नहीं फिर भी ऐसा लगता है कि वह किसी अजीब वास्तुका बना हुआ है । उसे मैं क्यों नहीं आई सब पड़ना । अन्वयार्थसे तो सब बातें मायाम पकती नहीं । "

कमलने कहा नहीं । लेकिन उनके आंशमें अब भी डेर है ।

क्यों ? "

मुझका जमीतक पूरा-पूरा खतम नहीं हुआ है । उनका प्रश्न है कि ये लोग अभी क्या कर रहे हैं उन सबको रवाना करने के लिए वे बर्हसि सुधी न सेगे । "

आशु बाबूने उसके मुहकी तरह देखते हुए पूछा, तो फिर तुम्हें कैसे सुधी भिन्न गई ? क्या तुम्हें वहाँ फिर जाना पड़ेगा ? मैं मना तो नहीं कर सकता पर यह तो बड़ी चिन्ताकी बात है कमल ।

कमलने फिर शिखरते हुए कहा चिन्ताकी कोई बात नहीं आशु बाबू चिन्ता नहीं है, बटाइए । पर मेरी यहाँमें जितनी चाबी मरी थी वह खतम हो चुकी, और अब मैं आई हूँ । फिरसे वहाँ जानेका सामर्थ्य मुझमें नहीं है । अब जेम्से रामेन्द्र वहाँ रह गये हैं । किसी किसीके शरीर-बन्धने प्रकृति ऐसी जलितक चाबी जरकर दुनियामें मेरा देली है कि न तो यह अभी खतम ही होती है और न यह बंध ही अभी सिगावता है । रामेन्द्र जन्मिसे एक हैं । छान-छानमें ऐसा लगा कि इस मयाक मुझेमें वे जीते रहेंगे कसे । और कितने दिन जीते रहेंगे ? बर्हसि अब अकरी चाबी आई, तो किसी भी तरह मेरी चिन्ता न भिन्नी पर अब मुझे कोई डर नहीं है । न जाने कैस मैं विधित समस्त गई हूँ कि प्रकृति ही सब अपनी गर्भसे ऐशेको विधाय रखती है । नहीं तो गरीब-दुखिनेके शोषणमें अब बालकी तरह मौत का जुकटी है अब उसकी चंच-की-बालक क्वादा कौन रहेगा ? आज ही इरेन बाबूसे सब किरसा कह रही थी । चिन्ताक बाबूके घरसे आकिरी रात अब अजबसे फिर छुछय चकी आई—"

आशु बाबू यह वृत्तान्त सुन चुके थे बोले " हममें तुम्हारे लिए अजबकी क्या बात है कमल । मुला है, उनकी ऐसा करनेके लिए ही तुम बिना कहे अपने आप इनके घर पहुँच गई थी —"

कमलने कहा "क्या उस बातची नहीं आगु बाबू ! सज्जा तो मुझे तब हुई जब मैंने देखा कि उन्हें कोई बीमारी ही नहीं है — सब बोग है — किसी बहानेसे आप खेपोकी कुरा पाना ही बनकर उदेस्य या जो सचक न हो पाया । आखिर आपने अपने घरसे उन्हें निकाल ही दिया । — तब मेरा क्या हाक हुआ सो मैं आपको समझा नहीं सकती । चाय का उसे भी यह बात पता नहीं सही — सिर्फ किसी तरह रातके अन्धकारमें उस दिन सुरवाप वहाँसे निकल आई । रास्तमें बार बार सिर्फ एक ही बातका खयाल आता रहा कि इस अति कुद फंगक बादमीको गुस्सेमें आकर सजा देना न तो बर्ष है और न इसमें सम्मान है ।

आगु बाबूने विस्मयापक होकर कहा " यह क्या रही हो कमल ! सिव बाबूकी बीमारी क्या सिद्ध एक बहाना था ? सब नहीं थी ? "

परम्टु जवाब देनेके पहले ही दरवाजेठ पास पैरोंकी आइट मुनकर सभने उपर देखा कि नीलिमा आ रही है । उसके हाथमें बूबका बटोरा है । कमलने हाथ उठाकर नमस्कार किया । उसने हाथका बटोरा पलेपके सिरहाने तिपाईपर रख कर प्रतिनमस्कार किया और यह समझकर कि इन खेपोकी बातचीतमें उसने बाधा पहुँचाई है पुर कुल न बोलकर एक तरफ बैठ गई ।

आगु बाबूने कहा " डेकिन यह तो कमखोरी है कमल ! यह बीच तो तुम्हारे स्वभावके साथ भेक नहीं पाती । मैं बराबर सोचता था कि जो धर्म अनुचित है जो मिथ्याचार है उसे हम माफ नहीं करती । "

हरेमने कहा " इनके स्वभावका तो मुझे पता नहीं मगर मोची-मुझेकी मोती देखकर इनकी चारमा बदल गई है और वह खबर इन्हींसे मिली है । पहले इनके मनमें चाहे जो बात रही हो पर अब किर्णिके मी विन्याप सिद्धयत करनेमें वे नाटाक हैं । "

आगु बाबूने कहा " मगर उतने जो तुम्हारे प्रति इनका बधा अत्याचार किया उसका क्या होया ? "

कमलने मुँह उठाते ही देता कि नीलिमा उसकी तरफ एकदक देल रही है । चराप मुनके लिए बही मानो सबसे ज्यादा ठामुक है । नहीं तो शायद वह चुप रहती हरेमने कितना कहा है उससे ज्यादा एक शब्द भी नहीं कहती । उसने कहा " यह प्रश्न मेरे लिए अब असंभव मान्य होता है । सिद्ध इसके लिए कि जो नहीं है वह कबो नहीं आँह बहानेमें मुझे धरम आती है । इस

बहापर धावा करनेमें कि कितना वे कर सके इससे ज्यादा इन्होंने कहीं नहीं किया। मेरा सिर झुक जाता है। आप जेगोसे सिद्ध इतनी शर्तना है कि मेरे दुर्भाग्यको केवल उगरे खीबतानी न करें।" इतना कह बसने मानो छाया बहकर छुरछीरी पीठसे सिर टेक दिया और आँसों मीच छी।

बाबू की नीरवता मंग की नीतिमाने। उसने आँसुके इंसारेसे दूबध बटोरा बिबाते हुए आहिन्तेसे कहा। वह जो बिलकुल ही ठंडा हुआ था रहा है। खिप, पी सकेने का नहीं नहीं तो फिरसे गरम कर लानेके लिए कह है। "

आम्र बाबूने बटोरा हँहसे जगाकर बरा-ठा पिवा और फिर रख दिया। नीतिमाने हँह उठाकर बहा और कहा। काम रखनेसे काम नहीं बचेगा, डॉक्टरकी स्पर्शा मैं लोके नहीं हूँगी। "

आम्र बाबू बके हुएसे होकर मोटे लकियेके सहारे पढ़ रहे बोले ' यह बात तुम्हें मूर्खी नहीं चाहिए कि जाकरसे भी बड़ा स्पर्शापक है हमारा। अपना शरीर। "

मैं नहीं भूलती भूक आते हैं आप शर। "

' सो तो मेरी उमरका दोष है नीतिमाने मेरा नहीं।

नीतिमाने हँहसे हुए कहा " सो तो है ही। दोष करने कायक उमर पानेमें अब भी आसके बहुत देरी है। — जल्द कामकाके केवल हम बरा उस कमरेमें का रही हैं, बस-बाप करेगी धार आँसों मीचकर बरा आराम कीजिए। क्यों ? बानें ? "

आम्र बाबूकी जाबद ऐसी इच्छा नहीं थी फिर भी उन्हें सम्मति देनी पड़ी। बोले ' मगर एकरम तुम जेव बके मत जाना तुलानेसे झुल केना। "

" जल्दी बात है। बको जी जेदे बाबू हम जेग कामकाके कमरेमें बबकर बैठें। " यह कह यह सचको साथ केवल कभी कई। नीतिमानेकी बातें स्वभावता ही मजबूत होती हैं, और कानेके बंधमें भी ऐसी एक बिरिद्धता होती है जो चाहत ही बिबाई के जाती है। परन्तु आसके वे बंधिसे सन्द मानो इससे भी बहकर आगे निकल गये। हरेदने लहर प्यान नहीं दिया पर कामकाके गौर किया। पुस्तकी दृष्टिमें जो नहीं आया वह पछाई के मया खीची दृष्टिमें। नीतिमाने बीमारबारी करने आई है, और वह भी डीक है कि साधारण जेगोकी दृष्टिमें इस बीमार आसकीकी तन्पुबसतीकी तरफ बास सावधानी रखनेमें कोई

बाध्यर्थात् वात नहीं, मगर उक्त साधारण जलोर्मि कमजोर सुमार नहीं किया जा सकता। नीकिमात्मी इस अत्यन्त सावधानीकी अपूर्व किम्बत्तासे मानो उसे एक अचिन्त्य विस्मयका सामना करना पड़ा। विस्मय सिर्फ एक तरफसे नहीं बहुत तरफसे हुआ। ऐसे सन्देहको कि सम्पत्तिके मोहने इस विषयको सुगम कर दिया है कमजोर अपनी कल्पनामें भी स्वान न दे सकी क्योंकि नीकिमाका इतना परिचय तो वह पा ही चुकी थी। आद्य बाबूके जीवन और कथन प्रसन्न तो इस मामलेमें सिर्फ असंतुष्ट ही नहीं बल्कि हास्यकर है। तब फिर इसका पता क्यों मिलेगा मन ही मन कमजोर उसकी खोज करने लगी। इसके अन्वया एक पहलू और भी है। वह है आद्य बाबूका अपना पहलू। ज्योगोका यह विश्वास था कि हम सरल और सदाचिन्त मछे आदमीके हृदयके नीचेही पहराईमें परवीश्रमका आदर्श ऐसी अर्थव्यवस्था निहाके साथ नित्य पूजित होता जा रहा है कि किसी दिन कोई भी प्रत्येकम उद्यम पर दाग नहीं लगा सकता। जिस दिन मनोरमाकी माकी मृत्यु हुई थी—उस समय आद्य बाबूकी उमर ज्यादा न थी तब तक जीवन बीता नहीं था—उसी दिन उस अज्ञानतरित परवीश्रि स्मृतिसे उच्चावचर नवीनकी प्रतिष्ठा करनेके लिए चरवाले और इन्ड-मिश्रमे प्रयत्न करनेमें कुछ उद्यम नहीं रक्खा था मगर फिर भी उस कुर्बेय कुर्बेय द्वार छोड़नेका औद्यम किन्हींके भी हँसे नहीं मिस्र। ये सब बातें कमजोरने बहुतोंके मुँहसे सुनी थीं। और दूसरे कमरमें आकर वह अत्यन्तसक-सी पुरवाप बैठी सिर्फ नहीं सोचने समी कि नीकिमाका इस मनोभावका केन्द्रमात्र भी इस आदमीके प्यानमें आया है या नहीं? अगर आया हो तो साम्यके अिम सुष्ठार मनकी ये अत्याज्य बर्मेकी तरह एकप्र सावधानीके साथ आजीवन रखा करते आये हैं आतकिकी इस नव आप्त केनमसे वह केन्द्रमात्र विस्तृत हुआ है या नहीं?

भीकर बाय-रोडी और चम बयैरह दे गया। अतिथियोंके सामने उन मन्त्रो रखती हुई नीकिमा तरह तरहकी बातें करनी लगी। आद्य बाबूकी बीमारी उनकी सम्पुरस्ती उनकी सद्म सज्जनता और बच्चों जैसी सरलताके छोटे-माटे विवरण और इसी तरहकी और भी बहुत-सी बातें जो इतर कई दिनोंमें उक्तकी निगाहसे गुबरी हैं। श्रोताके तीरपर इन्ड किन्हींके लिए लोमकी बीज था; इसका साम्य-प्रश्नके उत्तरमें नीकिमाकी बाष्पकि उत्कृष्ट आदमसे शमसुखी होकर पूर निचली। उनके करनेकी आन्तरिकतासे इन्ड ऐसा सुगम हुआ कि उसे फिर



“ मगर रहते क्यों हैं ? अशक्ति बाबू बड़े आरामी हैं, आपकी अपनी जबरदस्ती भी ऐसी हुई नहीं — फिर क्या पानेकी तो कोई बख्त नहीं ? ”

हरेन्द्रने कहा “ बख्त न हो जबरत तो दे ही। मेरा विश्वास है कि इस जबरदस्ती आप भी समझती हैं और इसीलिए आपने अपने सम्बन्धमें भी वही व्यवस्था कर रखी है। लेकिन अगर कोई बाहरवाला आश्चर्यके साथ आपसे इसका कारण पूछ बैठे तो उसे क्या आप इसका कारण बता सकती हैं ? ”

कमलने कहा “ बाहरवालोंको भले ही न बता सकूँ, पर भीतरवालोंको तो बता ही सकती हूँ। बात यह है कि मैं सचमुच ही बहुत गरीब हूँ, अपने मरन प्रोचनके लिए कमायेकी कितनी मुसमै सक्ति है उसमें इच्छे जवाबा नहीं किना जा सकता। पितानी मुझे कुछ भी नहीं दे पा सके, पर वे मुझे दूसरोंके अनुग्रहसे बचनेका यह बीज-मन्त्र दे गये हैं। ”

हरेन्द्र उसके सुंदरी तरह चुनचाप देखता रहा। इस विदेशमें कमल कैसी निर्यात है वह जानता है। सिर्फ सपने-सपनेके लिए ही नहीं; समाज, सम्मान, प्रशस्ति — किसी तरह भी ताकतके लिए उसके पास कुछ नहीं है। मगर, इस सत्यको भी वह बड़ किन बगैर न रह सके कि इतनी जबरदस्त निःसहायता भी इस रमणीको केसमात्र दुर्लभ नहीं कर सके है। आज भी वह किसीसे मीठ नहीं मींगती बल्कि मीठ देती है। जो सिखाव उतनी इतनी वही दुर्लभिका मूल कारण है, उसे भी बाल करने कायक पूरी नव तक उसकी खतम नहीं हुई। और हरेन्द्रने शाब्द साहस और सन्ताना देनेके अति शक्ति ही उससे कहा “ आपके साथ मैं लर्क नहीं करना चाहता कमल मगर इसके सिवा मैं और कुछ सोच भी नहीं सकता कि हमारी तरह आन्ध्र गरीबी भी वास्तविक नहीं है, एक बार भी आप चाहें तो आपका वह दुःख मरीचिक्याही तरह मिटा जा सकता है। पर ऐसी इच्छा आपमें नहीं है कारण आप भी जानती हैं कि स्वेच्छासे धन किने हुए दुःखको ऐश्वर्यके समान भोगा जा सकता है। ”

कमलने कहा “ हाँ भोगा सकता है। मगर क्यों आप जानत हैं ? क्यों कि वह जवाबदायक हुआ है — क्यों कि वह दुःखका सिर्फ एक जमिनन है। सभी अधिनबोमें बोझ-बहुत बीदुक्त रहता है इसीलिए उसका उपभोग करनेमें कोई बाधा भी नहीं। इतना कहकर वह सब बीदुक्ती देव फनी।

उसका हँसना चहना न जान क्या बेयुग-सा मासूम पया। इस ध्वंगसे मुनकर हरेन्द्र कण-भर चुप रहा फिर बोला “ मगर यह तो आप मानती हैं कि बहुतायतके भीतर जीवन तुच्छ होने लगता है कुछ-कुछमेंसे गुजरकर मनुष्यका चरित्र महान् और सत्य हो जाता है। ”

कमलने खोब पारसे क्वाही सतरकर नीचे रख ही और एक दूसरा बरतन पकड़कर कहा “ सत्य बननेके लिए ठपर भी तो थोड़ा-बहुत खय रहना चाहिए हरेन्द्र बाबू। आप खेव बड़ आदमी हैं, वास्तवमें आपको कोई कमी नहीं फिर भी छय-अमावसी ठेयारीमें बरस हैं। और फिर उसमें अहित बाबू भी जा मिले हैं। आपके आभमकी चित्तसफ़ी मेरी तो कुछ समझमें आती नहीं, पर इतना समझती हूँ कि परीचीक कय मोगनेकी विहम्बनासे कमी महसूसकी नहीं पाया जा का सचता; ही पाया जा सचता है तो थोड़े-से दम्म और अहम्मन्वताकी। संस्कारोंसे अग्ने न होकर बरा जीव खोतके आप देखें तो यह खीर खय दिखाई दे जायगी। इसके छयन्तके लिए भारत-भ्रमणकी जरूरत न होनी।— पर बहम अमी छेकिए, रमोई बन चुकी आप खाने बैठिए।

हरेन्द्रने हतास होकर कहा, “ मुनिक्क तो यह है कि भारतवर्षकी चित्तसफ़ी समझना आपके बूतसे बाहरकी बात है। आपकी छिराभोंमें स्पेस-रक बड़ रहा है।—हिन्दुओंका आसर्ष आपकी छिमिं तमाका ही मासूम देगा।—दीक्षिए, क्या बनाया है, खानेको दीक्षिए। ”

“ देनी हूँ। क्ककर कमलन आसन विछा दिया। बरा भी नाउत्र नहीं हुई। हरेन्द्र उसकी तरफ़ देखकर सहासा बोल उठा अथ्का म्गन छीकिए कि कोई अपर वास्तवमें अपना सब कुछ दान कर सचमुक्क अमाव और द्यमें अपनको फनीय नाय — तब तो अभिनय क्ककर उसका मत्राक नहीं किया जा सकेगा ? तब तो—”

कमलन बीषमें ही रोकठ हुए कहा “ तब फिर मत्राक नहीं — तब तो सचमुक्क पामल मानकर उसके लिए छिर चुन चुन कर रोनाछ समय आ जायगा। हरेन्द्र बाबू कुछ दिन परके में भी कुछ कुछ आप ही जैसा विचार किया करती की उपवासके नसेकी तरह सुस भी उसने मोहित कर रखा था, पर अब वह संख्य मेरा जाता रहा है। परीची या अमाव इच्छसे आये या इच्छक विरुद आये, उसमें गर्व करम छामक कुछ नहीं होता। उसके भीतर है ख्यता

१२२

उसके भीतर है कमजोरी और उसके भीतर है पाप। जगत् मनुष्यको कितना हीन और कितना छोटा बना देता है, जो मैंने अपनी आँखोंसे देखा है, इन महाभारतमें मोक्षियोंके सुहृदोंमें जाकर। और भी एक बातमीने यह देखा है, वे हैं आत्मा मित्र राजेन्द्र। पर उनसे तो कुछ मिलनेका नहीं—मासामके गहरे अंतर्मुखी तरह क्या क्या बर्तों छिपा हुआ है कोई नहीं जानता। मैं अक्सर सोचा करता हूँ कि आप जेम्सोने उन्हींको विवाह कर दिया। क्या बात है न मरि केंकर बौधके दुष्टोंको मित्रमें बौध बना—आप जेम्सोने ठीक नहीं किया है। आपने भीतरसे कहींसे भी निषेध नहीं पाया। आत्मा।”

हरेन्द्रने उत्तर नहीं दिया चुप रहा।

आजोवन मासुकी का पर कमजोरे केसे जतनसे अतिविधो कितनावा सो रहा नहीं आ लफटा। कामे बैठा तो हरेन्द्रको बार बार नीस्मिमा-माभीकी बार कामे लगी। नारीकीके अन्त मासुकी और अविशोके बारकीकी हडिसे यह नीस्मिमाके बरकर और फिनीकी भी न मानता था। मन ही मन बोझ— “छिपा अक्षर धरि और प्रकृतिके देखते इन दोनोंमें काहे कितना ही प क्यों न हो पर सेवा और मज्जाके दोनों निकटून एक-सी हैं। अक्षरमें बाहरकी चीजे हैं इसकिए विपमताका अन्त नहीं और तर्क भी अतम नहीं देता; परन्तु नारीकी जो निकटून अपनी चीज है जो एक तरहके मनामस्तके भेरेके बाहरकी बस्तु है, नारीके उस गूढ अन्त-करनका रूप देखनेसे भीसे एकदम उठा जाती है। नाना कारणोंसे आज हरेन्द्रको मूष न की सिर्फ एकको प्रसन्न करनेके लिए ही उसने इतने बाहर का किया। कोई एक तरहकी बहुत अच्छी लगी है कदकर उसने उसका बर्तनको निकटून साथ कर बहुत अच्छी बहुत बार अक्षरमें आ जाकर माभीका मैंने ठीक इसी तरह नाको हम कर दिया है कमल।

“किमका नीस्मिमाका।”

हाँ।

उसके नाकमें हम जाता था।”

अन्तर पर मानती न थी।”

कमलने हँसकर कहा, सिर्फ जापकी ही नहीं लनी पुरखोंकी ऐसी मोदी बरकर हुआ करती है।

हरेन्द्रने बहसके ढंगपर कहा मैंने अपनी आँखोंसे देखा है।”

कमलने कहा “सो मैं जानती हूँ। और इस आँखों देखनेके समयमें ही आप खोस मरे जा रहे हैं।”

हरेन्द्रने कहा “कमल आप खोगोके भी कम नहीं। तब माभी चाये बिना रह जाती कपासी रात बिठा देती फिर मी हार नहीं मानती।”

कमल चुपचाप उसके मुँहकी तरफ देखती रही। हरेन्द्र कहा रहा, “आप खोगोके आधीबदिसे मोटी कल्ल ही हम खोगोके सजा बनी रहे,—इसीमें उवादा पादबा है। आप खोगोकी सूक्ष्म बुद्धिकी जाहसे उपासे मरना हमें मंशूर नहीं।”

कमलने इस बातका मी कुछ जवाब नहीं दिया। हरेन्द्र बासा अबसे मैं आपकी सूक्ष्म बुद्धिकी मी बीच-बीचम फीका किया करूँगा।”

कमलने कहा “सो आप मही के सकेने गरीब होनेसे आपको मुसपर दवा का चायगी।

सुनकर हरेन्द्र पहले तो लजित-सा हुआ फिर बोला ‘देखिए इस बातका जवाब देनेमें जवान रुझती है। क्यों जानती हैं! जिसे राज-रानी होना सोमता, उसे वह रंगाकपना कल्ला नहीं माध्यम देना। माध्यम होता है, आपकी गरीबी बुद्धिवाकी तमाम अमीर जियोंका मजाक उवा रही है।’

बात तीरकी तरह कमलके कलेमें जा लगी। हरेन्द्र कुछ भीर करना चाहता था कि कमलने उसे रोकट हुए कहा आप भीम चुके हों तो चठिए। उस कमरेमें आकर घाटी रात पप सुनूनी तब तक इस कमरेका कम खतम कर हूँ।’

बोड़ी बेर बाद सोनके कमरेमें आकर कमलने कहा मात्र आपकी मामीका सारा इतिहास मुने बयेर आपको खोईगी नहीं, चाहे कितनी ही रात क्यों न हो जाय। सुनाइएगा ?”

हरेन्द्र संकटमें पड़ गया बोला मामीकी घाटी बातें तो मैं जानता नहीं। उनके साथ पड़की जान-बहिबान मेरी इसी आगरेमें हुई है अविनाश भइवाक पर। बाहरमें उनके सम्बन्धमें मुझे कममग कुछ मी नहीं माध्यम। खे कुछ यहाँके लोग जानते हैं उतना ही मैं जानता हूँ। सिर्फ एक बात यादद संसारमें सबसे उवादा जानता हूँ और वह है उनकी अदभुतक सुभगा। अब उनके प्रति मरे वे तब उनकी उमर उचीस-बीस सालकी बी। मामीने उगई-

स्वन्ति। अरुणसे पाया था। वह स्थिति अब तक सुखी नहीं है और न कमी सुख ही उभरी है — जीवनके अनिष्टम दिन तक वह अज्ञान बनी रहेगी। पुरुषोंमें अब आद्य बाबूकी बात उठती है—मैं मानता हूँ सबकी मिठा भी अज्ञानाचार्य है—हेमिन—”

“हरेन्द्र बाबू रात बहुत हो गई है अब तो आपका घर जाना हो नहीं सकता — इसी कमरेमें आपके लिए बिछार कर दूँ।

हरेन्द्रने आश्चर्यसे पूछा “इसी कमरेमें ? और आप ?”

कमरने कहा “मैं भी यहीं सोऊँगी। और तो कोई कमरा है नहीं।”

हरेन्द्र मारे सरमथे पीछे पड़ पड़ा। कमरने हँसते हुए कहा “आप जगजागीर हो है। आपकी भी क्या इतनेका कोई कारण हो सकता है ?”

हरेन्द्र स्तब्ध होकर एकदम उसके खैरेकी तरफ़ देखता रह गया। वह कैसा अज्ञान है उसके अज्ञाना करते भी न बना। ली होकर सुँहसे वह बात विचारी बैठी।

सबकी इससे जगजा विह्वलतामे अज्ञानको कहा गया। उसने कुछ क्षण चुप रहकर कहा “मेरी ही पकटी हुई हरेन्द्र बाबू, अपने घर बाहर। इसी कारण आपकी असीम अज्ञानता पायी थी। अज्ञानको आश्रयमें अबह नहीं सिद्धी अज्ञान सिद्धी तो अज्ञान बाबूके घरमें। तुने अपने अज्ञानमीव नर-नारीका तिरक एक ही सम्यक् आपकी गलत है — तुहके निश्च औरत तिरक औरत ही है उसके बारेमें इससे जगजा अज्ञान आपका जगजा नहीं पहुँची। — जगजागीर हो जानेपर भी नहीं। बाहर, अब देर न खैरे, अज्ञान बाहर।” इतना कहकर वह खर ही बाहरके खैरे बालुकेमें बाहर अज्ञान हो गई।

हरेन्द्र मुखी तरफ़ से लीन विनम्र कहा रहा फिर पीर बरि नीचे उतर गया।

२०

अज्ञान एक यहीना कीत गया। आपकी इन्सुपेबाकी विचाराक अज्ञान-नारीका रूप जाना हो गया है; कहीं कहीं हो-एक नये अज्ञान होनेकी बात सुनी तो जाती है पर ऐसे अज्ञानाक रूपमें नहीं। अज्ञान बारेमें वैसी अज्ञान है। अब कर रही थी इतनेमें हरेन्द्र जा गया। उसके हाथमें एक खैरेकी भी उसे पास ही अज्ञानाक रखते हुए बोला “आपकी अज्ञानाक

कर तकाजा करनेमें शरम लगती है मगर आदमी भी ऐसे बैरना है कि भेंट होते ही पछते हैं, बन गया !' मैं लाफ़ लाफ़ बनाव दे देता हूँ कि अभी बहुत बैर है। बहुत बस्ती हो तो बहिए, कपड़ा बापस लाईं। मगर मजेकी बात तो यह है कि आपके हाथकी चीज़ जिसमें एक बार बरती वह भीर कहीं सिमाना नहीं चाहता। वह देखिए न, साठानीके बरसे उनका नीकर फिर गरद रेशमका धान और नमूनेका कुरता दे गया है,—'

कमलने सिखाईपरसे भौंक उठकर कहा 'के क्यों किया ?'

किया क्या जो ही ! यह दिना है कि छह महीनेसे पहले नहीं होगा — उसपर भी राबी हो गया। बोला छह महीने बाद तो मिक जायगा ! कोई हज़ नहीं। यह देखिए न सिखाईके बाएँ तक हाथपर रप गया है।" करते हुए जेबमेंसे उसने एक नोटमें मुझे हुए रुपये निकाल कर कमलके सामने पटक दिये।

कमलने कहा 'इतना प्यारा काम जाता रहा तो मैं देखती हूँ, मुझे आदमी रखना पड़ेगा।" फिर उसने पोटली खोलकर पुराना पंजाबी कुरता बटाकर देखा और कहा "कितनी बड़ी दुश्मनका सिक्क हुआ मायूस होता है—बड़े कारीगरका काम है,—मुझसे तो ऐसा सीते न बनेगा। भीमती कपड़ा है, खराल हो जायगा इसे बापस दे दीजिएगा।'

हरेन्द्रने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा 'आपसे बड़कर कारीगर भी है क्या कोई ?'

"यहाँ न हो कलहसेमें तो है। बड़ी मैत्र देनेको बहिए।"

नहीं नहीं तो नहीं होगा। आपसे मछा बने देखा बना दीजिए, उसीसे काम चल जायगा।"

बनेगा नहीं हरेन्द्र बाबू, बनता तो बना देती।" कहकर वह अकरमायूस हो पड़ी बोली 'अजित बाबू बड़े आदमी हैं और औकीन मित्राज ठहरे, ऐसा बैसा बना देनेसे उनसे पहना कैसे जायगा ! धर्ममें कपड़ा खरान करनेसे कोई फायदा नहीं आप बापस के बाइए।"

हरेन्द्रको अरबन्त आश्चर्य हुआ उसने कहा 'कैसे जाना कि वह अजित बाबूका है।"

कमलने कहा 'मैं ज्योतिष को जानती हूँ। मरद-नेचमका धान पेशगी रखना और फिर छह महीने बाद मिके तो भी कोई हर्क नहीं।—यहाँके बाबा

वर्षान्ताःहरणसे पाया था। वह स्मृति अब तक पुँछी नहीं है और न कभी पुँछ ली बकती है—औरनके अन्तिम दिन तक वह व्यसन बनी रहेगी। पुरस्कोमें अब आस बाबूजी बाल बढी है—मैं मानता हूँ। बबकी मित्रा भी असाधारण है—केकिन—”

“हरेन्द्र बाबू, रात बहुत हो गई है अब तो आग्रह कर जाना हो नहीं सकता—इसी कमरेमें आपके बिस्ब बिस्तार कर हूँ।

हरेन्द्रने आश्चर्यसे पूछा “इसी कमरेमें ? और बाप ?”

कमलने कहा “मैं भी नहीं सोवेंगी। और तो कोई कमरा है नहीं।”

हरेन्द्र मारे धरमसे पीछा पड गया। कमलने हँसते हुए कहा “बाप आयावारी को हूँ। आपकी भी क्या जरमेअ कोई कारण हो सकता है।”

हरेन्द्र समझ होकर एकदक उसके भेँरेकी तरफ देखाता रह गया। यह कैसा अस्ताव है उसके कल्पना करते भी न बना। कौ होकर सुँरसे यह बात किन्धी कैते ?

उसकी हुरते प्यादा मिडकवाने कमलको कहा बिबा। उसने कुछ लभ चुप रहकर कहा “मेरी ही गलती हुई हरेन्द्र बाबू, अपने घर आइए। इती कारण आपकी असीम भद्राकी पानी मीकिमाको आग्रहमें समझ नहीं मिमी बमह मिमी को भद्रा बाबूके घरमें। हमे घरमें अमासीय नर-नारीका सिर्फ एक ही सम्भव आपकी मादुम है—पुबानके किन्ड औरत सिर्फ औरत ही है उसके बारेमें इससे पनावा अगर आपठक आकतक नहीं खुँची।—अप्यारी हो बल्लेनर भी नहीं। आइए, अब हेर न कीबिप आग्रह आइए।” इतना कहकर वह सब ही बाहरके कीबेरे घरनेमें आकर आरस हो गई।

हरेन्द्र मुडकी तरह से तीन मिनड बसा रहा फिर वीरे वीरे नीचे उतर गया।

२०

सनाम एक सहीना भीत गया। आगेमें इन्सुर्पवाकी विचरल्ल महा-यारीय रूप आन्त हो गया है। कहीं कहीं हो-एक नये आक्रमण इन्डिरी बात धुनी तो अती है, पर ऐसे कतरनाक रूपमें नहीं। कदम घरमें बैठे सिखाई। नाम कर रही थी इन्डमें हरेन्द्र जा गया। उसके हाथमें एक कोरनी की उठे पास ही बनीनकर रखते हुए बोका “आपकी भद्रकत देक-

कर तकावा करनेमें सरम कमती है मगर आदमी भी ऐसे बेहवा हैं कि भेंट होत ही पछते हैं, वन गया ! ' मैं ठाक साक जनाब से देता हूँ कि भसी बहुत बेर है । बहुत बसरी हो तो कहिए, कपडा वापस आई । मगर मजिदी बात तो यह है कि आपके हाथकी बीज जिसने एक बार बरती वह बीर कहीं सिम्माना नहीं चाहता । यह देखिए न, साकासीक बरसे ठमका नीकर फिर मरद रैसमका बान और बमूदेका कुरता से मना है,—

कमरने सिम्माईपरसे बोला उठाकर कहा " के कनों भिया ! "

भिया क्या सो ही ! कह दिया है कि छह महीनेसे पहले नहीं होगा — उसपर मी राबी हो गया । बोला छह महीने बाद तो मिक आवया ! कोई हर्न नहीं । यह देखिए न सिम्माईके बरए तक हाथपर रक गया है । " कहते हुए जेबमेंसे उसने एक मोटमें मुड़े हुए रुपये बिछाक कर कमरके सामने पटक दिये ।

कमरने कहा " इतना पमावा काम आटा रहा तो मैं बेकती हूँ, मुझे आदमी रखना पड़ेगा । " फिर उसने पोदकी खोलकर पुराना पीबानी कुरता उठाकर देखा और कहा, " फिती बरी बुझनका सिका हुआ माकस होता है—बड़े कारीगरका काम हैं,—मुससे तो ऐसा सीठे न बनेवा । श्रीमती क्या है, बरान हो आवया इसे वापस से बीजिएया । "

हरेन्द्रने आचर्य प्रकट करते हुए कहा " आपसे बड़कर कारीगर और मी है क्या कोई ? "

यहाँ न हो कलकतेमें तो है । नहीं मेव देनको कहिए । "

नहीं नहीं खे नहीं होया । आपसे जैसा बने वैसा बना बीजिए, उचीसे काम बल बाक्या । "

बनेया नहीं हरेन्द्र बाबू, बनता तो बना देती । " कहकर वह अचरव्याक हँस पही बोली " अखित बाबू बड़े आदमी हैं और शौकीन-मिजाज उदरे; ऐसा वैसा बना देनेसे तकसे पहना कैसे बाक्या ! कर्नमें क्या बरान करनेसे कोई प्यबदा नहीं आप वापस के बार्ए । "

हरेन्द्रको अरबन्त आचर्य हुआ उसने कहा " कते जाना कि वह अखित बाबूका है । "

कमरने कहा ' मैं ज्योतिष जो समती हूँ । मरद-रैसमका बान देखयी क्या भीर फिर छह महीने बाद मिके तो मी कोई हर्न नहीं ।—यहाँके साका

सर्वान्तःपरमसे पाया था। यह स्मृति जब तक पुँछी नहीं है और न कभी पुँछ ली सकती है—जीवनके अन्तिम दिन तक यह अक्षय बनी रहेगी। पुरुषोन्मि जब आहू बाबूकी बात ठठठी है—मैं मासता हूँ, तनकी मिह्रा मी बसाधारक है—केलिन—”

हरेन्द्र बाबू रात बहुत हो गई है अब तो आपका घर जाना हो नहीं सकता—इसी कमरेमें आपका किए निस्तार कर दें।”

हरेन्द्रने आश्चर्यसे पूछा “इसी कमरेमें ? और आप ?”

कमलने कहा मैं भी यहीं सोऊँगी। और तो कोई कमरा है नहीं।

हरेन्द्र मारे घरमेंके पीछा पन मना। कमलने हँसते हुए कहा “आप जग्याचारी जो हैं। आपकी मी क्या करनेका कोई कारण हो सकता है।”

हरेन्द्र स्तब्ध होकर एकदक उसके चेहरेकी तरफ़ देखता रह मना। यह कैसा अस्ताव है उसके अल्पना करते मी न बना। मी होकर मुँहसे यह बात निकली कैसे ?

उसकी हारसे जवाहा विह्वलताने कमलसे कहा दिया। उसने कुछ क्षण चुप रहकर कहा मेरी ही गळठी हुई हरेन्द्र बाबू, अपनी घर बाइए। इसी कारण आपकी असीम अदाकी पानी मीस्त्रिमाकी आभ्रममें क्या नहीं मिकी कमाह मिकी तो आहू बाबूके घरमें। सुने घरमें अनात्मीय नर-नारीका चिर्क एक ही सम्बन्ध आपकी मासूम है—पुरुषके मिक्य औरत चिर्क औरत ही है उसके बारेमें इच्छे जवाहा खबर आपका आकटक नहीं क्यूँकी—मज्याचारी हो कामेअर मी नहीं। बाइए, अब बेर न कीचिए, आभ्रम बाइए।” इतना कहकर वह खर ही बाहरके ओपेरे बरम्बेमें बाहर आरस हो गई।

हरेन्द्र गडकी तरह से तीन मिक्य खडा रहा फिर चीरे चीरे नीचे उतर मना।

२०

समय एक महीना बीत गया। आपरेमें इम्पेयर्सबाकी विकरल महानारीका रूप शान्त हो मना है; कहीं कहीं हो-एक मये अल्पमन होनेकी बात सुनी तो जाती है पर ऐसे अठरनाक कसम नहीं। कमल घरमें बैठी चिन्मई। काम कर रही थी इतनेमें हरेन्द्र आ मना। उसके हाथमें एक पोस्टकी बी ठसे पास ही कमीनवर रखत हुए बोला “आपकी अन्त देख

पर तबका करनेमें धरम कमाती है मगर आदमी भी ऐसे बेइया हैं कि भेंट होते ही पछते हैं, बन गया ?' मैं साफ साफ बजाव दे देता हूँ कि अभी बहुत बर है। बहुत जरूरी हो तो कहिए, कपड़ा वापस साँटूँ। मगर मन्केकी बात तो यह है कि आपसे हावकी चीज मिलने एक बार बरती वह थीर कहीं मिलाना नहीं चाहता। यह देखिए न, आकाशीके बरसे उनका नीकर फिर परद रेखमअ धान और मन्केका कुतरता दे गया है,—'

कमकने सिक्कीपरसे बीज उठाकर कहा 'के क्यों किया ?'

मिना क्या बो ही ! यह दिना है कि छह महीनेसे पहले नहीं होगा — उसपर भी राबी हो गया। बोका छह महीने बाद तो मिस खासगा ! कोई हर्ष नहीं। यह देखिए न सिक्कीके इए तक हावपर रख गया है।" खत हुए केवसेसे उसने एक नोटमें मुझे हुए रूपसे निकाल कर कमकके सामने पटक दिये।

कमकने कहा इतना पचावा काम जाता रहा तो मैं देखती हूँ, मुझे आदमी रखना पड़ेगा।" फिर उसने पोटकी जोड़कर पुराना पंचाबी कुतरता उठाकर देखा और कहा, "किसी बड़ी दुश्मनअ सिम्ह हुआ माध्य होता है,—बड़े कारीगरका काम है,—मुझसे तो ऐसा सीते न बनेगा। कीमती कपड़ा है, खरान हो जानया इसे वापस दे दीजिएगा।"

हरेन्द्रने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा आपसे बड़कर कमीयर और भी है क्या कोई ?"

"नहीं न हो कमकसेमें तो है। नहीं मेक केनेको कहिए।"

नहीं नहीं सो नहीं होगा। आपसे बसा बने बैसा बना दीजिए, उसीसे काम बड़ जायगा।"

बनेगा नहीं हरेन्द्र बाबू बनता तो बना देती।" कहकर वह अचानक इस पक्षी बोली अश्रित बाबू बड़े आदमी हैं और शौकीन-मिवाज खरे, ऐसा बैसा बना देनेसे सबसे पहला बैसा जानया ? कर्ममें कपड़ा खरान करनेसे कोई खबर नहीं आप वापस के बाइए।"

हरेन्द्रको अचानक आश्चर्य हुआ उसने कहा कते जाना कि वह अश्रित बाबूका है।"

कमकने कहा 'मैं ज्योतिष को जानती हूँ। परद-रेखमअ धान पेसमी क्या और फिर छह महीने बाद मिसे तो भी कोई हर्ष नहीं।—नहीं काज

सर्वांतःपरणसे पाया था। वह सृष्टि जब तक पुंछी नहीं है और न कभी पुंछ ही सकती है—जीवनके अनन्तम दिन तक वह अस्तव बनी रहेगी। पुण्यमें जब आशु बाबूकी बात छठ्ठी है—मैं मानता हूँ, जबकी विद्या भी असाधारण है—किन्तु—”

“हरेन्द्र बाबू, रात बहुत हो गई है जब तो आपका घर जाना हो नहीं सकता—इसी कमरेमें आपके किण्व निस्तार कर दें।”

हरेन्द्रने आश्चर्यसे पूछा “इसी कमरेमें ? और आप ?”

कमलने कहा “मैं भी वहीं सोऊँगी। और तो कोई कमरा है नहीं।”

हरेन्द्र मारे शरमके पीछा पड़ गया। कमलने ईसते हुए कहा “आप ज़्यादाारी जो हैं। आपको भी क्या करनेका कोई कारण हो सकता है।”

हरेन्द्र स्तब्ध होकर एकटक उसके चेहरेकी तरफ़ देखता रह गया। यह कैसा अस्ताव है उससे कल्पना करते भी न बना। जी होकर मुँहसे यह बात निकली कैसी !

उसकी हृदसे ज़बारा विह्वलमाने कमलको बड़ा दिवा। उसने कुछ क्षण पुर पढ़कर कहा “मेरी ही गळ्ठी हुई हरेन्द्र बाबू, जन्मै घर आइए। इसी कारण आपकी असीम भद्राकी पात्री नीलिमाको आश्रममें आइ नही मिली जयह मिली तो आशु बाबूके घरमें। सुने घरमें अनासमीय नर-नारीका चिर्क एक ही सम्बन्ध आपको माळूम है—घुबपके निरुद्ध औरत चिर्क औरत ही है उसके बारेमें इससे ज़बारा कबल आपलक आकतक नहीं पहुँची।—ब्रह्मचापी हो जानेपर भी नहीं। आइए, अब बैर न कीजिए, आज्ञम आइए।” इतना कहकर वह खर ही बाहरके चौबेरे बरण्डेमें जाकर आरुप हो गई।

हरेन्द्र मुडकी तरफ़ से तीन मिनट खरा रहा फिर धीरे धीरे नीचे उतर पया।

२०

अपभग एक महीना बीत गया। आश्रममें दुग्धसुएंजाकी विचराल महा-मापीका रूप प्राप्त हो गया है; कहीं कहीं हो-पक नये अलकमन होनेकी बात सुनी तो जाती है, पर ऐसे खतरनाक रूपमें नहीं। कमल घरमें बैठी सिखाई। काम कर रही थी इतनेमें हरेन्द्र आ गया। उसके हाथमें एक खेरकी भी उसे पास ही कमीनपर रखते हुए बोला “आपकी मेहनत देखा

कर उलझा करनेमें धरम लगती है मगर आदमी भी ऐसे बिदया हैं कि भेद होते ही पृच्छते हैं, बन गया। मैं ताक साफ बनाव दे देता हूँ कि अभी बहुत बेर है। बहुत बहरी हो तो कहिए, कपड़ा बापस आई। मगर मनेकी बात तो यह है कि आपके हाथकी पीठ बिसने एक बार बरती यह और कहीं सिझाना नहीं चाहता। यह देखिए न, लाम्बानीके बरसे उनका नीकर फिर गरद रेशमका बान और नमूनेका सुरता दे गया है,—”

कमलने सिझाईपरसे झोंक उठाकर कहा “के क्यों किया।”

सिझा क्या जो ही। यह दिना है कि यह महीनेसे पहले नहीं होया — उसपर भी राखी हो गया। बोला यह महीने बाद तो मिक बायपा। कोई हज नहीं। यह देखिए न सिझाईके तरफ तक हाथपर एक पया है।” कहते हुए नेकसे उसने एक नोडमें मुझे हुए अपने निकाल कर कमलके सामने पटक दिए।

कमलने कहा इतना जबादा कम जाता रहा तो मैं देखती हूँ, मुझे आदमी रखना पड़ेगा।” फिर उसने पोटकी बिसकर पुराना पंजानी सुरता उठकर देखा और कहा; “किसी नहीं बुझानका सिझा हुआ माझम होता है,—बड़े धरीगरका कम हैं,—मुझसे तो ऐसा सीते न बनेया। भीमती कपड़ा है, बरतन हो जानया इसे बापस दे दीजिएया।”

हरेन्द्रने जावन प्रकट करते हुए कहा आपसे बड़कर कारीगर और भी है क्या कोई।”

“यहाँ न हो कमलकेमें तो है। वही मेव देनेको कहिए।”

नहीं नहीं तो नहीं होगा। आपसे नसा बने देसा बना दीजिए, उसीसे काम बन जानया।”

बनेगा नहीं हरेन्द्र बाबू, बनता तो बना देती।” कहकर वह अचसमात् देस परी बोधी अकित बाबू बड़े आदमी हैं और लीचीन-मिजाज ठहरे; ऐसा देसा बना देनेसे समसे पहना केसे जानया। स्वर्णमें कपड़ा बरतन बरनेसे कोई फाजदा नहीं आप बापस के बाइए।”

हरेन्द्रको अरगुठ आधर्य हुआ उसने कहा केसे जाना कि यह बाबूका है।”

कमलने कहा मैं ज्योतिप जो जानती हूँ। बरद-रेशमका बान, सस्या और फिर यह महीने बाद मिक तो भी कोई हर्क नहीं।—यहाँकि

अन्तिमपरमसे जाना था। वह स्थिति अब तक पुँछी नहीं है और न कभी पुँछ ली सकती है—जीवनके अन्तिम दिन तक वह अज्ञान बनी रहेगी। पुरुषोंमें अब आहुत बान्धुकी बात सठती है—मै मायता हूँ, इनकी विद्या भी अज्ञातारण है—केवल—”

“हरेन्द्र बान्धु रात बहुत हो गई है अब तो जायज कर जाना हो नहीं सकता—इसी कमरेमें जायके लिए बिछार कर हूँ।”

हरेन्द्रने जायकेसे पूछा “इसी कमरेमें ! और जाय !”

कमलने कहा “मै भी नहीं छोड़ोगी। और तो कोई कमरा है नहीं।”

हरेन्द्र मारे करमके पीला पड़ पड़ा। कमलने हँसते हुए कहा “जाय जायारी जो हूँ। जायके भी क्या करमके कोई कमरा हो सकता है।”

हरेन्द्र लज्ज होकर एकदक उसके खेँरेकी तरफ देखता रह पड़ा। यह कैसा अस्ताव है उसके कमलना करते भी न बना। जी होकर मुँहसे यह बात निकली कैसी !

उसकी हृदये जवादा विह्वलतासे कमलके पहा दिवा। उसने कुछ क्षण चुप रहकर कहा मेरी ही गळठी हुई हरेन्द्र बान्धु, अपने कर जायए। इसी करम-जायकी असीम अज्ञाती पाती नीलियाके आत्मनेमें जाह नहीं मिली अबहि मिली-तो आहुत बान्धुके करमें। इसी करमें अनामीज नर-नारीका चिर्क एक ही तन्मन्व जायके मायम है—पुरुषके निरुध औरत चिर्क औरत ही है, उसके बारेमें इससे जवादा खबर जायकक आकटक नहीं पहुँची।—अज्ञातारी जो जानेर भी नहीं। जायए, अब हेर न कीजिए, जायम जायए।” इतना कहकर वह खर ही बाहरके खेँरे करमके जायक नरुस हो गई।

हरेन्द्र मुँहकी तरफ दो तीन मिनट जाया रहा फिर बीरे बीरे नीचे उतर पया।

२०

कमलमय एक महीना बीत गया। जायकेमें इन्सुल्टकी विहरास महा-नारीका रूप जाय हो गया है। कहीं कहीं हो-एक नये अज्ञान अज्ञाती बात सुनी तो जाती है पर ऐसे अज्ञानके रूपमें नहीं। कमल करमें बैठी अज्ञातीका काम कर रही थी इतनेमें हरेन्द्र जा गया। उसके हाथमें एक चोदकी भी उसे पास ही कमीनपर रखत हुए बोला जायकी मेहनत देख

। सुनकर कमल विस्मित तो नहीं हो सकी, पर उसे कुछ तसल्ली पसर हुई।
 पुत्र "वे क्यों गये हैं और कब गये हैं, मोपिनको मुझमें बरा भा करके
 क्या लक्ष्य पता नहीं लगाया या सफ़ा ?—हरेन्द्र बाबू उनके प्रति आपसे
 स्नेह कितना है सो मैं जानती हूँ, इस बारेमें पूछना ज्यादा हीमी; पर इधर
 कई दिनोंसे मेरी ऐसी बसा हो गई है कि इसके सिवा और कुछ सोच ही नहीं
 सकती।" इतना कहकर उसने ऐसी ग्लाकुल दृष्टिसे हरेन्द्रकी ओर देखा कि वह
 विस्मित हो गया। पर दूसरे ही क्षण वह आँस भीनी करके पहिली तरफ़ अपने
 सिखईके काममें लग गई।

हरेन्द्र चुपचाप खड़ा रहा। खड़े खड़े उसके मनमें एक एक करके कई प्रश्न
 उठते रहे और कुतूहल भी होता रहा—मुझसे शब्दोंमें भी निकलना चाहा
 पर उसने अपनेको हर बार सम्हाल लिया। किसी तरह वह तय नहीं कर पाया
 कि इस पूछनेका तरीका क्या होगा। इस तरह पौच-साठ मिनट बीत जानेपर
 कमलने खर ही बात की। सिखईको एक तरफ़ रखकर समाप्तिही एक सीस
 लेकर उसने कहा "रहने दो अब नहीं करती। मुँह ऊपर उठाते ही
 आदर्शकी साज बोधी यह क्या ! खड़े क्यों हैं ! कुर्सी चौककर बैठ भी
 नहीं गया आपसे ?"

‘बैठनेको तो क्या नहीं आपने।’

अच्छे छे ! क्या नहीं छो बैठने भी नहीं।’

‘नहीं बगैर खड़े बैठना उचित नहीं।’

‘मगर खड़े रहनेके लिए भी तो मैंने नहीं कहा फिर खड़े क्यों हैं !’

ऐसा अमर आप कहती हैं तो मेरा न खड़ा होना ही उचित ना। अपना
 कर्तव्य मँसूर करता हूँ।’

सुनके कमल हँस ही। बोधी ‘तो मैं भी अपना कर्तव्य मान लेती हूँ। अब
 तक अन्वयनरह रहना मेरा अपराध है। अब बैठिए।’

हरेन्द्र झुरली चौककर उभर बैठ गया। कमल सहसा बरा मन्मीर हो
 गई। एक बार कुछ सोचा, फिर बोधी बैठिए हरेन्द्र बाबू मैं जानती हूँ
 और आप भी जानते हैं कि अस्तमें इसके अन्दर कुछ है नहीं। फिर भी
 बात कहकती ही है। वह जो मैं बैठनेके लिए कहना मूल गई,—जो आदर
 अतिविधिसे देना चाहिए ना वह नहीं दिया—इधर अनिष्टताके होव हुए भी
 इस बुद्धिपर आपकी निगाह पड़ ही गई।—नहीं नहीं आप नाराज हुए हैं,

शेप ऐसे मूर्ख नहीं होते इरेनर बाबू। उनसे यह सीखिएगा कि उनका कुरता बनाने कायक योग्यता सुझाये नहीं है, मैं तो सिर्फ़ मरीचिके सख्त दामके कपड़े ही चीना जानती हूँ। यह नहीं सी सकती।”

इरेनर संकटमें पड़ गया। अन्तमें बोला “बनघड़ी बड़ी इच्छा है कि आपने हापका सिलस हुआ कुरता पहनें। लेकिन आप कहीं जान न जायें और यह न समझ बैठे कि हम लोग किसी तरह आपकी सहायता करनेकी कोशिश कर रहे हैं इनसे मैं बहुत दिनोंसे इसे सा नहीं रहा था। उनसे क्या या कि हम दामका कोई मामूली कपड़ा दें। पर ये राजी नहीं हुए। बल्के यह कोई मरी रोजकी पहननेकी मिराबर्ग बोले ही है। यह तो कमकक हापकी सिन्धी हुई चीज है जो सिर्फ़ किसी विशेष पर्यके दिन पहननेके लिय आयागी और एक छोड़ी जायगी। इस संसारमें उनसे बढ़कर आपपर शाबर ही कोई दसप भडा करता हो।

कमकने कहा कुछ दिन पहले उनके मुहसे सायब ठीक इससे उबल पात ही बहुनेमें सुनी होगी। ठीक है कि नहीं? अरा कोशिश करें तो साय आपको भी स्मरण हो सकता है। बरा नन्द पर देखिए न।”

कुछ ही दिन पहलेकी पात बी इरेनरको सब याद था। वह कुछ अजित-सा होकर बोला “सूठ नहीं; मगर ऐसी बारबा तो एक दिन बहुतोंकी थी। शामब लकड़े बासु बाबूकी मते ही न हो लेकिन उन्हें भी एक दिन विकसित होत देखा गया है। जब सुझाये ही देखिए न — साय तो कोई प्रभाव पैदा करनेकी बहरत नहीं पर उस दिनकी कमीटीपर आज भी अगर कोई मेरी मक्ति-मदतीकी बीच करने कमें तो बठाएए मैं कहीं खडा हो सकूँगा।

कमकने पूछा “राजेन्द्रका पता क्या है?”
इरेनरने समझ लिया कि वह इरन-सम्बन्धी आत्मेवना, पहलेकी तरह, आज फिर स्वमित रही। उसने कहा “नहीं, अब तक तो नहीं क्या। उम्मीद है कि कहीं जा खडा होया तो क्या जायगा।”
कमकने कहा “तो तो मैं जानना चाहती नहीं, मैंने तो आपसे सिर्फ़ इतनी ही पता कमानेकी कहा था कि वह पुस्तिका में मान हुआ है या नहीं।”
इरेनरन कहा “तो तो पता क्या क्या। प्रियदास उसके हापसे तो बच

मुनकर कमल निश्चिन्त तो नहीं हो सकी पर उसे कुछ ठसकी जरूर हुई।
 पूछा “ व कहीं मये हैं और कब मये हैं, मोनियेकि मुहल्लेमें जरा मय करके
 क्या कमल पला नहीं मगाया या सफाया ?—हरेन्द्र बाबू उनके प्रति व्यापको
 स्नेह प्रकटना है सो मैं जानती हूँ, इस बारेमें पूटना ज्यादा ही होगी। पर इतर
 कई दिनोंसे मेरी ऐसी दशा हो गई है कि इसके सिवा और कुछ सोच ही नहीं
 सकती। ” इतना कहकर उसने ऐसी म्हाकुळ दृष्टिसे हरेन्द्रकी ओर देखा कि वह
 विस्मित हो गया। पर हमरे ही समय वह आँख नीची करके पृथक्की तरह अपने
 सिस्मार्क काममें मग गई।

हरेन्द्र सुनबाप खड़ा रहा। खड़े खड़े उसके मनमें एक एक करके कई प्रश्न
 उठते रहे और कुनकुळ मी हाँगा रहा—मुँहसे शब्दोंने मी निकलना चाहा
 पर उसने अपनेको हर बार समझा लिया। किसी तरह वह तय नहीं कर पाया
 कि इस पूछनेका मतीका क्या होमा। इस तरह पाँच-साठ मिनट बीत जानेपर
 कमलने फिर ही बात की। सिस्मार्कको एक तरफ रककर समाधिही एक सौस
 केकर उसने कहा जाने को मय नहीं करती। मुँह ऊपर उठाते ही
 आश्चर्यकी छाव बोली “ यह क्या ! खड़े क्यों हैं ! कुर्सी खींचकर बैठा मी
 नहीं मया आपसे ! ”

बैठनेको तो कहा नहीं जायने। ”

मच्छे रहे। क्या नहीं सो बैठने मी नहीं ? ”

‘ नहीं मयेर खड़े बैठना सकिळ नहीं। ’

मयर खड़े रहनेके मिय मी तो मैंने नहीं कहा फिर खड़े क्यों हैं ? ”

“ ऐसा मगर मय करती हैं तो मेरा म कहा होता ही उचिन था। मयमा
 कसर मंशूर करता हूँ। ”

मुनक कमल हँस ही। बोली, ‘ तो मैं मी मयना कसर माग केनी हूँ। मय
 तक मन्ममनसक रहना मेरा मयराप है। मय बैठियू। ’

हरेन्द्र कुरसी खींचकर उमरर बैठ गया। कमल सहसा मरा पम्मीर हो
 गई। एक मार कुछ सोचा, फिर बोली “ देखिय हरेन्द्र बाबू, मैं जानती हूँ
 और मय भी जानते हैं कि मयलने इसके मन्दर कुछ है नहीं। फिर मी
 बात कटकनी ही है। यह म मैं बैठनेके मिय कहना मूळ मई—मे आनर
 मतिथिमे देना मारिये या यह नहीं देना—हमर मतिथताके मयत हुए मी
 इस मुदिपर मयकी निमाह पव ही मई।—नहीं नहीं मय माराम हुए हैं,

तो मैं नहीं कहती—मगर फिर भी न जाने क्यों मनमें कुछ अगुआ ही है। मनुष्यका वह संस्कार जानिएपर भी नहीं जाना चाहता क्यों न वही पोषा-बहुत रह ही जाता है।—क्यों ठीक है ?”

इरेन्द्र इसका उत्तर न समझ सका आश्चर्यके साथ उसके मुँहकी तरफ देखता रह गया। कमल अपने लयी इससे संसारमें न जाने कितना अन्तर् हो रहा है और मन्ना यह कि इसीसे जेग सबसे ज्यादा मूल्यते हैं। क्यों है न वही बात ?”

इरेन्द्रने पूछा वह एक आप मुझसे क्या रही हैं, या अपने आपसे। आप मेरे लिए हो तो बरा और कुशलता करके कहिए। यह प्येकी मेरे मनमें पुन नहीं रही है।”

कमल हँसने लगी बोली ‘है तो प्येकी ही। सीधा-सरल रास्ता होता है, माझम ही नहीं होता कि विपत्ति क्यों नाक कर रही है। थकते थकते डीकर अगुआ है और उँकलीमेंसे बल निकलते अगुआ है, तब क्यों आकर होठ अता है कि और बरा बेचकर बहना चाहिए या। क्यों है न यही बात।”

इरेन्द्रने कहा ‘रास्तेके बारेमें तो यह ठीक है। कमसे कम आगरेके एस्टेटोंर जो बरा होकर सम्मानकर ही बहना अच्छा—देवी कुम्हटजारे आधमके अवबेरेर माना कटती हैं। मगर प्येकी ही रह गई, भीठरी मतकर तो कुछ समझने नहीं जाना।”

कमलने कहा ‘उपस्थ कोई बात नहीं इरेन्द्र बाबू। बरा देनेसे ही सभी बातोंका मठमन समझमें नहीं जा जाता। मुझको ही देखिए न मुझे तो किसीने बताया नहीं फिर भी मठमन समझनेमें मुझे कोई अक्षम नहीं हुई।”

इरेन्द्रने कहा, इसके मानी यह है कि आप मान्यवती हैं और मैं जानाया। या तो देवी भावामे कहिए कि साधारण आधमीके विमाममें जी कुछ जान ना फिर रहने रोझिए, कुछ मठ बोझिए। बीबी भातिबुवाजीकी तरह, कितना इसे कोझना चाहता है बतनी ही यह उकलती का रही है। अहात अठेव विरोधसे कुछ होकर बचकन अब क्यों आकर लग है, इसका ओर-ओर नहीं मिला। ये सब बातें क्या आप राजेन्द्रकी बाप करके क्या रही हैं। बड़े में भी तो जानता है, यह सब बना करके क्या तो आबय कुछ कुछ समझ भी सके। नहीं तो, फिर इस तरह एक लक्षण आधमीकी बस्तुवा सुनते सुनते मुझे अपनी सुझिएर मिश्रा ही न रह जायगा।”

कमल हैंसते हैंसते बोकी किन्धी बुद्धिपर ! मेरीपर या अपनीपर !

“ दोनोंही ही । ”

कमलने कहा “ ठिक राखेन्द्रकी ही नहीं । माझम नहीं क्यों सवेसे बाबू मुझे समीचीन याद आ रही है—आष्ट बाबू मनोरमा अक्षय, अविनाश बसिमा, विनयाच—यहीँतक कि अपने पिताकी—”

हरेन्द्रने बोका “ इस तरह नहीं बख सकता । आप फिर मम्मीर होती बा रही हैं । आपके माता-पिता स्वर्ग गये हैं, बगलके इस मामलेमें पसीन्ना मुझसे नहीं सहा जायगा । हों जो बिन्दा हैं उनकी बात कीजिए । आप एकेन्द्रकी बात कहना चाहती थीं,—उसीकी कहिए, मैं सुनूँ । वह मेरा मित्र है, वसे मैं जानता हूँ, पढ़ानता हूँ, प्यार भी करता हूँ,—मेरा विश्वास कीजिए, मैं चाहे आशय बखता होंके ना और कुछ करता होंके आपको बोका नहीं दूँगा । संसारमें और अगेथी तरह मैं भी प्रेसकी कहानी सुनना पसन्द करता हूँ । ”

कमलकी मम्मीरठा सहसा रूचीमें परिवत हो गई, उसने पूछा ठिक बुझीकी ही सुनना पसन्द करते हैं ! उससे आगे कुछ नहीं चाहत ! ”

हरेन्द्रने कहा नहीं । मैं ब्रह्मचारिकोका पडा हूँ, अहमक दल मुन केमा तो मुझे बा ही जायगा । ”

सुनकर कमल फिर हँस पडी, बोकी, नहीं, ये नहीं आवेंगे । मैं बसका सपाय कर दूगी । ’

हरेन्द्रने फिर हिम्मतें हुए कहा आप नहीं कर सकेंगी । आशय तोबकर भाव जानपर भी मेरा छुटकारा नहीं है । अखनने एक बार बख कि मुझे । पढ़ाना मित्रा है तब नहीं भी मैं बखेपा नहीं मुझे यह सन्मार्गपर आगये ही रहेमा । इससे अच्छे यह है कि आप अपनी ही बात करें । एकेन्द्रको आप अपने मनसे किसी तरह मुक्त ही नहीं सकती—उसकी बातके विराय और कोई बात लोच ही नहीं सकती, तो फिर वहीँसे शुरू कीजिए । किस तरह उस अमास्य कीकरेको आप इतना चाहने लगी हैं, यह सुननेकी मुझे बनी साच है । ”

कमलने कहा, “ ठीक यही प्रस मैं बार बार अपनेसे भी कर रही हूँ । ”

कुछ फता नहीं पा रही हैं ! ”

नहीं ।

“पानेकी बात भी नहीं और मुझे विश्वास भी नहीं होता कि वह सच है।”
 ननों विश्वास क्यों नहीं होता ?”

शेर, डोकिए इस बातको। कबहू एक बार मैं कद भी चुका हूँ कि इससे भी अच्छे ‘केमिस्ट्री’ (उम्मीदवार) मौजूद हैं। भाविकी नियम करनेके पहले हमके केले (दरकारको) पर भी बराबर काम देखिएगा। यही ‘मार्बना है।’

‘मगर केलेदार केमल अनुमानके आधारपर तो विश्वास किया नहीं जा सकता हैनेक बाबू, बाबूयदा गवाह और प्रमाणोंकी जरूरत होती है। तो क्यों हाकिम बनेगा ?”

‘वे खुद ही बनें। सवाह और सुबूतके लिए वे तैयार हैं, सुधार होते ही हाकिम हो सके।’

कमलने कुछ कबाब नहीं दिया, अगर सुँह उठकर देखा और डंस ही। उसके बाद पूरे और कपूरे सींचे कपडोंकी एक एक करके छिस्ते बड़ी की उन्हें एक बैटकी डोकनीमें बँधाकर रख दिया और उठके खड़ी हो गई। बोली ‘आपका सामन्य काम पीनेका बक हो गया हैनेक बाबू, बराती काम बनाकर के जाँके, आप बैटियु।’

हैनेकने कहा बैठा तो हूँ ही। केमल आप तो जानती है, काम पीनेके लिए मुझे कोई बक बैरक नहीं। मिठे तो पी बैठा हूँ; न मिठे तो कोई बात आपकी पूछूँ।”

“कसीये।”

बहुत दिनोंके बाद किसीके नहीं गई नहीं,—तो क्या काम हुआकर जाना जगद कर दिया है।”

कमलको आश्चर्य हुआ बोली नहीं तो। मुझे इसका पतास ही नहीं।”

तो फिर कबिए न आज बरा मासु बाबूके मकान तक पूम जायें। वे सचमुच ही बहुत प्यार होये। जब वे बीमार थे तब एक बार आप गई थीं जब तो वे अच्छे हो गये हैं। किन्तु डॉक्टरने मना कर दिया है कि बाहर नहीं निकले। नहीं तो धारक से किसी दिन खुद ही नहीं आ उपस्थित होते।”
 कमलने कहा वे न जायें तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं। जाना तो

मुझे ही चाहिए था लेकिन कामची संसदसे का नहीं सही। बड़ी पत्नी हो गई।”

“ तो आज ही बसिए न ? ”

“ बसिए। मगर शाम होने हीगिए। आप बैठिए, यदसे एक प्यासा पान बनावे जाती हूँ। हवा बहार बह बाहर बनी गई।

सामक छुटपुटेमें दोनों घरसे निकल पड़े। रास्तेमें हरेन्द्रने कहा बरा दिन रहत बरत तो अच्छा रहता।”

कामचने कहा “ नहीं जान-पहचानका घासद कोई देख केता।

“ मझे देख केता। इन सब बातोंकी बच मैं परबाह नहीं करता।”

“ पर मैं तो करती हूँ।”

हरेन्द्रने समझा कि मजाक किया जा रहा है, वह बोला लेकिन जान-पहचानवाके ही अगर सुनेंगे कि आप मेरे साथ बफेती निकलनेमें आजकल संश्लेष करने लगी हूँ, तो वे क्या सोचेंगे ? ”

हाबद यही सोचेंगे कि मैंने मजाक किया होगा ? ”

मगर आपको जो पहचानता है वह क्या धीरे कुछ सोच सकता है ? बताइए ? ”

कामची बार कामक चुप रही।

जबान न पाकर हरेन्द्रने कहा आज आपको क्या हो गया है, मास्स नहीं सब कुछ दुर्बोध्य हो रहा है।

कामचने कहा, जो समझनेका नहीं है उसे न समझना ही ठक्य है। राजेन्द्रको मूलना साहकर भी मूलनी नहीं। इसका सबसे ज्यादा मान होता है आपके आनेपर। उसके लिए आभनमें स्थान नहीं हुआ — हाथ कि किनी पेटके भीचे पड़े रहनेसे भी उसके काम बक जाता सिर्फ मैंने ही नहीं रहन नहीं किया और आदरक मान मैं उसे मुता आई। मेरे घर जाया — कहींसे भी उसके मनको कोई दबाकर नहीं आई। हवा और प्रकृताकी तरह उसके मानपर भी सब सिझाएँ सुधी रही पुरुषका मानो एक नया परिचय मिला। यह सोचनेको मुझे समय ही नहीं मिला कि यह अच्छा है या बुरा — ज्ञानद समझनेमें देर मी बगे ? ”

हरेन्द्रने कहा, “ यह बड़ी माठी साम्यना है।”

“ साम्यना क्यों है ? ”

“ छो नहीं माझम । ”

फिर कोई भी कुछ नहीं बोझ दोनों ही न जाने कैसे अग्यमनस्क-से बने रहे । हरेन्द्रने सावद बाग-भूखर ही बाग बुमानका रास्ता अस्थितवार किया था । जब वे आसु बाबूके घर पहुँचे तब धाम पीते बहुत देर हो चुकी थी । भीतर जानेके लिए खबर देनेकी जरूरत न थी पर पौष-सह दिनसे हरेन्द्र का नहीं लक्ष्य था इच्छिय नैकरको सामने पाकर बोझा बाबू साहबकी तबीयत खराबी है । ”

उसने नमस्कार करके कहा, “ बी हों खराबी है ।

भापने कमरेमें ही हैं क्या । ”

‘ नहीं उसके सामनेवाले कमरेमें उनके साथ बैठ बातें कर रहे हैं । ”

धीनेपर कहते कमरने कुछ एक खौन ! ”

हरेन्द्रने कहा “ मामी दो हैं ही, और भी सावद कोई हागा — माझम नहीं ।

परवा इठकर भीतर बुधवे ही दोनोंको जरा आश्चर्य हुआ । एसेन्स और बुधदकी तेज गन्धने एक साथ मिलकर कमरेकी हवाको भारी कर दिया था । पीछिमा मीखर नहीं थी आसु बाबू वही आराम-कुर्सीके हथेलेपर पैर फैलाये सुरत पी रहे थे और पास ही छोफेपर सीधी बैठे एक अपरिचित मद्रिक्का बातें कर रही थी । कमरेकी आन-हवाकी तरह ही उसके मुँहका मास भी तेज था । बंगालिन थी पर बंगलर बोझनेकी उसमें दधि नहीं थी और सावद भारत मी न हो । हरेन्द्र और कमरने कमरेमें खरम रखते ही धुन मिना कि वह अनर्बक खैपरेकी बोझ रही है ।

आसु बाबूने मुँह उठकर देखा । कमरपर निगाह पड़ते ही सनस्य साय खेहरा आनन्दसे सज्जस्य हो बठा । सावद एक बार सठके बठनेकी मी खेखिख की, पर सहसा बैठ नहीं गया । मुँहका बुधद खेखर बोके भावो कमक जावो । ” और अपरिचिता रनवीको निर्दिष्ट करके बोके “ वे मेरी एक रिपे-दार हैं । परसो जाई हैं, सम्मन है इन्हें कुछ दिन नहीं रख भी उन्हें । ”

जरा ठहरकर फिर बोके “ कैसा वे कमक हैं । मेरी खराबीकी तरह । ”

दोनोंमें दोनोंके लिए हाथ उठकर नमस्कार किया ।

हरेन्द्रने कहा, “ और मैं । ”

जो हो तुम तो रह ही गये। ये हरेन्द्र हैं, प्रोफेसर अक्षयके परम मित्र। बाकी परिचय ब्यासमय होता रहेगा—बिन्ताभी कोई बात नहीं हरेन्द्र।” और कमलको इसारेसे पास बुझात हुए बोले “यहाँ मेरे पास आओ कमल तुम्हारा हाथ लेकर कुछ बेर चुप बैस रहूँ। इसके लिए कई रिगोसे मेरा भी तय्यारी रहा है।”

कमल हँसती हुई उनके पास जाकर बैठ गई और दोनों हाथ बढ़ाकर उसने उनके मोठे मारी हाथको अपनी गोदमें रक लिया।

आष्टु बाबूने पूछा “क्या-सीकर आई हो क्या?”

कमलने सिर झिझाकर कहा “नहीं।

आष्टु बाबूने छोटीसी एक सींस लेकर कहा “पूछनेसे चमका ही क्या? यहाँ तुम्हें पिछा तो सफ़टा नहीं।”

कमल चुप रही।

२१

बेबानके मुँहकी तरफ़ देखकर आष्टु बाबू बरा हँसे और बोले “क्यों बर्षान मेरा मिला तो गया? इसे बुझायेकी एकरडूकैम्स (बुझमस) करके मयाक उठाना तो तुम्हारा ठीक नहीं हुआ अब तो मान पर्यं।”

महिषा चुप रही। आष्टु बाबू कमलका हाथ हिसरने-डुमने लगा और बोले “इस कड़कीको बाहरसे बरकर जैसा आकर्ष्य होता है, भीतरसे बेबकर जैसे ही रंग रह जाता होता है। क्यों हरेन्द्र, ठीक है न?”

हरेन्द्र चुप रहा; कमलने हँसत हुए जवाब दिया “ठीक है कि नहीं इसमें सन्देह है। लेकिन किसीने अगर बुझ पेरी एकरडूकैम्स’ करके बापके कामोका मयाक किया हो तो इतना तो बेबकरके कहा जा सफ़टा है कि वह ठीक नहीं है। मात्रा-ज्ञान बापका इत बुनियायें अवल है।”

ओह ऐसा है!” आष्टु बाबूने सम्मीर स्नेहक स्वरमें कहा “जायता हूँ कि इस बरमें मैं तुम्हें बिल्ल-सिवा कुछ भी न सजूँगा पर वह तो बतानी अपने घर तुमने क्या क्या खाया है।”

जो रोम खाया करती हूँ नहीं।”

“फिर भी सुनो तो सही। बेबा सोच रही थी कि वह भी मैंने बड़ा-बड़ाके कहा है।”

कमलने कहा "तानी मेरे दिवसमें मेरी अनुपस्थितिमें बहुत कुछ बर्बा हो चुकी है।"

तो तो हुई है,—बस्तीकार नहीं करेगा।" इतनेमें बोटीकी रक्षकमें एक छोटा बाल बिले हुए खेहरा आ गया। बसकी विप्रायतपर सफरी विगाह पड़ गई और सभीको आश्चर्य हुआ। इस घरमें अत्रि एक दिन घरक लड़केकी तरह बा पर अब आचरेमें रहते हुए भी वह नहीं आता और आवर नहीं स्वामाधिक है। इस न आनेकी कजा और संश्लेषके द्वारा दोनों तरफसे ऐसा एक सम्बन्धन सठ बड़ा हुआ है कि उसके इस अस्वभाविक आगमनसे थिफ आछु बाबू ही नहीं उपस्थित सभी कर चौक-छे पके। आछु बाबूके खेहेपर उरगाकी एक गहरी धार पड़ गई—बोके, तम्में इसी कमरेमें के आ।"

बोकी डेर बाद अत्रि आ पहुँचा। एक साब इतने परिपिठ और अपरिपिठ जनोंकी उपस्थितिकी संभावनाका विचार बा आरंभ करने नहीं थी थी।

आछु बाबूने कहा "बेड अत्रि। अच्छे तो हो।"

अत्रिने सिर हिलते हुए कहा "जी हाँ। आपकी तबीयत अब कैसी है। अब तो अच्छी माहल होती है।"

आछु बाबूने कहा "बीमारी तो अच्छी हो गई माहल होती है।"

परस्परका कुशल-प्रश्नोत्तर नहीं अतम हो गया। कमल न होती तो साबद और भी बो-एक बातें हो सकती थीं परंतु बार भीके होनेक करते अत्रिने उरक कमलकी ओर भीक उठाकर देखनेका साहस ही नहीं किया। बो-लीन मिलन तक सब स्वेन चुप रहे। इतनेर सबसे पहले बोका पूज नहीं आप कहा अभी सीधे करते ही आ रहे हैं।"

कुछ बोसनेका मीका पाकर अत्रिके भीमें खी जा गया। बोका "नहीं ठीक चीजा नहीं आ रहा है, आपसे आगत हुए अर दूध फिरकर आ रहा है।"

सुसे जोरते हुए। क्या नाम है।"

काम भरा नहीं और एक सज्जनका है। वे राजेश्वरी गोबर्न हो पुरसे साबद बार बार आ चुके। उनसे बछनेके सिध कहा बा पर वे रात्री नहीं हुए। स्थिरतासे बैठकर प्रतीक्षा करना साबद उनका सहन नहीं है।"

इतनेर अत्रि होकर पूज का बीन। इतनेमें बैसा बा। अब क्यों नहीं रिबा कि यही नहीं है।"

अभिलेखने क्या वह खबर तो उन्हें दे चुका हूँ। पर शायद उन्होंने
बधाव नहीं किया।”

हरेन्द्रका चेहरा बहिरसतासे मर उठा वह ठठ खाया हुआ और कमलको पर
गुँवानेका मार आँसू बानूपर छेवकर बस दिया। उसके पके जानेपर आँसू
बानूने क्या कमल इस कमके राजेन्द्रको मैंने दो-तीन बारसे ज्यादा नहीं
देखा — बिना किसी संकटमें पके उसके वर्सन ही नहीं होते पर ऐसा कल्पता
है कि उसके में क्षमि रहेह करने क्या हूँ। माक्स नहीं कीन-सी महामुह्य बसु
वह अपने साथ क्षिमे प्रिरता है और मन्थ यह है कि हरेन्द्रके मुँहसे घुना करछा
हूँ कि वह विकसुम बाइरु (= वैभद्वन अम्बवस्तिपत) है पुष्पि उस
सम्बेद्धी दृष्टिसे देखती है। जर रहता है, न जाने कम क्या उपरत खाया कर
बैठे और शायद उसकी खबर मी न मिले। कही देखो न किसीको पता ही नहीं
क्या रहा है कि अचानक क्यों मानव हो गया।”

कमल पूछ बैठी “अचानक अपर माइस हो जान कि वे संकटमें पक गये
हूँ, तो आप क्या करेंगे ?”

आँसू बानूने क्या क्या कहेंगा सो अचान तो सिर्फ़ तमी बिना या सफ़टा
है अभी नहीं। बीमारिके दिनोंमें बीछिमामे और मैंने उसके बहूल-से बिस्से
हरेन्द्रके मुँहसे घुने हैं। दुसरोके सिंग सचमुच ही अपने आपको किस तरह विछीन
कर दिया या सफ़टा है, — समर्पित किया या सफ़टा है, — घुनते घुनते मानो
उसकी तसबीर-सी बिच जाती बी घामने। मगवानसे प्रार्थना है कि उसपर
कमी कोई आच्छ-विपत न आवै।

उपरसे किसीके कुछ नहीं क्या पर मन ही मन शायद छगिने इस प्रार्थनामें
साव दिया।

कमलने पूछा बीछिमामे आज रूच नहीं रही हूँ! शायद काममें
अवस्त होगी !”

आँसू बानूने क्या काम-काजी ठहरती दिन-रात काम-बन्धेमें ही कमी
रहती हैं मगर आज घुना है कि सिर-बर्दसे बिस्तरपर पड़ी हैं। तबीनत शायद
कुछ ज्यादा बरतव है। नहीं तो पके रहनेका उनका स्वभाव नहीं। अपनी
बीछोसि देखे बवेर विश्वास नहीं किया या सफ़टा कि कोई ब्यारमी ब्यास्ता
इसकी सेवा — इतना परिश्रम कर सफ़टा है।”

किर कान-भर चुप रहकर क्या, “अविनाशक साव मेरी जान-पहचान

आवरण में हुई। बीच-बीचमें बाठा आटा रहा हूँ। फिटाना-सा परिपक्व है। फिर भी आज सोचता हूँ कि संसारमें अपने प्रायश्चर्य को व्यवहार कर रहा है वह फिटाना सर्वहीन है। दुनियामें अपना-परना कोई नहीं। कमक, वह कोई नहीं जानता कि संसारके इस महासमुद्रके बहावमें पककर कौन कहींसे बहता हुआ पास आ जाता है और कौन बहकर दूर चला जाता है।”

सिर्फ उस अपरिचित ही केकले सिवा दोनों ही समझ गये कि यह बात किशोरके कान तक पहुँचे और किशोर कुछसे नहीं पड़े है। जामु बालू कुछ कुछ मागो अपने मन ही मन कहने लगे इस बीमारीसे उठनेके बादसे संसारकी बहुत-सी चीजें मागो कुछ दूधरी ही तरहकी गजर आये सनी हैं। ऐसा कल्पना है कि कनो इतनी खीचा-तानी बौबा-बौबी और इतना मझे-पुरेका बाद विवाह किना जाता है ? कनो मनुष्य अपने चारों तरफ बहुत-सी भूखें और बहुत-से मोखोंके चपल करके स्वेच्छसे जन्मा बन रहा है ? अब भी उसे बहुत सुखोंका जगत समझ हूँ कि निद्राजना होना उस कहीं वह अपने जर्बोंमें मनुष्य हो सकेगा ! आनन्द तो नहीं बल्कि विरागन्व ही मनो उसकी इस सम्यता और मज्जताका अन्तिम कल्प-वच मया है।”

कमक आकर्षणसे ठगकी तरह देखती रही। यह बात नहीं कि उसकी बातका मतलब वह बिना किसी संशयके समझ रही हो। उसे ठीक ऐसा कल्पना या कैसे फिक्र के बीच किसी जाब-तुफ्त के द्वारा अत्यन्त-सा पीकता हो; मगर पैरोंकी पास बिलकुल परिचित हो।

जामु बालू उठ ही बके। साबह कमककी विरिमत इतिने उम्हें जल्दी तरहसे चेता दिया “ तुम्हारे साथ मुझे और भी बहुत-सी बातें करनी हैं कमक किसी दिन फिर आना। ”

“ जायेंगी। आज जाती हूँ। ”

“ अच्छ। गाड़ी नीचे खड़ी है तुम्हें वह पहुँचा देगा इसीसे वापसके चली नहीं दी है। अन्तिम तुम भी साथ क्यों नहीं चके चले कौनसे चक तुम्हें आज्ञामें सतारता आयेगा। ”

हमने बमरकर करके बाहर निकल आये। जेब साथ साथ बाकीतक आई-बोली “ आपके साथ बातचीत करनेका आज चक नहीं रहा मगर अबकी किस-रोज जायेंगी मैं नहीं छोड़ूँगी। ”

कमलने हँसकर फिर दिखाते हुए कहा “ यह मेरा सीभाग्न है । लेकिन जरूरत है, परिवेश पाकर कहीं आपका मल न बरस जाय ! ”

मोटरमें दोनों बनें पास-पास बठे । बीराहसे मुड़ते वक कमलने कहा, “ उध मिलकी रात भी ऐसी ही कैबेरी थी—याद है ? ”

“ हों याद है । ”

भीर उध मिलका पामकपन ? ”

तो भी याद है । ”

मैं रात्री हो गई थी तो याद है ।

कमलने हँसकर कहा नहीं । मगर आपने जो ब्यंग किया था तो याद है । ’ कमलने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा ब्यंग किया था ? नहीं तो ! ”

कसर किया था । ”

कमलने कहा तो आपने गलत समझा था । और, उसे छोड़िए आज तो ब्यंग नहीं कर रही ?—बकिए न आज ही दोनों बनें पल रहे ? ”

“ बुन । आप नहीं घरीर हैं । ”

कमलने हँसकर कहा, घरीर कैसी ? बताइए, मेरे कैसी घाम्त सीनी की कहीं मिलेगी ? अचानक हुकम किया कमल बल्ले बठे भीर मैं कहीं वक रात्री होकर बोझी बकिए । ”

लेकिन वह तो सिर्फ मजाक था । ”

कमलने कहा “ अच्छा मजाक ही सही लेकिन बताइए, अचानक ऐसा क्या कसर हो गया जो ‘ तुम ’ छेवकर अब आप कहना शुरू कर दिया है ? किन्तु सुसीबल्ले दिन बाट रही हैं, मज्ज—आप ही ज्योगिकि कपके सी-सीकर किली तरह पेठ बसा रही हैं,—और आपके पास रुपनीका हुमार नहीं—पर एक दिन भी आपने मेरी सुधि ली ? मजोरमा ऐसी तच्छमीकने पकड़ी तो क्या आपसे रहा जाता ? बकिए, दिन-रात मेहनत-मजबूरी कर करके कितनी दुबसी हो गई हैं ? ” इतना कहकर जैसे ही बसने अस्ता बाली हाथ अगिनके हाथपर रखा वसे ही अगिन चीक पका और उसका सारा शरीर चिहर उठा । अत्यन्त स्वरमें उसके मुँहस कुछ निज्जय ही बाहटा था कि कमल तहसा अपना हाथ उठाकर निज्ज संठी, “ दूबबर रोके रोके बहो पागल-आनेक पास कहीं आ पके । गाड़ी मुमा ल्ये । कैबेरेमें कुछ कबाक ही नहीं रहा । ”

अमितने कहा, " हाँ कुम्हार केबरेकर ही है । तबसे तब तक नहीं है कि चाहे उसपर इमार बन्याय होता रहे पर बेचारा प्रतिवाद नहीं कर सकता । इस अधिकारसे वह बंभित है । " और वह हँस दिया । सुनकर कमल भी हँस ही बोली " हाँ तो ठीक है । लेकिन म्याज-दिवार ही संसारमें एक कुछ नहीं है । यहाँ बन्याय अधिकारके लिए मी स्वान है इसीसे भाव तक दुबिका तक रही है नहीं तो व जाने वह कबकी तक परे होती ।—कुम्हार रोखे । "

अमितने दरवाजा खोल दिया । कमल सड़कार उठकर बोली, ' केबरेकर इसी मी बड़कर एक और अरपान है अमित बाबू, उसमें अनेके जानेमें डर मादस होता है । "

इस इतारेपर अमित पीच उतर कर बाज का कड़ा हुआ । कमलने कुम्हारसे कहा ' भव तुम पर बाजो इन्हीं जानमें बाजी कुछ बेर छोपी । "

तो कैसे ! इसनी रातमें मुझे पाणी कबसे मिछेनी ? "

पाणी कबसे परे । अमित बोला " मुझे मादस है कोई मी इतनाम न होया । मुझे केबरेमें छीन-वार मीठ पैरक बलकर ही जाना पयेगा । और बाजी में बापके पहुँचाकर बापानीसे पर का सज्जा था । "

' नहीं का सज्जत से । कारण बरिड जिजाने में बापके उठ बापमकी अमिधिन्तामें नहीं नम सज्जती । अमित, बाप । "

उपर मीछरणी काब बनी अत्यन्त बाट रंज रही थी पुछरते ही उसने दरवाजा खोल दिया । ऊपर रसोई घरमें बापकर कमलने उसी कुम्हार भाठलको विछरत हुए अमितसे बैन्नेके लिए कहा । सामान एक देवार का खोच कमलकर कमलने रसोई कहा ही और पास ही बैठकर बोली " ऐसे ही और एक दिनकी बात माल है । "

" बहर । "

" बापका उठ दिगके साथ भाव कबों कवा कर्क है बता सकते हैं । बताए तो देखे । "

अमित कमरमें हपर उबर देखकर पाद करनेकी कोठिख करने कवा कि कबों कवा था ।

कमलने हँसते हुए कहा " बपर रात मर नी हँकके मी व बता सकते । किसी दूसरी ही तरह देखना पयेगा । "

“ फिर बताएँ तो ? ”

“ मेरी तरफ़ । ”

अभिमत सहसा मारे धरमके संकुचन-सा हो गया । आहिस्तेसे बोला “ एक दिन मैंने आपको मुँह अच्छी तरह नहीं देखा । और सब देखा करते थे पर माया नहीं क्यों मुझसे देखते नहीं बनता था । ”

कमलने कहा “ औरोंके साथ आपमें यही तो फर्क है । वे जो देख सके उसका कारण यह था कि उनकी दृष्टिमें मेरे प्रति सम्मानका भाव नहीं था । ”

अभिमत चुप रहा । कमल कहने लयी “ मैंने तब किया था कि जैसे भी होमा आपको खोज निकालूँगी । मुझे आशा नहीं थी कि आज आपके घर आकर आपसे मिल सकूँगी । मेरे मन में तो यह सोच ही नहीं आती थी कि आपसे मिल सकूँगी । मेरे मन में तो यह सोच ही नहीं आती थी कि आपसे मिल सकूँगी । मेरे मन में तो यह सोच ही नहीं आती थी कि आपसे मिल सकूँगी । ”

“ पर इससे आपको क्या पता होगा ? ”

कमलने कहा “ आजके ही रात पीछे बतलाऊँगी, पर आप मुझसे आप’ कहते हैं, तो सम्भव ही मुझे प्यार होती है । एक दिन तुम’ कहकर बोले थे—उस दिन मैंने निहोरा नहीं किया था, आपने ही इच्छासे कहा था । आज इसे बतलाने आकर बोई मैंने नहीं किया है । ठहकर अगर उत्तर न हूँ, तो आप ही पूछ पायेंगे । ”

अभिमत फिर हिचककर कहा “ हों शायद पाऊँगा । ”

कमलने कहा “ ‘साज’ नहीं, निश्चयसे पायेंगे । आप आगरे आये थे मनोरमाके लिए । पर वह अब इस तरहसे नहीं गईं तब सबने सोचा कि अब आप एक दिन भी नहीं गयीं ठहरेंगे । फिर एक मैं ही जानती थी कि आप नहीं जा सकेंगे ।—अच्छा इस बातपर कि मैं आपको प्यार करती हूँ आप निश्चय करते हैं । ”

“ नहीं नहीं करता । ”

“ अगर करत हूँ । इसीसे आपके खिलाफ़ मेरी बहुत-सी नायिमें हूँ । ”

अभिमतने अन्तर्द्वारके साथ कहा “ बहुत-सी नायिमें ? एक-आध गुनाओकी भी ? ”

कमलने कहा “ गुनाओकी इसीलिए तो मैं जानने नहीं देना । पहले अपनी बात कहती हूँ । और बोई चारा नहीं इससे धीरे-धीरे करके ही आपकी गुजर

करती हूँ,—वह सब मुझे पता है। पर इसकिये कि संकष्टमें पड़ी हूँ वह कैसे सहा जा सकता है कि आपके भी झुंटे सीकर धाम हैं ?”

‘पर तुम किसीका धाम तो केटी नहीं हो।’

“नहीं धाम मैं किसीका नहीं केटी —बहोतक कि आपका भी नहीं। लेकिन धामके सिवा कया संसारमें और बनेका कोई रास्ता कया ही नहीं ? आपने जाकर खोर देकर क्यों नहीं कहा कि कमल यह काम मैं तुम्हें नहीं करने दूंगा। मैं उसका कया बचाव केटी ? इतनेसे आज अगर मेरी मेहनत-मजूरी करके जानकी सखि जाती रहे तो फिर आपके बीते भी भी कया मैं दर दर मौख मौखी किहेंगी ?”

इस बर्हमती बातने अधिकारको स्वाङ्क कर दिया उसने कहा ‘यह नहीं हो सकता कमल मेरे जीते जी यह असम्भव है। तुम्हारे निपचमें मैंने एक दिन भी इस तरह नहीं सोचा। जब भी मानो मममें यह बात बैठती नहीं कि जिस कमलको हम सब जानते हैं वही तुम हो।’

कमलने कहा “और क्या बाहे जो जानते रहें पर आप कया उम्हेंसे एक हैं ? उनसे ज्यादा कुछ नहीं।”

इस प्रसङ्ग उत्तर नहीं मिला। कामर अत्यन्त कठिन होनेके कारण और इसके बाद दोनों चुप हो रहे। शाम होगने यह अलुमव किना कि बुझरेसे पुष्पनेकी कपेसा यह बात अपनेसे ही पुष्पनेकी ज्यादा बसरत है।

किटना-सा रोचना था। तैयार होनेमें बेर न बनी। चाते चाते अधिकारने गम्भीर होकर कहा फिर भी मया यह कि पास बाहे किटना ही अपना क्यों न हो तुम्हारी कमाईका मया हाथ पसारके जाने और किसीको छुटकारा नहीं मिलाता और तुम न किसीका केटी हो न किसीका जाती हो —कोई सिर पटक कर मर जाव तो भी नहीं।”

कमलने हँसकर कहा “आप चाते ही क्यों है ? इसके अलावा आपने सिर भी कर पटक है ?”

अधिकारने कहा “सिर पटकनेकी इच्छा बहुत बार हुई है। और तुम्हारा जाता इसकिये हूँ कि अगरदलीमें तुमसे बीत नहीं पाता। जाव मैं अगर कहूँ कि कमल आपको मैंने तुम्हारा छोर मार अपने ऊपर के लिया यह सम्भव-वृत्ति जब मृत करो तो सम्भव है कि तुम कोई देती कसबी बात कह बैठे कि मेरे तुम्हारे फिर बुझरा कोई वाक्य ही न निकले।”

कमलने कहा “ यह बात क्या कही थी कमी आपने ? ”

“ शायद कही थी । ”

“ और मैंने सुनी नहीं यह बात ? ”

नहीं । ”

तो आपने सुनने कायक तरीकेसे नहीं कही । शायद मन ही मन सिर्फ
हृत्पत्र ही थी —सुंइसे वह बाहिर नहीं हुई । ”

अच्छ मान बीबिए, आज ही अमर कर्तू ! ”

‘ और मैं भी अमर कर्तू कि नहीं ? ’

अभिज्ञाने हाथका कीर पीने रखते हुए कहा यही तो मुक्तिफल है । तुम्हें
एक दिवसके लिए भी हम श्लेष समझ नहीं सके । बिच दिन ताजमहालके सामने
गहके बेखा वा उच दिन भी मेरे तुम्हाएि बातें समझमें नहीं आईं, जैसे ही आज
मी हम श्लेषके लिए तुम रहस्य ’ ही बनी हुई हो । कमी तुमने कहा था कि
मेरा भार समझाऊ लो और कमीकी कमी कह रही हो नहीं । ”

कमल हंस ही बोली “ ऐसी ‘ नहीं ’ बरा आप मी कह देखिए न ! कदिए
कि आज तो खाना है, फिर कमी न खाएँये,—देखें कैसे आपकी बात नहीं
रहती है ? ”

अभिज्ञाने कहा, रहेगी कैसे ? बपेर किताने तुम तो छोड़ोगी नहीं । ”

परन्तु कमीकी बार कमल नहीं हँसी । खान्त मानसे बोली “ आपने किए
मेरा भार उठानेका समय कमी नहीं आया । बिच दिन आयेगा उच दिन मेरे
सुंइसे मी ना नहीं निकलेगा । रात बहरी वा रही है, आप वा बीबिए । ”

आता हूँ । वह दिन कमी आवेगा या नहीं बता सफती हो ? ”

कमलने फिर झिगाते हुए कहा तो मैं नहीं बता सफती । कबाल आपको
खर ही एक दिन खोज कैना पड़ेगा । ”

इतनी बकि मुझमें नहीं है । एक दिन बहुत खोज वा पर मिल नही ।
इसी आससे कि कबाल तुम्हीसे मिलेगा मैं हाथ प्यारे बैठा रहूँगा । ”

इसके बाद वह पुनःआप जाने लगा । बोली दर बाद कमलने पूछा इच
बरके होते हुए मी कबालक इरेत्रके आभ्रमें रहने क्यों पहुँचे ? ”

अभिज्ञाने कहा, “ कहीं न कहीं तो पहुँचना ही वा । तुम खर ही व्यनती हो
आवरा छोड़कर मैं कहीं वा नहीं सफता वा । ”

“ तो जानती हूँ न ? ”

हाँ जानती तो हो ही । ”

“ और वही अगर सच हो तो हीने मेरे पास क्यों न चले आने । ”

अगर आता तो सचमुच ही चमक के बैठती । ”

“ सचमुच तो आये नहीं । और इसे खेचिए, पर इरेन्द्रके आश्रममें तो असुविधाओंका जोर-जोर नहीं—वही हमको ठापना प्यारी—मगर इतनी असुविधाएँ आप कैसे सह सके हैं ।

“ मासूम नहीं बैठे सड़ बैठा हूँ पर आज मुझे इन सब बातोंका मनने कबाक भी नहीं आता । जब तो मैं सम्झसिंसे एक हो गया हूँ । हो सकता है कि वही मेरा मन्त्रिपञ्च बीचन हो । जब तक पुर भी नहीं बठा बा । आदमी मेरकर अगाह कब्ब आश्रम कादम करकेके कोकित करता रहा हूँ—तीन-चार कबहसे हमीच भी मिली है,—जी चाहा है, एक बार खर पाके घूम जाऊँ । ”

“ यह सकार आपको ही किसने ? इरेन्द्रने शाबर ?

अश्विन कहा अगर ही भी हो तो निगाप होकर ही ही है । केवल सबैवास दिन ओगेनि अपनी माँकोसे देखा है—शान्तिच निष्कर दु-च बमीहीनताकी गहरी सम्मि, कमकोटीसे उत्पन्न दयनीय मीला—”

कमक बोधमें ही बोक हठी, “ इरेन्द्रने यह सब देखा होगा मैं हमकर नहीं करती पर अगरक निकट तो वे सब सुनी हुई बातें हैं । अपनी माँकोसे तो आपको कमी कुछ देखनेका मीका भिन्न नहीं । ”

“ पर बातें तो वे सब ठीक हैं । ”

“ सब नहीं हैं, सो मैं नहीं करती पर उसके प्रतिभारका उपाय क्या इन आजमोंकी प्रतिष्ठा है । ”

“ नहीं क्यों ! भारतवर्षके मानी चिर्क उत्तरमें विमाकन और तीनों ओर उमुद्रसे चिरा हुआ बोझा-सा मूकच ही तो नहीं ! वहींकी प्राचीन सम्कता यहाँकी बार्दिक विविधता, वहाँकी नैतिक पवित्रता न्याय-निष्ठकी महिमा—वही तो मारत है । इसीसे इच्छा नाम है देवभूमि इसे अत्यन्त हीन दसासे बचानके लिए उपरनाके सिवा और क्या मार्ग है । अश्विनके-मरुवाठी निष्कर्षक बल्कोके लिए जीवनमें छाँक होने और चमक होनेके—”

कमरमें लगे रोख बिना बोक बठी बाप बीम बुके हो तो हाथ टूट
 पोकर लठिए, उस कमरेमें बठिए—बठिए, अब नहीं । ”

तुम नहीं आओगी ? ”

मैं क्या दोनो बच जाती हूँ जो आऊँगी ? बठिए । ”

पर मुझे तो आश्रम बापस जाना है । ”

“ नहीं, नहीं जाना है, उस कमरेमें बठिए । बगुन-सी बातें आपसे मुझे
 सुननी हैं । ”

अच्छ पद्यो । लेकिन बाहर रहनेका इमारा नियम नहीं है —कितनी
 ही रात कबो न हो आश्रममें बापस जाना ही पड़ेगा । ”

कमरने क्या वह निरुप दृष्टित आश्रमवासियोंके लिए है आपके
 लिए नहीं । ”

मगर क्यों क्या करेंगे ? ”

एस लम्बीबासे कि श्लेष क्या करते हैं, कमरकर देरें हूट जाता है । उसने
 क्या श्लेष सिर्फ आपकी निन्दा ही करेंगे रखा नहीं कर सकते । जो रखा
 कर सकेगी उसके निरुप आपको कोई डर नहीं । आपके उन श्लेषों ' से
 मैं कभी पनादा आपकी अपनी हूँ । उस दिन आपने साब बचनेसे क्या था
 पर मैं जा नहीं सके —आज बगैर कबे मेरा काम नहीं बसेगा । बठिए
 उस कमरेमें मुझसे कोई डर नहीं । मैं उनकी आँखों नहीं हूँ जो पुलकने
 श्लेषों ही बस्तु हैं । बठिए । ”

उस कमरेमें के आकर कमरने बठितके लिए निकटतम नये कपड़ोंसे परंपपर
 सुन्दर बिलर कर दिये और अपने लिए कमीनपर मामूली-सा बिल्लीना कर
 किया । फिर लठकर बाहर जाते हुए उसने कहा मैं अभी जाती हूँ । इतके
 निरुप बनेंगे, मगर आप सो मत जाहण्या । ”

“ नहीं । ”

नहीं तो मैं छच्छोरकर क्या हूँगी ? ”

“ उसकी अस्त न होनी कमर नीद मेरी आँखोंसे बच गई है । ”

“ अच्छा उसकी परीक्षा हो जानगी । ” कहकर वह कमरेसे बाहर कभी
 गई । रसोईके बर्तन नवात्मान ठरके रखना पड़े बरतन बरण्डेमें बरना
 बर-बरतीके ऐसे ही सब छोटे-मोटे काम जो बाकी थे उन्हें उसने पूरा किया
 ठप बाके कभी बसकी छुड़ी हुई ।

एते कमरेमें कमरके हावसे बने खतसे लिखाई छत्र-सुन्दर शम्भापर बैठ-कर सहसा उसने एक पहरी छीस ली। इसका खास कोई गहरा कारण नहीं था सिर्फ मनके अन्दर अच्छा लगाने 'को एक छिपि थी। इसे लकड़ा है कि उसमें बोका-सा कुछकुछ भी मिलता हुआ हो पर आम्हका उच्चाप नहीं था। माहस होता था कि माबो एक धान्त अलान्दख मधुर लम्बे चुपकेसे उसके सारे खरीरमें फैल गया है।

अखिल बलात्क-बन्दी समताम है, अन्तसे कित्तसके अन्धर ही वह इतना बड़ा हुआ है; परन्तु इन्हेके प्रयाचन-मात्रममें मरती होनेके बादसे गरीबी और आत्म-निग्रहके दुर्गम मार्गसे भारतीय वैशिष्ट्यकी मर्मोन्मुखिणी एकाम साबनाने लभसे लक्ष्मी दृष्टि ददा थी है। सहसा लक्ष्मी नगर तकियेपर पड़ी, देखा कि लक्ष्मी खोलीपर चारों तरफ पीके सूते छोटे कन्धमखिणके फूक बड़े हुए हैं। मिछीनेकी चारकर को खेना नीचे अटक रहा है उसपर सफेद रेस-मसे कमी हुई किसी अज्ञात कताकी लक्ष्मीर बनी हुई है। बरा-सी कारीमरी थी—मान्नी बाठ को न जाने और कितने आरमिबेकि घर होगी। फुरलके बच कमरने इसे अपने हावसे कहा है। देखकर अखिल मुग्ध हो गया। हावसे उसे दिखा-बुका रहा था कि कमर बाहरका कमर निकटाकर कमरेमें जा बड़ी हुई। अखिल उसके खेरेकी तरफ देखकर बोक बठा "वाह बहुत सुन्दर है।"

कमरने आश्चर्यके लरमें कहा "क्या सुन्दर है ! वह बोक !"

"हाँ और वह पीके रंगके फूक। तुमने अपने हावसे कहे हैं न।"

कमरने ईसते हुए कहा, "खूब फूक। अपने हावसे महीं कम्पती तो क्या बाजारसे कारीगर बुलाकर तैयार कराती ? आपके बाहिप देखा ?"

"नहीं, नहीं मुझे नहीं बाहिप। मैं क्या कहूँगा ?"

उसके इस आफुक और सक्कल इन्धरसे कमर ईस पड़ी बोली आत्म-ममें जाकर इसपर सोइएया और कोई पूछे तो कहिएया कमरने रास-भर जायकर इसे बना दिया है।

'सुत !'

"सुत क्यों ! मे सब चीजें कोई अपने लिये बोले ही बनाता है, दूसरे ही किसी आदमीके लिये बनाई जाती हैं। लक्ष्मीके देखकर को फूक कहे मे से क्या अपने छोनेके लिये ! एक न एक दिन कोई न कोई आता ही बनीके

किए वे पीछे घटके रख दी थीं। उन्हें जब जान जाने लगेंगे तब वे आपके साथ रख देंगी।

जबकी बार अकित मी हूँस किया बोला "अच्छ कमक तुम्हे क्या मुझे निकलुन ही मूर्ख समझ रक्खा है ?"

क्यों ?"

"क्या इस बातपर भी मैं विश्वास कर हूँ कि तुमने मेरी ही याद करके मे सच पीछे लेकर की थी ?"

क्यों नहीं करेंगे ?"

'इसलिए कि बात सच नहीं है।"

"पर अगर कहीं कि मैं सच कह रही हूँ तो विश्वास करेंगे फिर ?"

"बहर बहैगा। अगर तुम्हारे मजबूती कोई हब नहीं—कहीं भी तुम्हें विश्वासवाहक नहीं होती। उस दिनकी मोटरपर जूमनेकी बात बाद आते ही कबकी हब नहीं रहती। वह बात सुनरी है पर इसका मुझे मरोसा है कि मजबूती सिवाय और किसी बातके लिए तुम छूट नहीं बोकोमी।"

'अगर मैं कहीं कि वास्तवमें मैंने मजाक नहीं किया निकलुन सच कह रही हूँ, तो विश्वास करेंगे ?"

"बहर बहैगा।"

कमकने कहा "अगर करें तो आज मैं आपसे सच्ची बात ही कर्तूंगी। तब तक रानिभर नहीं आना या अर्बाद आभमसे निकलकर तब तक उठने मेरे यहीं आभय नहीं किया बा। मेरी भी बड़ी रक्षा थी। आप कोबेनि निकलकर जब मुझे कृपासे दूर कर दिया—इस परदेसमें जब किसीके पास जाकर बने होनेका तपस नहीं रहा तबका ही—उन गम्भीर दुःखके दिनोंका ही यह काम है। अतःद मुझे कभी माफस भी न होता कि उस दिन ठीक किसी बाद करके ये फूक कने वे।—समयक मूक ही चुकी थी अगर आज बिस्तर बिजाते बच अमानक पेशा क्या कि नहीं नहीं उलसर नहीं—बिसपर कोई किसी दिन सो चुका है उसपर मैं आपकी इर्षिक नहीं मुना सखती।"

क्यों नहीं सुन सखती ?"

माफस नहीं क्यों जैसे कोई कहा देकर वह बात कह गया हो।" बहर वह अचमर मौन रही और फिर बोली "बड़ी समय लहसा इन बीबेकी बाद आई कि ये बकसमें रही हूँ। आज तब बाहर हाथ-मुँह जो रहे वे। इस तरह कि

आप हटसे आ पहुँचेंगे, मैंने कसरी कसरी इन्हें निष्ठाकर निष्ठाणा छुट कर दिया। तब मेरे जीमें यहै-यहल यह खयाल आना कि उस दिन जिसकी मास करके रात-भर जानकर यह पून-पत्नी जैसे बानो भी यह आप ही से।”

अशित कुछ बोख नहीं। सिर्फ एक रंजीत आमा इसके केहरेकर दिखाई ही और वही क्वच विधीन हो गई।

कमल छुर भी कुछ बेर चुप रही, फिर बोली “चुप सारे क्या सोच रहे हैं, बताए न।”

अशितवे कहा “सिर्फ चुप ही मारे हैं, कुछ सोच नहीं रहा हूँ।”

“इसकी बख्त।”

“बख्त! तुम्हारी बातें सुनकर मेरी छातीके धीतर मानो धौंपी-सी उठ खड़ी हुई है। सिर्फ खौंभी ही,—न तो आमा जानकर और न रंजीत आमा ही।”

कमल चुपचाप इसकी तरफ देखा थी। अशित धीरे धीरे खडने लगा, “कमल एक निष्ठा कहता हूँ तुमो। मेरी माथे एक बार इमारे गुर-बैवता राबान्जम पीने पुजाबाके कमरेमें मूर्ति बारन करके बर्तन सिये और माके हाथसे भोग बैकर सामने बैकर खाया। यह बनकी अपनी जीकों बेकी बात थी फिर भी करमें हम खेगोमिरी कोई ठकर निष्ठास नहीं कर सका। अपने समझा कि सपना होमा मकर इमारे इस अनिष्ठासका हुआ हमें मरते हम एक बना रहा। आज तुम्हारी बात सुनकर मुझे वही बात मास आ रही है। मैं जानता हूँ कि तुम ईसी नहीं कर रही हो मकर फिर भी मेरी माथे तरह तुमसे नी कहीं बड़ी भारी गळती हो गई है। मनुष्यके बीकनमें देता बहुत-सा समय बखत आता है जब वह अपने सम्बन्धमें केबरेमें रहता है। फिर खानद खरुए एक दिन बीकन खरुए है। मेरा भी वही हाल है। जो तो मैं जब एक दुकियामें और भी बहुत कम्ह चुपता रहा हूँ केबिन सिर्फ इस आनरेमें आकर ही मैंने छीकसे अपनेको खबाना है। मेरे पास है तो सिर्फ इराबा है और वह भी फिताकी कमाईका। इसके सिवा ऐसी कोई भी चीज मेरी कजवी नहीं जिसके सिव तुम मेरी गैर आनकरमें मुससे प्रेय कर सकती।”

कमलने कहा “समोकी कोई फिर न कीजिए आप। जायस-बासियोथे जब कि एक मरतबा ठसका पता बस बना है तब ठसकी सब मकरबा से ही कर बाँके।” कहते कहते वह क्या ईसी और फिर बोली केबिन

और सब तरहसे आप ऐसे निरुत्तर हैं जो इसकी खबर मैंने क्वा पहले साफ पाई थी । अगर पाई होती तो क्वा कमी प्रेम करने जाती । इसके सिवा आपके स्वभावकी भलाई-बुराई समझनेका बख ही क्यों किया था मुझे । मनमें सिर्फ एक सन्देश था जिसका पता नहीं बक रहा था पर अभी अभी इसके मिनट हुए, अकेली विस्तरके सामने खड़ी थी कि अकस्मात् कोई ठीक खबर मेरे कानमें आकर सुना गया । ”

अखिरतन गहरे आश्चर्यके साथ पूछा एक कह रही हो । सिर्फ इसके मिनट हुए । पर अगर सच हो तो यह पायकपन है । ”

कमलने कहा पायकपन तो है ही । इसीसे तो आपसे कहा था कि मुझे और क्यों के बकिष् । ऐसी भीख तो मैंने मोगी नहीं कि ब्याह करके मेरे साथ बर-गृहरथी कीबिए । ”

अखिरत अस्वन्त कुण्ठित हो गया बोला भीख क्यों खटती हो कमल, वह भीख मोगना नहीं है यह तुम्हारा प्रेमका अखिरकार है । अगर अखिरकारका हावा तुम्हने नहीं किया मोगी ऐसी भीख जो पानीके बुरखुबेकी तरह अस्थायी है और बसीकी तरह मिथ्या । ”

कमलने कहा हो भी सक्ता है कि उसकी आयु कम हो अगर इससे वह मिथ्या क्यों होगी । आनुषी वीर्यताकी ही जो सख समझकर बच्चे रहना चाहते हैं, मैं बनसे नहीं हूँ । ”

“ पर इस आनन्दमें तो कुछ भी स्वाधित नहीं कमल ।

“ न रहे । लेकिन जो बोय इस तरह कि अकसी फूल अन्धसे सुख जाते हैं, बिरतक रहनेवाके लक्ष्मी फूलोंका गुच्छ बनाते और फूलदलीमें चबककर रखत हैं, उनके साथ मेरे मलका मेक नहीं खाता । आपसे पहले भी मैंने एक बार ठीक वही बात कही थी कि किसी भी आनन्दमें स्वाधित नहीं है । स्वाधी हैं सिर्फ उस आनन्दके अस्वस्थानी दिन और धे दिन ही तो मानव-जीवनके चरम संपन्न हैं । उस आनन्दको बौधने कहे कि वह मरता । इसीसे ब्याहमें स्वाधित तो है, पर उसका आनन्द नहीं । दुगह स्वाधितकी मोटी रस्ती मकेमें बौबकर वह आनन्द अममहत्वा करके मर मिथता है । ”

अखिरको पाव आया कि ठीक वही बात उसने पहले भी कमलके मुँहसे सुनी थी । सिर्फ मुँहकी बात ही नहीं है वह,—वही उसके अन्तःकरणका विधास है । विधासने उससे ब्याह नहीं किया था, किन्तु जाना दिया था

इस बातको लेकर एक दिनके लिए भी बहने कोई शिकायत नहीं थी। क्यों नहीं थी? आज यह पहले कब्र बखितने बिना किसी संशयके समझा कि इस मामलेमें कमलकी अपत्नी भी राब थी। संसार-भरकी मानव-जातिके इस प्राचीन और पवित्र संस्कारके प्रति इतनी बबरदस्त अन्यायके कारण बखितका मन विचारसे भर जम।

शामभर मौन रहकर यह बोझ “तुम्हारे सामने गाँव करना मुझे सोमा नहीं देता। पर तुमसे जब मैं कोई बात शिकाऊँगी नहीं। ये जोय करते हैं कि संसारमें कामिनी-कायनका ज्ञान ही पुण्यका सबसे बड़ा पुरस्कार है। बुद्धिची तरफसे मैं इसपर विश्वास करता हूँ और यह भी मानता हूँ कि इस लक्षणमें सिद्धि प्राप्त करैकी अपेक्षा और कोई महत्तर वस्तु नहीं। कायन मेरे पास कापी है, उसकी मुझे इच्छा नहीं परन्तु जब मैं सोचता हूँ कि मुझे अपने सम्पूर्ण जीवनमें न कोई प्यार करजवाला मित्र और न कोई मित्रेगा तब मेरा हृदय मानो सूख जाता है। और दर लगता है कि जबकी इस कमलकीकी सादर मैं करते हूँ तब न जीत सकूँगा। मागमें यही अगर किसी दिन घटा तो मैं आत्मम खेदकर कहीं चला जाऊँगा। पर तुम्हारा आग्रह तो सबसे भी बढ़कर मिप्या है। इस पुण्यका मैं अनुकूल बनाने न दे सकूँगा।”

“इसे आप मिप्या क्यों कह रहे हैं?”

“मिप्या तो है ही। मनोरमाका आश्रय समझमें आता है, क्यों कि वास्तवमें कभी बहने मुझे प्यार नहीं किया किन्तु सिद्धभावके प्रति विश्वासीका प्यार तो मैंने अपनी शौचसे देखा है। उस दिन मानो उसकी कोई सीमा ही नहीं थी पर आज उसका विधान तक मिन गवा है।”

कमलने कहा “आज यह अगर मिन ही गया हो तो उस दिनका क्या सिर्फ मेरा कम ही आपकी निगाहमें आया था?”

बखितने कहा “ओ तो तुम्हीं जानो पर आज मुझे लगता है कि नारीके जीवनमें इससे बढ़कर मिप्या और कुछ है ही नहीं।”

कमलकी दृष्टि प्रखर हो उठी उसने कहा “नारी-जीवनके सम्पूर्ण निर्भयका मार नारीपर ही रहने शीघ्र। उसके निर्भयका दामित्य पुण्यके देनेकी बबरद नहीं—न मनोरमाका और न कमलका। इसी तरहसे संसारमें न्याय विरहलसे विदग्धित होता आ रहा है, नारी अधमामित होयी रही

है और पुरुषयज्ञ विना संकीर्ण और बहुयुक्त होता गया है। इसीसे इस छोटे मामलेका आज तक फैसला नहीं हुआ। अविचारसे सिर्फ एक ही पक्ष धर्मिष्ठ नहीं होता अर्थात् बाबू दोनों पक्षोंका सर्वनाश होता है। उस दिन विनयायने जो कुछ पाया था दुमिनाके बहुत कम पुरखोंके माग्गमें उठना बड़ा होता है। पर आज वह नहीं है। वह तर्क उठाकर कि क्यों नहीं है, पुरुष अपने मोटे हाथसे मोट्या बन्ना बुनाकर बासल मके ही कर छे पर उसे पा नहीं सकता। उस दिनका होना अितना बड़ा सत्य था आजका न होना भी ठीक उतना ही बड़ा सत्य है। क्योंकि अठ्ठ्यासी फटी गुदवी ओढ़ाकर इसे बड़ केनेमें धरम जाती है, इसी बन्नासे पुरुषके विचारसे यह हो गया नाटीजीवनका सबसे बड़ा मिथ्या है क्या इसी सुविचारकी आशासे हम आप ज्येष्ठोंका मुँह ताछ करती हैं ?”

अमितने बचाव दिया मगर उपाय क्या है। जो इतना दुःखस्वामी है, इतना धर्ममगुर है, उसे इससे ज्यादा सम्मान मनुष्य देगा ही क्यों ?”

कमलने कहा देगा नहीं यह मैं जानती हूँ। हमारे आँगनके दिनारे जो फूल खिलते हैं उनका जीवन एक सप्ते जवादा नहीं। उससे बन्धक वह मसाका पीसनेका सिक्-सोना कहीं ज्यादा दिखता है,—कहीं ज्यादा दीर्घस्वामी है। सत्यकी जीवका इससे ज्यादा मजबूत माप-दण्ड आप ज्येष्ठ और पा ही क्यों सकते हैं ?”

कमल यह मुक्ति नहीं है, यह तो सिर्फ गुस्सेकी बल है।”

“गुस्सा किस बातका अर्थात् बाबू ? सिर्फ स्वामित्व केकर ही विनय काठे-वार है वे इसी तरह ज्येष्ठ आँध करत हैं। मेरे सम्मानपर जो आपसे हों करते नहीं बना उसकी बड़में भी यही संयम है। बलबलत करके जो पिरकाइके लिए बन्ना नहीं केना चाहती उसपर आप विधास करेंगे किस तरह ? फूलको जो नहीं जानता उसके लिए वह सिक्-सोना ही सबसे बड़ा सत्य है, क्यों कि उत सिक्-सोनेके धूलकर सब जानेकी आशाका नहीं है। फूलकी आनु सिर्फ एक सप्तेकी है और पिर-सोना हमेशाके लिए है। रसोईपरकी बस्तके मुताबिक वह हमेशा रसक रसक कर मसाका पीस दिया करेगा—रोटी विगमनेके लिए तरकारीका उपकरण जो ठहरा वह उसपर भरोसा किया जा सकता है। उसके न होनेसे संसार बेस्ताह हो जायगा।”

अमित बसके मुँहकी तरह बेकता हुआ बोला यह ज्येष्ठ किस लिए कमल !”

कमलके आनीतक घायक वह प्रश्न पहुँचा ही नहीं वह मानो अपने आप ही करने लगी "मनुष्य वह समझ ही नहीं पाता कि इतक जोड़ेसे बना नहीं होता—इस तरह निश्चित निर्भवतासे उसपर सारा बोझ नहीं आता या सञ्जाता। उसमें दुःख न होता हो स्ये बात नहीं—पर वही इतकक बर्ष है वही उतकक सत्य है। फिर भी वह बात कही भी नहीं आ सकती और न मान्य ही का सकती है। इतके कफर जनीति संसारमें और क्या है! इतके तो किसीको समझमें न आता कि जनाकके कैसे मैं सर्वान्ताकरके क्या कर सकी हूँ! वो रोकर मीठनमें जोगन बनना सनके समझमें आ जाता पर वह उनसे नहीं सहा गया; अरुचि और अनहेकतासे सारा मन उतकक कहुआ हो गया। पेड़के पते सूखके धड़ बाटे हैं और उनके छतको नये पते आकर मर बैठ हैं; वह तो हुआ मिथ्या और बाहरकी क्या मर जानेपर भी पेड़से लिपटी रहती है,—कसके लिपटी रहती है, यह हो गया सत्य!"

अकित एक मनके सुन रहा था उसकी बात कतम होते ही एक गहरी सीस श्लोकक बोझ एक बात हम जोग आकर भूल आना करते हैं कि जसमें हम हमारी अपनी नहीं हो। तुम्हारा जल तुम्हारा संस्कार तुम्हारी सारी किला जियेकाही है। इसक प्रकण्ड संवातके बाद कर तुम किसी तरह कसक उठ नहीं सकनी और इसी कण्ड हमारी तुम्हारे घाय निरन्तर कदक होती है। रात बहुत हो गई कमस इस निष्कण्ड सगवेके कन्द करो।—वह बाहरी तुम्हारे लिये नहीं है।"

कीन-सा आरुह ! आपने कण्डकर्म आत्मकण्ड !"

इस आनेकी जोरसे अकित मन ही मन गुस्ता हो मना बोला 'अकित सो ही सही। किन्तु इसे तुम नहीं समझोकी कि इसक गूँ तल किसेकिसेके लिये नहीं है।"

"आपकी सामिही करनेपर भी नहीं।"

नहीं।"

अनकी कसमें हँस पड़ी मानो अब वह पककेही रही ही नहीं। बोली "अकित, यह तो बताइए कि उन साजुकीके अमेमिं आपका नाम कैसे कदना सकती हूँ। बाह्यनमें वह आत्म मेरी औकका कदना बन गया है।"

अकित निरन्तरपर पक रहा बोला "उककेके कुकाकर तुमने जनापाठ ही अगाह दे ही।—तुम्हें कुछ भी लिखकिबाहर न हुई,—क्यों।"

द्विचक्रिचक्रद कर्मो होती ? ”

“ इन सब बातोंकी तुम परवाह ही नहीं करती क्या ? ”

‘ क्या परवाह नहीं करती ?—आप ज्येथके मठामठकी !—ओ तो नहीं करती । ”

“ अपने सम्बन्धमें भी जायद कमी किसी बातसे उरती नहीं ? ”

कमरने क्या यह तो नहीं कह सकती कि कमी उरती ही नहीं पर मन्नाबारीसे उर किस बातका ?

“ हूँ । ” कहेके अर्धित चुप हो गया ।

फिर कुछ देर बाद एकएक बोळ उठ्य ‘ केंबुमा मिठीके नीचे बैथेरेमें रहता है वह जानता है कि बाहरके उजामेमें निकलनेसे उरक्य बचना मुश्किल है — उस लीरु कामके लिए बहुतसे मुँह बाये फिर रहे हैं । किलेके सिवा आत्मरक्षाक्य और कोई उपाय उसे मात्थम नहीं । पर तुम जानती हो कि भादमी केंबुमा नहीं नहीं तक कि बीरत होनेपर भी नहीं । शास्त्रोंमें लिखा है अपने स्वस्फुले जान केना ही परम शक्ति है,—और तुम्हारा वह अपना स्वस्फ-ज्ञान ही तुम्हारी जलक शक्ति है —नवों है न ठीक ? ”

कमर कुछ बोली नहीं चुप रही ।

अर्धितने क्या “ जिवों जिस बीरक्ये अपने इहवीरक्य सबैस्व समझती हैं उसपर तुम्हारी ऐसी एक उरक्य उरक्यता है कि बाहे कोरे कितनी ही निन्दा किया करे, वह तुम्हारे चारों तरफ आमकी क्यारहीमारी बनकर प्रतिखान तुम्हें रक्षाना करती है । तुम तक पहुँचनेके पहले ही वह निन्दा उर उरकर भस्म हो जाती है । अभी अभी तुम मुझसे कह रही थी कि जो पुस्तके योगकी वस्तु हैं उनकी यातिकी तुम नहीं हो । आजकी रातमें तुम्हारे प्राण आम्ने-सामने बैठकर उर बातका कर्म रख होता आ रहा है । मैं वह भी समझ रहा हूँ कि योगीकी निन्दा प्रसंसाकी अणुका करनेकी विन्मत तुम्हें क्योसे मिळा करती है । ”

कमरने छत्रिम आश्चर्यसे मुँह ऊपर उर क्या “ आपकी हुवा क्या है अर्धित बाबू, बापें तो आज बहुत कुछ ज्ञानवानोंकी-सी उर रहे हैं ? ”

अर्धितने क्या ‘ अर्धय कमर उरकी वताओ तुम्हारे लिए मेरा मठामठ भी क्या और क्योकी तरह ही तुम्हक है । ”

“ पर वह बात जानकर आप क्या करेंगे ? ”

“कमल अपनेको बखिमान् समझकर मने कभी तुम्हारे भागे फरक नहीं किया। बाल्यमें भीतर भीतर मैं जितना कमजोर हूँ उतना ही बखिमान् भी। कमल हँसके बोली सो तो मैं आपसे बहुत ज्यादा जानती हूँ।”

बखिमान् बोला “मुझे क्या लगता है जानती हो! बय्या है कि तुम्हें पाना बखिमान् है, वैसा वैसा भी बतना ही आसान है।”

कमलने बोला “वह भी मुझे मालूम है।”

बखिमान् अपने मन ही मन फिर हिसाब बोलता यही तो सुनिश्चय है। तुम्हें भाव पा कैना ही तो सब कुछ नहीं है। एक दिन अगर इसी तरह वैसा देना पड़ा तो क्या होगा ?”

कमलने सात फट्टे बोला “कुछ भी न होगा उस दिन वैसा भी ऐसा ही खबर हो जायगा। कितने दिन तक पास रहूँगी उतने दिन आपको वही दिया सिखाया करूँगी।

बखिमान् भीतरसे बीक पड़ा। पोका बिक्रायतमें रहते हुए मने देखा है कि बहावाके कितनी आसानीसे—कितने मामूली कारबोसे हमेशाके किए विच्छिन्न हो जाया करते हैं। मन्में लोफता हूँ क्या बन्में बरा भी बोर नहीं बयती ? और यही अगर उनके प्रेमका परिणय है तो ये सम्स्ताका गर्व कैसे किया करते हैं ?”

कमलने बोला “बखिमान्, बाहरसे अकबारीमें वह कितना खबर बीकता है, असलमें वह बतना खबर नहीं है। मगर फिर भी मैं तो नहीं कमना करती हूँ कि नर-नारीका यह परिणय ही किसी दिन बयतमें प्रकाश और हवाकी तरह खबर स्वामाधिक बन जाय।

बखिमान् गुस्साप उल्लेखी तरह ताकता रह गया कुछ बोला नहीं। बलके बाद आदिरहतेसे दूरी तरह मुँह केरकर कैरते ही मासूम परी क्यों बचकी भौंभोमें भौंस मर भाये।

आबद कमल ताब मई। उठकर वह फलके सिखाके पास था बैठी और उसके मायेपर हाथ केरने लयी मगर साम्बनाका एक कन्ध भी बसन मुँहसे नहीं निकलका।

सामनेकी खत्री हुई बिकारीसे दिखाई दिया कि पूर्वका भाकास खबर होता था रहा है।

अच्छि वायु, सोनेका जब चापर समय नहीं रहा । ”

नहीं जब उठता हूँ । ” यहकर वह बोध मीठता हुआ उठकर बैठ गया ।

२२

ब्राह्म वायुने चापर अपने पिताताके जाने मी कमी इसउ जयाबाक्य दावा न किया होया कि मे संसारके साधारण आहमियोसे एक हूँ । जैसे शान्ति आनन्दके साथ उन्होंने जल्दी नहीं मारी पैतृक मन-सम्पत्तियो ध्येय किया वा जैसे ही अपने विराट् ब्रह्म-मार भीर उसके साथी वात-रोमको मी साधारण शुद्धके रूपमें स्वीकार कर लिया वा । और इस सक्को उन्होंने तिके बुद्धिसे ही नहीं किन्तु, इतरवसे मी अनुभव किया वा कि संसारके मुक्त-बुद्धि विजाताम केवळ उम्हीको कल्प करके नहीं गये हैं बल्कि मे अपने विममात्रुसार हुआ करते हैं, और इसकी प्राप्तिके लिए मी उन्हें कोई तपस्वा नहीं करनी पड़ी —उनमें यह बात स्वामार्थिक संस्कारके रूपमें आई है । उस दिन जिस दिन कि जाकरिमक श्री-विद्योपकी दुर्पटनसे सारा संसार उनकी दृष्टिमें पीछा और सूखा दिखाई दिया वा जैसे उन्होंने जगन भाग्य-देवताको इबारों दिखातेके अक्षिप्त नहीं किया जैसे ही आज मी जब कि उनकी जन्मन्त स्नेहकी पृथी मनोरमाने उनकी तमाम आराध-कामनाओंमें ब्याग कया ही मे सिर पुन पुनक लेने नहीं बैठे । शीम और शुद्ध भैराव्यके बीच मी उनके मनमें न जाने कौन मानो अस्पन्त परिचित कच्छे बार बार चहता रहा कि यह ऐसा ही होता चहता है, ऐसे बहुत कुछ मनुष्यके माम्ममें बहुत बार आये हैं । ऐसे ही संसार चहता है । इस सुख-नुःखकी परम्परामें कोई नवीनता नहीं है —यह बातही ही स्नातन है त्रिजयी कि सृष्टि । सकलत हुए सोचकी चहरोके चिहने नवीन बनाने और संसारमें उन्हें पैदा देनेमें न तो कोई पीरुच है, और न इसकी कोई अकरत ही है । इसीसे सब तरहके कुछ अपने आप शान्त होकर उनके भीतर चारों तरफ ऐसी एक स्थिर-असहजताकी केशी बना केते हैं कि उसके भीतर पहुँचते ही सबका सब तरहका बोझ मानो अपने आप ही हलका और अचिञ्चकर हो जाता है ।

इसी तरह आज वायुकी सारी अिन्दगी बीठी है । चापरमे आकर अनेक उलट-पेरोके बीच मी वजमें कोई एक नहीं आया; पर इतर कई दिनेसे

इसी किरमका कुछ फर्क-सा जोगोशी निगाहमें आने लगा है। अकरमात देवनेमें आता कि उनके आचरणमें वैदिकी कमी अबिर्वास स्वर्गोपर लगी रहना नहीं चाहती। मात्स्य होता है कि बातचीतमें अकारण ही स्थापन आ जाता है वही तक कि नीकर-बाकरो तकको उनका कोई कोई मन्तव्य तीक्ष्ण और अद्भुत सा सुनाई पड़ता है। पर ऐसा क्यों हो रहा है यह भी सोच निश्चयना मुश्किल है। रोमकी ज्वालातीमें भी उनमें ऐसी विवृति आ आना अबिश्वास्य मात्स्य होता फिर भी अब वे अच्छे हो गये हैं। परन्तु अरण कुछ भी क्यों न हो बरा प्याससे देखा जाय तो मात्स्य होगा कि उनके अन्तस्तरमें मानो आग बक रही है और उसकी चिनमायियों कमी कमी बाहर प्रकट हो जाती हैं।

आज तक उन्होंने धाक-धाक बाहिर तो नहीं किया पर मात्स्य होता है कि अब उनके आचरणमें रहनेके दिन आठम हो गये। सायब बरा और स्वरण दोनोंकी डेर है। उसके बाह्र सहसा जैसे एक दिन बहो आ पहुँचे वे जैसे ही आवाज एक दिन बक दंगे।

सामके बस आबकक बहुतसे पदाबिधारी बंगाली ध्वजम सुनकरत करने और राखी-हरी पुष्पे आ आना करते हैं। उन्नीस मखिलेड साइब राबबहापुर, धररआत्म कोकेककी अप्यापक-मखककी नागा अरणसे को आगरा खेव नहीं सके हैं वे, इरेन्द्र, अकित और बंगाली मुहसकेके वे खेव को आनम्के दिगमें बहुत सा पुकाक-भास आदि आ गये हैं — कोई न कोई गावे ही रहत हैं।

आता नहीं तो सिर्फ अक्षय खे भी इसकिए कि बहो बर है नहीं। महामारीके छक होते ही यह सलीक देस बका गया है और आचर बीपारी धान्त होनेकी लखरकी बाट बैक रहा है। अकक भी नहीं आती। लख दिन को बार्ह भी बसके बाह्र फिर नहीं जाई।

बाह्र बानू मकलिधी आरमी हैं, फिर भी पढ़केकी तरह अब वे मकलिधमें करीब नहीं हो पाते — मीन्ड रहनेपर भी अगमन रुप बैठे रहते हैं। उनकी स्वारप्यहीनताका अयाल करके खेव आनम्के धान उन्ने माधी भी वे बैठे हैं। एक दिन जो अम मनोरमा किया करती नी अब वे रिदवेदार होनेसे बेबकके ही करने पड़ते हैं। अतिथिमें कहीं कोई मुद्रि नहीं होती। बह्रके खेव आकर सिर्फ अक्षय रस ही बैत हैं, और सायब मकलिध आठम होनेपर

परितुष्ट बिलसे इस निरतिमान एहलामीको मन्त्र ही मन बन्दबाद बिल हुए आकर्षके घाब सोचत हैं कि भाव-मयतकी ऐसी बुद्धिबुद्ध्य स्वररया इस बीमार आरामीसे रोक्करा कैसे बन पकती है !

पर, कैसे बन पकती है का इतिहास लिखाच किया ही रह जाता है । नीकिमा सबके सामने निकलती नहीं इसकी ससे भावत भी नहीं और न वह निकलना पसन्द ही करती है । परन्तु परदेकी ओरमें होते हुए भी उसकी भावत इष्टि इस बरमें सर्वत्र प्रतिबन्धन स्थापन रहा करती है । वह इष्टि कैसी निगूड होती है वैसी ही नीरव । निराभोनि प्रबहमान रखवारकी तरह वह निःसम्ब प्रबाह धायद बाह्य बाबूको छोड़कर दूसरा कोई अनुभव भी नहीं कर पाता ।

धीत अनुभव प्रबमार्क बीत बका है, परन्तु फिर भी चाहे किसी भी कारणसे हो, इस सख माहा बलना कबाकेच नहीं पना । कैकिन भाव सरेरेसे ही बोनी बोनी बर्षा हो रही है, और सामके बच तो बूब जोरसे मेह बरसने क्या । ऐसे मेहमें इसकी कोई सम्भावना ही न रही कि बाहरसे कोई आ सकेया । बरकी विद्विन्नी असमयमें ही बन्द कर ही गई हैं और बाह्य बाबू पैरोंत बुसाबा बाके आराम-कुरसीपर पड़े पड़े कोई कियाच फर रहे हैं । बैस्य धावद कुछ निरखिके करण बोक ठडी इस अमागे देखने सभी कुछ ठक्या है । कुछ दिन पहले — पल ना तुम्हारे महीमें बच नहीं आई थी तब बपकि शिष्ट केसरमें ऐसा बबरदस्त हाहाअर मबा हुआ था कि बगेर भीखों देके उसकी करणना भी नहीं की जा सकती । इससे सोचती हूँ कि ऐसे कठोर हृण्ड देखने आरमी ताबमहक बनाने बैठे तो शिष्ट कठमंरीपर ? ”

नीकिमा पास ही एक कुरसीपर बैठी कुछ सी रही थी बगेर भीख उठाने ही उठने कहा “ इसअ करण क्या सभी जान सकते हैं ? सब नहीं जान सकते । ”

देखने सरक बिलसे पुत्र “ क्यों ? ”

नीकिमाने कहा “ तमान बही चीजें आरमीके हाहाअरमेंसे ही पैदा होती हैं, अतएव जो श्रेय संसारके अमोद-अमोदमें ही मगन रहते हैं उन्हें यह स्पष्ट ही कैसे पक सकता है ! ”

उसअ यह बबाव ऐसे अस्मनातीत रूपमें कठोर था कि शिष्ट बैस्य ही नहीं बकि बाह्य बाबू तक आकर्ष-बन्धित हो गये । उन्होंने कियाचपरस मुँह

उठना तो बेका, नीकिमा पूर्वकर सीनेके काममें लगी हुई है। मानो यह बात उसके मुँहसे कहीं निकली ही नहीं।

एक तो बेका कम्बुधिर ली नहीं और दूसरे यह सुविधिता है। उसने बहुत कुछ बेका-मुना है और उमर भी सामान्य फैंटीसके ऊपर पहुँच चुकी है; किन्तु समान-उत्कर्षतासे उसने अपने जीवनके कर्मकाण्डों आब भी पश्चिमकी ओर जाने नहीं दिया है—अबस्मात् ऐसा मानस होता है कि अमर वह बेका ही बना हुआ है। रंग उज्ज्वल है, चेहरेपर एक विचित्र रूप है, पर पौरुषे बेकाकेसे मानस हो जाता है कि कोमलताके अमानने मानो उसे कजा बना रखा है। आँसुकी सृष्टि हास्य-कीटुफते पपल-बेका है, निरन्तर बहते छिरना ही कैसे उचक्य काम है,—किती भी पीठपर रिबर होने काबक न तो उसमें भार है और न उक्त बेकमें कोई बड़ ही। आनन्द-उत्सवमें ही वह कोमली है; सदाया दुःखके बीच का पक्षसे चर-माइकिफते कज्जामें पचना पकता है।

बस बेकाकी सिद्धताका भाव बुर हो गया एक युव-मरके किये मारे कोबके बकाब चेहरा समतमा ठग। पर नाटाब होकर सचका करना उसकी शिक्षा और सीक्यके विचार है, इसकिये उसने अपनेको समझासते हुए कहा, “मुझपर क्यास करकेसे कोई काम नहीं। सिर्फ इसकिये ही नहीं कि यह अनधिकार-बर्षा है गतिक हाहाकार करते छिरना जाहे किठनी नहीं केकी बात क्यों न हो वह मुझसे करते नहीं बनती, और उससे कहीं अनिहता संभव करकेमें भी मैं असमर्थ हूँ। मेरा आराम-सम्मान-ज्ञान बना रहे, उससे बचकर मैं कुछ नहीं चाहती।”

नीकिमा अपने काममें ही लगी रही कुछ बचाव नहीं दिया।

आहू बाबू मीतरसे धुल्ल हो बने से पर इस करते कि बात आने न बदे स्वस्त होकर बोक सडे, “नहीं नहीं, तुमपर कोई क्यास नहीं किया बेका इसमें कोई शक नहीं कि बात समझेंगे साधारण मानसे ही कही है। नीकिमाका स्वभाव तो मुझे मानस है, ऐसा हो ही नहीं सकता, मैं तुमसे कहता हूँ न, ऐसा इतिव नहीं हो सकता।”

बेकने संक्षेपमें सिर्फ इतना ही कहा “न हो वही अच्छा है। इतने दिनसे एक साथ रह रही हूँ। ऐसा तो मैं सोच ही नहीं सकती।”

नीकिमामें ही-ना कुछ भी बचाव नहीं दिया अपने काममें वह ऐसी ठग्य रही मानो उस कण्ड और कोई है ही नहीं। कमरेमें निकडक उजाटा छ गया।

बेकाके जीवनका एक इतिहास है जिसे यही कह देना आवश्यक है। उसके
 पिता बकासतका पेशा करते थे पर अपने पैसों में वे बस या बन होनोंमें कुछ
 भी प्राप्त न कर सके थे। सतक बर्न क्या था कोई भी नहीं जानता; और
 समाजकी दृष्टि में बेका जान तो वे हिन्दू, ब्राह्मण वा किस्ताण किसी समाजको
 मानकर न चलेते थे। बकाकीसे वे बहुत प्यारा प्यार करते थे, और उन्हें
 सामर्थ्यके बाहर खर्च करके उसे शिक्षा देनेकी कोशिश की थी। वह हम पहले
 ही बता चुके हैं कि उनकी यह कोशिश बिल्कुल व्यर्थ नहीं हुई। बेका नाम
 उन्हें अपने हीच्छे रक्खा था। किसी समाजको न माननेपर भी एक बस तो
 उनका अपना था ही। सुदरी और शिक्षिता होनेकी वजहसे बेकाका नाम बस
 अपने सबकी बढानपर बढ गया और इच्छिय उसे बनी पात्र मित्रोंमें भी बैर
 न हुई। वे हाक ही विषयवस्तुसे कानून पास करके बीटे थे। कुछ दिन देख-माका
 और परस्पर मन बिरबाने-बिरबानेका सिद्धिभय कसता रहा उसके बाद कानूनके
 अनुष्ठान उरिस्तरी करके ब्याह हो गया। इस तरह कानूनके प्रति बढ़े अनुष्ठानका
 एक बंध कतम हुआ। दूसरे अंशमें योग-विषय साब साब देख-अमय पूबक-
 पूबक बानुरिभर्तन —बादि ऐसी ही बहुत-सी बातें हुईं। दोनों तरफसे तरह
 तरहकी अप्पाहें सुनी गईं, परन्तु उनकी आत्मेचना यही अपासंगिक होगी।
 कैदिय सगमें वो अंश प्राप्तिक वा वह हीन ही प्रकृत हो गया। बर-पक्ष
 हाथों-हाथ पक्ष मया और कम्पा-पक्ष विवाह-विच्छेदका मामला बायर करनेकी
 सोचने लगा। मित्र-मण्डलीमें आपसमें समझौता करनेकी कोशिश हुई, किन्तु
 सिद्धिता बेका बर-नारीके समापनबिछार-उत्पत्ती सबसे बड़ी पक्ष थी। सिद्धाका
 उसने इस अस्मानके प्रस्तावपर कटई भ्याव नहीं लिया। प्रति बेचारा बरित्रीकी
 दृष्टिसे जाहे बेसा भी हो, बाहमीके सिद्धाकसे बुरा नहीं था; जीको यह शक्ति
 और सामर्थ्यके मादिक प्यार ही करता था। उसने सर्मेके साथ अपना कसूर
 संवर करके अनाकतकी दुर्गतिसे कुटुम्बारा पामेके किय हाव जोइकर समा-चारना
 की पर बीने क्षमा नहीं की। अन्तमें बने हुःकपूर्ण संघसे प्रकृत हुआ। एकमुष्ठा
 नगद और कामे-पहवनेके किय मादिक खर्च देना कसूर करके उसने किसी तरह
 मामकेसे अपना पिन्ड सुझावा। और इबर दाम्पत्य-मुदमें निबन पाकर बेका
 मम स्वाल्पकी धरम्मतके किय सिम्बा, मसुरी नैपी बादि पार्वर प्रवेष्टोंमें
 र्पके साथ घर करने चक ही। उस बातको भाव क्यमग कह-सात साक हो

पडे । इसके येके ही दिन बाद उसके पिताका खेदान्त हो गया । इस मामलेमें उबकी राव नहीं थी बल्कि इससे वे असन्त ममाइत भी हुए थे । बाबू बाबूकी स्वामीया पत्नीके साथ उमका कोई दुका रिश्ता था और उसी सम्बन्धसे केस बाबू बाबूकी भी रिश्तेदार थी । उसके प्याहमें भी बाबू बाबू निमन्त्रित होकर पडे थे और उसके पतिसे भी परिचित होबेका उन्हें मौका मिला था । इस तरह कई रिश्तोंके सिद्धांतोंमें केस आगरा आई थी; न विस्तृत पैर होकर आई थी और न निराश्रित होकर ही । दुकानमें इसी जगह भीकिमाने का उमका धरती अन्तर था ।

फिर भी हाकत इससे विस्तृत सञ्चयी हो गई थी । इस विषयमें कि इस करमें किस्का कौन स्थान है करके किसी व्यक्तिसे रच-मात्र भी सम्बन्ध न था । पर उमका हेतु ऐसा अज्ञान था कर्तव्य भी वैसा ही अनिश्चारी था ।

बहुत देर तक मौन रहकर केसहीने पहले बात की कहा यह मैं मामती हूँ कि साफ साफ कुछ नहीं कहा पर इस विषयमें मुझे जरा भी सम्बन्ध नहीं कि मुझे विचारनेके लिए ही भीकिमाने ऐसी बात कही है । ”

बाबू बाबूके मनम गो कायक सम्बन्ध न था फिर भी विस्मयके स्वरमें उन्होंने पूछा “ विचार ! विचार किस लिए केस ? ”

केसने कहा आपसे तो सब कुछ माहसूस है । जिनका करनेबाकोशी उस दिन भी कमी नहीं थी और आज भी नहीं है । परन्तु अपने सम्मानकी — सम्पूर्ण नारी-जातिके सम्मानकी रक्षाके लिए उस दिन भी मैंने किसीकी परवाह नहीं की और आज भी नहीं करूँगी । मैं अपनी इज्जत-जावरु कोकर पतिकी बर-रहसकी चकाकेसे राखी नहीं हुई थी इसलिये उस दिन स्थानि-प्रचारका काम सबसे बड़कर जिनमें ही किया था, और आज भी उनकी हाकसे निस्तार पाना मेरे लिए सबसे कठिन हो रहा है । मगर मैंने अपने अशुचित कर्म नहीं किया इसलिये उस दिन भी जैसे मैं नहीं करी आज भी उसी तरह विचार हूँ । अपनी निवैद्य-बुद्धिके आगे मैं विस्तृत बोधी हूँ । ”

भीकिमाने सिमाईपरसे बोली नहीं उठई, किन्तु बाहिरसेसे कहा एक दिन कमल का रही थी कि निवैद्य-बुद्धि ही संसारमें सबसे बड़ी चीज नहीं है । निवैद्यकी बुद्धाई केनेसे ही धमस्त कठिन-अशुचितकी भीमांसा नहीं हो जाती । ”

बाबू बाबूने जाकरमें जाकर कहा “ यह क्वती है क्या । ”

नीतिमानने कहा " हाँ । क्यती हैं कि वह वा सिर्फ़ मूखोंके हाथका बख है । बाले-बीछे दोनों तरफ बखबा वा सखता है —उसका कोई ठीक-ठिकना नहीं ।"

आसु बाबूने कहा " जो कहती है, उसे कहने दो; पर ऐसी बात तुम अपने मुँहसे न निकालो नीतिमा ।"

बैकाने कहा "इतने बड़े दुस्साहसकी बात तो मैंने कभी सुनी ही नहीं ।"

आसु बाबू सन-भर मौन रखकर बीरे-बीरे कहने लगे, "दुस्साहस तो है ही । उसके साहसका अन्त नहीं । वह अपने निममपर कसती है उसकी सब बातें न सब समय समझमें आती हैं और न माली ही वा सखती हैं ।"

बैकाने कहा "अपने निममपर तो मैं भी कसती हूँ आसु बाबू । इसीसे बाबूजीकी भी यगाही न मान सखी । मैंने पतिको त्याग दिया, पर तिर न सुख सखी ।"

आसु बाबूने कहा "इसमें एक नहीं कि वह गहरे पयात्ताकत्र विषय है परन्तु तुम्हारे पिताके सम्मति न देनेपर भी मुझसे तो बिना दिये रहा नहीं गया ।"

बैकाने कहा "बैक्स (अबम्बवार) तो मुझे याद है आसु बाबू ।"

आसु बाबू बोले "उसकी बख बी । श्री-गुरुयके समान हाकिम और समान अन्धिकारपर मैं पूरा विश्वास करता हूँ । हमारे हिन्दू समाजमें एक बडा मारी बोव बह है कि छी छी अपराध करनेपर भी पतिको न्याय-विचार वा दण्डका डर नहीं और तुम्हसे तुम्ह बोवपर बीको दण्ड देनेके हबारों मार्ग सके हुए हैं । इस व्यवस्थाके मैं एक दिनके किय भी उचित नहीं मान सख । इसीसे बैकाने फिटाने बख मेरे पास एक आगमेके किय बिट्टी किखी बी तब मैंने उत्तरमें बही बात कही थी कि हाकी बह कोई सोमाकी बात नहीं और न मुझकी ही परन्तु वह अगर अपने अखरिज पतिको सबसुख ही त्याग देना चाहती है, तो उसे मैं अनुचित क्यकर मना नहीं कर सखता ।"

नीतिमानि अहभिम विस्ववसे बीका उठाकर प्रश्न किया "आपने सबसुख बही बात बवाबमे किखी थी ?"

सबसुख नहीं तो क्या ?"

नीतिमा लज्ज हो रही ।

उस निस्तब्धतामें आसु बाबूके न जाने कैसी एक प्रखरकी अशान्ति-सी माख्य होने लगी । उन्होंने कहा "इसमें आश्चर्य करनेकी तो ऐसी कोई बात नहीं नीतिमा । बलि न किखना ही मेरी तरफसे अनुचित होता ।"

द्विज बारा ठहरकर कहा, "तुम सब भी तो कमजोरी नहीं मन्त्र हो बताओ यह सब ऐसी हाकटमें क्या करती। क्या बचाव देती। इसीसे तो उस दिन सब केससे उसका परिचय करना था तब इस बातपर देने कोर दिया था कि कमक तुम्हारी तरह विचार करने और तुम्हारी तरह साहसका परिचय देनेमें इसे सिर्फ एक ही कफकीको देखा है, और यह है यह केस।"

नीकिमाने बोले, "उसका क्यासे मर आई। बोली " यह बेवारी सिद्ध समाजसे बाहर — यही तक कि बस्तीके बाहर नहीं हुई है। उसे आप क्यों क्यों करती है ?"

बाबू बाबू व्यस्त हो सते बोले " नहीं नहीं बस्तीकेकी बात नहीं नीकिमा, यह तो सिर्फ एक बदाहरण देना है। "

नीकिमाने कहा " यही तो करतीना है। अभी अभी आपने कहा था कि बस्ती सब बाँटे सब समय समयमें भी नहीं जाती और न मानी हो या सफ़टी है। — माना कुछ नहीं या सफ़टा सिर्फ बदाहरण ही दिया था सफ़टा है। "

बाबू बाबूको अपनी बातमें दोषकी कोई बात नजर नहीं आ रही थी। वे चुपक करके बोले, " किन्ती भी बचकसे हो आज तुम्हारा मन बाँट बहूत ही बसलव हो रहा है। इस समय किन्ती विषयकी आलोचना करना ठीक नहीं। "

नीकिमाने इस बातपर प्यास नहीं दिया यह बोल उठी " उस दिन आपने इसके विहाइ-विचोदमें अपनी राय दी थी और आज बिना किसी औपेयके कमजोरी हठात दे रहे हैं। हमनी-सी हाकटमें कमक क्या करती सो तो नहीं जाने; मगर इसके हठातका वास्तवमें अनुसरण करनेके लिए आज हमने कुर्सी-मजदुरोंके कपड़े ही करके अपनी पुत्र करनी पकटी — सो भी साबह हमेबा नहीं करते। कमक और चाहे जो करती पर जिस पतिसे यह कमजोरी बचाकर बचासे जोड़ देती उठीकि दिने हुए भवक्य प्राप्त मुँहमें बेकर और उठीके दिने कमजोरी आक बचाकर हरमित्र न जीना चाहती। जन्मेको इतनी छोटी या जोड़ी बगानेके पहले यह आत्म-हत्या करके मर जाती। "

बाबू बाबू क्या बचा देते ? वे तो भावाभिष्ट से हो रहे, और केस ठीक बजाहलकी भीति निबध हो रही। नीकिमाने दिन रूसी-मजदुरों ही कर जाते हैं, सबक मुँह टाकना ही मानो उलक्य काम है दोनोमिसे कोई भी इस बातको क्यासे न या सफ़ कि यह उरुसा इस तरह निर्भय हो सफ़टी है।

वीक्षिमा क्षण-भर स्थिर रहकर फिर बोली आप स्वेगोष्ठी मन्त्रकर्ममें मैं नहीं बैठती। केवल कोपोंको लेकर जो सब तरहकी आत्मेचनाएँ हुआ करती हैं वे मेरे कर्णों तक पहुँच जाती हैं। नहीं तो शायद मैं कोई बात कहती भी नहीं। कमलने एक दिनके लिए भी शिवनाथकी निन्दा नहीं की एक भी आदमीके भावो बरना बुझा नहीं रोना—क्यों जानते हैं।”

आशु बाबूने निम्नकी मूर्ति पूजा, “क्यों।”

वीक्षिमाने कहा “क्यों सो कहना व्यर्थ है। आप जोब समझ नहीं सकते।” फिर जरा ऊँहकर कहा “आशु बाबू वह एक अत्यन्त मोदी बात है कि प्रति-श्रीकृष्ण अविष्कार समान है मगर इसके मायी यह न सोचिएगा कि श्री होकर किशोरी तरहसे इस शिवेश्वर में प्रतिवाद कर रही हैं। प्रतिवाद में नहीं करती मैं जानती हूँ कि वह सत्य है मगर साथ ही वह भी जानती हूँ कि सत्य सत्य विद्याकाशके एक सत्य-निष्ठाही मित्रोदने नर-नारीके मुँहके द्वारा और तरह तरहके आन्दोलनोंसे उस सत्यको ऐसा गम्या कर दिया है कि आज उसे मिथ्या करनेको ही भी चाहता है। आज मेरी हाथ जोड़के प्रार्थना है कि उसके साथ मित्र कर आप कमलके विषयमें कोई बर्षा न फिना करें।”

आशु बाबूने जवाब देना चाहा पर उसके मुँह बहनेके पहले ही वह सिनारिणी की ओं केकर नीतर चली गई।

तब सुख्य विश्वकसे एक लम्बी लसीत केकर आशु बाबू टिंक यह कहकर रह पये “उसने कब क्या सुना है माहस नहों पर मेरे विषयमें वह बिलकुल अमस होपारोप है।”

बाहर कुछ बैरक लिए बर्षा रुक गई थी किन्तु ऊपरके मेवाच्छल आकाशने बरके भीतर असमकमें अन्धकार फैला दिया। नीकर जब बत्ती जल गया तब आशु बाबूने फिर एक बार पुस्तक उठकर आसोंके सामने रखा थी। पर ऊपेके अक्षरोंमें मन क्याना सम्भव न था और इधर बेकाके साथ आमने-सामने बैठकर बातचीत करना और भी असम्भव मान्य दिना।

इतनेमें मगवाने बसा थी। एक ही क्षरीमें उरते भर बरकमबकक करते हुए कम्पूक्यवाठी हरेन्द्र-अशित औषधी तरह कमरेमें जा कुसे। दोनों बने आगे आगे भीम चुक ये। हरेन्द्र बोळ “मामी क्यों हैं।”

आशु बाबूके मानो बौद हाथ लगा बना। उनको निन्दास नहीं था कि

बागके दिन कोई जायेगा। साम्राज्य ठठके बैठ गये और स्वागतके स्वरमें बोले आओ अग्रिम बैठे हरेन्द्र—

“बठ्ठा हूँ। मामी क्यों हैं।”

“ओह! दोनोंके दोनों अब मीने माझस होते हो।”

“जी हों वे हैं क्यों।”

कुसमाता हूँ। कहके आहु बानूपे ज्यों ही पुष्करमेका रक्षोग किया कि मीतरसे परदा हटाती हुई नीलिमा स्वयं ही बाहर निकल आई। उसके हाथमें दो मोतियों और एक झुरता था।

अभिनेने कहा वह क्या है ज्ञाप ज्योतिष मी जानती हूँ क्या।

नीलिमाने कहा “ज्योतिष जाननेकी बहरत नहीं आजायी किशकीसे ही देखा किया था। एक टूटी छतरीमें जिस तरह एक बुनरीकी लकड़ीका पनाक रखते हुए तुम दोनों बसे आ रहे थे उसे एक मि ही क्यों जानकर बाहरमरके ज्योतिष देखा होया।”

आहु बानूने कहा एक छतरीमें दो दो बने। तभी तो दोनोंको मीजना पका है। और वे हैंच दिये।

नीलिमाने कहा शानक दोनों बने समानाधिकार-तत्पर विश्वास करते हैं, ज्ञाप्य नहीं करते—इसीसे छतरीका ठीक ठीक बैठनारा करके रास्ता चक रहे थे। तो आजायी करने बरक ज्ये।” करते हुए उसने कन्ने हरेन्द्रके हाथमें दे दिये।

आहु बानू पुन रहे। हरेन्द्रने कहा “मोतियाँ तो दो वे ही कैबिन झुरता एक ही है।”

“झुरता बहुत बका है छत्रकी एकसे ही ज्ञाप चक जानया।” कहकर वह जम्मौर बगके पादकी कुरसीपर बैठ गई।

हरेन्द्रने कहा “झुरता आहु बानूका है सिद्धावा इसमें दो ही क्यों और बार बने समा सकते हैं, मगर तब इसे मसहरीकी तरह छत्रकाना पड़ेगा यह पढ़ना नहीं आ सकेगा।”

द्वेष जब तक विरल-सुबसे पुनयाप बैठी थी, ईसी रोक न सकनेके कारण बाहर उठके चली गई और नीलिमा किशकीके बाहर देखती हुई पुन बैठी रही।

आहु बानू लय-नाम्मीनके बाव करने को “मीमारीमें पका पका सूबके जाभा रह गया हूँ हरेन्द्र, जब तुम ज्येप दोको मत। देखते नहीं औरतोंके

कैसा बुरा मास्स हुआ एक तो उठक बाहर पसी गई और एक्के मारे गुस्सेके
सुँह फेर लिया । ”

हरेन्द्रने कहा “ येक-टाकी बड़ी की आगु बानू, बिराडकी मझिमा मारि है ।
येक-टाकीका दुष्यमाव तो सिङ्ग हमारे केटी नर-बानिको ही बिपत्तिमे बस
लकटा है, आप खेगोखे पू भी नहीं सकटा । अउएव बिरस्स्यमान हिमासबके
फमान बह देह बहस्य बयी रहे, जिवी मिशक हो और मेह-यानीक बहाने
समाप्त बनोके मानवमे जो देनखिन मिश्राबासि बदा है उसमें आब भी रंबमात्र
कमी न हो । ”

नीकिमाने इपर सुँह उठया और हँस दी । “ बड़ोका लुठियाण तो बनानि-
करके कहा था रहा है छोटे देवरकी, बही निर्दिष्ट बारा है और उधमें तुम
सिखइस्त हो, पर आब करा बिबममें अतिक्रम करना पड़ेगा आब खेगोकी
कुलमत बदेर किने इतर बनोके मानवमे मिश्राबासी बयह खेण सुँह पड़ेगा । ”

देख बरामदेसे खैटकर भीतर आ बैठी ।

हरेन्द्रने पूछा “ क्यों मामी ! ”

यम्मीर स्नेहसे नीकिमानकी जीबे भर नारि बोली पृथी मीठी बात बहुत
रिबोसि सुनी बही है भाई इहीसे सुननेको बी हुमाठा है । ”

तो हक कर हँसना । ”

“ अक्का कमी पड़े हो । पढ़े तुम खेग उध क्योमें जाकर कपके बरक
खे में कुरता मेले पती हूँ । ”

“ मगर कपके बरक कुन्नेके बर । फिर क्या होगा । ”

नीकिमाने हँसते हुए कहा “ फिर खेसिख करके देखीकी कि इतर बनोके
मानवके अबर खसि खाने-पीनेको कुछ लुटा लूँ । ”

हरेन्द्रने कहा, एककीक उठके खेसिख करनकी अकरत न पड़ेगी मामी
सिर्ई एक बार जीब खेकके देख-भर खीकिपना । आपकी अकपूर्वाकी-सी हडि
उहाँ बड़ेकी, बही अलका माण्डार निकल पड़ेगा । खेके अशित अब खेरे
किकरकी बात बही हम खेय एव मीगे कपके बरक आवे । ” अइकर अशितको
बह हल पड़के बपलके क्योमें खीब ले बना ।

२३

अशितने कहा " पानी बमनेध तो कोई खज्ज नहीं दिखाई देता ? "

हरेन्द्रने कहा नहीं । दिखावा फिर हम दोनोंको उठी टूटी छतरीमें सिरसे सिर मिठाकर समानाधिधर तरबची सज्जता प्रमाहित करते हुए अन्धधरमारकीं बस देना और अन्तमें आभय पहुँच जाना बाह्य । अथवा ही उसके बाह्ये चिन्ता नहीं रही,—उसे नहीं पूरा कर चुके हैं, दिखावा, फिरसे एक बार भीगे करके बदलना और सो जाना रह बासना । "

आज बालू ब्यग्र होकर बोले तो फिर तुम ज्येथेने फेट मारके ही क्यों नहीं बीस चिन्ता ? "

हरेन्द्र कह उठ नहीं नहीं रहने हीजिए,—इससे क्या हुआ—आप इसके सिव कोरे चिन्ता न करें । "

नीकिमा पहले तो बिच्छिबिच्छकर हँस पकी, उसके बाए बिच्छनतके स्वरमें बोली अन्धबी क्यों बो ही रोगी आदमीकी स्वाकुलता बस रहे हो । " फिर आवा बालूसे बोली " ये अन्धबी आदमी उधरे बैरामीगीरीमें फेले हो गये हैं—दिखावा जाने-थिनेकी तरह इनकी बुद्धि किसीके नजर नहीं आ सकती । ही अशित बालूके सिवें अरु सोच है । इनका आन्ध्र जाना देखकर समझा जा सकता है कि ऐसे संभ्रमें भी वे अन्धी एक नहीं पाये हैं । "

हरेन्द्रने कहा " मायद मभमें पाप होया इससे । फन्ने तो आर्येगी ही किसी न किसी दिन । "

अशितका चेहरा मारे अरमक मुर्ख हो उठा बोला ' आप न जाने क्या कह रहे हैं हरेन्द्र बालू । "

नीकिमा अन्ध-भर हरेन्द्रके मुँहकी तरह देखती रही और बोली ' तुम्हारे मुँहपर फूक-धमन पके अन्धबी ऐसा ही हो उनके मनमें बोझ-बहुत पाप थे और किसी दिन पकने बायें तो मैं अन्धीकठ अरु उच्छ पूज्य वे जाऊँ । "

" तो फिर ठेकारिबीं करवा हूक कर हीजिए । "

अशित बहुत ही नाराज हो गया बोला आप क्या बाह्येयत बस रहे हैं हरेन्द्र बालू—कहा महा माक्षम होता है । "

हरेन्द्रने फिर कुछ नहीं कहा । अशितके मुँहकी तरह देखकर नीकिमाका अन्ध एक वीक्षण हो उठ पर वह भी चुप रही ।

इसके कुछ देर बाद हरेन्द्रने नीळिमाको बहल करके कहा " हमारे आभंगर कर्मक बहुत नाराज हैं । आपको स्वयम् याद होना मानी ? "

नीळिमाने फिर झिझकते हुए कहा " हाँ है । अब भी उनका वही रव है क्या ? "

हरेन्द्रने कहा " वही रव नहीं बल्कि उससे भी बरा बड़ गया है,—इतना बड़ है । " फिर बोला " और सिर्फ़ हम ही खेतोंपर नहीं सब तरफ़ों पर धार्मिक संस्थाओंपर सबका आत्यंतिक अनुराग है । चाहे महाधर्मको के स्वीकार चाहे वैराग्यकी बात कीजिये; वा ईश्वरकी चर्चा कीजिए, सुनते ही अद्भुत भक्ति और प्रीतिकी बहुलतासे वे अभिभूत हो उठती हैं । और मित्राज अनुकूल हो तो वृद्धों और बरबोकि बेटोंमें भी अतृप्तका आनन्द केनेमें वे अत्यर्थ नहीं । कमान ही छुमसिए । "

बेवक्य पुर बैठी सुन रही थी बोल उठी " ईश्वर भी उनके सिद्ध बरबोका बोल है और आप इन्हींके साथ मेरी तुम्हना कर रहे थे आजु वार् ? " इतना बड़ाकर उसने एक तरफ़से सबके मुँहकी ओर देखा पर किसीकी तरफ़से कोई उत्तराह नहीं मिला । उतकच रव स्वर किन्तुकि कान तक पहुँचा ना नहीं सो भी ठीक समझमें नहीं आया ।

हरेन्द्र बड़ने लमा " और मया यह कि उनके अपने अन्दर एक ऐसा निह्मद संकम नीरव मित्राचार और निरालक तितित्या है कि देखके आन्यर्थ होता है । नाचको मित्रनाचका सम्मका तो याद होगा आजु वार् ? यह हम अत्येका हीन वा ? फिर भी इतना बड़ा अन्याय हमसे उदा नहीं गया और एक स्नेही आकांक्षासे हमारे मनके भीतर आग जळ उठी । पर कमकने कहा " नहीं । " इसका उस निरव बेहय मुझे स्पष्ट वार् है । उसकी नहीं में निह्वेय नहीं वा बळन नहीं दी क्यारसे हाथ बड़ाकर दान देनकी खाया नहीं थी और कमानका रम्य भी नहीं वा —इसका हाकेक्य मान्ये अविवल बड़वासे मरा हुआ वा । मित्रनाचने चाहे जितना ही बड़ा अन्याय क्यों न किया हो फिर भी मेरे प्रस्तावपर कमकने बीचकर सिर्फ़ नहीं कहा— सिः सिः—नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता । बर्बात एक दिन सिधे उसने प्यार किया है उसके प्रति निर्ममकाकी मुण्णताकी यह कम्पना ही न का सुधी और सपकी निगाहके अंगुल उसके सब दोष पुरेसे निकलून पोंडकर देक दिये । उसमें न कोई कोटिप ही न बधकटा थी और न अंधाधुन हवाकारका कोई याव वा —

उसे ही दुःख देना । हुआथ्य समस्वाची आज माओ अन्तिम मीमांसा हो गई । इनकासे नहीं कह कर बराबर वह भी अस्वीकार ही करती आई है, और आज भी उसमें व्यतिरिक्त नहीं हुआ किन्तु वह अन्तिम नहीं' आज आई उकटी तरफसे । उस जीने इतनी स्थिति में भी कमना नहीं थी कि दोनों 'नहीं' में इतना अवरुद्ध प्रवेश होगा । पुत्रवोधी स्नेह्य उदिते हमेशा उसे परेशान ही किया है लज्जासे पीडित ही किया है,—भाज ठीक वही दिखाते अमर उसे मुक्ति मिली ही और लीर-धर्मके कारण उसके अस्तप्रान यौवकी अजर पुत्रवोधी बहीत कमना उन्माह और आसक्ति रास्ता पेश दिया हो तो इसमें किञ्चनकी शीघ-सी बात है । मगर फिर भी भर लीवते समय रास्तेमें माओ आज सारा विज्ञ-संगार उसे निःशुद्ध अग्रिष्ठित मूर्ति कारण करके दिखाई देने लगा । भेष नहीं हृदयमें एकान्त मिलनेकी स्वाह्वरता नहीं —वे सब तो वृष्टी बात हैं, वही बातें हैं । किन्तु आजके लक्ष्य उसे इतनी कना अजर भी कि जो वही नहीं जो रूप्य हैं अस्तम हैं अस्तमर हैं, अस्तम अस्तमानी हैं —उन सब कुशिल बातोंके किम् भी उस नातिके अविज्ञात विपत्ते नीचे इतना बड़ा आसन विज्ञ हुआ था । और उनके कारण पुत्रवोधी किमुकता उसे ऐसे निर्मम अस्मानसे आहत कर सकती है । ”

हरेभ्रमे कहा “ अहित करते तो बने कष्टे संगठे हैं । कष्टनीचे सब प्यानसे पना है ।

कियो पुत्रवाप बैठी तिर्क देखती रही कष्टमें कुछ राय आदिर नहीं थी ।

आद्य बन्ने कहा हों । उसके बाद, अहित ।

अहित करने लगा “ फिर उस महिलाओ अचानक कनाक आया कि तिर्क एक ही पुत्र तो उसे कष्टे वाहता था बहुत-से शेष बहुत दिनोंसे उससे भ्रम करते आ रहे थे मार्चना करते आ रहे थे,—उस दिन उसकी जरा-सी सुसखन और सुहृद एक अम्बके किम् उनकी स्वाह्वरताकी हृद न थी । प्रतिदिनके श्लोक पक्षेभमेंसे वे न जाने कहींसे और किठ कधीनको प्रेक्षक वाहर निकल आते थे । पर वे सब भी आज कहीं पये । कहीं भी तो नहीं मये—अप भी तो कभी कभी दिखाई दे जाते हैं । तो कना उसके अपने अस्तमर स्वर निगम गया है । उरुकी हैवीक सब बदल गया है । कभी कभी वह दिनकी बात ही तो है,—दर-अहर्ष को ऐसे कितने दिन हो गये ।—एतनेमें कना अस्तम सब कुछ बीत गया सब कुछ को क्या । ”

आहुत बाबू सहसा बोझ ठठे यमा कुल मी नहीँ अक्षित गवा हो तो सावक
उसका जीवन — उसकी मा होनेकी शक्ति तो पर्य होगी ।”

अक्षित उसकी तरफ देखकर बोझा “ यही बात है । क्वानी आपने
प्यी की ? ”

“ नहीं ।

“ नहीं तो ठीक यही बात आपने कैसे जान की ? ”

आहुत बाबू उत्तरमें सिर्फ़ बरा हैंस दिये बोले “ तुम भागे प्यो । ”

अक्षित कहने लगा पर धीरे-धीरे वह अपने सवनापारमें खूब बड़े आइनेके
सामने बत्ती जलाकर खड़ी हो गई । बाहर जानेकी पोछाक उतारकर रातके सोनेके
कपड़े पहनते पहनते अपनी छायापर आब पड़े-पड़े उसकी नजर पड़ी और
पढ़ते ही एक-एक मागो उसकी दृष्टि ही बदक गई । इस तरह पढ़ा जाये बगैर
आवक अब मी उसे दिखाई न देता कि नारीकी जो सबसे बड़ी सम्पदा है,—
आप किस बटा रहे वे कि उसकी मा होनेकी शक्ति — वह शक्ति आज बिलकुल
निस्तब्ध और म्भाम हो चुकी है; वह आज सुनिश्चित मृत्युके मार्गपर कदम बढ़ाये
खड़ी है । इस जीवनमें अब उसे बायस नहीं समझा जा सकता । उसकी निश्चितन
पढ़के अन्तसे अनिश्चितन अन्त-बाराकी तरह वहकर वह सम्पदा प्रतिदिनकी
सम्पत्तामें अन्त हो चुकी है । यह बात उसे आज इस श्लेष समयमें मालूम हुई कि
इतना बड़ा पेश्वर्य इतना स्वभ्यानु है ! ”

आहुत बाबूने एक पहर ही उठास की और कहा ‘ ऐसा ही होता है अक्षित
ऐसा ही होता है । जीवनकी बहुतेसी बड़ी चीजोंको हम तब पहचान पाते हैं जब
उन्हें खो देते हैं । हाँ फिर ? ”

अक्षित कहने लगा “ फिर उस आइनेके सामने खड़ी खड़ी वह अपने
जीवनान्त पायीरका सुस्तीसुस्ती निश्चयन करती है । एक दिन क्या की और
अब क्या होने का रही है ? मगर उस वर्णनको न मैं कह सकता हूँ और न प्य
ही सकता हूँ । ”

नीकिमा पड़ेकी भीति ही स्पष्ट होकर बोझ ठठी न न न अक्षित बाबू,
उसे रहने दीजिए । उसे छोड़कर भागे द्रिए । ”

अक्षित कहने लगा “ उस महिजने निश्चयनके अन्तमें कहा है कि जिस

तरह नापके वैदिक सौन्दर्यके समान सुन्दर बस्तु इस संसारमें नहीं है, वही तरह इसकी विडम्बितके समान असुन्दर बस्तु भी शायद ही पृथ्वीपर कोई हो।

बाबू बाबूने कहा, ' यह बरा कुछ ज्यादा ही अश्लिल । '

मीकिमाने सिर हिलते हुए प्रतिपाद किया ' नहीं बरा भी ज्यादा ही नहीं है । किन्तु यह सच है । '

बाबू बाबूने कहा ' मगर इसकी जो समर है उसे तो विडम्बितकी समर नहीं कहा जा सकता बीकिमा । '

मीकिमाने कहा " कहा जा सकता है । कारण यह तो कोई सामर्थ्यकी विनतीसे सिवाके शून्यके दियाव नहीं है; इस बातकी और बादे जो मूल भाव पर सिवाके शून्यके कम नहीं बडेगा कि जीवनका आनुभविक अस्पष्ट ही कम है । "

अश्लिल सिर हिलकर और कुछ होता हुआ बोका ठीक वही उत्तर देने के दिना है । कहा है " आशुते समाप्तिकी सेप प्रतीक्षा करते रहना ही होगा अश्लिल जीवनका एकमात्र सत्य । मैं जानती हूँ कि इसमें कोई सामर्थ्य नहीं जानकर नहीं आया नहीं,—फिर भी उपहासकी अन्धासे तो बच ही जाऊँगी । ऐश्वर्यका मम स्तन आज भी शायद किसी असाधारण मन हर सके परन्तु वह सुगमता जैसे उसके लिए विडम्बनाके सिवा कुछ नहीं जैसे ही मेरे लिए भी वह सिखा है, झूठ है । वह मुझसे नहीं होगा कि जिस इच्छा उपसुप्तका प्रयोजन कलम हो चुका है, उसीकी नाता प्रकारसे नाता देहभूयसे समाकर नहीं कि वचन नहीं हुआ ' तथा अपनेकी और वृत्तियोंकी बोका देकर उभरी किने । '

इसपर और किमीने कुछ नहीं कहा सिवा बीकिमा बोले उठी, बहुत सुन्दर है । ये सन्द उसके मुझे बहुत ही सुन्दर को अश्लिल बाबू ।

और उनकी तरह इन्द्र भी वह प्यासे मुन रहा था; वह इस मन्त्रके सच न हुआ बोका " वह आपका भाषाविशेष उक्तान है माभी वह सोच विचारके नहीं कहा आपने । कौनो शक्यपर उमरका पूम भी उसका सुन्दर हीव पकता है, फिर भी पूर्वके दरबारमें उसकी कोई कर नहीं । समर्थकी देह क्या ऐसी सुन्दर थी है कि इसके सिवा उसका और कोई उपयोज ही न हो । "

मीकिमाने कहा " नहीं है, जो तो वैदिकके कहा नहीं । वह आशुते उसे सुन भी थी कि अमलो आपसिकी आपसकता आसानीसे नहीं मिलती । "

फिर बरा हँसकर कहा "जीर उधनकी जो बात कह रहे थे छोटे बाबू, जो अक्षय बाबू मौजूद नहीं थे होते तो समझ जाते कि उधनकी जवाबती किस ओर है।

हरेन्द्रने बबबब बिबा "आप माझी-मझीय करती रहेंगी तो मैं क्या बर्तना छो नहीं होया मामी।"

मुनकर बाबू बह मी बरा हँस दिने बोके "वास्तवमें हरेन्द्र मुझे भी ऐसा कमता है कि इस कथाभीमें देखिबाने किबोके रूपके वास्तविक प्रयोजनकी तरफ ही इशारा किना है।"

"मगर, क्या बड़ी ठीक है!"

"ठीक नहीं वह बात बुनियाती तरफ देखते बबबब बरना कठिन है।"

हरेन्द्र उल्लेखित हो उठा कहने लया "बुनियाती तरफ देखकर आप बाबू कुछ भी बबबब करे मनुष्यकी तरफ देखकर इसे स्वीकार करना मेरे लिए भी कठिन है। मनुष्यका प्रयोजन अमतके साधारण प्रयोजनको पार करके बहुत बुर कया गया है; इसीसे तो उसकी समस्या ऐसी विचित्र ऐसी बुरह होती जा रही है। इसीमें तो उसकी मर्यादा है बाबू, कि बबबबसे छाबकर बड़े अक्षय नहीं किना जा सकना।"

"छो हो सकता है। कथाभीय बाबू बिस्ता क्या है छुनाभी तो अमित।"

हरेन्द्र मुन्ब हो मवा, बाबा देते हुए बोका "छो नहीं होया बाबू। वह मैं नहीं होने हँसा कि इस बातको कुछ समझकर आप बबबब देखेसे बब जावें। या तो मेरी बात स्वीकार कीजिए वा फिर मेरी ककती बिबा कीजिए। आपने बहुत कुछ देखा है, बहुत पका है,—बहुत बने विद्याम् है आप—वह मुझसे नहीं उहा जाबना कि इस अनिर्दिष्ट बीबी-बाकी बातकी सेबसे मामी जीत जावें। बहिए।"

बाबू बाबू हँसत हुए बोके "तुम बबबबकी जावमी उदरे,—इन्के विनि-बनमें हार भी जाओ तो इसमें तुम्हारे किए कजाकी कोई बात नहीं हरेन्द्र।" नहीं तो मैं नहीं सुनेया।"

बाबू बाबू बबब-मर चुप रहे फिर बीरे बीरे बोके, "तुम्हारी बातको अग्रमाथिन उदरानेके लिए कमर बाँधकर बहत करनेमें मुझे धर्म जाती है। वास्तवमें बही अक्या है कि नाटीके रूपका निगूड बर्ब अपरिच्छुड ही रहे।

फिर जरा चुप रहकर बोले “ अश्विनी क्हाणी सुनते सुनते मुझे बहुत दिन पहलेकी एक दुकानकी क्हाणी याद आ रही थी। बचपनमें मेरे एक मित्र (ने) ने एक पोमिष्ठ लीको प्यार करत थे। उनकी बहुत ही सुन्दर थी; छात्रावर्गके पियानो सिखाकर जीविद्य बघाठी थी। सिर्फ रूपमें ही नहीं बनेक गुणोंसे गुणवती भी थी। हम सभी उनकी छुम कामना करते थे और निश्चित जानते थे कि उनक विवाहमें कहीं भी कोई विघ्न न आयेगा।

अश्विनी पुछ “ विघ्न कैसे आया ? ”

आशु बाबूने कहा “ सिर्फ उमरकी बातपर। देखते एक दिन उसकी मा आ पहुँची। उसीके मुँहसे बातों ही बातोंमें अनजानक फटा बगा कि उसकी उमर पैंतीस पार कर चुकी है।’

सुनकर सब चौंक पड़े। अश्विनी पुछ “ उस महिलाके क्या आप स्नेहोंसे अपनी उमर छिपाई थी ? ”

आशु बाबूने कहा “ नहीं। मेरा विश्वास है कि पुछनेपर वह छिपाती नहीं—उसकी ऐसी प्रकृति ही न थी—मगर पुछनेकी बात किसी प्यालमें ही न आई। उसकी देखकी गठन देखी थी—देखेकी ऐसी सुन्दर भी थी और ऐसा मधुर स्वरुप वा कि कभी किसीके आर्षक ही न हुई कि उसकी उमर तीसरी ज्यादा हो सकती है।’

देखने कहा “ आश्चर्य है। आप स्नेहोंसे किसीके क्या आँख ही न थी ? ”

“ बी कबो नहीं। मगर हुनिवाके सभी आश्चर्य आँखोंसे नहीं पकड़ बा सकते। इसे उसीके एक छान्त समझो। ”

“ और उस आश्चर्यकी उमर क्या थी ? ”

“ वह मेरी ही उमरक था—तब शायद अठ्ठास-उन्तीसके ज्यादा न होमी उसकी उमर। ”

“ फिर ? ”

आशु बाबूने कहा “ फिरकी क्हाणी अत्यन्त संक्षिप्त है। उस कुनकका सारा इत्त एक ही क्षणमें उस प्रीता रमणीके सिद्ध मानो पावाच बन गया। उस बातको जमाना बीत गया पर आज भी खयाल करता हूँ तो मनमें एक तरहकी डीस उठती है। कितने आँख, कितनी हाव हाव कितना जान-जाना कितना मना-मना—रिझना होता रहा; पर उसके मनसे उस अक्षरको जरा भी

हिस्सा-मुल्कावा नहीं आ सख। हम बातके आगे वह और कुछ सोच ही न सक कि वह क्या असम्भव है।”

आप-भर मनी खुश रहे। बीधिमामे पूछ “मगर बात इससे ठीक कम्पटी होती तो शास्त्र असम्भव न होता।”

सायद न होता।”

पर ऐसा क्या कया उस कैसमें एक भी नहीं होता। ऐसे पुस्तक क्या बर्ही हैं ही नहीं।”

आपु बाबून हैंसते हुए जवाब दिया “हैं क्यों नहीं। इस कहानीकी कैलिकामे सायद आम तौरसे ऐसे ही पुस्तकोंके बरन करके अभाये बिद्यमान प्रयोग किया है। कैलिन अब रात तो बहुत हो गई अन्ध, इमका अन्त क्या है।

अन्धन बीककर कमठी ओर देखा और कहा मैं आपकी ही बहालीके लाल सोच रहा था। इतना प्रेम होत हुए क्यों वह उसे प्रख नहीं कर सक। इतनी बड़ी मल्य वस्तु फिरसे कसे एक कममें छुपे हो गईं।—बिन्दु-भर सायद वह महिषा मही सोचती रही होगी एक दिन बिन दिन में नारी बी। इसके पहले शास्त्र उस विपतकीबना नारीमे कमी हम बातकी किन्ता भी न की होमी कि नारीकी वारणिक समाधि नारीके बिना जाने ही कम और कैसे हो कम्पटी है।”

कैलिन तुम्हारी कहानीका दोप।”

अन्ध शास्त्र मास बोस “रहने हीबिप। बीकनका वह दोप अभी तक निज्सेप नहीं हुआ—अन और इमके आगे बियेकी इस प्रकारकी कदम-कहानीके साथ क्यामी खत्म होती है। अब आम रहने हीबिप, फिर किसी दिन मुनाईमा।”

बीधिमामे फिर हितात हुए कहा “नहीं नहीं इससे तो बन्ध कसे अकमात ही रहने हीबिप।”

आपु बाबूनो मी होंमि हों मिष ही बेरनाके साथ बोके “वारणमें बियेके सिप यही समन निरुप औरन होनेके कारण सबसे बुरा हवा है। इसीसे सायद असादिपु, कम्पटी, पर-सिधाम्नेयी—यहाँ तक कि बिपुल होकर सब देवके पुत्र इन अविशदिता मीदा बियेके बन्धक बनना चाहते हैं बीधिमामे।”

नीलिमाने हँसकर कहा " देखा क्याना ठीक नहीं आया बाबू, बसिक बो कहिए कि तुम बेसी प्रति-पुत्रहीना अमायी शिवोंसे बचकर बचना चाहत हैं । "

आष्ट बाबूने इसका कोई जवाब नहीं दिया पर हठारोके स्वीकार कर लिया । बोके " पर मजा तो यह है कि जो प्रति-पुत्रसे सीमात्मकटी हैं, वे स्नेह-प्रेम और सौन्दर्य-मातृत्वसे ऐसी परिपूर्ण हो उठती हैं कि बन्ने पता भी नहीं क्या पाता कि जीवनका इतना-बड़ा संकट-काल क्या और किस रास्तेसे निकल गया । "

नीलिमाने कहा " उन माम्बवतियोंसे मैं बाह नहीं करती आष्ट बाबू ऐसी प्रेरणा आज तक मनमें कभी नहीं आई पर माम्बके दोषसे जो हमारी तरह मस्किप्यकी सारी आशाओंको बरबादकि दे चुकी हैं, बता सकते हैं कि उनके मार्गध भिर्वेच किस तरफ है । "

आष्ट बाबू कुछ बेर तक तो लाल्य हुए बैठे रहे फिर बोके " इतके अवायमें मैं सिर्फे बड़ोंकी बातकी प्रतिबन्धि मात्र कर सकता हूँ नीलिमा उधसे जवादा मुझमें क्या नहीं । वे कह गये हैं कि ब्रह्मोंके किए अपनेको उत्सर्ग कर देना चाहिए । संसारमें न तो कुछकथ ही अभाव है और न आत्मनिर्देशके दृष्टा-न्तोका अछान्ना है । यह सब मैं भी जानता हूँ,—परन्तु ऐसे में आज तक विश्वास्य होकर नहीं जान पाया कि इसकें नीतर बाँधे सबकुछका भिरवट्टक क्याकामम आनन्द है या नहीं । "

हरेन्द्रने पूछा " यह संवेद क्या आत्मके द्वारे ही बा ? "

आष्ट बाबू मन ही मन कुछ कुर्वन्त-सी हुए, बरा उबरकर बोके " ठीक बाबू नहीं पकता हरेन्द्र । मनोरमाको गये सब दो-तीन दिन हुए होंगे । मन बोसिक या और सरीर बिना । इसी इरसीपर सुपचाप पका बा अचानक देखा कि कमक आ पहुँची है । बाहरसे दुकाके उधे पास बिठाना । मेरी मन्याकी बगलको सावधानीसे बचाते हुए उधने निकल नी जाना चाहा पर वह निकल नहीं पायी । बाटो ही बाटोमें कुछ ऐसा प्रयंन उठ सका हुआ कि फिर उधे कुछ होच ही न रहा । तुम जेग तो उधे बालते ही हो जो भी कुछ प्राचीन है उसपर उधे बेसी प्रबल किरुणा है । उधे अकसोरकर ठोक बालना ही मजो उरका वैचन (उरकट इरक) है । मन जवाही नहीं देना चाहता हमेशाक संस्कार मारे बरके सिद्ध बाता है । फिर भी जवाब हूँने नहीं निकता और हार माननी पकती है । याद है, उध दिन भी मैंने उधकें सामने शिवोंके आलोत्सर्गक उठेक किया बा मपर उधने उधे संबर ही नहीं किया । कइने कभी शिवोंकी ज्ञात में

आपसे पचाहा जानती हूँ। वह प्रकृति बनने है तो पर वह बनके भीतरकी पूर्णतासे नहीं आती जाती है सिर्फ़ शून्यतासे भीतर बढती है हृदय काभी करके। वह तो स्वभाव नहीं अभाव है और अभावक आत्मोत्सर्गपर मैं धरती-कीहीन भी विश्वास नहीं करती। मेरी तो समझमें ही न आता कि इसका क्या अभाव है, फिर भी मैंने कहा कमल हिन्दू सम्प्रदायी मूक वस्तुसे तुम्हारा परिचय होता तो आज शानद तुम्हें मैं समझा देता कि त्याग और निःसर्बनकी सीखाने सिद्धि प्राप्त करना ही हमारी सबसे बड़ी सफलता है और इसी मार्गका अवलम्बन कर हमारी कितनी ही शिवाया जियो जीवनकी सर्वोत्तम सार्थकता अनुभव कर पाई हैं। इसपर कमल इसपर बोली करते हुए बेका है आपने। एकमात्र नाम तो बताइए। मुझे नहीं माफ़स वा कि वह ऐसा प्रश्न कर बैठेगी बल्कि मैंने तो यह सोचा वा कि शायद वह बातको मान लेगी। मैं बड़े बहुरमें पढ़ गया—”

गीतिम्मा बोळ बठी यह। आपने मेरा नाम क्यों नहीं बता दिया। बाद नहीं आई होगी शानद।”

कैसा कठोर परिहास है। हरेन्द्र और अखिलने फिर कुछ शिवा और केमने हुरी तरह सुँह कर लिया।

आप्त बाबू कुछ अप्रतिम-से तो हुए, पर, उन्हें यह बाहिर नहीं होने दिया, बोले “नहीं बाद ही नहीं आई। क्योंकि सामनेकी चीजपर जैसे कमी कमी नजर नहीं पडती वेसे ही। तुम्हारा नाम के केनेसे सचमुच ही बसका माफ़स अभाव हो जाता, किन्तु तब यह याद ही नहीं आता।”

तब कमलने कहा मुझे किस शिक्षाका आपने समझना दिया है, आप कोमेके सम्बन्धमें भी क्या यह सोचहो आने सच नहीं है। सार्थकताका जो आइडिया बचपनसे ही बहकिकोंके प्रिमापमें आप खोम मरते आये हैं, बसकी रही हुई बातको ही तो वे दर्पके साथ बुराकर खेबा करती हैं कि शानद नहीं सत्व है। नतीजा यह होता है कि आप खोम भी बोला जाते हैं और आत्म प्रसारके स्वर्ण अमिमानसे वे खुद भी मर मिटती हैं।

“इतना करके वह फिर बोली सहररकी बात तो आपके ध्यानमें आनी चाहिए। जो जिवों बजके मरती भी और जो उन्हें प्रेरणा दिया करत वे; दोनों ही पशोंका सम्म बस दिन यह खेबकर आकाशसे वा सूत्रा वा कि वैक्य जीवनके इतने बड़े आदर्शका रहान्त संसारमें और है क्यों।

“इसका मैं क्या उत्तर देता कुछ समयमें ही न आया। मगर अपने उत्तरकी अपेक्षा भी नहीं की बुर ही करने लगी बचर है ही नहीं देवे क्या? फिर जरा ठहरकर मेरे मुँहकी तरफ देखकर बोली अचानक सभी चेहरेमें आश्चर्यपूर्ण चमकसे एक तरहका बहुमूल्य और बहुमानीन पारमार्थिक मोह है। इस मोहका लक्ष्य सिधे कल्पना है बचकी दृष्टिमें परलोककी असाधारण अस्तु भी इस मोहकी संकीर्ण साधारण वस्तुतकको एक देती है—यह उसे सोचने ही नहीं देती कि बचमें भर और गारो इन दोनोंमेंसे किसीके संस्कार उसके माने काय एकदुआके मनवा केत है,—उसी तरह जिस तरह कि अचानक उदमरको बन्दोंने मनवा लिखा था। कथ जब और नहीं, मैं जाती हूँ। कहकर बसे सपसुव ही बसे प्रात देकर मैंने व्यस्त होकर कहा कमल प्रबोधित नीति और समस्त प्रवृत्तिलयको अक्षयमें पूरा पूरा कर बना ही माना तुम्हारा मत है। यह किता बिचम तुम्हें ही दे समने अमरका कर्मना नहीं किता है।”

कमलने कहा मेरे निताने ही है।”

मैंने कहा तुम्हारे ही मुँहसे सुना है कि न ज्ञायी और किन्तु आदमी ये। यह बात क्या बन्दोंने कभी तुम्हें सिखाई ही नहीं कि अमरक सर्वत्र दाग करके ही आदमी अमर-कर्ममें अपनेको पला है। स्वेच्छया कुछ स्वीकार करनेमें ही आदमी बचाव प्रवृत्त है।

कमलने कहा ‘म तो नहीं कहा करत वे कि आदमीका सर्वत्र रूप केनका भिन्दोंने पदपत्र रख रक्खा है,—जिन्हें पुत्रका अतुल्य नहीं वे ही दुःख स्वीकार करनेकी महिमा मानिये पंचसुख ही माना करत हैं। यह दुःख संसारके दुर्बल घासनका नहीं है,—यह तो मान्ये बसे स्वेच्छया अमर-कर्मकर पुत्र माना है,—अपहीन कीकरी थीकरी तरह मद्र एक लक्ष्मणके केत है यह। बचसे कहा नहीं।’

“मैं तो आश्चर्यसे इतनुवि-सा हो गया। बोला कमल तुम्हारे भिता क्या तुम्हें कुछ भोगका पत्र ही दे बये हैं और अमरमें जो कुछ महत् है, उसपर आध्यायी कल्पना करनेको ही कह पये हैं।’

कमलने इस तरहके दोषारोपकी तावद सुनते आला नहीं की थी। तबत कुछ होकर बचर दिना यह आपकी असद्विष्णुताकी बात है आसु बावु। आप

निश्चित जानत हैं कि बोह भी पिटा जरनी कन्याको ऐसा मत्र नहीं बे या सजना । मेरे मित्रके प्रति आप अविचार कर रहे हैं । वे साधु पुरुष थे ।

मैंने कहा जमा कि तुम कह रही हो यदि वास्तवमें यह पिशाच व तुम्हें बे गये हों तो उनके प्रति सुविचार करना भी कठिन है । मनोरमाकी मुसुक बाद अग्य किसी क्लीको जो मैं प्यार न कर सक्य इसे सुनकर तुमने कहा था कि वह किसी कमजोरी है, और कमजोरीको ठेकर सर्व नहीं किया जा सकता । मृत पत्नीकी स्मृतिव मम्मामको तुमने निन्दक आत्म-स्मिह कहक तपेक्षाकी दृष्टिसे बेखा था । संयमक बोरे मानी ही उस दिन तुम्हारे ध्यानमें नहीं आये थे ।

“कमलन कहा आज भी नहीं जात बापु बाबू । जो संयम उदरत आस्थातमसे खिन्नक आनन्दक म्मान कर देता है वह तो कह पीर ही नहीं—महत्र मनकी एक लीम है—इसे बौध्दकी अकरत है । सीमा मानकर बखना ही जो संयम है—एकिकी स्वयमि भी संयमकी सीमाक खोप जाना सम्भव है । तब फिर उस तन्त्री इज्जत नहीं ही जा सकती । यह पाठ क्या आपने कमी विचारक नहीं रकी कि अति-संयम भी एक तरहका असंयम है ।

विचारक नहीं रकी वह मत्र था । इसीसे विचारके रकनेकी बात बटसे यात्र था गरी । मैंने कहा यह ठा किं तुम्हारी बातोंकी आरुगति है उसी मोगकी बचसमसे भरी हुई । पर आहमी खिना ही ज्पाया अक-मकक भोगको लील जाना चाहता हं, उतना ही उसे खा बैठता है । उमकी मोगकी मूत्र तो मिटती नहीं—बकि निरन्तर अदृष्टि ही बरती पकती है । इसीउ हमार साककार कह गये हैं कि उम मार्ममें शामिल नहीं है वृति नहीं है, समस सुक्तिकी आशा व्यर्थ है । उमका कहना है कि न जानु अमः कामानामुपमोमेत शाम्यति इमिया इम्यवर्त्तेव मूत्र एवामिबद्धते । आपने भी बनेसे बैत वह और भी खोरसे अकन समती है जैसे ही माग-उपमाके द्वारा कामना बरती ही जाती है, कमी पकती नहीं ।”

हरेत्र उद्विग्न होकर बात ठठा “उसक समन शत्रु शक्य आप क्यों करने गये ? हो फिर ?”

बापु बाबुन कहा ‘तुमने ठीक कहा । सुनकर वह रैव पही और बली

‘शास्त्रमें ऐसी बात है क्या ? सो तो होगी ही । उन्हें वह भी तो मालूम था कि शास्त्रीय कविति ज्ञानकी इच्छा कबली है, धर्मकी साधनासे धर्मकी प्र्याप्त भी उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है, पुण्यके अनुशीलनसे पुण्यका कोम भी क्रमशः उत्प होता जाता है,—मालूम होता है मानो अभी बहुत बाकी है । इसकी भी ठीक वही हालत है । वह ध्यमना भी धान्य नहीं होती । इसलिये, इस क्षेत्रमें भी वे श्लेष क्यों नहीं आक्षेप नहीं कर गये ?—उनमें निवेद था, शास्त्र इत्यस्य ?

इतना अक्षित वेद्य और नीचिमा चारोंके चारों हैंत पड़े ।

आहूत बन्नु बोले “इसनेकी बात नहीं । जहाँकीके उपहास और ध्वंगसे मानो मैं इतनाही हो गया अपनेको सम्भाव्यकर बोला, नहीं ठनका वह धमिप्राय नहीं है तो वही निवेद कर पये हैं कि श्लेषसे तृप्ति नहीं हो सकती ध्यमनासे निवृत्ति नहीं हो सकती ।

“कमल करत बरकर बोली मालूम नहीं ऐसे बाहुल्यका इमित वे क्यों कर गये ? वह क्या बाजारमें बठकर यात्रा’ के पाग सुनना है वा पक्षोसीके बरका प्रामोद्येन है जो बीचहीमें मालूम हो जानना कि जाने तो कापी तृप्ति हो चुकी, अब बहरत नहीं । इस तृप्ति-अनुसिधी असक सण तो बाहरके श्लेषमें है नहीं तपका श्लेष तो है जीवनके मूकमें । नहींसे वह हमेशा जीवनकी आशा धान्य और रस सुटाया करती है और धान्यका विचार बर्ष होकर बरनाकेकर पका रह जाता है—उसे जू तक नहीं पाता ।’

मैंने कहा सो हो सकता है, मगर है तो आक्षिपकर वह शत्रु ही हयें उसे जीतना तो चाहिए ही ।

“कमलने कहा मगर शत्रु करके बाकी केनेसे ही तो वह श्लेष न हो जायगा । प्रकृतिके किसे पकके पड़ेके अनुसार वह इच्छान्वार है,—उसके किस स्वल्पके का जीवन सिर्फ विरोह करके ही उदा सभ है । दुःखसे परराकर आत्महस्ता करना तो दुःखके जीतना नहीं है ? फिर भी मना यह कि ऐसी ही मुक्तिबेकि बरपर आदमी अक्षयानके विचारपर शान्तिकर रास्ता टटोकरा फिरता है । इससे शान्ति तो मिलती नहीं, स्वरुता भी नहीं जाती है ।

सुनकर मुझे ऐसा लगा कि तावद वह सिर्फ मुझहीको कोन रही है ।” इतना करके वे उभ-भर चुप रहे, फिर करने लगे “और न बामे मेरा कैसा भी हो गया कि मुहसे करके निष्क पका, कमल तुम अपने जीवनपर तो

एक बार विचार कर देखो। बात मुझे निबन्ध नामके बार छह मुझे ही अपने कमरेको करती। कारण बटाछ करने अथवा उसके पास कुछ था ही नहीं — कमरेको छद्म भी आशय हुआ पर वह न तो गुस्ता हुई, न रुटी; शान्त खेरेसे मेरी तरफ देखती हुई बोली 'मैं प्रतिदिन ही विचार देखती हूँ बाबू बाबू ! दुःख नहीं पाती हूँ सो मैं नहीं कहती पर मैंने उस दुःखको ही जीवनका कारण नहीं मान लिया है। विवनापको जो कुछ बना था वे हे चुके, मुझे जो विवना या छ मिला गया — बालनके वे छटे छटे छच ही मेरे मनमें मणि-मणिकम्यकी तरह संस्थित हैं। न तो निबन्ध नामसिद्ध दाहसे मैंने उन्हें कमाकर बाक किया और न सुके झरनेके नीचे रीते हाथ पसारकर मीनक मीनके लिए ही खड़ी हुई। उनके प्रसन्नो बाबु जब खतम हो चुकी तो छात मनसे मैंने उन्हें विदा दे दी; पछासे और सिद्धमन्त्रके पुँसे आकाश काय्य करनेकी मेरी प्रवृत्ति ही नहीं हुई। इसीसे समके सम्बन्धमें मेरा उस दिनका आचरण आप खेपेकी अद्भुत-सा गया। आप खेपेकी छोटा था कि इतने बड़े अफरापको कमरने माफ कैसे कर दिया। मगर मेरे मनमें उस दिन उनके अफरापसे बढ़कर अपने ही दुर्भाग्यकी बात ज्यादा आई थी।'

"सुनते सुनते मुझे ऐसा लगा कि मानो उसकी आँखोंमें आँसू झरकर जाये हैं। हाँ सचता है कि सच हाँ या सावद मेरी मूढ़ हो। उस बक मेरा हृदय मानो बेहनासे टूट गया — उसमें और मुझमें प्रेम ही मिश्रण-सा था। मैंने कहा 'कमक ऐसे मानि-मानिकनोंका संभव मैंने भी अपने मनमें लिया है, वही तो मेरे लिए सात राज्योंका धन है,—जब हम खेपे के वास्ते खेम करने आये बतलाओ !

"कमक चुपचाप देखती रह गई। मैंने पूछा 'इस जीवनमें क्या जब तुम और किसीको प्यार कर सकती हो कमक ! इस तरह समस्त देह-मनसे अनीछार कर सकती हो और किसीको ?

कमकने अविचलित कञ्ठसे जवाब दिया 'कमसे कम विवना छे यही आशा केसर रहना पड़ेगा बाबू बाबू। असमनमें बादलोंकी ओटमें जाय अगर सूर्य बसा हो गया-सा माझम है तो क्या वह अन्धकार ही छप हो जायगा और कम प्रमात्रमें अदृश प्रकाशमें अगर आकाश छे जाय तो क्या जगदी आँखोंको बन्द करने के बड़ बड़ हूँगी कि यह प्रकाश नहीं है, अन्धकार है ! जीवनको क्या ऐसे ही बरफोंके ठेक ठेकमें खतम कर हूँगी ?'

मि क्या रात तो सिर्फ एक ही नहीं होती कमल प्रमातप्य प्रकाश जगम करके वह तो दुबारा भी था सजनी है ।

उसने कहा 'आवा करे । तब भी प्रमातपर विश्वास करके फिर रात बिता देंगी ।

मैं तो मारे जाश्चर्वके लक्ष होकर बैठा रहा;—कमल बनी गई ।”

बचपोंका लेक । सोचा था छोड़मेंसे गुबारकर हम दोनोंही विन्ता-भारा पावद एक ही झेतमें मिक पई है । परन्तु मेका कि नहीं सो बात नहीं है । बमीन आसमानका फर्क है । उसके इष्टिकेनसे तो जीवनका धर्म ही धरम है — हम ज्येथोंके साथ सस्य कई मेक ही नहीं । वह न तो धरदको ही मानती है और न बतीतकी स्मृति उसके आगेका रात्ता ही रात्नी है उसके किए अदापत ही सब कुछ है,—जो आज तक आवा नहीं है । इसीसे उमरी न था भी बिननी बुनिवार है, आनन्द भी उतना ही अपराधेय है । सिर्फ इही बज्जते कि सिधी गैरने उल्लेख जीवनको बाबा बिदा है वह अपने जीवनको धोखा देने या बंधित रखनेके लिए किसी तरह तैयार नहीं ।”

मुनके लव कुप रहे ।

ठठे हुए बीच निश्चासको बगकर आहु वाहू फिर करने को बिनसुन करधी है । उस निन लक्षत और पञ्चताकेच किछाना न रहा पर साथ ही यह बात भी मन ही मन स्वीकार किने बिना न रहा गया कि यह सिर्फ बापसे सीखकर रटी हुई माया नहीं है । जो कुछ उसने सीखा है बिनकूल निःसंशय होकर पूरी तरह खुद ही सीखा है । ऐसी विशेष उमर भी नहीं पर फिर भी मादस होता है कि अपनी आम्माओे उसने इही कमरमें पूरी तरह उपकम्ब कर किया है ।”

फिर जरा ऊपरकर बहने लगे और बात भी मज है । वास्तवमें जीवन कोई बचपोंका लख तो है नहीं । भगवानका इतना बड़ा दान इतकिय नहीं जाना । ऐसी बात भी मना मैं कैसे कह सज्जा था कि कोई एक आवनी किसी दूसरेके जीवनमें किच्छ हो गया तो ली धन्वताकी किन्दगी-भर कस-पोषण करता रहे ।”

बेकाने अदिरसेसे कहा “ बात तो बड़ी सुन्दर है ।”

इरेत्र कुपकेसे ठठके कहा गया बोध “ रात बचरी हो गई, मेह भी कम हो गया —जाब इजाबत मिके ।”

लजित भी उठ खड़ा हुआ इक बोझ नहीं। और दोनों कमखर करके बाहर हो गये।

बैसा छेने जखी नई। नीकिमाके छोटे-मोटे दो-एक कम करने वाली वे पर आज वे नो ही बचपूरे पके रहे और जन्ममनसखी तरह बट भी पुपबाप कम री।

नीकरकी प्रतीक्षामें आशु बाबू भौंखोंपर हाथ बरे पके रहे।

बड़ा मारी मखन था। बैसा और नीकिमाके सोनेके कमरे आमने सामने थे। दोनों कमरोंमें बर्ती बल रही थी; इतनी समझी सब बातें और आखेचनाएँ सुने नि-संग कमरोंमें पहुँचनेके बाद मायाँ पुबखी-सी हो गईं। फिर भी परम आश्चर्यकी बात यह है कि कपड़े बदलनेके पहले दर्पणके सामने जाकर खड़े होनेपर दोनों नारिकोंके मनमें एक ही समयमें, ठीक एक ही प्रथम बट खड़ा हुआ एक दिन, जिस दिन मैं नाटी थी।

२४

दस-बारह दिन हुए कमक आगरा छोड़कर चली बाहर जम्मे गई है; और इनर आशु बाबूके बसकी सक्त अस्तर है। बोधी बहुत पिन्ता तो समीचे हुई थी पर उद्योगके साथे बादल सबसे ज्यादा इन्टरके प्रभाव-आधमके माकेर मेंहराने। अन्धकारी इन्टर और लजित व्याकुलताकी प्रतिस्पर्धामें ऐसे सुकने लगे कि छाबद उमका 'मद' भी लो जाता तो ऐसे परेशान न होते। जन्ममें जन्ममें एक दिन उसे हँस ही निकलना। जन्मा अस्तर साधारण थी। कमकका नामके बंधीकेस एक खनिष्ठ परिचित विरंगी साहब जहाँका काम छोड़कर टूँडकमें रैखेकी नीकरी करने आया है; उसके ली नहीं है, दो-बाई सातकी एक छोटी मन्धी है। बंधी परेशानमें पखर वह कमकके टूँडका ले गया है। उसकी बर-पुस्तकी ठीक करमें कमकके इतनी डेर लग गई। आज लखेरे वह बर भीटी है और तीसरे पहर उसके किपु मीटर मेककर आशु बाबू बाट देक रहे हैं।

मिलार्ड करत कठ नीकिमा सहसा बोल उठी "वस आदमीके बरमें ली नहीं एक मन्धी-सी कपकेके सिवा और कोई औरत भी नहीं—फिर भी उसके बर कमकने आधानीके दस-बारह दिन बिता दिये।"

भाहू बाबूने बड़ी मुश्किलोंसे सिर झुमाकर उसकी तरफ देखा; पर वे न समझ सके कि इस बातका तात्पर्य क्या है।

बीबिमा मानो अपने मन ही मन कहने लगी "बह तो माखन होता है नहींकी मजबूती है जिसके पानीमें भीखने न भीखनेका कोई प्रस ही नहीं उठता आने-पहननेकी उसे चिन्ता नहीं—किन्तु स्वामीन है।"

भाहू बाबूने सिर झिम्कते हुए मूढ़ ढंठे कहा "बात तो करीब करीब ऐसी ही है।"

उसके स्म जीवनकी सीमा नहीं बुद्धि भी वैसी ही जनमत है। उस रात्रिके साच उसकी के दिमकी आन-पहचान की मगर सपनेके वरसे बन करी उसे जगह नहीं मिली तो उसे भी उसने बिना किसी संशयके अपने घर भुजा किया। किसीके मतामतकी पराहने उसके कर्तव्यमें विज्ञ नहीं बाक्य। जो किसीसे नहीं बना उसे बह बड़ी आसानीसे कर गुबरी। सुनकर ऐसा लगा जैसे उन उससे छोटे हो गये हैं,—इसके लिए दुखी औरतोंके न जाने कितनी कितनी बातोंका खयाल रखना पस्ता है।"

भाहू बाबूने कहा "जानल तो रखना ही चाहिए बीबिमा !"

केशने कहा "हम भी चाहे तो वैसी ही बेतराह और स्वाधीन बन सकती हैं।"

बीबिमाने कहा "नहीं नहीं बन सकतीं। मैं भी नहीं बन सकती और आप भी नहीं। कारण बुनिया हमपर जो स्वाही संकेत हैगी उसे भो-योंकर साक कर बाकनेकी लक्षि हम जेनोमें नहीं है।"

जरा ठहरकर बीबिमा कहने लगी, "वैसी इच्छा एक दिन मेरी भी हुई थी इससे उन मोरसे मैंने इस बातको स्पष्ट देखा है। पुरखोंके बने हुए व्यवहार और अत्याचारसे हम जल जल मरी हैं और कितनी बकी हैं बह कह नहीं सकती—सिर्फ ककना ही सार भुजा है।—पर समाजके इस अत्याचारका असली स्म कर्मकाये देखनेके पहले हम कमी नहीं रिखाई दिया। सिबोंकी मुक्ति, सिबोंकी स्वाधीनता तो आजकल हरएक की-पुखकी ज्ञानपर है, पर बह बचानक भागे एक क्वम भी भागे नहीं सकती। जो कनो जानती हैं? अब माखन हुआ है कि स्वाधीनता एक-विचारसे नहीं मिलती न्याय और बर्मेकी सुझाई देवेसे भी नहीं मिल सकती समामे खने

होकर पुत्रोंके साथ कब्ज करनेसे भी नहीं मिलती —असममें स्वाधीनता ऐसी चीज कोई किसीको दे ही नहीं सकता —जैसे बेनेशी वह चीज ही नहीं । कमलको देखते ही डीब जाता है कि वह स्वाधीनता हमारी अपनी पूर्णतासे आत्माके अपने विस्तारसे स्वतः ही आती है । बाहरसे अण्डेका छिन्नका तोड़ कर मीठरके बीजको सुखि देनेसे वह सुखि नहीं पाता —बल्कि मर जाता है । हमारे साथ यहीपर उलझ पार्यन्त है ।”

फिर बेसमते बोली “अभी जो वह इस-बारह दिनके किए न जाने क्यों करते गये सबके बरका छिन्नका न रहा पर वह आसन्न छिन्नको स्वयं ही न हुई कि ऐसा कोई काम वह कर सकती है जिससे उसकी इज्जतपर बल्ल अगे ? क्या हए, हम होती तो आधुनीके दिमेंमें इतना अबरदस्त विधासका मोर क्यों पती ? यह औरव हमें बीन देता ? न पुस्य ही देते न औरते ही ।”

आसन्न बाबू आधुनीके साथ उसके मुँहकी तरफ झुक-मर देखते रहे, फिर बोले “बासतमें वह सच है नीकिमा ।”

बेसमने पुनः “केकिन उलझ पति होता तो वह क्या करती ?”

नीकिमाने कहा “उलझी देना करती रसोई बनाती खिन्नती बर-हार सावली-गुहारती कचरे होते तो उनकी परवरिस करती और क्या करती ? अग्नी तो वह मकेली है और कपडे-पैसेसे भी रंग है, नहीं तो बेसी हाकतमें कि तो समझती हूँ समयके अमानमें वह हम अयोधि निम्ने जुकने तक न आ सकती।”

बेसमने कहा “तब फिर ?”

नीकिमा तब फिर क्या ?” बहकर हँस ही और बोली “बरका काम क्या नहीं करें लंपी या छिन्नकात कुछ रहे नहीं इरदम छेर-सपाटा करती फिर —क्या यही नियोजी स्वाधीनताका मान-दण्ड है ? स्वयं विधाताके भी काम-काजका अन्त नहीं केकिन कोई क्या इस कारण उन्हें पराधीन सांचता है ? इस संसारमें हमारी कुरखी मेहनत-मशकत भी क्या कुछ कम है ?”

आसन्न बाबू प्यार आधुनीके साथ मुग्ध दृष्टिसे उसकी तरफ देखते रहे । असम-में इस वकालत कोई बात अचतक उन्होंने नीकिमाके मुँहसे नहीं सुनी थी ।

नीकिमा कहने लगी “कमक बेटी रहना तो जानती ही नहीं तब वह पति-पुत्र और बर-गृहस्थीके काममें लगी हो जाती —आमन्त्रकी मक-बाराकी तरह बर-गृहस्थी उसके माथेपरसे बही बनी जाती उसे पता भी न पड़ पाता । मगर जिस दिन समझती कि पतिका काम बोस बनकर उसके छिरपर उभार

हो गया है। उस दिन मैं चौपन्ना बाहर यह सक्ती हूँ कि उसे संसारमें कोई एक दिनक सिद्ध भी पकड़कर नहीं रख सकता।”

आष्ट बाबू आदिरतेसे बोले “तो ही ठीक है। ऐसा ही माहस होता है।” इतनेमें परिचित मोटरका हॉर्न सुनाई दिया। बेकाने खिचतीसे लौकर देखा और कहा “अपनी ही पाकी है।”

बोड़ी बेर बाद लौकर बत्ती रखने आया और कमरके जानेकी खबर दे गया। कई दिनस आष्ट बाबू उठीकी प्रतीक्षा कर रहे थे मगर फिर भी खबर पाते ही उनका खेहरा अत्यन्त म्मान और गम्भीर हो गया। अभी अभी वे आराम-कुर्सीपर सीधे होकर बैठे थे जब फिर पीठ टेककर खेत गये।

भीतर जाकर कमरने सबसे ममस्वर किना, और आष्ट बाबूके पासकी कुर्सीपर बाहर बैठ गई। बोली मैंने सुना कि आप मेरे सिद्ध बड़े म्मस्त हैं, किसे माहस था कि आप लोग मुझे इतना चाहते हैं—नहीं तो अपनेपके पहले अवस ही आपसे खबर दे जाती।” कहत हुए उसने आष्ट बाबूका शिथिल हाथ बड़े स्नेहके साथ खींचकर अपने हाथमें के लिया।

आष्ट बाबूका मुँह हसती खेर था, और अब भी वह उबर ही रहा। उसकी बातका वे कुछ भी उत्तर न दे सके।

कमरने पहले तो समझा कि उनके सम्पूर्ण स्वस्थ होनेके पहले ही वह चली गई थी और अब तक कोई खबर-सुन नहीं ली इसीसे उनका यह अम्मान है। फिर उसन उनकी मोठी टैपस्किनेमें अपनी बम्पाकी कमी-सी टैपस्किनी उल्लाते हुए कमरके पास मुँह के बाहर चुपकेसे कहा “मेरी पकती हुई है, मैं माफी माँगती हूँ।” मगर इसका भी अब कोई जवाब नहीं मिला उन बड़े सन्मुख ही बड़ा आश्चर्य हुआ और साथ ही डर भी लगा।

वेब आनेके लिए कमर बड़ा चुकी थी खड़े होकर उसने बिनयके साथ कहा अगर माहस होता आप आनेगी तो जान माफिनीका निर्मग्न मैं इर्मिज स्वीकार न करती किन्तु अब तो न जानेसे उन खेयोके बनी निरासा होगी।

कमरने पूछा “माफिनी कौन ?”

नीम्माने जवाब दिया “यहाँके मैन्ड्रिट्ट साहबकी ली—नाम शाबद तुम्हें वाब नहीं रहा।” फिर बेकाने तरफ मुलातिव होकर कहा “सन्मुख ही आपका जाना कस्ती है। नहीं जानेसे उनकी गानेकी छारी म्मदिक बिज्जुन मिठी हो जावगी।”

नहीं नहीं, मिट्टी नहीं होगी,—मगर ही रंग बदल होया। शुना है कि सम्बन्धि और भी हो-बार सज्जनको आमन्त्रित किया है। अच्छा तो आज तो बही जाती हूँ, फिर और मिट्टी दिन बातभौट होगी। नमस्कार।” कहकर वह बरा कुछ व्यवस्थाके साथ बाहर चली गई।

मीकमाने क्या “अच्छा ही शुना जो आज तकका बाहर विद्यमान था नहीं तो सब बातें सुसाधा करनेमें द्विपक्षिधाइत होती। अच्छा कमल तुम्हें मैं आप कहती थी या तुम कहके पुकारती थी।”

कमलने क्या “तुम कहके। मगर मैं तो कोई ऐसे निर्वासनमें नहीं गई थी जो इस भीषण ही भूख जाती।”

“नहीं सिर्फ़ बरा कदम ही गया था। और होनेकी बात भी है। अर, इसे जाने दो साठ-आठ दिनोंसे तुम्हें हम लोग हूँ खड़े थे। हमारा यह सिर्फ़ खोजना ही नहीं था बल्कि भेरी तो यह तुम्हें पानके लिए मन ही मन्वही तपस्का थी।”

परन्तु तपस्काका कुछ माम्भर्य उनके चेहरेपर न था इसलिये, अह-विम स्नेहके मीठे परिहासकी कल्पना करके कमल हँसती हुई बोली “इस सौमाम्यका कारण मैं तो सबकी परिस्वच्छ हूँ जीयी, शिष्ट-समाजका तो कोई मुझे बाइत। तक नहीं।”

बसका वह जीयी का सम्बोधन विचित्र नया था। मीकमानेकी जोखे सहसा भर आई, पर वह चुप रही।

आद्य बाइते न रहा गया उसकी तरफ़ मुँह करके बोले “शिष्ट-समाजको बदरत होगी तो इसका अबाध बही देया; लेकिन मैं जानता हूँ, जीवनमें किसीने अगर बसलवमें तुम्हें आहा है तो मीकमाने ही आहा है। इतना अम तुमने शनिव किरीका भी न थाया होया कमल।”

कमलने क्या, “तो मैं जानती हूँ।”

मीकमा पंचल पैरोंसे बठ करी हुई। कहीं जानेके लिए नहीं बल्कि इसलिये कि इस इंगकी आधेवनामें व्यक्तित्व इधारेसे वह हमेशा कुछ अल्पि-सी हो जाना करती है; बहूठसे मौखोत्तर प्रिय अनोचो इससे सम्बन्धनी हुई है फिर भी, ऐसा ही बसका स्वभाव है। बातको स्पष्ट दबाकर उसने क्या “कमल तुम्हें आज तो खबरें शुनानी हूँ।”

कमल उसके मनका माव समझ गई, इसके बोली अन्धी बात है, सुनाइए । ”

नीतिमाने आसुत बाजूकी तरफ इशारा करके कहा ये घरमके मारे तुमसे सेर छिनाये हुए हैं, इससे मैंने ही मार किया है सुनानिच्छ । मनोरमाके साथ मित्रताका ब्याह होना स्थिर हो गया है—फिरा और भाबी स्वसुरकी बहुमत मुक्त हो कमलका चेहरा उजक पड पडक पर लसी सज बजलेको समझाउते हुए बसने कहा “ इसमें इनके सिपु बोबोनि पत्र दिये हैं । ”

कहा इनकी कबकी है इसकिपु । और सिद्धी पानेके बादसे इन कई दिवसे इनके सुँहते सिर्फ एक ही बात बार बार निकली है कि आगरमें इतने आरसी मर गये मयमाने मुसपर दबा क्यों नहीं की ? अपनी जानमें किसी दिन को अनुचित काम नहीं किया इसीसे इनका अनन्त मित्रास का कि ईश्वर मुसपर भी उदर है । और यह अविमानकी ब्यबा ही मानो इनकी सारी केरनाओंसे बड गई है । मेरे सिधा किसीसे कुछ कह नहीं सके हैं, राठ-दिन मन ही मन सिर्फे तुम्हीको पुकार रहे हैं । सायद इनकी बातना है कि सिर्फे तुम ही इतने परिजानका राहना बता सकती हो । ”

कमलने छरकर देखा कि आसुत बाजूकी मिची ओल्लोंके कोनेसे ओंसु बजक रहे हैं, हाकसे उन ओंसुनोंको पुपबाप पोछकर वह सूर भी लजब हो रही । बहुत देर बाद बोली “ एक खबर तो यह हुई और इसी । ”

नीतिमाने कुछ परिदासके बंगपर बात करनी चाही पर डीकरी ब्यते नहीं बना बोली, ‘ मामला बरा अविनित्त कर है, पर ऐसा कुछ भर्बकर नहीं हमारे मुकजी महासबक रसात्यके विपबमें सब कोई बहुत विनित्त वे तो मे रस्य हो पये हैं और उसके बाद उनके माई और मामीने मिलकर उनकी इच्छाके लीपा विट्ट बबरव उनका ब्याह कर दिया है । और नहीं छर्मके साथ जन्मोने यह संबाव आसुत बाजूको बजले पत्रमें किया है,—बस । इतना करकर कबकी बार बड सूर ही देखने लगी ।

उसकी इस देखीमें न तो सुस ही का और न औमुक ही । कमल उसके सुँहकी तरफ देखकर बोली “ दोनों ही ब्याहकी खबरें हैं । एक हो गया है, और एकका होना उन हो गया है—कैकिन मेरी पुकार क्यों हुई ? इनमेंसे किसीको भी तो मैं रोक नहीं सकती । ”

कीसिमामने कहा ' पर इतकानेकी कल्पना करके ही घाबर ये तुम्हें हुई रहे थे। लेकिन मैंने तुम्हें नहीं हुआ बहन मैं तो काब-मनसे मगलानसे यही चाह रही थी कि मेंट होनपर तुम्हारी प्रसन्न छवि प्राप्त कर सकूँ। इस वरामें श्रीके रूपमें जन्म लेकर मामयथा शोप देने सकूँ तो उसका भिन्नारा न खोज पाऊँगी; अपनी बुद्धिके शोपसे मायका और समुद्राक शोमों ही खोज दिये हैं,—उसपर क्यतो मुकसान जो हुआ है उसका निवारण नहीं दे सकूँगी।—जब बहनोईका आग्रह भी जाता रहा। फिर आशु बाबूकी तरफ इधारा करके कहा " इनके तो दवा-दासिम्यकी ह" ही नहीं मिलने दिन य यहाँ हैं, फिनी तरह दिन कर ही पायेंगे; मगर उसके बाद मुझे मन्वकारके सिवा अपनी बीबीके आगे और कुछ नहीं सुन रहा है। सोचा है, अबकी बार तुम्हेंसे क्या देनेको सकूँगी और न सिन्धी तो मर जाऊँगी। अब पुरखोसे इगामिशा मोंगती हुई नदीके कुनेकी तरह घाट घाट टकराती हुई आसुक अन्त तक प्रतीक्षा न कर सकूँगी। " बहन बहुत प्रसन्न स्वर मारी हो भाषा पर बीबीका पानी उसने सिन्धी तरह अचरदस्ती दवा सिमा।

कमल उससे मुँहकी तरफ देखकर विह्वल बरा ईस बी।

देसी क्यों ?

इसलिए कि ईशना कबाब देनेकी अपेक्षा महज है। "

कीसिमामने कहा सो जानती हूँ, पर आनन्दस बीब बीबमें न जाने क्यों अट्टर हो जाता करती हो।—इस तो इस बातका है। "

कमलने कहा छोटी रहूँ अट्टरय लेकिन बरतत पनेपर मुझे हूँने नहीं जाना पड़ेगा बीबी मैं ही आपको दवा-मरमें हूँन निकल पहुँगी। इस विषयमें आप निश्चिन्त रहें। "

आशु बाबूने कहा " जब इसी तरह मुझे भी समय हो कमल, मैं भी बिम्बे इनकी तरह निश्चिन्त हो सकूँ। "

" आदर हीअिए, मैं आपके लिए क्या कर सकूँगी हूँ। "

" तुम्हें और कुछ नहीं करना होगा कमल जो करना होगा मैं खुद ही करूँगी। मुन किइ इतना उपरोध हो कि सिनाके कर्णव्यके सिनाइ मैं कोई अपराध न कर सकूँ। इतना ही नहीं कि इस ब्याहमें मैं सिन राब ही नहीं दे सकना बल्कि मैं उसे होने भी नहीं दे सकना। "

कमलने कहा " राब आपकी है, सो आप नहीं भी हैं। पर ब्याह नहीं होने देने, सो कैसे ? कइकी तो आपकी बीबी हो चुकी है। "

आहू बाबू अपनी लतकनाको दबा न सके कारण यह बात उनके मनमें भी दिन-रात चक्कर खावती रही है कि अस्सीकर करनेका कोई उपाय नहीं। बोके छो में जानता हूँ। लेकिन कर्करीको भी माह्रम होना चाहिए कि बाफसे बचा नहीं हुआ था सकता। चिर्क मतामत ही मेरी अपनी बीम नहीं कमल सम्पत्ति भी मेरी अपनी है। आशु बैचरी कमकोठीके परिषदका ही कोषको अन्वस हो गया है, पर उसका एक बूधरा पद भी है—उसे कोम भूल मये हूँ।”

कमरने उनके मुँहकी तरफ देखकर स्निग्ध कम्से क्या “आफके उस पदको कोम भूके ही रहे तो अच्छा आशु बाबू। लेकिन अगर ऐसा न हो तो क्या उसका परिषद सबसे पदके अपनी कर्करीको ही देना होगा।”

होँ अवाप्य कर्करीको।” वे लज्ज-भर चुप रहकर बोके “यह मेरी मातृहीन पद्मात्र सम्पत्ति है किन तरह मैंने उस आदमी बनाना है इसे मैं ही जानते हैं किन्हीं पितृ-दहनकी सृष्टि की है। इसकी मार्मिक ब्यथा कितनी बड़ी है, उसे अगर मुँहसे ब्यक्त किया जाय तो उसकी सिद्धि चिर्क मेरा ही नहीं बल्कि उनके पिताके जो पिता हैं उन तकका उद्धार करमे लगेगी। इसके सिवा इसे दुम समझ भी कैसे सकती हो। लेकिन पिताके स्नेह ही नहीं है, कमल, उसका कर्तव्य भी तो है। किन्नाबको मैं पददान गया हूँ। उसके अत्याजाही प्राप्तके कर्करीको बचानेका इसके सिवा और कोई रास्ता ही मुझे नजर नहीं आता। कल उन कोषको विद्युतमें किन्ना हूँगा कि इसके बाद मजि सुझसे एक कौरीकी भी आशा न रखे।”

पर उस विद्युतपर अगर ये विद्याय न करें। अगर सोच के कि यह गुस्ता ज्यादा दिव न रहेगा—एक दिन आप अपनी पदकीको सुद ही सुधार देंगे,—तब।”

“तब ये उसका दल मोवेंगे। किन्नाकी किन्नेवाठी मेरी है, किन्ना कर मेका शक्ति उनपर है।”

यही क्या आपने वास्तवमें तब किया है।”

‘होँ।”

कमल चुप बैठी रही और प्रतीक्षामें सिर ऊपर उठाए आशु बाबू हार भी उठ करतक चुप रहकर मन ही मन ध्यातुक हो उठे। बोके चुप हो रही कमल कमल नहीं दिया।”

“ क्यों आपने तो कोई प्रश्न नहीं किया ? संसारमें वह स्वभाव तो प्राचीन कालमें ही बनी आ रही है कि एकके साथ जब दूसरेके मतका मेल नहीं खाता तो वो अविद्याही होता है वह कमजोरको पण्डित बना देता है । इसमें करनेकी क्या बात है ? ”

बाबू बाबूके शोमकी सीमा न रही, बोले, वह दुम्हारी कैसी बात है कमजोर । सन्ताणके साथ पिताका अवि-प्रीत्याका सम्बन्ध तो है नहीं वो उसके कमबोर होनेके कारण ही है उसे पण्डित बना बाह्या होके । अन्दर होना किताका अठिठ है, तो तिरि पिता ही जानता है, फिर भी मैंने जो इतना बड़ा बठोर संकल्प किया है वह तिरि इहलिए तो कि उसे गळतीसे बना दे । सम्मुख ही क्या तुम इसे समझ नहीं सकी हो ? ”

कमठमे तिर दिखते हुए कहा समझ तो सकी हूँ, पर अगर आपकी बात न मान कर वह भूख ही कर बैठे तो उसका कुछ भी तो नहीं पावेगी । अगर वह कुछको हट न कर सके तो इहिलिए क्या आप मुझेमें आकर उसके हुःकाके बोझको और भी हवास्-पुता बड़ा देना चाहेंगे ? ”

तिर बरा ठहरकर कहा “ आप उसके लव कारमीवेति नदकर परमारमीय है । जिस बादमीको आपने बहुत ही बुरा समझ लिया है क्या उसीके हाथ आपकी कण्ठको हनेठाके तिए निःस्व निःसाव करके विचरित कर देंगे ?— विसी विष बीरनेका कोई एस्ता ही किसी तरफसे बुला न रहने देंगे । ”

बाबू निःस्व एहिसे तिरि देखते रह लये, एक एकर भी बनके सुहसे न निःस्व — तिरि देखते देखते बनकी होनी बीरनेसे आसुभोकी बनी बनी हुई बचक नहीं ।

उठ देर इही तरह बीर जानेपर अन्दरि अपनी आस्तीनसे ओके पोछी और बके हुए कण्ठको साफ करके बीरे पीरे तिर दिखकर कहा “ बीरनेका एस्ता नमी ही है बाहरे नहीं । पतिको त्याग कर जो बीरना है अगरीभर करे कि वह मुझे जगती ओकेसे न देखना पड़े । ”

कमठने कहा वह अविचिठ है । बनिठ मैं तो वह कामना करती हूँ कि मूल अगर उसे कमी अपनी ओकेसे रिखाई दे जाय तो उस विष उत्तक संयोगनका मार्ग किसी भी तरफसे बन्द न रहे । इही तरह तो मनुष्य अपनेको सुपारत सुपारत आज मनुष्य ही पण्डित है । मूठमे तो कोई कर नहीं आसु बाबू, जब तक कि दूसरी तरफका मार्ग खुला है । वह मार्ग ओकेसे सामने बन्द रिखाई देता है, तमी तो आज आपकी आर्यकी सीमा नहीं है । ”

मनोरमा उनकी कन्या न होकर अजर और कोई होती तो वह सीबी-सी बात सहजहीनें उनकी समझमें आ जाती परन्तु एकमात्र पुन्तानके मनेंकर मविष्यकी निस्तन्दिग्य बुद्धिही की कल्पनामें कमरके सम्पूरी आविर्भवाके विचार कर दिया ।

उन्होंने अशुनके स्वरमें कहा " नहीं कमर इस व्याहको रोऊनके सिवा और कोई रास्ता मुझे नहीं सुझाई देता । इसका कोई भी उपाय क्या तुम नहीं बता सकतीं ? "

" मैं ? " उनका इशारा इतनी देर बाद कमरकी समझमें आया और बचीको स्पष्ट करनेमें उसका स्निग्ध कण्ठ क्षण-भरके स्थिर गम्भीर हो उठा पर वह सिर्फ एक ही चीजके लिए । नीजिमाकी तरफ नजर बाते ही उसने अपनेको सम्हालते हुए कहा, ' नहीं इस विषयमें कोई भी सहायता मैं आपकी न कर सकती । नहीं जानती कि उत्तराधिकारसे संबंध करनेका जर दिखानेसे वह करेगी या नहीं । पर अगर जर आय तो मैं क्यूमी कि आपने क्लिप्त-विचार और स्तब्ध-भावकी कितनी रटाकर लक्ष्मीको बहा मके ही किया हो पर उसे मनुष्य नहीं बनाना । उस अभावको दूर करनेका सुबोध देने के आन का ही दिया हो तो मैं उसके बीचमें अन्तराज बनने क्यों जाऊँ ? "

बात आद्य बातको अन्तही नहीं कगी उन्होंने कहा तो क्या तुम वह कहना चाहती हो कि रोऊना मेरा कर्तव्य नहीं ?

कमरने कहा ' वसुधै कुर्वतु स्वयं ' दिखाने रोऊना तो नहीं । फिर भी मैं इतना कह सकती हूँ कि अगर मैं आपकी अकाली होती और धायद बाबा पाती तो इस जीवनमें फिर कभी आपपर भ्रष्ट नहीं कर सकती । मेरे पिता मुझे इसी तरहसे पढ़ पने हैं । "

आद्य बाबूने कहा ' इसमें कोई असम्भव बात नहीं कमर तुम्हारे कन्या पक्ष मार्ग उन्होंने इतर ही देखा होगा । पर मुझे नहीं दीखता । फिर भी मैं पिता हूँ कमर मैं स्पष्ट देख रहा हूँ कि निवृत्तापसे वह यथार्थ प्रेम नहीं कर सकती — वह उलझ मोह दे । वह मिथ्या है और जिस दिन इस अज्ञानकी लसेकी ज्वारी दूर होगी उस दिन मजिने दुःखका अन्त नहीं रहेगा । अगर तब उसे बचाओगी कैसे ?

कमरने कहा " वसुधै कुर्वतु स्वयं " ही चिन्ताकी बात है, पर अब नया दूर हो जायगा

और वह स्वस्थ हो जाएगी तब तो फिर जरूरी कोई बात रह नहीं आवेगी। तब तो वह स्वस्थता ही बननी चला करेगी।'

आसु बाबूने समझीदार करते हुए कहा 'यह सब बातचीतका शौव-येव है कमक बुझित नहीं। साथ इससे बहुत पूरा है। मुख्यतः एक ठसे बने अपने पापा ही होगा — बकाबतके मोरसे लसे उसे छुटकारा नहीं मिल सकता।'

कमलने कहा 'छुटकारेकी बात मैंने नहीं कही आसु बाबू। मैं जानती हूँ कि मुख्यतः एक पापा ही पकटा है। पर उस एक पानेमें दुःख है अज्ञा नहीं क्योंकि मरिने किसीको अपना नहीं चला। नहीं भरोसा आपको मैंने दिखाना चाहा ना कि भूत माऊन इनेवर वह अगर जहाँकी वहाँ बीज जाना चाहे, तो उसे फिर नीचा करके न आना पड़े।'

फिर भी तो भरोसा नहीं हो रहा है कमल। मैं जानता हूँ उसे मूक मासूम पड़े बिना न रहेगी—वेकिन उसके बाद भी तो उसे सम्ये समय तक चिन्ता रहना है, तब जीवनेकी क्या केकर ? किछ आभारपर दिन करेगी।'

'ऐसी बात न कहिए। मनुष्यका दुःख ही यदि दुःख पानेका अस्थायी बरि नाम होता तो लसका कोई मूम नहीं ना। एक तरफका दुःखाना दूसरी तरफके मरी कामसे पूरा हो जाता है; नहीं तो मैं ही मका आब केसे भी चकती ? बनिह आप तो यह आसीबाँद बीजिए कि किसी दिन मूक अगर मासूम बने तो वह अपनेको मुक्त कर के सके, तब उसे कोई खेम कोई मज राहुमन्त न कर सकें।'

आसु बाबू चुप हो रहे। जवाब देनेमें उन्हें विचकिचाइव-सी हुई। पर स्वीकार करेमें वे और भी ज्यादा विचकिचाये। बहुत देर बाद बोले पिताकी इच्छि मैं मरिषा मरिष्य-जिनन अन्यधरमक पैस रहा हूँ। इधर भी तुम क्या बही कहोगी कि बारतनमें मुझे कसबत न बताना चाहिए, और चुनपाप माव कैना ही मज कर्तव्य है।'

'मैं मा होती तो अबरक माग केती। उसके मरिष्यकी जाकेकासे आवद आप कैसी ही ब्यबा पाती फिर भी इन तरीकेसे बकलत बकनेको तैयार न होती। और वह भी मुझे स्वीकार करना होगा कि मैं तब मज ही मज कर्ती कि इन जीवनेमें अिध रहस्के सामने आकर आब वह लसी हुई है वह मेरी सम्यत बुझिन्ताकेसे बाहर है।'

आपू वाबू फिर कुछ देर मौन रहे और बोले फिर भी मैं न समझ सका कमल । दिनभर का चरित्र और उसकी सभी सुखदृष्टियों का हाव मणि जानती है,—एक दिन इस घरमें जाने देनेमें भी उसे आपसि थी; मगर आज जिस सम्मोहनसे उसका हिताहित-ज्ञान —उसकी सारीकी सारी नैतिक बुद्धि हँक गई है वह नकार्य प्रेम नहीं है, वह आद है, वह मोह है,—वह असत्य चाहे जैसे भी हो दूर करना ही पिताका कर्तव्य है ।

अबकी बार कमल एकरम स्तब्ध हो रही । इतनी देरमें जाकर दोनोंकी जिम्ता-बाराके मौलिक मेहपर उसकी दृष्टि पड़ी । इन दोनों जिम्ता-बाराओंकी जाति ही अन्ध अन्ध है और वीकि यह भेद तककी चीज नहीं है, इस कारण अब तककी इतनी आम्बेचना और बातचीत बिसकुल बिचल सिद्ध हुई । कमल इस बातको समझ गई कि जिस तरह सगकी दृष्टि अभी हुई है उपर हजारों वर्षे देखते रहनेपर भी इस सत्यका अज्ञातकार नहीं हो सकता और समझ गई कि इसमें बड़ी बुद्धिकी औष नहीं हिताहित-मोह नहीं मकै-पुरे और सुख-दुःखका अति-उत्कृष्ट हिसाब नहीं मन्वून नीव डालनेके लिए ईशोभिवर बुझाता है —इसके सिवा और कुछ नहीं । गमित केकर पर ये कोय प्रेमका एक मा नतीका निश्चयना चाहते हैं । अपने जीवनमें आदू वाबूने अपनी पत्नीको अत्यन्त एकन्त माधसे प्रेम किया था । उनकी लीको मरे अमाना बित गया फिर भी आज तक कायब उस प्रेमकी वह तक हृदयमें छिपित नहीं हुई ।—संसारमें इसकी तुम्हना बहुत कम मिसठी है ।—फिर भी यह सब कुछ धर्य होते हुए भी यह मानना पड़ता है कि वे हैं दोनों भिन्न जातीय ।

इन दोनों बाराओंकी मसई-पुराईका प्रश्न उठाकर बहस करना निम्नक है । अपने दम्भन जीवनमें एक दिनके लिए भी परकीके साथ आपू वाबूका मत-मेह नहीं हुआ—हृदयमें मास्मिन्य तकने स्थान नहीं किया । निर्विग्र शांति और अविच्छिन्न सुख-वैभके साथ विरक्त हीर्ष विवाहित जीवन बीटा है उनके पौरव और माहात्म्यको मन्ना चीम खरी कर सकता है । संसारने सुख-वित्तसे उनका स्तम्भ-भाव किया है, उनकी दुर्मम क्खानियों छिन्नकर क्खि अमर हो गये हैं और अपने जीवनमें इसीको प्राप्त करनेकी व्याकुलतापूर्ण वासनासे मनुष्यके अन्तरीक्षी सीमा नहीं रही है । जिसकी निःसम्भिव नहिमा स्वतासिद्ध प्रसिद्धिसे विरक्त अविचलित है, उसे कमल तुच्छ करेगी किस विरतेपर । किन्तु मन्तेरमा ! जिस दुःशीक अमागेके हाव अपनेको वह विचरित करनेको तैवार

है, उसका सब कुछ जानते हुए भी सम्पूर्ण जाननेके बाहर कदम बढ़ाते हुए उसे ढर नहीं भासता होता। दुःखमय परिणामकी विन्तासे भिन्ना संकित है, इष्ट-मित्र कुञ्जित है—सिर्फ वह बनेकी निम्नक है। आशु बाबू जानते हैं कि इस विवाहमें सम्मान नहीं है, यह धूम भी नहीं है—बसबापर इसकी मीर है। यह शरत्सकाक-स्वायी मोह जिस दिन बु हो जायगा उस दिन आशीर्षक कर्म और शुक रखदेकी गगह न रहेगी। हो सकता है कि आशु बाबूकी यह विन्ता उस हो किन्तु यह बात जानु बाबूको यह कैसे समझावे कि सब कुछ पानक बाद भी इस प्रसंगिक लक्ष्यके पास जो वस्तु बाकी बचेगी वह पिताके धार्मिक-मुकामय शीर्ष-रक्षाकी सम्पत्ति बचानकी जयेका नहीं है। परिणाम ही जिसकी दृष्टिमें मूल-निम्नक एकमात्र मान-दण्ड है, उसके साथ तर्क कैसे चल सकता है। कर्मके मनमें एक बार आना कि कहे, आशु बाबू मोह भी मिथ्या नहीं है। हो सकता है कि कन्नाके विद्यालयमें लक्ष-मरक किम् भी कमक जानवाकी विम-कीकी रक्षा-नीतिकी पुस्तकमें आनेके इदवमें प्रतिष्ठान अनिर्वापित शी-मिन्नाको भी और आय। पर उससे यह कहे नहीं बना और वह चुन बैठी रही।

पिताके कर्तव्यके सम्बन्धमें अपना अग्रज शरत् अभिमत प्रकट करके आशु बाबू उधरकी प्रतीक्षामें बचीर हो रहे थे फन्तु कर्मके बैसे ही विस्तर और तिर हुद्यये बैसे देव उनकी समझमें आ गया कि वह बाद-विषय नहीं करना चाहती। इसलिये नहीं कि उसके पास शब्द नहीं बसिक इस्तिए कि जब इसकी बस्तरत नहीं। पर इस तरह एकके चुन हो जानसे तो दूसरेके मनमें सन्तित नहीं आती। वास्तवमें इस ग्रीक आदमीके गहरे अन्तःकरणमें एकका प्रति एक बालमिक मिठा है। एकमात्र उन्नाके साथी हुए विनोंकी आसकसे स्वीकृत और अद्वान्त-विषय में मुहसे पाहे कुछ भी क्यों न कहे, पर वास्तवमें वत-प्रयोगको वे चुनाकी दृष्टि ही देखत हैं। कर्मके अन्वेषि विठना देखा है, उठना ही कनक आशय और अदा बहती गई है। लोचदृष्टिमें वह देव है, निम्नित है; सिध-समाह्वारा परिवर्ण है। समानोंमें शरीक होनेका उये निम्नक नहीं मिलता; फिर भी इन लक्ष्यकी नीरव बरजाका उन्हें लगे प्याय ढर है, उकीके सामने उमका संकोच नहीं मिठता।

आशु बाबूके कदा “कर्म, तुम्हारे पिता बुरोपिबन से फिर भी तुम कमी उठ देखें नहीं परी हो। मगर मैंने उन लोगोंमें बहुत दिव विनाये हैं

आसु बाबू एक उर्लस केकर रिबर हो रहे, कोई उतर उनकी कमानपर न आया ।

बीहिमा चुपचाप देख रही थी, जब उसने पीरेसे पूछा कमल तुम्हारी बात ही कपर सब हो सबमुश्कल प्रेम भी अगर मूलके प्रेमके समान ही दृढ़ बलता हो तो मनुष्य क्या काहेपर होमा । उसके पास आधा करनेके लिए फिर बाकी क्या रह आम्पा । ”

कमलने कहा “ कित्त रसोशसकी मिबार निबड खुशी है, रह मायमी बसीकी एअन्त मधुर स्मृति और रह बावगा उसीके बसलमें बनबाकल समुह । आसु बाबूके मुख और आंखिकी सीमा नहीं थी केकिन उससे अनिकल इनकी और पूंजी नहीं है । मामने किन्हे इतनी-सी पूंजी देकर विवा कर दिवा है उनको लिए हम सिवा क्या करनेके और कर ही क्या सक्ती हैं बीबी ? ”

फिर जरा खरखर बोझी, श्रेय बाहरसे छहसा ऐसा समस डेते हैं कि गया अब सब पया और इत-मित्रके करकल उिकाना नहीं रहता । फिर तो वे दोनों हासोसि उसकल रास्ता लेकना आरते हैं, और निमित्त समस डेते हैं कि उनके हिमाके बाहर सिवा इत्यके और कुछ है ही नहीं । पर इत्य नहीं होता बीबी । अब क्या जानैर भी जो बच जाता है वह मणि-माणिक्यकी तरह मुझीमें ही आ जाता है । मपर ही दर्शनके बक अब देखता है कि बीबीकी मरमारसे रास्ता मरके सुखस तो निश्चय ही आ सक्ता जब वे बसे किन्कारते हुए अपनी अपने पर बीड बाते हैं और खरते हैं नही तो सर्वनाथ है ।

बीहिमाने कहा “ कइके करकल है कमल बसलमें मणि-माणिक्य सबके नहीं होता और न वह सर्व आमारके लिए है । पीरेसे केकर बोझी तक सोने-चौहकि गइने मिले बिना किलकल मन ही नहीं मरता वे तुम्हारे बस सुडीमर मणि-माणिक्यकी करर नहीं समझेगी । किन्हे बहुत आदिप वे पीठपर बहुल-सी नई कयाकर निमित्त हो सक्ता हैं । उनके लिए बहुल-सा बोस बहुल-सा आबोबल बहुल-सी जगह बिरानी आदिप, सब कहीं वे बीबीकी बीमतक आम्बाक मगा सक्ते हैं । पबिनकल दरवाजा खोलकर सुर्गेस्य दिखानेकी खेकित्त क्यर्प होगी कमल बन् करे वह नहीं । ”

आसु बाबूके सुहरे फिर एक पीरे निःश्राव निश्चय पड़ी पीरे पीरे बोझी

स्वयं क्यों होनी नीतिक्रिया स्वयं नहीं होगी। अच्छी बात है,—न हो तो मैं चुप ही रहूँगा।”

नीतिक्रिये क्या, “नहीं, छो भाप मठ कीजिएगा। सत्य क्या सिर्फ कर्मकांडे विचारोंमें ही है, और फिदाकी छुम-बुद्धिमें नहीं है। ऐसा हो ही नहीं सकता। कर्मकांडे सिद्ध को सत्य है, मन्तिके सिद्ध वह सत्य नहीं भी हो सकता है। कौनो दुर्बलिय पतिव्रत स्वान देनेमें चाहे फिदा भी सत्य हो यह मैं जोरके साथ कह सकती हूँ कि देहाके पति-परित्यागमें रची-भर भी सत्य नहीं। सत्य न तो पतिके त्यागमें है, और न पतिकी शांती-भृति करनेमें,—ये दोनों ही सिर्फ शर्म-शर्मके एतरे हैं। अन्तम्य स्वान तो अपने आप ही देना पड़ता है, तर्क करके बसका गया नहीं लगावा जा सकता।”

कमल चुपचाप उसकी ओर देखती रही।

नीतिक्रिया करने लगी, “सत्यच उदय होना ही उसका सत्य कुछ नहीं है उदका अस्त होना भी सतता ही महत्त्व रखता है। रूप और नीचनका आकर्षण ही अथ प्रेमका समस्त होता तो लक्ष्मीके सम्मर्गमें बापकी बुद्धिगताकी ओर अन्तर ही न थी,—मगर ऐसा नहीं है। मैंने फिदामें नहीं फीर शर्म-बुद्धि भी कम है तर्कमें मैं तुम्हें समझा नहीं सकती, केकिन मुझे माझस होता है कि असक नीचका पता तुम्हें अभी तक निम्न ही नहीं। पन्था मन्धि, स्नेह निश्चाय—इसमें कड़ाई करके नहीं पाया जा सकता, बड़े दुःखसे और बहुत दरमें ये निष्कारि देते हैं। मगर अब निष्कारि देते हैं कमक, एक रूप नीचनका मग जाने कहीं सुह सिद्धकर पुनक जावा है, कुछ पता ही नहीं पड़ता।”

तौलन-बुद्धि कमल एक क्षणमें यह समझ गई कि सम्पत्तिक अन्वेषणमें उदका यह कथन अमर्या है। यह न तो प्रतिवाद ही है और न सम्मर्ग ही ये सब नीतिक्रियाकी अन्वेषी बातें हैं। उसने देखा कि लज्जलक हीराबोकेमें नीतिक्रियाके निचारे हुए जो चाहे बाबोकी हसामक अन्वेषण उदके चेहरेपर एक अन्वेषित अन्वेषता का दी है और उदकी प्रथमत और्बोकी सत्यक दृष्टि सत्यक लिंगकतासे कमर तक अन्वेषण भर उठी है। कमलने मन ही मन कहा यह लज्जला स्वयं है कि यह नहीं स्वयं है वा यह हुए लज्जका अस्त-वस्त रचित अन्वेषण नीचकताके जो दिना आज एकीक हो उठी है—पूर्व-पश्चिम दिशाका निर्दय निचरे दिना ही उदके सिद्ध में अन्वेषके साथ अन्वेषण है।

तो-तीन मिनट बाद बासु बाबू सहसा चौककर बोले ' कमल तुम्हारी बातें मैं फिर एक एक अच्छी तरह विचार कर देखूँगा पर हमारी बातोंकी भी तुम इस तरह अवज्ञा मत करना। अनेकमेक मानवोंने इसे सत्य मानकर स्वीकार किया है, असात्यके द्वारा कभी इतने आश्चर्योंको नहीं बहकाया था सचचा।

कमलने सम्मनमस्तककी भौंति जरा हैसकर फिर क्षिप्त दिवा; लेकिन जबाब दिया करने नीकिम्माको। बोली ' किंतु बीजसे एक बरसेको बहकाया था सचचा है, वसीसे सात बरसोंको भी बहकाया था सचचा है। संस्माका वय जाना ही बुद्धि कल्पेका प्रमाण नहीं, बीबी। एक दिन किन लोगोंने कहा था कि नर-नारीके प्रेमका इतिहास ही मानव-सम्पत्ताका सबसे सत्य इतिहास है, उन्हीने सबसे बहकर सत्यका पता पाया था; किन्तु किन लोगोंने यह बोलना की कि पुत्रके लिए माताकी आश्रयकता है, वे बियोंका सिर्फ अपमान ही करते शान्त नहीं हुए, बसिक अपने बच्चे होनेका रास्ता भी वे बिराहमके लिए बन कर गये। और कूँकि उक्त अवसरपर ही उन्हीने सारी भीन उठाई थी इसलिये आज तक भी उनकी सन्तानको दुखका कोई किनारा नहीं मिला। "

" पर यह बात मुझे क्यों बह रही हो कमल !

' क्योंकि आज मुझे आपको ही बतानेकी सबसे ज्यादा जरूरत है। हमें भादु-बाक्योंमें नागा बर्लकर पढ़नाकर किन लोगोंने यह प्रचार किया था कि मातृत्वमें नारीकी शरम सार्थकता है उन लोगोंने समस्त नारी-जातिको धोखा दिया था। जीवनमें किनी भी अवस्थामें कबों न पढ़ना उसे बीबी पर इस मिथ्या नीतिका हर्मिज न मानना। यही मेरा अन्तिम अनुरोध है।—पर धन नहीं मैं जाती हूँ।

बासु बाबूने बच्चे हुए स्वरमें कहा " अरुण जाओ। नीचे तुम्हारे लिए गाड़ी काड़ी है, पहुँचा जायेगी। "

कमलन स्वभाके साथ कहा " आप मुझसे स्नेह करते हैं—पर हम दोनोंमें कहीं भी तो मेल नहीं। "

नीकिम्माने कहा है क्यों नहीं कमल। पर यह मासिककी दरमाहसके मासिक बॉट-बॉट कर बनाया हुआ मेल नहीं विपत्ताकी सुविधा मेल है। केहरा बकाय मतलब है, पर वह एक ही है,—भौंकोंकी बोसल नसमें बहा करता है यह। इसीसे तो बाहरका बर्लकर बाहे किनी गहरवी कबों न पैदा करे, नीतरका प्रकृत आकर्मक हर्मिज नहीं कृतता। "

कमलने पास जाकर भाइ बाबूके कन्वेर हाथ रखके पीरे पीरे कहा
 "कमलके बरके आप मेरे ऊपर गुस्सा नहीं हो सके, मैं बड़े हठी हूँ।" भाइ
 बाबू कुछ बोले नहीं किर्क खाम्ब होकर बैठे रहे।

कमलने कहा ब्रैयेरीमें एक शप्प है, इमेन्सिपेसन (व्युक्ति दान)। आप
 तो जानते हैं, प्राचीन कालमें पिताकी कठोर अधीनतासे सन्तानका मुक्त किना
 जाना भी असम्भव एक बड़ा अर्थ था। उस कालमेंके लड़के-लड़कियोंने मित्रकर इन
 शप्पका आसिन्कार नहीं किया था, आसिन्कार किया था वो आप जैसे महान्
 पिता थे उन्होंने—अपनी बन्धनकी रस्ती खींची करके जिन्होंने अपनी कन्याओंको
 मुक्ति दी थी उन्होंने। आज भी इमेन्सिपेसनके सिम्बे चाहे कितनी ही किर्की
 मित्रकर सगला कर्म न करती रहें, देनासे अस्व मासिक पुरूप ही हैं, इन किर्की
 नहीं। बाबू-अनरखाके इस सखको मैं एक दिनके सिम्बे भी नहीं मूल्ती। मेरे
 पिता अफसर कहा करते थे कि संसारक हीत दामोद्रे उनक मासिकोंने ही एक
 दिन स्वाधीनता ही थी और उस दिन उनकी तरफसे अगे भी ये वे ही वो उनके
 मासिकोंकी शक्तिके थे—दासोंने पुत्रके बलपर या मुक्तिको बलपर स्वाधीनता
 नहीं पाई। ऐसा ही होता है। किष्क नियम ही यह है। सक्रियमान ही शक्तिक
 बंधनस दुर्बलोंने परित्राव देत हैं। उसी तरह नारिकोंके भी पुरूप ही मुक्ति के
 सफल हैं। दामिल तो उन्होंनेका है। मन्ोरमाके मुक्ति केनेछ मार आपके हाममें
 है। मनि किरोह कर सफती है, पर पिताके अस्मिगारमें तो सन्तानकी मुक्ति नहीं
 रहती उसकी मुक्ति तो उनक आधीर्षामें ही निहित है।'

भाइ बाबू भी कुछ न बोले सके। इस अर्धशुद्ध प्रकृतिकी लक्ष्मी संसारमें
 अशुभमान और अमर्सादाके बीचमें ही अन्त-काम किया है। किन्तु बन्धकी उस
 लक्ष्मीक दुर्बलोंने हृदयसे संपूर्ण विद्वह करके अपने अकालपरित पिताके प्रति
 उसने जो भाव और स्नेहका भाव संवित कर रक्खा है उसकी सीमा नहीं है।

कमलके पिताके उन्होंने देखा नहीं और अपने संस्कार और प्रकृतिके अनुसार
 उस आदमीपर यथा करना भी कठिन है, फिर भी उस व्यक्तिके सिम्बे उनकी
 शीर्षोंमें पानी भर आया। अपनी लक्ष्मीक किरोह और विद्वहपरय उनके
 हृदयमें झलकी तरह जुना हुआ है, मगर फिर भी इस पराई लक्ष्मीक
 मुँहके तरह देखकर मानो उन्हें इस बातका आभास-सा मिला कि सब कन्धन
 तोइकर भी आदमीके जैसे हमेशाके सिम्बे बोंबके रखा जा सकता है, और वे
 अपने कन्धेपरका उलका हाथ खींचकर सप-मर सुरपाप बैठे रहे।

दो-तीन मिन्ट बाद भाष्ट बाबू खड़ा चौककर बोले कमल तुम्हारी बाती में फिर एक एक बत्ती तख़्त बिचार कर देखूँगा पर हमारी बातोंकी भी तुम इस तरह अन्याय मत करना। अनेकनेक मानवोंने इसे सख़्त मानकर स्वीकार किया है, असत्यके द्वारा कभी इतने आश्चर्योंको नहीं बहकाया था सचता।”

कमलने अस्वमनस्ककी भीति धरा हँसकर सिर झिंका दिया लेकिन जवाब दिया बसने नीबिमाथे। बोली ‘जिस नीबसे एक बत्थेको बहकाया था सचता है, उसीसे तमय बत्थोंसे भी बहकाया था सचता है। संख्याका बह जाना ही बुद्धि स्वयंसे प्रमाण नहीं बीबी। एक दिन जिन ज्योतिने कहा था कि गर-नाथिके येनका इतिहास ही मानव-सम्भताका सबसे सख़्त इतिहास है, उन्हींने सबसे बड़कर सख़्तका फटा पावा था किन्तु जिन ज्योतिने यह घोषणा की कि पुत्रके सिध्द मार्गकी आवश्यकता है, वे जियोका सिर्फ़ अपमान ही करके सान्त नहीं हुए, बल्कि अपने बड़े होनेका शरणा भी वे फिरकामके सिध्द बन्द कर गये। और ऐंकि उस असत्यपर ही उन्हींने छायी भीत उठाई थी इससिध्द आज तक भी उनकी सन्तानको शूषका कोई किनारा नहीं मिथ्य।”

पर यह बात सुने कसों बन्द रही हो कमल ?

‘क्योंकि आज सुने आपको ही बतानेकी सबसे पक्का जरूरत है। हमें बाद-बाक्योंमें भागा अनेककर प्यनाकर जिन ज्योतिने यह प्रचार किया था कि मातृत्वमें नारीकी वरम सार्थकता है उन ज्योतिने समस्त नारी-बातियोंको पोखा दिया था। जीवनमें किन्ती भी अवस्थामें कसों न पढ़ना पड़े बीबी पर इस सिध्दानीतिको हर्मिज न मानना। यही मंग अन्तिम अनुरोध है।—पर अब नहीं में जाती हूँ।

भाष्ट बाबूने बड़े हुए स्वरमें कहा “अच्छा बाबो। नीचे तुम्हारे सिध्द गाड़ी खरी है, पहुँचा आयेगी।”

कमलने ध्यवाके साथ कहा “आप सुससे स्नेह करते हैं,—पर हम ज्योतिने कहीं भी तो मेक नहीं।”

नीबिमाने कहा ‘है क्यों नहीं कमल। पर यह याकिन्की दरमारसके माफिक चौंठ-छौंठ कर बनावा हुआ मेक नहीं बिबाताकी सुधिका मेक है। बेहरा अस्य अस्य है, पर खन एक ही है,—बीबीकी ओसक नसोंमें बहा करता है यह। इसीसे तो बाहरका अनेकन चाहे किन्ती गडबडी कसों न पैरा करे, नीतरका अकल आकर्षक हर्मिज नहीं हूँता।”

कमरने पास बाहर बाहु बाड़े करके एक एक करके ही ही ही
 " बाहरीय बरके आप मेरे ऊपर गुप्ता नहीं हो सकें, मैं खुद ही हूँ " का
 बाहु कुछ बोले नहीं किन्तु सच होकर बैठे रहे।

कमरने क्या " किराने एक घर है, (कमरने) का
 तो मानत है, प्राचीन कालमें विद्यापीठों के बरत बरतनायक का घर बरत
 बाबा भी उलझ एक बड़ा बरत था। उस कालमें टाट-पतले के घरों में
 घरों का आतिथ्य नहीं किया था आतिथ्य के लिए एक एक घर में
 गिरा ये ठहरीन—सपनी बननरी रत्नी कीनी बरत गिरने बने घरों के
 सुनिक ही थी, ठहरीन। आज भी किराने के लिए बरत गिरने ही ही
 मिथक गिराया क्यों न करती रहे बरतके बरत मरिद गिरने ही ही ठहरी-
 नहीं। कमरने-बरतका एक घरों में एक दिन गिरने ही ही ठहरी।
 पिता बरत का बरत ये कि फेरार ही ही गिरने के घरों में ही ही
 दिन स्वाधीनता ही थी, और उस दिन उनकी मरत के ही बरत का ठहरी
 मरतके ही आतिथ्य थे—कमरने कुछ बरत का सुनिकों के बरत मरत
 नहीं पाए। एसा ही होना है। मिथक निदय ही मरत के घरों में ही ही
 बरतके सुनिकों के पाँचाम रेत हैं। ठहरी मरत बरतके ही ही गुप्त ही सुनिक
 सचते हैं। बरत तो उगीका है। मरतका सुनिक के घरों में ही ही ठहरी
 है। मरत विद्वेह कर सचनी है, पर निदके किराने के घरों में ही ही ठहरी
 रहती उगीका सुनिक तो उगीका किराने में ही निरिण है। "

बाहु बाहु भी कुछ न बरत करे। इस उलझके घरों में किराने के
 बरतका और बरतके ही ही कमरने का घर है कि ठहरी मरत
 कमरनेके सुनिकों के सुनिके ठहरी निदके बरतके बने बरतके निदके
 उगीके ही मरत और सुनिके माथ सीकिल कर रक्ता है ठहरी ठहरी है

कमरने निदके ठहरीने केका नहीं और बने सुनिके ही सुनिके मरत
 उन भावपीय यज्ञ बरत भी किराने है, कि भी इस मरतके मरत
 किराने में बाबा मर बाबा। किराने बाहरीय विद्वेह के सुनिके सुनिक
 सुनिके सुनिके तरह गुप्ता गुप्ता है, मरत कि सुनिके सुनिके सुनिके
 सुनिके तरह देखकर मानो ठहरी इस बाहरीय मरतके सुनिके सुनिके
 तोड़कर भी बाहरीके ठेके इमेका कि सुनिके सुनिके सुनिके सुनिके
 किराने किरानेके उगीका हाथ बाहरीय यज्ञके सुनिके सुनिके सुनिके

कमलने कहा "अब मैं जाऊँ।"

बाबू बाबूने हाथ जोड़ दिया कहा "बाबो।"

इससे ज्यादा उसके मुँहसे और कुछ निकला ही नहीं।

२५

बाबूका सूर्य अस्त हो गया है। सम्प्राप्ति खाने परके मीठरस रिस्वा सुस्वभन्ना कर दिया है। सिम्प्राईका एक बरफी चाम पोषा-सा बच्चा है, जिसे कमल दिवा-बत्तीके पाहके ही पूरा कर देना चाहती है। बास ही कुत्तीपर बन्धित बैठा है। उसकी मान-भंगीसे मात्स्य होता है कि कोई बात करते करते अचानक बक गया है और व्याकुल आपसके साथ बत्तरी प्रतीक्षा कर रहा है।

मनोरमा और शिवनाथका मामल सबसे मात्स्य हो चुका है। आबका प्रसंग उची विषयके केकर हुए हुआ है। अजितने हुए हुएमें कहा था कि अपने आनरमें आते ही सम्प्रेह बिना था कि अन्तमें आकर ऐसी ही बात होगी।

पर सम्प्रेहके अरथके सम्बन्धमें कमलने कोई बत्तुकता नहीं दिखाई।

उसके बाद अजित अनर्थाक बचते बचते अन्तमें ऐसी जगह आकर बक्य नहीं चुकरी तरफसे उतर पाये बिना नहीं बचा व्य सञ्चता।

कमल अत्यन्त तल्लीनताके साथ सिम्प्राई करमें ही लगी रही। मानो उसे फिर उठनेकी भी फुरसत नहीं।

हो तीन मिन्ट सञ्चटेमें बीते। आत्मे न जाने और कितनी बेर लगे, इच्छिय अजितको फिर कोशिश करनी पड़ी बोध "आनर्य तो यह है कि शिवनाथका आनरक तुम्हारी निपाहमें पर्यार्थ नहीं दिया।"

कमलने मुँह नहीं उठरया किन्तु धिर दिखाकर कहा "नहीं।"

"तुम ऐसी भोली-भाळी हो कि तुम्हें कुछ सम्प्रेह नहीं हुआ इसपर क्या कोई निपास कर सञ्चता है।"

और कोई कर सञ्चता है या नहीं मुझे नहीं मात्स्य। पर क्या आप भी नहीं कर सञ्चते।"

अजितने कहा "आपक कर सञ्चता हूँ, केवल तुम्हारे मुँहकी ओर बककर—ऐसे ही नहीं।"

बनकी बार कमलने मुँह कार किना और हैउकर कहा "न कॅन्टिड और
 खीर, कर एकते हैं या नहीं ?

अभिधी जीते पमक ठठी; बोझ दुम्हारी बात सन है। उम्हारे
 बनियास नहीं किना उठीका वह नलीका हुआ।"

"हुआ है सो मैं मानती हूँ, पर यह भी तो सुझना कर बनाए कि आम्ने
 बान्ने समेहका लच्छा नलीका किना परिमाणमें पया।" खरकर वह कि करा।

इसके बाद अशिया संवाद और असेवद बहुत-सी बातें बन-पत्रह मिनट तक
 बगातर करता रहा। अन्तमें यहकर बोझ "कमी हों कमी ना—परे की
 बुझानके सिवा क्या तुम सीपी बाग करना बावती ही नहीं ?

कमलने सिताईका काम सीबा करत हुए कहा "त्रिबी परेमी बुझाना ही
 पमक करती हूँ,—उनका यह स्वभाव है।"

तो उस स्वभावकी मैं तारीफ नहीं कर सकता। स्पष्ट करना भी जरा सीपो
 उसके बिना संसारमें काम नहीं चलता।

बाप भी परेकी समझना जरा सीपिए अन्वबा बुजारे पछको भी ऐसी ही
 अज्ञानिया होती है।" कमलने हाथकी नीच तक करके टोकनीमें रखते हुए कहा

राष्ट्र करनेका काम जिन्हें बहुत प्यारा होता है वे अगर कथा हुए तो अज-
 वारमें बकतुवा कराते हैं केवल हुए तो अपने प्रत्यक्ष मूर्खिच सिद्धत हैं और
 अगर नाट्यपर हुए तो वह ही अपने नाटकका नायक बनकर अभिनय करते
 हैं।—सोचत हैं। समझे जो व्यक्त नहीं हो सक्त सते हाथ पैर दिखाकर व्यक्त
 कर देना चाहिए।—पर सिर्फ नहीं मैं नहीं जानती कि अगर वे प्रेम करते हैं
 तो क्या करत हैं ? केकिन जरा बैठिए बाप मैं बती क्या कहें। खरकर वह
 बठके कपटीसे हमारे कमरेमें बसी गई।

पौन-उर मिनट बाद वह धीट आई और टेकिवर जाती रखकर अनीमपर
 बैठ गई।

अभिधने कहा 'बच्छ केवल ना नाटकपर। इनसे मैं कोई भी नहीं
 सिद्धावा, उनकी तरफसे मैं कैफियत नहीं दे सकता केकिन अगर मैं प्रेम करत हूँ
 तो क्या करत है, सो मैं जानता हूँ। मैं केव सिताइका बूट-हीकन नहीं रखत;
 बसिक साध और जानी हुई राहपर काम रखकर चलते हैं। मैं—

खवाब रखते हैं कि उनके पीछे कहीं बरबान्सेको घाने पहननेकी तकलीफ न उठानी पड़े था। उनके लिए किसी मासिक-मध्यमक ग्रह न ताकना पड़े असम्मानकी चोट ”

कमल बीबहीने ठोकर बोल बड़ी, बत बत हो गया। ” और फिर हँसते हुए कहा “ बापी ये इन्हो आखिर तक इमारतको ऐसे मरकर हमसे छेद और मजबूत बना बैठे हैं कि कत्रके मुररेके सिवा बसमें किम्बा आदमीके लिए हम देनेकी भी सक्ति नहीं रखती। ये छात्र पुरुष हैं—”

सहसा बरबान्सेके बाहरसे अशुभोच आया हम लोग मीठर जा सकते हैं ।” हरेन्द्रकी आज्ञा थी। पर हम लोग चीन ।

आइए, आइए ।” खड़ी हुई कमल अम्बरनाके लिए बरबान्सेके पास जा खड़ी हुई ।

हरेन्द्र या और चापमें एक और मुनक । हरेन्द्रने कहा ‘ छतीसको हमारे आश्रममें तुमने सिर्फ एक दिन देखा या फिर नी आसा है कि मूमे न होनी ।”

कमलने सुसंभारते हुए बराब देखा नहीं । फर्क सिर्फ इतना है कि बस दिन करो सकेद ने आज है पीके ।”

हरेन्द्रने कहा “ यह तो बखतर मूमिपर आरोहणकी बाह्य-शेवना मात्र है और कुछ नहीं । आधीशामसे सवा प्रत्यागत हुए हैं—तो क्येसे पवादा नहीं हुए । एक तो बके हुए हैं, और दूसरे तुम्हारे प्रति प्रसन्न नहीं फिर भी सुसे जहीको जन्ता देव आक्षिप्त संवरण न कर सके । यह हम आश्रमकी लगेको मत्तक बीवार्य है और कुछ नहीं ।” खते हुए बतने मीठरकी तरफ हँस कर खते कहा बरे आप हैं । यही तो और भी एक नैतिक आश्रमकी पूर्णहमें ही समुपस्थित हैं । खेर अब कोई आक्षिप्त करण नहीं । मेरा आज्ञा तो दूर रहा है लेकिन इतरा गया पैरा हुआ ही समझो । यह कहकर वह मीठर बुछा हुयी कुसी छतीसको सिखाठा हुआ बोम्ब बैठे ” और आप आदपर जा बडा । यह देखकर कि कमल खड़ी है, और तीसरा आश्रम है नहीं छतीस बेडनेमें बुकिवा कर रहा था। हरेन्द्र इस बातको न समझा हो ले बात नहीं फिर भी वह हँसकर बोला बैठो नी छतीस, आदि न आबगी । खड़ी हो जानेके कारण तुम चाहे बिटने मी दैये बड गये हो, पर इस बातको न न मूमे कि संघारमें सबसे भी दैयी कोई बगह है ।”

‘ नहीं नहीं इसलिये नहीं ! ’ बड़कर उत्तीस अग्रिम-सा झोकर बैठ गया ।
 बसका मुँह बेबाकर कमल हँसी, तल्ले कहा “ किसीपर धर्म्य करना आपके
 मुँहसे खोम्य नहीं देता होकर बान् । आत्मिक प्रतिष्ठा भी आप ही और महन्त
 महाराज भी आप ही हैं । ये खोम्य उमरमें भी खोम्ये हैं और पण्डायीमें भी
 पीठे हैं । इनका काम तो सिर्फ आपसे उपदेश और आदेशके अनुसार चलना
 है । इसलिये—

होमन्त कहा “ आपका यह इसलिये तो बिलकुल ही जनाक्यक है ।
 आत्मिक प्रतिष्ठा शब्द में ही है, पर महन्त और महाराज हैं वे ही जनों
 मित्र स्वीत और राक्षेत्र । एकका काम है मुझे उपदेश देना और दूसरेका
 काम वा बमानाथ मेरी न मानकर चलना । एकका तो पता ही नहीं और
 दूसरे कीड़े हैं बहुत ज्यादा तप-संन्य करके । मुझे हर ही कि इनके साथ कर्मसं
 कर्म मित्रकर शब्द ही में चल सकूँगा । जब सिर्फ उन जर्म उपासे बहसोकी
 चिन्ता है किन्हे कापी-कापी-प्रमाण बड़ाकर वे वास्तव के भावे हैं । मैंने उनकी
 तप देखते ही समझ लिया कि इस बी-बीमें उनकी आचार-निष्ठ में तप-मात्र भी
 मुझि नहीं हुई । खोम्य सिर्फ इतना ही है कि और बरा खोरसे तपसा करा ही
 जाती तो वास्तव आनेका रेल-चिन्ता मेरा नहीं बनता । ”

कमलने हाँकि-नेरनाके साथ पूछा कबके बहुत दुबके हो गये होंगे ।

होमन्तने कहा दुबके !—आत्मिक परिमाणमें छाबड़ उनके लिये एक
 अर्थ-सा सम्य है,—उत्तीसको मान्य होना —आधुनिक कालमें अंदिन किया
 हुआ ‘ सुखवासके उत्तरवमें कबका पिन क्या तुमने देखा है !—नहीं
 देखा !—तो तुम मेरी बात नहीं समझ सकोगी ।—मैंने जब कालके बरामसो
 देखा तो मादस हुआ कि कबको एक काल सहसा परिष्कार स्वर्णसे बतरकर
 आत्ममें प्रवेश कर रहा है । मुझे आज्ञा बँच गई कि आत्मन जब दूद बरवा
 सब जाना-सीना न मिळनेर भी वे न मरेंगे, देखके किसी भी निरुधरीके लक्ष्यमें
 जाकर किसी लिये मोहितका काम दे सकेंगे । ”

कमलने कहा “ खोम्य चरत हैं कि आप आत्मन तप दे रहे हैं । यह क्या
 सब है । ”

“ सब है । तुम्हारे वास्तव-भाव मुझसे बड़े नहीं जाते । उत्तीसके नहीं
 जानेका यह भी एक कारण है । इसकी वारता है कि तुम आत्ममें आरक्षण

रमणी नहीं हो इतकिय भारतकी निगूड सत्य वस्तुको हम पहचान ही नहीं
 सक्ती। दुन्दे यह यही बात समझ देना चाहता है। समाप्तोगी या नहीं छो
 तो दुन्दे जानो पर इसे मैंने आभास दे दिया है कि मैं कुछ भी क्यों न
 कई उन शोषको किये करकी कोई बात नहीं। कारण माध्यम नहीं, बहुविध
 आभमोमिसे अहितकार स्वयं कीन-सा आभम प्रथम करेगे, पर फिर भी परम
 परसे इतनी बबर सुचे मित्र नई है कि ये बहुत-सा लक्ष-मय करके ऐसे और भी
 वस-वीस आभम बगह बगह प्रेक देना चाहते हैं। उनके पास अर्थ भी है और
 केनेक सामर्थ्य भी। सो इनमेंसे एकत्र नानकरन तो सतीशको मित्र ही बायमा।”

अमक भीतर ही भीतर मुस्कराती हुई बोधी शान्तीकता बेसी दुन्देको
 हैकनके किये इससे अच्छा आश्चर्य और नहीं हो सक्ता। पर भारतको छत्र
 वस्तुको मुझे समझामे सतीश बाबूको क्या फायदा होगा! इनेक बाबूसे मैंने
 आभम उठा देनेके किये भी नहीं क्या और समोके बबर भारत-भरमें आभम
 कोनेके किये भी अहित बाबूको मैं मना नहीं करैनी। मेरी आपत्ति तो सिक्
 वसीको छत्र मान लेमें है। इसमें किसीका क्या मुकदान।”

सतीश विनीत स्वरमें बोझ “मुकदानका परिणाम बाहरसे नहीं दिखाइ देता।
 —बहुसके किये नहीं बसिक शिष्याकी तीरपर मैं आपसे अगर कुछ प्रश्न कर
 तो क्या आप इनका उत्तर दोगी।”

“मगर आज तो मैं बहुत बधी दुर्ब हैं सतीश बाबू।”
 सतीशने इसकी बातपर कुछ ध्यान ही नहीं दिया बोझ ‘इनेक मरवाने
 नमी नगी हैतीके तीरपर क्या वा कि मैं कसी बाबर बाह कितना भी ऊंचा
 चढ़ गया होके, संघारमें उससे भी ऊंचा और त्यान है सो वह यही बर है।
 मैं जानता हू कि आपके प्रति इनकी अज्ञा असीम है। आभम दूर जानेसे हानि
 नहीं किन्तु आपकी बातोंसे इनका अगर मन दूट गया तो मुकदानकी पूर्ति
 होना कठिन है।”

अमक चुप रही। सतीश कहन लगा “एकेन्द्रको ध्यान अच्छी तरह
 जानती होनी वह मेरा मित्र है। मूल नियमपर मटक मेल न हाता तो हम
 दोनोंकी मित्रता होती ही नहीं। उसीके समान मैं भी चाहता हूँ कि भारतकी
 वर्तमान सुविधे स्वजातिका परम अन्तर्गत हो। उसी वास्तवसे हम
 स्वकोसे संपन्न करके गवना चाहत हैं। हमें मूलुके बाह अन्तर्गतक

बैतुष्टास करनेका काम नहीं केवल नियमके कठोर बन्धनके बिना संघर्षी सृष्टि ह्रासित नहीं हो सकती । और सिर्फ लक्ष्यके लिए ही नहीं तब बन्धनका हम लोगोंमें स्वयं अपने ऊपर भी लागू किया है । क्या वहाँ बन्द है — और रहेगा ही क्योंकि बहुत धन एक महान् बस्तुको प्राप्त करनेके स्थानको ही तो आधुनिक कहते हैं । हममें तपस्याकी तो धीरे बात नहीं । ”

धोरे अशासक पाकर मर्त्यादिर करने लगा “ इरेन्द्र मैवाका आधुनिक चाहे कैसा भी हो उसके नियममें मैं आकाशना नहीं करूँगा; कारण तब उसके स्पष्टिमत हा जानेका कर है । परन्तु इसे तो अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि भारतीय आधुनिकोंमें भारतके अतीतके प्रति ही निष्ठा और परम अज्ञा निहित होनी चाहिए । स्वाग प्रज्ञाचर्म संभव — य मन् शक्तिहीन अस्मत्को मम नहीं है । अति-कठिनक प्रायः और अज्ञान उस समय इन्हींमें निहित थे धीरे आत्र इस युगमें भी ब इदेशा की सामग्री नहीं । मरण्यमुक्त भारतको निकट एक इसी मागसे पुनर्जीवित किया जा सकता है । आधुनिकोंके आचार और अनुष्ठानके द्वारा हम अपने इसी विश्वास और इसी धर्मको अगामे रखना चाहते हैं । एक दिन हम मंत्र-सुधारित होमाग्नि-अग्नि-कठिन तपस्या-कठोर मारणमें या आधुनिकोंकी प्रतिष्ठा टूटने की वह अति शक्तिके एक मौखिक कल्याणको उत्पन्न करनेके तद्देश्यके ही इष्ट भी और इस सत्यके लौकिक ऐसा मूर्ख हागा जो स्वीकार नहीं करेगा कि वह प्रयोगका आत्र भी मिटा नहीं है । ”

सत्रीकी बस्तुनामें हार्दिकताका जोर था । हमकी बातें अन्धों की और निरन्तर बहुत रहनेके कारण कठोर हो गई थी । आश्रममें उच्चका सुखायम स्वर सेव हो गया और मारे अनेकनाके बाला पेशवा बेंपनी हो ठग । उसीकी तरह सुवचन और निष्कण्ड दृष्टि रखते रहनेके कारण एक प्रकारके धार्मिक ओपसे अन्धितका आनाह-कलक रोनिचित हो ठग और माय ही इरेन्द्र भी यद्यपि इसका पहले वह अपने आधुनिक विद्वत् विज्ञान ही मौखिक आश्रमका कर बुध है आधुनिक विपत्त यौरके अन्धसे विश्वास और अविद्याके बीच अन्धोंके बन्धे अपने ध्या । उसीके मुँहकी तरह तोह्य दृष्ट रखकर सत्रीम करने मया इरेन्द्र-मया इन मन्के ही मर जाने पर इस सत्यको कि इस तरहके आधुनिकोंमें ही हमारे नर अन्ध-अन्धका विज्ञान है आप मूके आ रहे हैं; किन्तु सुन्दर ! आप तोह्यना चाहते हैं, पर तोह्यना ही क्या बनी बात है ! आप ही बताइए कि बनाना क्या ठगते बहुत बनी बात यही है ! ”

फिर कमलके मुँहकी तरफ देखाकर उसने पूछा "जीवनमें मिलने आश्रम आपसे अपनी आँखों देखे हैं। और किसनेके साथ आपका सचार्थ गुरु परिचय हुआ है।"

कठिन प्रश्न है। कमलने कहा वास्तवमें एक मी नहीं देखा और आप लोगोंके आश्रमके सिवा और किसीके साथ मेरा कोई परिचय मी नहीं हुआ।"

उस बताइए।"

कमलने हँसते प्येहरेसे कहा आँखोंसे क्या सभी कुछ देखा जा सकता है। आप लोगोंके आश्रमका 'धर्म ही आँखोंसे देखा जाई बी, मगर उससे किसी महान् करतुके प्राप्त करनेकी बात तो जोड़की जोड़में ही रह गई।"

सतीशने कहा "आप फिर हँसी उठा रही हैं।"

उसका मुँह खेहरा देखाकर हरेन्द्र स्निग्ध स्वरमें बोला उठ, नहीं नहीं सतीश हँसी नहीं उठा रही बी ही सिर्फ विनोद कर रही हैं। यह तो इनका स्वभाव है।"

सतीश बोला "स्वभाव है। पर स्वभाव करनेसे ही कैफियत नहीं हो जाती हरेन्द्र भवा। यह तो भारतके अतीत काकाल जो मी कुछ नित्य पूजनीय और नित्य-आचारनीय तरल है, उसीका अपमान—उसीके प्रति अज्ञान विद्याना है। उसकी ता उपेक्षा नहीं की जा सकती।"

हरेन्द्रने कमलकी तरफ इशारा करके कहा, "इस बातपर इनसे बहुत बड़े बहस हो चुकी है। इनका कहना है कि अतीतका इसमें कोई महत्त्व नहीं। वस्तु अतीत होती है काकले बर्मेसे मगर अतीत होती है अपने गुणसे। सिध प्राचीन होनेसे ही वह पूज्य नहीं हो जाती। जो बर्बर जाति किसी जमानेमें अपने बड़े मा-बापके शिखा गाव देती बी वह धर्म मी अमर उस प्राचीन अनुष्ठानकी दुहाई देकर मनुष्यके कर्तव्यका निर्देश करता जाई तो उसे मी तो रोका नहीं जा सकता सतीश।"

सतीश जोकमें आकर जैसे स्वरमें कह उठा "प्राचीन भारतके साथ बचपेकी दुस्मना नहीं हो सकती हरेन्द्र दादा।"

हरेन्द्रने कहा, "सो में जानता हूँ। पर वह तो पुक्ति नहीं सतीश वह तो पकेके जोरकी बात है।"

शेष प्रश्न

छठीज और भी उल्लेखित हो उठा बोला ' यह हम जोयोंने स्वप्नमें भी न छोबा बा इरेन्द्र द्वारा, कि आपको भी एक दिन इस नास्तिकताके चहारमें पना पवेया । "

इरेन्द्रने कहा, इस बातसे हो कि मैं नास्तिक नहीं हूँ। लेकिन यह वाली देकर सिर्फ अपमान ही किया जा सकता है सलीख मतकी प्रतिष्ठा नहीं की जा सकती। कठोर बात ही बुनियातमें सबसे ज्यादा कमजोर होती है। "

छठीज बर्हिन्दा हो गया। उसने झुककर इरेन्द्रके पाँव छू लिये और कहा " जपमान मैंने नहीं किया इरेन्द्र मरवा। आप तो जानते हैं, हम लोग आपकी पिछनी मीक करते हैं मगर हमें कुछ होता है जब सुनते हैं कि भारतकी ताशत तम्सापर भी आप भविष्यवाणी करने लगे हैं। एक दिन दिन उपादानों और दिन धापनसे उन तपस्विनीने भारतकी इस विशाल नाति और विराट् तम्साका निर्माण किया या वह सब कमी विस्तृत नहीं हुआ। सुनइके बच्चोंमें जिन्ना हुआ में स्पष्ट देख रहा हूँ कि वही भारतका मन्नामत धर्म है, वही हमारी अपनी नीब है। इस बल्लोमुख विराट् नातिको फिर उन्हीं उपादानसे विजाबा जा सकता है इरेन्द्र मरवा, और कोई मार्ग नहीं। "

इरेन्द्रने कहा " न भी विजाबा जा सके, सलीख। यह तुम्हारा विजास है,—और इसकी भीमत सिर्फ तुम्हीं तक सीमित है। एक दिन ठीक इसी बंधकी बातके ज्वाबमें कमबन्दे कहा बा जगतके आदिम युगमें एक दिन विराट् अरिब विराट् तुम्हाराके एक विराट् नीबकी सृष्टि हुई थी वही वेद और तुम्हारे वह संसारको अब करता फिरा बा और उस दिन से से उसके सब उपादान। किन्तु फिर एक दिन ऐसा आया कि उसी वेद और उसी तुम्हारे उसकी मसु बा थी। एक दिनके पहले उपादानने दूसरे दिनके मिय्या उपादान बनकर उसे संसारसे निविह कर दिया —बा भी बुनिया नहीं की। उसकी अरिब नाम परपरमें परिवर्त हो गई है, और अब वह सिर्फ प्रत्य-उत्पत्त (प्रातलत्त) विज्ञानोंकी परीक्षणकी नीब रह गई है। "

छठीजको स्वरा ज्वाब हुई न मिला और वह कहने लगा ' तो क्या हमारे पूर्व-पुरखोंका आदर्श प्राप्त या। उनके तर्क-निष्पन्नमें सल नहीं या। "

इरेन्द्रने कहा " हो सकता है कि उस दिन उसमें सल रहा हो पर आज उस सलके न रहनेमें कोई बाबा नहीं। उस दिन जो पब स्वर्णका पय या

फिर कमलसे मुँहकी तरफ देखकर उसने पुनः "जीवनमें कितने आधम भावने वाली आँखों देखे हैं। और कितनोंके साथ आपका बचार्ब गुड परिचय हुआ है।"

उत्तर प्रश्न है। कमलसे कहा "वास्तवमें एक भी नहीं देखा और आप लोगोंके आधमके सिवा और किसीके साथ मेरा कोई परिचय भी नहीं हुआ।"

"कब बतलाएँ?"

कमलसे हँसते चेहरेसे कहा "आँखोंसे क्या समी कुछ देखा या सफ़टा है? आप लोगोंके आधमका 'मम ही आँखोंसे देखा जाई' वी मगर उधसे किसी महान् वस्तुके मास करनेकी बात तो ओठकी ओरसे ही रह गई।"

उत्तीससे कहा "आप फिर हँसी उठा रही हैं।"

उसका मुँह खेहरा देखकर हरिन्द्र निरग्न स्वरमें बोला उठा, "नहीं नहीं उतीस हँसी नहीं बका रही भो ही सिर्फ़ विनोद कर रही हैं। वह तो इतना स्वभाव है।"

उत्तीस बोला "स्वभाव है? पर स्वभाव करनेसे ही वैचिन्त नहीं हो जाती हरिन्द्र मेरा। वह तो मारतके अतीत कल्पका वो भी कुछ दिव्य पूजनीय और नित्य-आधारणीय तत्व है, उतीसक अपमान—उतीसके प्रति अफ़सना दिखाना है। उतीस तो उधेका नहीं थी या सफ़टी।"

हरिन्द्रने कमलकी तरफ़ इशारा करके कहा, "इस बातपर इनसे बहुत रके बहस हो चुकी है। इनका कहना है कि अतीतका इसमें कोई महत्त्व नहीं। वस्तु अतीत होती है कालके बर्मेसे मगर अच्छी होती है अपने गुणसे। सिर्फ़ प्राचीन होनेसे ही वह पूज्य नहीं हो जाती। वो बर्बर जाति किसी कमनैम अपने बड़े मा-बापके सिम्बा बाह देती थी वह जान भी भयर उस प्राचीन अनुष्ठानकी बुझाई देकर मनुष्यके अतीतका निर्दोष करना चाहे तो उधे भी तो रोका नहीं या सफ़टा उतीस।"

उतीस कोपमें जाकर उँच स्वरमें कह उठा, "प्राचीन भारतके साथ बर्बरपैकी तुलना नहीं हो सफ़टी हरिन्द्र बाबा।"

हरिन्द्रसे कहा "ओ मैं जानता हूँ। पर वह तो मुक्ति नहीं उतीस वह तो नकेके ओरकी बात है।"

श्रेय प्रश्न

ज्येष्ठ और भी बहिष्कृत हो उठा बोला वह हम लोगों ने हमने भी न सोचा था इन्द्र दाया, कि आपको भी एक दिन इस नास्तिकताके बहारमें पड़ना पड़ेगा।”

इन्द्रने कहा, तुम जानते हो कि मैं नास्तिक नहीं हूँ। लेकिन यह पाली-देवर सिंह अपमान ही किया जा सकता है सतीश मठकी प्रतिष्ठा नहीं की जा सकती। कष्टर बात ही दुनियामें सबसे ज्यादा कमजोर होती है।

सतीश धर्मिन्दा हो गया। उसने सुझकर इन्द्रके पोंब ए मिये और कहा “अपमान मैंने नहीं किया इन्द्र महारा। आप तो जानते हैं, हम लोग आपकी मित्रताी मीचि करते हैं, मगर हमें कुछ होता है अब सुनते हैं कि भारतकी शाश्वत उत्सवापर भी आप अविश्वास करने लगे हैं। एक दिन जिन उपादानों और जिन धारणसे हम उत्पन्नहोने भारतकी इस विद्यालय जाति और विराट् सम्प्रदाय निर्मात्र किया था वह सब कभी विफल नहीं हुआ। सुनहले नहरोंमें निम्बा हुआ मैं स्वयं देख रहा हूँ कि वही भारतका मज्जागत धर्म है, वही हमारी अपनी नीति है। इस अन्तर्मुक्त विराट् जातिको फिर बड़ी उपादानसे विद्याया जा सकता है इन्द्र महारा, और कोई मार्ग नहीं।”

इन्द्रने कहा “न भी कियाया जा सके सतीश। यह तुम्हारा विश्वास है,—और इसकी कीमत्त सिर्फ तुम्हीं तक सीमित है। एक दिन ठीक इसी डंगकी बातके ब्यापमें कमरमें कहा था अत्यन्त आरिभ युवमें एक दिन विराट् करिब विराट् उपादानके एक विराट् नीचकी छवि हुई थी; उसी देह और सुभासे वह संसारको अम करता फिरा था और उस दिन वे ये उसके सब उपादान। किन्तु फिर एक दिन ऐसा आया कि उसी देह और उसी सुभासे इसकी मृत्यु का ही। एक दिनके पहले उपादानमें दूसरे दिनके निम्बा उपादान बनकर उसे संसारसे निविष्ट कर दिया—जरा भी हुकिया नहीं थी। उसकी करिब जाय परबमें परिवर्त हो गई है, और अब वह सिर्फ अन्त-उत्पन्न (पुरातत्त्व) विज्ञानोंकी गवेषणकी नीच पर गई है।”

सतीशको सहसा बराब हुई वे निम्बा और वह करने लगा ‘तो क्या हमारे पूरै-पुस्तकें आदर्श प्राम्त था। उनके उत्प-निष्पन्नमें छल नहीं था।’

इन्द्रने कहा ‘तो सत्य है कि उस दिन उसमें तब रहा हो पर आज उस सत्यके न रहनेमें कोई बाधा नहीं। वह दिन जो पब स्वर्गका पब का

अगर आज यही हमें बमराजके दक्षिण द्वारपर पहुँचा दे तो मुँह फुलानेका मैं तो कोई धरम नहीं देखता सतीश ।”

सतीश अपने गुरु कोषको जी-जानसे बचाकर बोला हरेन्द्र मइवा यह सब सिर्फ आप खोयोली आधुनिक शिक्षाका धर्म है; और कुछ नहीं ।

हरेन्द्रने कहा असम्भव नहीं । किन्तु आधुनिक शिक्षा अगर आधुनिक कालमें हमें क्या-क्या मार्ग दिखा सके तो मैं उसमें अजबकी कोई बात नहीं देखता सतीश ।”

सतीश बहुत धर तक निर्वाण होकर स्तम्भ बैठे रहा फिर धीरे धीरे बोला “मगर मैं तो अजबका बलिब महा अजबका कारण देखता हूँ हरेन्द्र मइवा । भारतका ज्ञान धीरे भारतका प्राचीन तत्व इस भारतका ही वैशिष्ट्य धीरे प्राप्त है । उस तत्वको सिमाबन्धी बंधन अवर देखके स्वाधीनता प्राप्त करना हो, तो वह स्वाधीनता भारतकी जय न होगी बल्कि उससे तो सिर्फ पाश्चात्य नीति और पाश्चात्य सम्बन्धकी ही जय होगी । वह तो पराजयका ही नामान्तर है । उससे तब मृत्यु अरुणी ।”

सतीशकी वैरना दार्ढिक है । उस स्वस्वस्वाका परिमाण अनुभव करके हरेन्द्र मीन हो रहा और अबकी बार जवाब दिया कमलमें । उसके मुँहपर सुपरिचित परिहासका चिह्न तब न था और बन्टस्वर सेवत वांत और गुरु वा । सफल कहा सतीश बाबू, आपने अपने जीवनमें जैसे अपने आपका समर्पण कर दिया है, अपने संस्कारोंको भी कैसे ही अगर समर्पण कर सकते तो आज वह बात भी अनुभव करनेमें आपको कठिनाई न होती कि किसी विरुध भावके किये वा किसी वैशिष्ट्यके किये आदमी नहीं है बल्कि आदमीके किये ही उस वैशिष्ट्यका आधार है मूल्य है । पर मानव ही अवर नष्ट हो जाय तो उस तत्वको महिमाकी प्रशंसासे लाभ ही क्या होगा ! भारतके मलकी जय न भी हो तो क्या हुआ मनुष्यकी जय तो होगी । तब सुष्ठि पाकर इतने मर-जायी घम्भ हो जायेंगे । बरा नहींन दुर्भकी तरफ तो देखिए । जब तक वह अपनी प्राचीन ऐति-नीति, आचार-विचार धीरे परम्परागत पुराने अनुष्ठान-मार्गको सत्य मानकर पढ़े रहा तब तक उसकी बार बार पराजय ही होती रही । आज उसने कान्ठिमेंसे सत्यको पाया है—उसका साराका सारा, कृत-अरुध वह गया है,—किरकी ताकत है कि आज उसका उपहास करे !

और महा यह कि किसी दिन उसके प्राचीन मत और मानि ही उसे निरन्तर ही ही उपेक्षित किया या सम्मान दिया या अनुप्यत्त दिया जा। पहले अपने जेबा या कि बड़ी कायब विरमलन छल है। सोचा जा कि उसीसे भी जलसे लक्ष्मि रहनेसे विगत पौरुषको मान भी वापस पाया जा सकता है। उसे इस बातका जबाब भी न था कि उसका भी विवर्तन है। आज उसका वह मोह तो बर पका पर आरम्भी बढा। ऐसे ह्यस्त और भी हैं, और भी होंगे। एतरी वापू आत्म-विश्राम और आत्म-बहिष्कार दोनों एक चीज नहीं हैं।

एतरीसे कहा “ जलता है। मगर जना भी तो हो सकता है कि पश्चिमके सम्पत्ति मनुष्यके प्रभाव से उत्तर दिया है वह क्षेत्र उत्तर न हो ? ऐसा भी तो हो सकता है कि उनकी सम्पत्ताका भी किसी दिन अन्त हो जाय ? ”

कामसे फिर हितकर कहा “ हो हो सकता है। और मेरी धारणा है कि अन्त होगा भी । ”

उस फिर ।

कामसे कहा ‘ उससे बिहारकी कोई बात नहीं होगी एतरीम वापू। तुम तो कठोरता दुष्मन नहीं तुमका करता अन्तरीका दुष्मन तो वह है जो अपने और भी अन्त है। वह और भी अन्त जिस दिन अन्तके सामन उपस्थित होकर प्रसन्न जबाब बाह्यता है उन दिन उन्हीके हाथमें राजकाज हीपकर उसे अन्त हो जना पड़ता है। एक दिन एक रूप और उत्तरीमें जाकर भारतको छोड़ रिक्त बरपर जीत जिना मगर यहाँकी सम्पत्ताको से नहीं लौप सके वे तुम ही नैव लवे। जानते हैं हमका कारण क्या था ? अन्त कारण यह था कि वे तुम ही छोड़े थे। पर तुमका पदमौकी परीक्षा बाकी ही रह गई क्योंकि इसी बीच अन्तरीकी और अन्त का अन्त है; केवल उनकी निवास आज भी अन्त नहीं हुई है। भारतको इसका जबाब उन्हें एक दिन देना ही होगा। और उस प्रसन्नो जाने दीजिए—केवल पश्चिमके ज्ञान-विज्ञान और सम्पत्ताके सामने भारतवर्षको आज अन्त बाधा देकरना वही तो उससे उसके अन्तको शोध अन्त पहुँचाना, किन्तु वह मैं निश्चयसे यह कहती हूँ कि उसका अन्तके अन्तकाको शोध न पहुँचाना । ”

एतरीसे औरसे फिर हितकरे हुए कहा “ नहीं नहीं नहीं । जिनके अन्तना नहीं मरना नहीं विधातकी बीच जिनकी बाह्यता है, उनके सामने यह कहना तो अन्तरीकाको निम्नत्रम देना होगा। वहकर उसने कनविमोसे हरेन्द्रको देना

और क्या "दीक इसी तरह एक दिन बंगालमें —अभी पचासा दिन नहीं हुए,— विदेशके विज्ञान विदेशके दर्शन और विदेशी सम्प्रदायों के बड़ा मानकर कुछ दरबान्द और आदरसम्पन्न लोगोंने अपनी अचूक सिद्धांतों के विद्यार्थीव हम्ममें स्वदेशीय जो कुछ अपना वा उठीये दुष्ट करने के लक्ष्यके मनमें निहित और कदाचारी बना बाल्य वा । मगर इतना बड़ा अक्षय्याय विद्यार्थी सहा प मया बसकी प्रतिष्ठावा हुई और विदेशी लौक आया । भूक दिखाई दे गई । उन विषय दिनोंमें जो मनस्वी अपनी आदिके केन्द्र विमुक्त उद्भ्रान्त विद्यार्थी अपने करकी ओर फिरसे वापस के आये थे वे सिर्फ बंगालके ही नहीं समग्र भारतके बन्दनीय हैं ।" यह कहते हुए उसने दोनों हाथ जोड़कर मायेसे क्या किये ।

बाद सब भी और छनी जागते थे । विद्यार्थी हरेन्द्र और अश्विनी दोनोंने जो बसका अनुकरण करके बम्बलोकके सिव् नमस्कार किया उसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं थी । अश्विनीने गुरु स्वरमें कहा "नहीं तो शान्त बहुतसे क्षेप उस समय ईसाई हो जाते । सिर्फ उन्हींके कारण ऐसा न हो सका ।" बाव कहनेके बाद ही उसने कमलके मुँहकी तरफ देखा,—उसकी आँखोंमें इसका अनुमोदन नहीं था सिर्फ तिरस्कारका भाव ही दिखाई दिया । फिर भी वह चुप ही रही । शान्त, क्वाब केनेकी इच्छा भी नहीं थी । अश्विनीके यह जानती थी—पर हरेन्द्रने इसीकी अत्युत्त प्रतिष्ठाकी थी, तब, उसकी कुछ देर पहले कही हुई बातोंके साथ वह संप्रयोग करता ऐसी मरी बिन पकी कि वह चुप न रह सके । बोली "हरेन्द्र बान्, कुछ ऐसे आश्चर्य होते हैं जो मूल तो नहीं मानते पर मूलसे करते बहर हैं । आप उन्हींमेंसे एक हैं और इसीका नाम है भारतके कर बोधि । इतना अनुचित और कुछ ही नहीं सकता । इस देशमें आश्रम वैसी संस्थाओंके सिव् न कमी उपबोधि कमी होगी और न अक्षय्याय अक्षय्य पौगा; इतकिये, आपके विना मी सतीत बाबूका धम बस जायगा मगर इन्हीं आप केनेका मिथ्याचार आपको हमेशा बढता रहेगा ।"

फिर बरा ठहरकर बोली मेरे पिता ईसाई थे; पर मैं बौद्ध हूँ इस बातकी खोज न तो कमी उन्हींकी थी और न मैंने ही । उन्हें इसकी कोई बहरत नहीं थी और मुझे कुछ बाद न था । मैं तो मही क्षमना करती हूँ कि धर्मको आश्रम इसी तरह भूमी रह सके । परन्तु अभी अभी उच्छ्रयक और कदाचारी बहर जायने विद्यार्थी तिरस्कार किया और बन्दनीय बहर

जिन्हें अमरधार किया उनमेंसे स्वदेशके सर्वनाशमें निजका हाथ भारी है, इस प्रसन्न अवाक लोग किसी न किसी दिन अवरण पाहेंगे।

छटीलकी देहपर मानो किसीने कमरे बाहुक मार दिया। तीव्र वैरनासे यह ब्रह्मगण्ड उड़कर बाहर हो गया और बोला "आप जानती हैं उनका नाम ? कमी पुने हैं किसीके मुहसे ?"

कमरने फिर हिलकर कहा "नहीं।"

तो पढ़के जान लीविए।"

कमरने बैठत हुए कहा "जल्डा। पर नामका मोह मुसे नहीं है। नाम जाननेको ही मैं जाननेका छेप नहीं मान सकती।"

प्रस्तुतारमें सतीश अरनी अविज्ञेति चिन्ह अद्वय और प्रजा बरसाठा हुआ तेज करनेसे बाहर बना गया।

यह गुन्हेमें अज्ञा गया है इसमें कोई संशय नहीं रहा। इस अतीतिपर अज्ञानको कुछ हलका करनेके ब्यापसे कुछ बेर बाद हरनेने बैसनेकी अतिथ करते हुए कहा "अज्ञानकी आकृति तो प्रत्यक्षी है पर प्रकृति विबहुक अतीत्यकी। एक तो दिखाई देती है और दूसरी विबहुक अतीत्यके अंतत रह जाती है। यही आदमीको गहन पदनी होती है। इनकी परोसी हुई चीज आई तो ना सजती है, पर इन्म करत बक येदकी बलीसों नासिनेमें मानो मरोका बजने करता है। इसीसे किसी भी प्राचीन चीजपर न तो इन्हें विधात है और न अज्ञानमूर्ति। बेशाम कहकर रह कर देनेमें इन्हें जेठ कुछ दर्द ही नहीं माहम होता। बैसिन इस बातको ये समझ ही नहीं सजती कि सुम्न बीदा हाथ आ जानेसे ही सुम्न बजन करना नहीं आ जाता।"

कमरने कहा "समस्त सजती हैं; बैसिन जिन्हें दाम देते बह एडके बरके सुपति चीज नहीं के सजती। मेरे आपति नहीं है।"

हरनेने कहा "मैंने तम कर किया है कि आपम अवर सठा हूँगा। मुसे अन्वेष हो गया है कि उष मित्रासे लगे आदमी बजकर देसकी मुक्ति और परम अज्ञानको पुनः प्राप्त कर सकेंगे वा नहीं। बैसिन समयमें नहीं आता कि चीज-हीन अतीति जिन अरकोको सतीश पर सुझाकर के आया है उनका क्या कई ? बलीसके हाथ सीप देना भी मुसे नहीं हो सज्या।"

कमरने कहा "सीपनेकी कोई अवरत नहीं। अवरत सिव इस बातकी है

और कहा " ठीक इसी तरह एक दिन बंवासमें,—जमी पनाहा दिन नहीं हुए,— विदेशके विज्ञान विदेशके दर्शन और विदेशकी सम्मताको बड़ा मानकर कुछ उत्सव और आदर्शपूर्ण धर्मोपे जपनी अपूर्ण शिक्षाके विजातीय दम्भसे स्वदेशको जो कुछ जपना था उसीको तुच्छ करने केसके मनको विधित और कदाकारी बना बस्य था । मगर इतना बड़ा अन्धत्वान विजातासे सहा न गया उसकी प्रतिक्रिया हुई और विवेक लीज आया । भूख दिखाई दे गई । उन विपम दिनोंमें जो मनस्वी जपनी शक्तिके श्रेष्ठ विमुख उद्भ्रान्त चित्तको अपने बरकी ओर फिरसे वापस के आये वे वे सिर्फ बंवासके ही नहीं समग्र भारतके बन्दगीय हैं । " यह कहते हुए उसने दोनों हाथ जोड़कर माथेसे क्या किया ।

बात सच थी और सभी जानते थे । सिद्धांत हरेन्द्र और अजित दोनोंने जो बस्य अनुकरण करके बन्दगीमेंके सिर्फ नमस्कार किया उसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं थी । अजितने मृदु स्वरमें कहा " नहीं तो शायद बहुत-से लोग सच समय ईसाई हो जाते । सिर्फ उन्हींके कारण ऐसा न हो सका । " बात कहनेके बाद ही उसने कमलके मुखकी तरफ देखा,—उसकी आँखोंमें इसका अनुमोदन नहीं था सिर्फ तिरस्कारका मात्र ही दिखाई दिया । फिर भी वह चुप ही रही । ज्ञानव ज्ञानव सेल्फी इच्छा भी नहीं थी । अजितको यह जानती थी—पर हरेन्द्रने इसकी अस्तुत्य प्रतिबन्धि-सी थी, तब उसकी कुछ देर परके कही हुई बातोंके साथ वह ससंशय बचता देती मदी बीज्य परी कि वह चुप न रह सके । बोली " हरेन्द्र बान्, कुछ ऐसे आदमी होते हैं जो मूल तो नहीं मानते पर मूलसे बरते बसर हैं । आप उन्हींमेंसे एक हैं और इसीका नाम है भावके बर खेरी । इतना अनुक्ति और कुछ हो ही नहीं सकता । इस देशमें आपम केटी संस्थाओंके सिर्फ न कमी बसोंकी कमी होनी और न लक्षकोंका अन्धका पदेना इससिर्फ, भावके बिना भी सतीस बाबूका काम कम आबगा मगर इन्हीं आग केकेका सिध्दाचार आपको हमेशा बाल्या रहेगा । "

फिर बरा ठहरकर बोली " मेरे पिता ईसाई थे; पर मैं बौद्ध हूँ इस बातकी खोज न तो कमी उन्हीं की थी और न मैंने ही । उन्हें इसकी कोई बसरत नहीं थी और मुझे कुछ बाद न था । मैं तो यही कामना करती हूँ कि धर्मको आमरण इसी तरह भूमी रह सके । परन्तु जमी जमी उच्छुंकाक और अनाकारी कहर अपने दिनका तिरस्कार किया और बन्दगीय कहर

किन्तु भ्रमभङ्ग किया उनमेंसे स्वदेशी सर्वतासमें निम्नका शान मारी है, इस प्रश्नका जवाब जिन किसी न किसी दिन अवश्य चाहेंगे।

छात्रोंकी देहपर मानो किसीने कसके बाहुक मार दिया। तीस बेदनासे वह कम्पनसे बैठकर उठा हो गया और बोला "आप जानती हैं उनके नाम ? कभी पुन है किन्हींके मुँहसे।"

ज्यासे फिर शिक्षक कहता "नहीं।"

"ता पहले जान लीविए।"

ज्यासे हैसले हुए कहा "अच्छ। पर नामका मोह मुझे नहीं है। नाम जाननेसे ही मैं जाननेका श्रेय नहीं मान सकती।"

मनुष्यमें अतीव ज्ञानी आर्सेसि सिद्ध जगहा और कृपा बरसाता हुआ तेज ज्ञानसे बाहर क्या गया।

वह मुझे क्या मया है इसमें कोई सन्देह नहीं रहा। इस अप्रीतिपर छात्रासे कुछ इतना करनेके जवाबसे कुछ बेर बाब होकरने होकरने कोटिश करते हुए कहा कमलसे आकृति तो प्राण्यकी है पर प्रकृति विरुद्ध प्रतीत्यकी। एक तो दिखाई देती है और दूसरी विरुद्ध जोंकोंके जोस्तन रह जाती है। यही आदमीके गलत प्रतीती होती है। इनकी परीती हुई और चाई तो जा सकती है, पर इतना करते बस केरकी बनीसों नाकिसेमें मानो मरोका उठने प्रमता है। इमारी किसी भी प्राणिक चीजपर न तो इन्हें विभ्रान्त है और न छात्रमृति। बेधम कहकर रह कर केनेमें इन्हें कैसे कुछ बर ही नहीं माहुरन होता। केकेन हम बातको ये समझ ही नहीं सकती कि सुन छोटा हाथ जा जानेसे ही लक्ष्म बलन करना नहीं जा जाता।"

ज्यासे कहा "समझ सकती हैं; केकेन सिर्फ राम देत बस एकके बरके सुखी चीज नहीं के सकती। मेरी आर्षति नहीं है।"

हैरानने कहा "मैंने तब कर दिया है कि आधम बकर उठा हुआ। मुझे सन्देह हो गया है कि उस पितासे ज्ञानके जादमी बरकर केरकी मुक्ति और परम ज्ञानागको पुनः प्राप्त कर सकेंगे वा नहीं। केकेन समझमें नहीं जाता कि हीन-हीन पोंके जिन छात्रोंको अतीव बर सुहाकर के आया है उनका क्या करें ? अतीवके हाथ सीप देना भी मुझे नहीं हो सकता।"

ज्यासे कहा "सीपनेकी कोई बकरत नहीं। बकरत सिर्फ इस बातकी है

दिखाई दे रहे हैं। अपने पितासे तुमने उन्हें बुझानेका ही कीमत सीखा है कमल ककानेकी विद्या नहीं सीखी। अच्छा अब बस दिवा। अहित बाबूको अभी देर होगी साबद।”

अहित ठठनेके लिए बरा दिव्य हुआ पर बठा नहीं।

कमलने कहा, इरेन्द्र बाबू, प्रकाश-स्तम्भका प्रकाश रास्तेपर न पड़कर आपर बाँझीपर पड़े तो रोकर काकर नालीमें गिरना पड़ता है। इस प्रकाशको जो बुझा देता है उसे द्वितीय मित्र ही समझिएगा।”

इरेन्द्रने एक गहरी साँस ली और कहा, “बहुत बार कहाक आता है कि तुम्हारे हाथ धुरे छगमें परिचय हुआ था। विश्वासका इतना बोर तो मुझमें नहीं है जितना कि तुममें है, फिर भी मैं यह खतरा हूँ कि वे विद्या बुद्धि, ज्ञान और पौष्टिकी काहे जितनी बकाशीय दिखानेमें, भारतके सामने वह कुछ भी नहीं,—एक अतिप्रियकर है।”

कमलने कहा, “यह तो ऐसी बात हुई जैसे कब्रसमें प्रमोहन न पानेवाके विषयकीक एम् ए पास करनेवाकेको थिकार देना। इरेन्द्र बाबू, भारत-सम्मान-ज्ञान’ जैसे एक शब्द है, जैसे ही बवाई करना’ भी एक शब्द है।”

इरेन्द्रको कोच भा गया करने क्या शब्द तो बहुत हैं। लेकिन यह भारत ही एक दिन सारे जगतका गुरु था। बहुतोंके पुरखे तो तब साबद पैकीकी डाकियोसर लड़का करते थे। और फिर एक दिन ऐसा आया जब भारतकी ही जगतके प्रियकरका आसन ग्रहण करेगा।—करेगा अवसर ही करेगा।”

कमलको गुस्ता नहीं आता यह ईस थी। बोली, आज तो वे स्नेह डाकियोसरके नीचे लतर आये हैं। पर यदि इसी आलोचनाका आत्मन्ड बठाना हो कि कौन-से महा-मरीचक कालमें इसके पूर्वपुत्र्य जगतके गुरु वे और कौन-से महा-मरिच्य कालमें उनके बँतवार फिर पैतृक पैथा अहितवार कर केने तो अहित बाबूको जाकर पछविए। मुझे बहुत काम करना है।’

इरेन्द्रने कहा ‘अच्छा, नमस्कार।’

और वह निरन्तर पम्पीर चेहरा किये बरसे निकल गया।

२६

भाऊ-दिन बाद कमल भाऊ बाबूके घर मिलने गईं। दिन लगेगोके छेकर वह ख्याती है, उनके जीवनमें इतर कई दिनमें एक ठगठ-नेर हो गया है। किन्तु उसे न तो आश्चर्य कहा जा सकता है और न अप्रत्याशित ही। इतर कुछ दिनोंमें जो आकाशमें इतर-उपरसे इवामें उबत हुए वास्तवमें टुकड़े क्या हो रहे थे उनके परिणामके सम्बन्धमें विशेष संशय न था — और हुआ भी गयी।

छठकर बरबान हाविर नहीं है। नीचेके बरामबेमें साधारणतः कोई बैठता न था फिर भी वहाँ कुछ मेंसे और कुर्सियों परी रहती थी दीवारपर बड़े आदमियोंकी कई एक तस्वीरें भी थी — किन्तु आज वे सब नदारद हैं। सिर्फ छतमें एक कभी कभी लकड़टेन लटक रही है। कगड़ कगड़ कूहा-करक्य क्या हो रहा है, उसे साफ करनेकी अब समय आनन्दनकता नहीं रह गई है। न जाने कैसा एक मीठीन बाधाबल है जिसे देखकर यह ही अनुमान किया जा सकता है कि मकान-साक्षिक अब यहाँसे पत्तन कर रहे हैं।

कमल ऊपर जाकर भाऊ बाबूकी बैठनेमें पहुँची। दिन एक रहा था। भाऊ बाबू आराम-कुर्सीपर पर बैकने लगे थे। कमलें और कोई न था। परदा हटनेके क्षणसे उन्होंने भीखें खींची और वे उठकर बैठ गये। कमलके जानेकी लावण उन्होंने आशा नहीं की थी; इससे कुछ ज्यादा कुछ होकर उन्होंने अम्बरना की, बोले, “कमल हा। आभ्यो बैठा आभ्यो।”

उनके चेहरेकी उरक देखकर कमलके हृदयमें चोट पहुँची। उन्होंने कहा “यह क्या। आप तो बूढ़े-से दिखाई देने लगे हैं, बान्धाही।”

भाऊ बाबू हँस दिने बोले “हूँ। यह तो मगवानक आसीबाह है कमल। भीतर ही भीतर अब कि उमर बढ़ती है तब मनुष्यके सिव् इच्छे बढ़कर बुर्जाय और नहीं हो सकता कि बाहरसे बूढ़ा न दिखाई दे। यह अवरवा बचपनमें ही सीजे हो जाने कैसी कल्प है।”

कैसन तबीयत मी तो अच्छी नहीं सीक रही है।

“नहीं।”

परन्तु, इसके बाद फिर उन्होंने आगे प्रस करकेका मीध नहीं दिया, बोले हम कैसी हो से तो बताओ।”

बखरी हूँ। मैं तो कभी बीमार पड़ती नहीं पापाजी।”

सो तो माझूम है। न देह और न मन तुम्हारे दोनों ही बीमार नहीं होत। अरब इसका यह है कि तुम्हें लोम नहीं। तुम कुछ भी चाहती नहीं इसीसे मर्यादा ने तुम्हें दोनों हाथोंसे सब कुछ संवेक कर दे दिया है।”

मुझे ? क्या देते क्या जानने बताइए तो ?

आहु बाबूने कहा यह बिन्दी साइबकी अदालत नहीं जो बमकी देह मामल्य बीत जायेगी। और, कुछ भी हो पर मैं मायता हूँ कि बुनियाके बिचारसे मैंने तुम्हें भी कुछ कम नहीं पाया। यही तो मैं आज सबेरेसे बेटी साइबर और फर्न मिता मिताकर देखा रहा था। देखा कि अल्पक संकोने ही इतने दिनोंसे लहरीज फुला रखी थी—अन्ततारहीन बेकीके मारी मरुम जाकरने आवमि बोमि बीसोको मरुम बोका ही दिया,—भीतर कोई चीज ठकमे की ही नहीं। बोम सिर्फ गळतीसे ही घोषा करते हैं बेटी कि यमित-माझके अनुसार अल्पकी भी बीमल है। मैं तो देखा कि ठककी कोई भी बीमल नहीं। एकके अल्पकी दाहिनी तरफ से अरब परिहार काह हो जानै ता उस एकके ही एक करोड़ बना बते हैं, पर अगर सिर्फ अल्प ही अपनी संरबाके ओरसे पावें कि करोड़ हा जायें तो नहीं हो सक्त। वहाँ कोई और अंक नहीं यहाँ तो ये सिर्फ माया ही हैं। मेरा पाना भी ठीक उम अल्पोंके पाने जैसा है।”

कमकने कहस नहीं की वह उरक पाम फुरती खोजकर बैठ गई। आहु बाबूने अपना दाहिना हाथ कमलक हाथपर रखते हुए कहा बेटी अरकी बार तो लक्षमुप ही मर जायेगी वारी जा गई बह-परणों तक बह्य आर्यगा। पूजा हो गया—न जाने जब फिर कब मेंड होगी। पर इतना तुम मरोसा हा कि मुझे बभी भूलोपी नहीं।”

कमकने कहा नहीं भूलोपी नहीं। और मेंड भी होगी फिर कभी। जानके अपनी बेकी सुनी माझम पड़ रही है, पर मैंने अपनी यकी अल्पोंसे नहीं मर रखी है पापाजी, उसमें लक्षमुपकी चीज है—माया नहीं।”

आहु बाबूने इस बातक कुछ अभाव नहीं रिया पर मनमें समझ किया कि लक्षकीन संभमात्र भी छूट नहीं कहा।

कमकने कहा मैं परने मुसठ ही समझ गई कि जाय यहाँ ही अरब पर अरना मन यहाँसे निहा हो गया है। इसलिये जब आपको पकड़कर नहीं रखा था सक्त। यहाँ जाँने।—कहते हैं।”

आहु बाबू पीरेसे सिर दिखते हुए बोले " नहीं नहीं नहीं । अबकी बार बरा बुर बानेकी सोची है । पुराने मित्रोंकी बचन दिया था कि अगर जिम्मा रहा तो फिर एक बार मित्र बानेगा । नहीं तुम्हें तो कोई काम नहीं कमल कयोगी विधिवा मेरे साथ बिबाहव । अगर बहीसे मैं न और सख तो तुम्हारे मुहसे कोई कबर तो सुन ही केना । "

इस अनु इस सबैनामक सहिष्ट कीन है, सो कमलको समझनेमें डेर न कमी-परन्तु इस अस्पष्टताको सुराह कर केना भी उसने बनाकरक समझा ।

आहु बाबू कहने लगे, ' बरकी कोई बात नहीं बेटी, इस बूढ़ेकी तुम्हें सेवा न करनी होगी । इस अकर्मण्य बेहकी बीमठ ही क्या है ?—इसे बोते रहनेके लिए मैं अपने ऊपर किसीक ज्ञान नहीं बढ़ाना चाहता । बर कीन जानता था कमल, कि इस मांस-मिण्डको केकर भी प्रक बटिक हो सकता है । ऐसा क्यता है कि मारे लम्बाके जमीनमें गाढ़ा था रहा है । इस दुनियामें इतकी बड़ी आकर्षकी बात भी होती है, सो मन्म कन कीन सोच सख है बताओ । "

कमल सम्भरेसे बौक पकी बोली " पीक्षिमा जीकीको नहीं देख रही हैं बाबाजी के कही हैं । '

आहु बाबून क्या " साबद अपने कमरेमें होगी —कठ उबेरसे ही नहीं-दिखाई दे रही है । सुना है कि हरेन्द्र बाबर उसे अपने घर के जावना । "

अपने आश्रममें । "

' आश्रम अब नहीं रहा । सतीय क्या गया है कुछ लकड़ोंको भी अपने साथ ले गया है । ठिके बार पौच लकड़ोंको हरेन्द्रने नहीं जाने दिया है वे बही-हैं । उनके पा-बाप नाते-रिदोदार कोई भी नहीं हैं, बर चाहता है कि उन्हें बह अपने आबडिवाके अनुसार नवीन बंके सेवार करे । तुम्हने सुना नहीं कबर है —सुनतीं भी कैसे । "

बरा ठरकर फिर कहने लगे, ' परसों घामको कोमोके कसे बानेपर बाबूकी विष्टी पूरी करके नीकिमाको सुनाते कगा । कई दिनोंके बर बराबर कुछ अन्य-मनरक-में रहती थी, इकर लगे देख भी कम पाता था । विष्टी की कककतेके अपने कमीशरीके नाम मेरे दिखयत कानेका सारा आसोजन कम्परी पूरा करनेके लिए । एक बने बहीवतनामेका मकदिसा भी मेरा था —साबद वही मेरा आकिकी बहीवतनामा —अदनीको बिबाह करके इस्तकतेके लिए बापा भेकनेको बिबा था । और भी बहुत-सी आकारें थीं । नीकिमा कुछ सी रही थी

उसकी तरफ़ी मध्य कुल कुछ भी उतर न पाकर मैं मुँह उठाकर उसकी तरफ़ देखने लगा तो देखा उसके हाथका सिस्सईका कपड़ा जमीनपर पड़ा है सिर-थीकीके एक किनारे छुनक गया है बाँधे मिथी हैं और चेहरा निरुत्क सफ़ेद पड़ है। मेरी कुछ समझाईमें न आया कि अचानक क्या हो गया। दरफ़ट उठ कर जमीनपर लिटाया गिरासमें पायी वा उसके मुँह और बाँधोंपर छीटे मारे। उँचा या नहीं, सो अचानक उठाकर उससे हवा करने लया — नीकरको पुकारना बाहा पर मुँहसे आवाज ही न निकली। साम्य दो तीन मिनट ही वह अकस्मा रही पवादा नहीं इसके बाद उसने बाँधे खोली और सिस्सईके छान उठकर बैठ गई। एक बार सात शरीर खीप बडल और फिर वह बाँधी होकर मेरी गोदमें मुँह छिगाकर खोरसे रोनी लगी। पेसी रोई कि कुछ पूछे मत। याद्वय हुआ कि बसे उसकी काली ही फट बापनी। बहुत देर बाद मैंने उठाकर लिटाया — सिस्सई सिनोकी सिस्सई ही बाटें और किन्ती ही परनाएँ बाद का फई, फिर मुझे समझनेमें कुछ भी बाधी न पड़ गया।

कमक पुन्याप उनके मुँहकी तरफ़ देखती रही।

बाह्य बाबूने क्षम-भर अपनेको सम्हालनेमें लगाया और फिर कहा " मैं समझता हूँ, यह तरफ़ दो तीन मिनट भीट होमि। मेरे यह सोचनेके पड़े ही कि ऐसी हासलमें मुझे क्या कहना बाहिए, वह तीरकी तरफ़ उठ कही हुई,—मेरी ओर एक बार देखा तक नहीं—और कमरेसे बाहर निकल गई। न तो उसने कोई बात कही और न मैं ही कुछ बोल सक। उसके बाद फिर मुकाबलत नहीं हुई। "

कमकने कहा " यह क्या आप पहले समझ नहीं पाये थे ? "

बाह्य बाबूने कहा नहीं। कमी स्थिति में न सोचा वा। और कोई होता तो समझ करता कि महज छल है, स्वार्थ है। पर उसके विषयमें ऐसी बात सोचना भी अपराध है।—यह किमोक्ष मन किन्ती आश्चर्यजनक बीज है। इससे बड़कर सकारमें और क्या आश्चर्यकी बात होगी कि वह रोगातुर करीर देखा बलम और अचानक मन, जीवनकी यह सग्या बेल्य जिसमें जीवनकी काली-कीही की क्षम्य नहीं—इसपर भी किन्ती सुन्दरी कुपतीक्ष मन आह्वय हो। फिर भी यह सब है, बरा भी सड़ नहीं। "

इतना कहकर वह बरापाटी प्रीत आसमी खेम, बैरना और निष्कन्त कन्धारे

एक घोंस डेकर चुप हो रहा। आठ बानू कुछ देर इसी तरह रहकर फिर कहने लगे, "मगर मैं वह निश्चित जानता हूँ कि वह बुद्धिमती नारी मुझसे कुछ भी प्रत्याशा नहीं करती। वह सिर्फ चाहती है मेरी सेवा करना और वह भी इसच्छिये कि उसके अभावमें मेरे जीवनके बाकी दिन कहीं दुःखमें न बीतें। केवल दया और अहृत्रिम करना बस।"

कमलको चुप देख वे कहने लगे "वेल्हने विवाह-विच्छेदका सब मामल सम्हाला था तब मैंने उसमें अपनी सम्मति ही ली। बावों ही बावोंमें उस दिन सब प्रतीय सठ पचा तो नीलिमा बहुत नाराज हुई और उसके बादसे तो वेल्हा उसके सिधे अछला हा गई। अपने पतिको इस तरह सर्वसाधारणके सामने अश्रित और बेज्जम्त करनेकी प्रतिहिंसाको नीलिमा हृदयसे पसन्द न कर सकी। उसने कहा कि पतिको त्याग देना कोई बड़ी बात नहीं, उसे छिड़े पानेकी शानना ही लीके किये परम शार्कका है। अपमानका बरतल डेनेमें ही लीकी वास्तविक मर्बादा नष्ट होती है अन्ववा वह तो कटीटी है कितपर औचकर प्रेमकी क्षीमत लीकी जाती है। और फिर यह कैसा आत्म-सम्मानका माण कि किसे असम्मानके साथ अक्य कर दिया सरीसे अरने खाने-पहरनेका खर्च हाव पसारकर किया जाय। क्या पडेमें लीकी बालनेके किये रस्सी भी नहीं जुड़ी। मुनकर मैंने खया था कि नीलिमाकी यह बात सेवा है—जवाहती है। पर आज सोचत हूँ कि प्रेम क्या नहीं कर सकता। स्य जीवन सम्मान सम्पदा—वह सब कुछ नहीं देती समा ही उसकी वास्तविक आत्मा है। वहाँ समा नहीं वहाँ प्रेम सिर्फ विदम्बना है,—वहीपर सन-जीवनका किनार-विपरक उठता है और वहीपर आता है आत्मसम्मान ज्ञानका सब औफू-बार।"

कमल उनके मुँहकी तरह देखती हुई चुप हो रही।

आठ बानू कहने लगे, "कमल, तुम ही उसकी आदर्श हो—पर लीकी लीकी मानो सूर्य-किरणोंसे भी बड़ बड़ है। तुमसे जो कुछ उसने पाया है, अपने हृदयके रसमें मियोकर सिन्धु माजुर्कके साथ उसने उसे न जाने कितनी तरह बखेर दिया है। मैंने इन दो दिनोंमें दो सौ वर्षकी किन्ता ली है कमल। लीकी प्रेम मैंने पाया था उसका स्वाद मैं पहचानता हूँ, स्वस्य जानता हूँ। परंतु इस नदीन लखने कि नारीके प्रेमका वह सिर्फ एक ही पहलू था, सहा आत्र मुझे आच्छक कर दिया है। इसमें न जाने कितनी बाधा है, न जाने

मितामी ब्यबा है, अपनेको विचरन करनेकी न जाने किसी विपत्तानी तैयारिवाँ हैं। यद्यपि मैं उसे हाथ पसारकर ले नहीं सक्य पर क्या कहके उसे बमस्कार करके सो भी मेरी समझमें नहीं आ रहा है कमल।”

कमल समझ गई कि पत्नी-मेमकी सुदीर्घ आवाजने इतने दिन जिन दिशाओंमें ओबेरा कर रहा था आज ये ही दिशाएँ धीरे धीरे उज्यक होती जा रही हैं।

आसु बाबूने कहा ठीक है; मदिओ मैंने समझ कर दिया है। बापके अमिमाबको मैं अब उसके आगे कमल को न जाने दूंगा। मैं जानता हूँ कि वह कुछ पाकेगी अस्तव्य विविधद प्राप्त करने लगेगी नहीं देगा। अतुमति तो नहीं है अहोमा पर चाते समय यह आशीर्वाद जोह आरोग्य कि कुछसे वह फिर अपनेको किसी दिन खोज कर पा के। उसकी भूक-प्राप्ति और प्रेम — भावान् ठन कोगोच सुविचार करे।” करते करते उनका पत्रा भारी हो जाना।

इसी तरह नीरवतामें बहुत लज कर गये। उनके मोटे हाथपर कमल धीरे धीरे हाथ फैर रही थी, बहुत देर बाद उसने मूढ अंशसे कहा “ बाबाजी नीकिमा जीकीके विपत्तमें आपने क्या विर्यन किया।”

आसु बाबू अचरमात् सीधे होकर बठ गये — जैसे किछमि उन्हें देखकर उठ्य दिया तो ‘ देखो बेटी तुम्हें मैं पहले भी नहीं समझा सक्य हूँ और अब भी न समझा सकूंगा और ध्यानध अब सम्पूर्ण भी नहीं है। पर, ऐसा संभव मेरे मनमें कभी नहीं आया कि एकनिष्ठ प्रेमका आर्ष मनुष्यका कल्याण आर्ष नहीं। नीकिमाके प्रेमपर मैं अन्वेह नहीं करता; पर जैसे वह लज है जैसे ही उसे अर्थात् करना भी मेरे लिए वैसा ही लज है। किसी तरह भी ये इसे निष्कल आत्म-वचन नहीं कर सकना। तर्कसे इसका मेक नहीं आयेगा पर यह सच है कि निष्कलतामेंसे होकर मनुष्य आगे बढेगा। मैं नहीं मानता कि कहीं जानना पर आख्या करे। यद्यपि वह मेरी कल्पनासे अतीत है पर मैं यह निश्चयसे जानता हूँ कि इसकी बड़ी ब्यबाध प्रतिफल मनुष्य किसी न किसी दिन पाकेगा अचरन। नहीं तो संसार अस्तव्य सृष्टि अस्तव्य हो जानगी।”

वे कहने लगे, ‘ इसी नीकिमाको ही के जो किसी भी आदमीके लिए को नारी अनुभव सम्पदा हो सकती है — उसके लिए कहीं भी कोई होनेकी अवह नहीं। उसकी व्यर्भता मेरे बाकी दिनोंके अन्तरी तरह सुनती रहेगी।

इसीसे सोचता हूँ, अगर वह भीर किसीसे प्रेम करती। वह उसकी कैसी भूख है।”

अम्बने कहा “ मूल दुबारेके दिन तो सभी उसके खतम नहीं हो गये बाबाजी।”

“कैसे ? तुम समझाती हो जब क्या वह फिर किसीसे प्रेम कर सकती है।”

“अससे कम सम्भव तो नहीं है। इसे भी क्या जाने कभी सम्भव सम्झा या कि आपके अपने जीवनमें कभी ऐसी घटना हो सकती है।”

“केवल जीवितमा है संसृष्ट कैसी ही।”

अम्बने कहा “तो नहीं जानती। पर उसके लिए क्या आप यही प्रार्थना करेंगे कि जिसे उसने पाया नहीं, और या सकती नहीं किसी भी कारणों बाग जीवन स्वयं निराशामें छूट वे ?”

आम्रु बाबूके चेहरेकी दीप्ति बहुत कुछ मस्तिष्क हो गई। बोले नहीं ऐसी प्राथना नहीं करूँगा।” फिर अम्ब-मर पुन रहकर करने मने, अगर मेरी बात भी तुम नहीं समझती क्यल। मैं जो कर सकता हूँ, वह तुम नहीं कर सकती। संभव मूलमत संस्कार तुम्हारे और मेरे जीवनका एक नहीं है—विश्वकुल मित्र है। इत जीवनकी ही दिन जोसेने मानव आपकाही परम प्राप्ति समझा है, उनके लिए प्रतीक्षा करना सुनिश्चक है, वे तो आत्म-संगकी अन्तिम हैर तक इसी जीवनमें पी कैल चाहेंगे, परंतु हम अमान्तर मानते हैं, प्रतीक्षा करनेका समय हमारे लिए अनन्त है—उम्में जीवे होकर पिनिकी अन्तर नहीं पत्नी।”

अम्बने आम्ब अम्बने कहा “यह बात मैं जानकी भावती हूँ बाबाजी। केवलिक विरु इसी कारण तो आपके संस्कारकी सुधिके रूपमें स्वरूप नहीं किया जा सकता, और आत्म-सुखकी आशासे विवस्ताक दरवाजेपर हाथ प्यारे अमान्तर-अम्ब तक प्रतीक्षा करने समय कैय भी सुखमें नहीं है। विश्व जीवनकी सबसे बडी अम्ब-सुखिके पाया है वही मेरे लिए स्वरूप है, वही महात् है। पूल-रुच और योग-अम्बारी मेरा यह जीवन भर उठे, परन्तुके विस्तार अम्बकी आशासे मैं इस जीवनकी अपेक्षा अवस्था और अमान्तर न करे—इतना ही मैं जीव समझती हूँ। बाबाजी, इसी तरह आप लोग अमान्तर और हीम-अम्बसे स्नेहपूर्ण इन्धन रहा करते हैं। आर लोग इन्धनेकी सुख समझते हैं, इसीसे इन्धनेकी भी आप लोगके धारे अगलक समयें सुख बना रखा है।

नीहिमा बीबीसे मेट होगी या नहीं छो नहीं मासख धगर होगी तो मैं उनसे नहीं बात करूँ बाबूजी ।”

कमल उठकर खड़ी हो गई । बाबू बाबूने कहा जोरसे उसका हाथ पकड़ लिया बोले जा रही हो किटी । वह सोचते ही कि तुम जा रही हो । मेरी छातीके नीतर हहाह्यर-वा मच जाता है ।’

कमल बैठ गई बोली “पर आपको तो मैं किसी भी तरहसे छछरी दे नहीं पाती बाबाजी देह और धनस सब कि आप अक्षय्य अस्सख हैं, और सान्त्वना देना ही सब कि सबसे बकरी बस्तु है, तब मैं सब तरहसे मांगो आपको शेट ही पहुँचाया करती हूँ । फिर भी यह धर है कि मैं आपको किसीसे भी कम प्यार नहीं करती बाबाजी ।”

बाबू बाबूने इसे मच ही मच स्वीकार करते हुए कहा “इसके सिवा नीहिमा,—यह भी क्या साधारण आवर्त है । पर जानती हो इसका कारण क्या है कमल ।”

कमलने सुस्वरासे हुए कहा “साधर आपके अन्तर दकशक नहीं है—इसीसे दकशक अपने छीरक्य भी बोस नहीं हो सक्ता—पैसेके नीचेसे अपनेसे इडाकर अपने आन्धे हुआ देता है । लेकिन ठोस मिट्टी ओहे और पत्थरक्य भी बोस सेल कैती है,—इमारत टलीतर बनाई जा सकती है । नीहिमा बीबीके सब कियी नहीं समझ सकती। हों बिलके अपनेसे केकर केन केनकेके दिन बीत चुके हैं और छिरक्य बोस उठार कर जो सडक निःश्याक कैती हुई बीना पाइती हैं वे उन्हें समझ सकेंगी ।”

“हों ।” कहकर बाबू बाबूने एक गहरी सींस ली और कहा; और विनयाव ।”

कमलने कहा किव दिनसे मैंने उन्हें पकमुच समझा है उस दिनसे खोम और जमिमाव मेरे मचसे किडकुल कुल-पुँड गया है,—जगता कुल गई है । विनयाव गुनी आरमी हैं, कक्यकर हैं,—ककि हैं । किरस्थाकी प्रेम कताकारके मार्गका विग्र है, समकी सथिके किए अन्तराय है उनके स्वमावक्य वरम विरोधी है । बड़ी बात उस दिन ताकके सामने खड़ी होकर मैं कहना चाहती थी । किसीसे एक उपकल्प-मात्र है,—नहीं तो अवसर्मे वे प्रेम करते हैं सिर्फ अपने आपसे । अपने मनको दो मार्गोंमें विभक्त करके

श्रेय प्रश्न

उनकी वो दिनकी लीमा बगती है,—उसके बार वह खाल्य हो जाती है। इसी
 किये उनके मजेकर खर ऐसा विचित्र होकर बगता है—अन्धया वह बगता
 नहीं सुबकर कम बाता। मैं तो समझती हूँ, तिवमाने उसे नहीं ज्ञा,
 मनोरमाने अपने आप ही मूक की है। दुर्लारके समय बारभोर जो रंग किन्ने
 लम्बा है बाबाजी, वह न तो खार्बी होता है बीर न उसका वह खामानिक
 रंग ही है। केकिन फिर भी उसे छूट बीन कर सकता है।”

भासु बाबूने कहा सो माकस है, पर केवल रंगे ही तो बादमीके दिन
 नहीं कटत बेटी बीर न कपमाने उसकी म्पना ही मिटती है। बतानो बेटी
 खसक क्या उपाय है।”

कमकस बेहरा ह्मतिसे मकिन हो गया उसने कहा इसीसे पूर फिरकर
 एक ही प्रम बार बार सामने आ आता करता है बाबाजी वह जैसे श्रेय ही
 नहीं होता। बकि नही ठीक है कि बाते समय आप अपना नही भातीबाद
 कोर जाई कि मयि दुकके दिनोमें अपने आपको हूँ निचले जो अपनेनाका
 है उसके सब जानेके बार वह बिना किसी संजयके अपनेको पहचान लके। बीर
 आपसे भी मैं कहुँगी कि सभारमें होनेवाली अनेक कथनाकोमेंसे निबाह नी एक
 कथना है, उससे ज्यादा इस नहीं। बटीको किस दिनसे नाटीका सर्वस मान
 किना गया है बटी दिनसे किबोंके जीवनकी सबसे नही देवकी शुरू हो गई है।
 विधा जानेके पहले अपने मनकी अकसकी जेबीसे अपनी लकड़ीको सुख कर
 बाहर, बाबाजी नही आपसे मेरी अन्तिम प्रार्थना है।”

सहमा दरवानेके पास किटीके पैरोंकी आहर सुनकर दोनों उभर केबने जगे।
 हरेन्द्रने भीतर आकर कहा मामीबीको मैं किन्ने जाना हूँ भासु बाबू, मे
 भी तेवार हूँ,—ठीका करनेके किये बादमी मेक दिया है।”
 भासु बाबूय बेहरा बह पव गया बोके, “अनी! केकिन दिन तो अर
 नहीं रहा।”

हरेन्द्रने कहा “इसबीस बोल नहीं है वीकेड मिन्डमें प्युंन जाईगी।”

उसका बेहरा जैसा गम्भीर वा बातें भी उसकी बेटी ही नीरस थी।

भासु बाबूने आदिलेसे कहा सो तो ठीक है। पर सामक्य बच है—
 आज आवे बीर नहीं सकेया।”

हरेन्द्रने केबमेंसे बालकका एक टुकड़ा निकालकर आगे बढ़ाते हुए कहा थाप ही विचार कीजिए । ”

उसमें दिखा था “ कलकत्ता, यहीसे मुझे के जानेका उपाय अगर तुम न कर सको तो मुझे खबर दे देना । पर वक्त मत खराना कि मुझसे क्या कर्नो नहीं ।—बीबिमा । ”

आशु बाबू सब रूह मये ।

हरेन्द्रने कहा निकट-आत्मीयके रूपमें तो मैं दावा नहीं कर सकता पर उन्में तो आप आगतें हैं, उमकी इस किट्टीके पालके बाद रेर करनेकी भी हिम्मत नहीं पकती । ”

तुम्हारे ही कपर तो रोगी । ”

हो कमल कम उरसे कपडों म्मरवा अब तक न हो सके सब तक । खोथा कि इस परमें उनके इतने दिन बीत मये तो उर मरमें भी कुछ अशुभित न होया । ”

आशु बाबू पुन रहीं । इतना भी न कहा कि वह सुखि अब तक नहीं रही । इतनेमें केहरा आवा और बोला “ मेम सखबका सामान केने मकिरैरैड साइबके नहींसे आरमी आवा है । ”

आशु बाबूने कहा ‘ उमका जो कुछ सामान है सब बरत दो ।

कमककी औंकोसे कींके मिरते ही उन्मेंने कहा, “ कम उबरेरे केका नहींसे कमी मई है । मकिरैरैरैकी भी उमकी रहेनी है ।—तुम्में एक सुसंवार देना तो मूठ ही मया कमल —केलके पति जाने हैं उसे केनेके किए,—याकन होता है समय आपसमें उमका रिक्खोमिक्कन (उमकिना) हो मया है । ”

कमकने करा भी आश्चर्य प्रकट न करते हुए कहा केकिन नहीं कर्नो न जाने । ”

आशु बाबूने कहा समय आरम-मीरकपर कींन जाती । सब विवाह-बन्धन तोइकेका मामला कस्य का उर केस्यके पिठाकी किट्टीके उतरमें मने अपनी तरफसे सम्मति ही की । उसके पति समय इस बातसे समान न कर सके होंगे । ”

आरम सम्मति ही की । ”

आशु बाबूने कहा “ इसमें आश्चर्यकी बात क्या है कमल । जो पति पतिज केस्य अपराधी है उसे स्वामनेमें मैं अन्वाज नहीं देरता । मैं नहीं मान सकता कि वह अमिक्कर सिद्ध पतिके ही है लींके नहीं । ”

कमल चुप हो रही। उसे फिर एक बार स्मरण हो आया कि इस आत्मिकी विचार धारामें किसी तरहका कर्म नहीं—मन और वचन एक ही स्वरमें बोलें हुए हैं।

मीडिया बरबादके पाससे नमस्कार करके चली गई। न तो भीतर आई और न उसने किसीकी तरफ़ औंख बढाकर देखा ही।

बहुत देर तक कमल उसी तरह आलु बाबूके हाथपर हाथ फेरती रही कुछ बोली-बाधी नहीं। अन्तमें जानेके पक्षे उसने धीरेसे कहा “बाबूके सिवा इस घरमें पुराना और कोई नहीं रह गया।”

“बाबू।”

हैं आपका पुराना मीकर।”

पर वह तो नहीं है नहीं मिडिया। उलना लड़का बीमार है, सो बार पाँच दिन हुए छुटी हैकर देस गया है।

फिर बहुत देर तक कोई बातचीत नहीं हुई। आलु बाबू अचरमात् पूछ बैठे अन्धक वह रामेन्द्र कबका कहीं है कुछ माहस है इन्हें कमल।

“नहीं बाबाजी।”

“जानेके पक्षे उसे एक बार देखनेकी इच्छा हो रही है। तुम दोनों मालो बहन-भाई हो एक ही पैरके दो फूल-से बगते हो।” इतना कहकर वे चुप होना चाहते थे कि लड़का एक बात याद आ गई, बोले तुम जोगीका दारिद्र्य देखा कम्ता है जैसे महादेवका शरिय। तुम्हारे मन-ऐश्वर्य काफी है पर अन्वमनस्क-से होकर जैसे उसे कहीं भूल आये हो। ऐसी उदासीनता कि उसे ईदनेकी भी कोई गर्ब नहीं।”

कमलने हँसते हुए कहा ऐसा क्यों कहते हैं बाबाजी। रामेन्द्रकी बात में नहीं जानती पर मैं तो पैसे-पैसेके लिए दिन-रात मेहनत किया करती हूँ।”

आलु बाबूने कहा ‘सो मैंने सुना है। वही तो बैठा सोचा करता हूँ।’



उस दिन कमलको पर लैडनेमें काफी देर हो गई। आते समय आलु बाबूने कहा “जानेकी कोई बात नहीं हैती जो आत्मिक कमी मुझे छोड़कर नहीं रही आज भी वह मुझे छोड़कर न चायगी। विद्यययका उपान वही करेगी।” कहते

हृद उन्मत्ते हाथ उल्टकर घामनेकी सीसारपर टेंगी हुई अपनी स्वर्गिका कर्म-
पत्नीकी लक्ष्मीर दिखा ही और चुप हो रहे ।

* * * * *

कमलने घर पहुँचकर देखा कि ऊपर जानेका रास्ता ही बन्द है, बक्सोंका डेर
सीढ़ीके धामने बड़ा पड़ा है । एकएक उसकी छातीके मीठर छीक-सा लगा
गया । किसी तरह रास्ता निकरकर वह ऊपर पहुँची । रसोईघरमें खोरपुल
पुलकर उसने छीककर देखा कि अशितने नीकरानीकी मरपसे ाटेल उल्टकर
बाबके सिप पाणी क्या दिखा है, और बाब-बीनी बाबिनी लकाघने घर-भरकी
तमाम चीजे उल्टम पुलक कर डायी हैं

“ यह क्या घर रकखा है ! ”

अशित चौककर कमलकी ओर देखने लगा बोला बाब-बीनी बयैरह क्या
तुम ज्येहेकी तिजोरीमें बन्द रकखा करती हो ? पाणी कमसे खोकर मिट्टी हुआ
का रहा है । ”

“ केकिन मेरे परकी नीक आपको मिट्टीकी कैरी छो तो बताइए ! बकिप,
इबर भाइए, मैं तैयार किसे देती हूँ । ”

अशित इरकर अकव लका हो गया ।

कमलने क्या पर आज बात क्या है ? बकस-बूक, गठी-गोठकी — यह
सब किसका सामान है ? ”

“ मेरा । इरेन्द्र बाबूने नोटिस दे दिया है । ”

“ नोटिस दिया है तो बहीसे कके जानेका दिया होगा । पर वही जानेकी
तु द किसे ही ? ”

“ वह मरी जफनी है । इतने दिनोंसे पराई बुद्धिपर ही जक्या जा रहा
है — जब मैंने अपनी बुद्धि हँक निकाली है । ”

कमलने क्या “ अच्छा किया है । पर नीक-बस्त क्या सब नीचे ही पकी
रहेगी ? कोई चुप नहीं के जानया बहीसे ? ”

तुलत ही अशित बचक हो उठा बोला “ चुप तो नहीं के गया कोई बुद्ध ।
एक कमकेके सुद-केसमें बहुत-सी रुपये रकके हैं । ”

कमलने सिर दिलाकर क्या “ बहुत अच्छा किया है । एक खास बातिके-
बाबमी होत हैं जो जरती बपकी उमर तक मी बाभिय नहीं हुआ करते; उनके-
तरपर एक न एक अमिमाकक होना ही बाहिय । पर इसकी व्यवस्था

मगवान् स्वयं कृपा करके कर देते हैं। बाव रहने बाविए बाविए, नीचे बाविए पड़े—किन्ती तरह पकड़-बावकर सामान छनर जानेकी कोठिया की बाव।”

२७

मगवान् बावनी बावनी पूरे महीनेका किराना लेकर गया है। इधर उधर बिखरे हुए सामानके बीच बिजुलत कमरेके एक किनारे बेन्वाछकी आराम-कुर्सीपर अचित्त धीरे धीरे पका है। यह सुना हुआ है, देखते ही पता चल जाता है कि उसके बिन्ताप्रस्त मनमें सुखका सैस यी नहीं है। कमक सिद्धसिन्धे-वार बैनी सैन्धी बावोंको परसे मिठाकर एक कमकपर लिख रही है। स्वाव छोड़नेका समय लक्षित है इस कारण इसके काममें किन्ती तरहकी चञ्चलता नहीं आई है।—येता कम्पता है मानो यह लक्ष्य पोकमर्राका काम हो। सिद्धे गीरकता कुछ अविद्य है।

इतन्में हरेमूके यहाँसे सामके भोजनका निर्मन्त्रण आया। किन्ती आदमीके मारकत नहीं—बाकसे। अचित्तने किन्ती कोकके पनी। बावत बावनी विराके बपकम्में यह आमोजन है। बहुत-से परिचित ज्येथोंको आमंत्रित किया गया है। नीचेके एक कोनमें छोटे हरकमें लिखा है, कमक करर आना बहन।—नीकिमा।

अचित्तने बसे विद्यात हुए पुछा “आमोजनी क्या।”

“बाळेंनी नवी मही। मेरी करर इतनी बोहे बड़ यई है कि भिमंत्रण जैसी बावकी बपेझा कर सई। मगर तुम।”

अचित्तने बुझिबाके स्वरमें बहा “बही सोच रहा है। आम तनीयत कुछ—”

“तो अकरत नहीं जानेकी।”

अचित्तकी जिगाह अब तक किन्तीपर ही थी। नहीं तो यह कमकके ओठोंपर जाई हुई शीतुकरनी सुसकराहट करर देख केता।

बाहे जैसे भी हो बंगाली-समाजमें यह करर सबको मय गई है कि ये दोनों आगरा छोड़कर कहीं जा रहे हैं। पर इस विषयमें कि किछ तरह भीर कहीं ज्येथोंका कुमुल्ल बावनी तक मुनिचित धीमांसापर नहीं पहुँचा है। अकमकके बावकोकी तरह यह अन्धकार और अनुमानकी हवामें ही बड़ तक कर मलक रहा है और मया यह कि बावना कोई कठिन बात नहीं थी—कमकठ पुन्नेसे ही

माझा हो सकता वा कि किड्याक उनका मन्तव्य स्वाम अमृतसर है।—पर पुष्पनेक किटीको साहस न हुआ।

अशितके पिता गुरु गोविन्दसिंहके परम मठ थे। इसीसे सिद्धकि महाठीर्य अमृतसरमें ठहरेनि खालसा-काकेके पास पुत्र मैदानमें एक बंगस्य बनबावा था। समब और सुविधासुसार थे वही जाकर रहा करत थे। उनकी मृत्युके बाद बंगस्य किशोरेपर उठा दिया गया था; पर अब वह काकी है। दोनों वही जाकर कुछ दिन रहेंगे। अख्त्याक सब कौरीमें आयगा और शेष-रात्रिमें पी चरते चरते ये दोनों मोहरसे खाना हेनि सती प्रथम दिवकी स्मृतिमें—यही कर्मस्यी अभिवावा है।

अशितने कहा हरेन्द्रके यही क्या तुम अकेली ही जाओगी ?

“ जाऊंगी नहीं ! आश्रमका दरवाजा तो तुम्हारे लिए हमेशा ही खुला रहेगा जब चाहो तब भेंट कर आ सकते हो। पर मेरे लिए तो उसके सुन्दरीकी आने कोई आशा नहीं,—अंतिम बार जाकर भिक्षा खाऊँ—क्यों क्या ब्रह्म हो ? ”

अशित चुप रहा। उसे देख ही दिखाई देने लगा कि वही तरह तरहके छन्दे तथा व्यक्त और अत्यन्त इतारेसे सीधे और बड़बुद वाक्क-वाक्क जाय सिर्फ ठठीको लक्ष्य करके हूँगे और इन आक्रमणके सामने इस अकस्मी रमणीको खेड देना कितनी बड़ी कायरता है ! पर उसमें साप देनेकी भी हिम्मत नहीं थी और मना करना भी उतना ही कठिन था।

नई मोहर खीरी गई है; शाम होनेके कुछ देर बाद सोहर कमलको लेकर चला गया।

हरेन्द्रके घर बृहती मंडिकपर लम्बा होला था। उसीमें क्या बीमती कर्पेट बिछाकर अतिविबेकि लिए इस्तबाम किया गया है। बहूत-गी बसियाँ कम रही हैं, बोलचाल भी कम नहीं हो रहा है। बीचमें आसू बाधू हैं और उन्हें मेरे हुए कुछ सज्जन बैठे हैं। बेला आई है और उनके साथ एक और महिला—मैथिलेन्द्रकी ही मासिनी भी आई हैं। एक सज्जन इधरकी ओर पीठ किये हुए उनके बाते कर रहे हैं। नीकिया नहीं है, शाबर अत्यन्त कधी काममें पैसी हुई होती।

हरेन्द्र भीतर पहुँचा और पहुँचते ही उसने देखा कि दरवाजेके पास कमल खड़ी है। आश्चर्यके साथ हमने मीठे रसमें उसका स्वागत किया “ ओ हो कमल आ गई ! क्या आई ! अशित कहीं है ? ”

सबकी शक्ति एकत्र होकर वही तरफ मुड़ गई। कमलने देखा कि जो व्यक्ति मस्जिदोंके सामने बातचीत कर रहा था वह और कोई नहीं स्वयं अहम है। कुछ हुजूम हो गया है। इन्फ्लुएन्सासे तो बच गया पर बंगालके मसैरिमासे न बच सका। अहम ही हुजूम को बह मौज आया वहीं तो अन्तिम बार उससे मेल न हो पायी मनमें पछतावा रह जाता।

कमलने कहा अजित बाबू नहीं आये —तबीयत जरा ठीक नहीं है। मैं तो बहुत देरकी आ गई हूँ।”

बहुत देरकी ? क्यों बी ?”

“ बीजे। कबकीकी कोठरिमीं बूम पूमकर देखा रही बी। देखा रही बी कि कमीसे तो थोका दिना है, साब ही कमीसे भी थोका दिना या नहीं।” कहकर वह हँसती हुई कमरेके भीतर आकर बैठ गई।

मानो वह वहाँ अतृप्यी बन्ध-बन्धा हो को दुसरोकी आत्तरवकताके लिए नहीं बल्कि अपनी ही आत्तरवकताके लिए आत्तरसाध सम्पूर्ण संभव केकर मिष्टी कोइकर ऊपर फिर उठती आ रही हो। पारिपार्श्विक विरोधका उसे न तो जरा डर है और न चिन्ता है —बॉटोका विराव बनाकर उसकी रक्षाकी कोशिसा ही मानो जवाबती है। आखिर वह ऐसी क्या बी!—परन्तु फिर भी जब भीतर आकर बैठी तब ऐसा माझम हुआ जैसे कम रस और गौरवसे उसने अपनी महि माका एक स्वरघन्ट प्रकस सब बीबीपर बखेर दिया है।

ठीक वही मात्र इरोत्रकी बातसे भी प्रकट हुआ। अन्य दो नारिकेके सामने सामनेतामे मके ही कुछ चुटि हो गई हो पर वह आकैयमे आकर कह ही बैठा “ जब कहीं हमारी मिळन-सभा पूलैताओ प्राप्त हुई।” कमलके विशा सानव वह और किसीके लिए ऐसी बात नहीं कह सकता था।

अहमने कहा क्यों ? इतने रर्जनपाकाओ ऐता बीन-सा सुख तत्प परिखुम्बित हो क्या बता कहो तो लही ?”

कमलने इरोत्रसे हँसते हुए कहा अजित वताइए ? बीबिए इसका बराब ? इरोत्र तबा बीरोनि भी मुँह फेरकर अपनी अपनी हँसी छिगानेकी कोशिसा की। अहमने नीरस-कण्ठसे पूजा, “ क्यों कमल मुझे पहचाना कि नहीं ?”

आशु बाबू मन ही मन अचन्तुष हुए, बोले ‘ तुम पहचान के इतना ही कायी है। तुमने तो पहचान लिया न ?”

कमलन क्या वह प्रश्न आपका चेला है आद्य बाबू। आरामी पहचानना तो इनका खास पेशा है। इसमें भी सन्देह करना इनके पेशेपर बोट पहुँचाना है।”

बात उसने इस ढंगसे कही कि अचानक बार क्लिष्टे हँसी बचाये नहीं रही, मगर साब ही इस वरसे कि वह दुःशासन आरामी कहीं कुछ कुतिलत बात न कह बैठे एक संकित हो उठे। आरामके दिन अष्टकको मुकामेकी इरेन्द्रकी इच्छा नहीं थी; पर यही सोचकर निर्मित्रण दे दिया गया था कि वह बहुत दिन बाद वरसे आया है न देनेसे बहुत ही भ्रष्टा पीकेया। इरेन्द्रने वरसे हुए और विन्वके साब क्या “हमारे इस उद्देशे—अथवा नों कहिए कि इस वरसे ही आद्य बाबू बने जा रहे हैं। इनके साब परिचित होना किसी भी आरामीके किये वीभारवकी बात है और वह वीभारव हम लोगोंके प्रश्न हुआ है। आराम आपकी तवीवत ठीक नहीं है मग भी अथवा है, इसकिये हमें आराम करनी चाहिए कि आराम हम आपकी उद्देश-वीभारवके साब निरा कर सक्ये।

बातें साधारण-ही थीं; पर उस जन्त उद्देश्य प्रीद व्यक्तिके चेहरेकी तरफ देखते ही वे उनके हृदयमें पैठ गईं।

आद्य बाबूके संक्षेप माहम हुआ। इस आरामके कि बातचीतका सिद्धिमान कहीं कम्बुकि नियममें न चल पड़े उन्होंने वरसे सुसरी बात लेन ली; बोले “अस्य आराम तुम्हें माहम हो गया होया कि इरेन्द्रका प्रश्नवर्षाम अथ नहीं रहा। एन्मैत्र तो पहलेसे ही जन्ता है और सतीस भी वरसे जन्ता बना। जो कुछ दो-बार कहे रह पड़े हैं, इरेन्द्रकी इच्छा है कि उन्हें संसारके सीध रास्तसे ही आरामी बनाया जाय। तुम सब श्लेष बहुत दिनों तक बहुत ही बातें करते रहे, पर मठीका कुछ नहीं हुआ। अब तुम लोगोंका कर्तव्य है कि कम्बुके वन्ववाह हो।”

अष्टक भीतरसे बल गया और सुखी हँसी हँसता हुआ बोला जन्तमें पूछ प्रश्न आराम हमकी बातेंसे। लेकिन कुछ भी कहिए आद्य बाबू, मुझे वर भी आराम नहीं हुआ। वह अनुमान तो मैंने बहुत पहलेसे ही कर रक्का था।”

इरेन्द्रने कहा “तो जा करते ही, क्योंकि आरामी पहचानना आपका पेशा क्या है।”

आद्य बाबू बोले “किर भी मैं समझता हूँ, तापनेकी कोई अस्तर नहीं

की। सभी धर्म का मत मूलतः एक ही है—सिद्धि प्राप्त करनेके लक्ष्य के सिर्फ कुछ प्राचीन आचार-अनुष्ठान ही तो हैं। जो उन्हें मानते नहीं या पाकसे नहीं, वे न मारें या न पायें, पर जिनमें मानने या पाकसेका अन्वेषण है उन्हें निरुत्साह करनेसे क्या लाभ। क्या बहुत हो नष्ट है।”

जसने कहा “ बहर।

भाबू बाबूने कमजोरी तरफ देखा। उनके देखते ही वह खेरसे सिर दिखाकर बोल उठी “ आपका वह एक विष्वास तो नहीं हुआ आशु बाबू बन्दि वह तो अविष्वास-अपेक्षाकी बात हुई। इस तरह सोच सज्जी तो मैं आपसके सिद्ध एक शब्द भी न कहती। मगर बात फेरी नहीं है। वह कहना कि आचार अनुष्ठान मनुष्यके सिद्ध धर्मसे भी बड़ी बस्तु हैं वैसा ही है वैसा कि राजाके बड़कर राजाके कर्मचारियोंके बड़ा बठाना।”

भाबू बाबूने हैसते हुए कहा “ माना कि वह ठीक है, पर इससे क्या तुम्हारी अपमानकी ही कुछ मान सें !”

यह बात कमजोर नेहरेसे ही बाहिर ली कि उसने परिहास नहीं किया। उसने कहा, “ क्या सिर्फ अपमान ही है आशु बाबू, उससे ज्यादा कुछ नहीं। इसे मैं मानती हूँ कि सभी धर्म अन्तर्गत एक हैं, सब धर्मों और सब क्षेत्रों में वे उसी एक अक्षेप बस्तुकी अन्वेषण साधना हैं। उन्हें सुद्धिके अन्तर तो पाया जा नहीं सकता। प्रकृत और इबाके केन्द्र मनुष्यका विवाद नहीं होता विवाद होता है उनके वैयक्तिके सिद्ध,—जिसे कि अपने अधिकारमें किना जा सकता है या दखल करके अपने बंधनपोंके सिद्ध इच्छा किया जा सकता है। इसीसे तो जीवनकी आवश्यकताओंमें वह इतना बड़ा सम्बन्ध हो रहा है। वह तो सभी जानते हैं कि विवाहका मूल उद्देश सभी क्षेत्रोंमें एक ही है, पर इससे क्या सब उसे मान सकते हैं। आप ही बताइए न अक्षय बाबू, ठीक है कि नहीं।” यह कहा और उसने हैसकर मुँह फेर दिया।

इतना मीठी लक्ष्य सभी समझ गये। कुछ अक्षयने इसके अन्वेषणमें कोई बड़ी बात कहनी चाही पर वह बड़े हँसि न दिखी।

अशु बाबूने कहा “ पर सुद्धिके तो यह है कमजोर कि तुम कुछ भी मानना नहीं चाहतीं। सभी आचार-अनुष्ठानोंके प्रति तुम्हारे अन्तर अक्षयका भाव है। इसीसे तो तुम्हें कमसाधा बठान है।”

कमलने कहा कुछ भी बर्तन नहीं। एक बार सामनेका परदा हटा दीजिए और फिर कोई समझे या न समझे आपसे समझनेमें डर न लगेगी। यह नहीं होता तो आपका स्नेह मैं बेसी पा सकती। बीचमें कुदरेकी ओर न हो सो बात नहीं मगर फिर भी वह प्रेम मुझे मिश्र है। मैं जानती हूँ आपके ओर पहुँचती हूँ लेकिन आचार-अनुष्ठानको मैं छुड़ा बतकर उड़ा देना नहीं चाहती मैं करना चाहती हूँ सिर्फ़ उसमें परिवर्तन। समयके धमत्तिसार आज जो अचल हो रहा है ओट पहुँचाकर मैं उसीको सबक कर देना चाहती हूँ। वह जो मेरी अचल है वह इसीलिए है कि उसका मूल्य मैं समझती हूँ। कुछ समझती होती तो छुड़ने का स्वर्ग मिश्रकर छड़ी प्रकल्पे सबके साथ मेरे मिश्रकर ही जीवन बिता देती — बरा भी बिरोह न करती।'

बरा ठहरकर वह फिर कहने लगी, मोरोफेके सन रिसामन्त्रके * दिवोकी ठा बरा याद कीजिए। उन जेगोने नई छष्टि करनी चाही पर आचार अनुष्ठानको हाथ भी न लगाया। पुरानेकी देहपर ही ताजा रंग बड़ाकर भीतर ही भीतर करने लगे उसकी पूजा। भीतर वह पहुँची नहीं और वह पैरुन को ही दिनमें निम्न बना। बर या हमारे इरेन्द्र बाबूको कि कहीं लख अभिमानवा इसी तरह निम्न न जान। पर अब कोई बर नहीं वे सम्मल गये हैं।' और वह हँसने लगी।

इस रेंजीमें इरेन्द्र शरीर न हो सका गम्भीर हो रहा। उसने कम तो कर डाला है, पर भीतरसे अब भी समर्पन नहीं मिल रहा है, और अब भी मन रह एकर मारी हो उठता है। वह बोला सुनिश्च तो यह है कि तुम मयबानको नहीं मानती और मुष्टिनर भी तुम्हारा विश्वास नहीं। मगर जो लोभ तुम्हारी सस अङ्कन बस्तु' की छावनामें लगी हुए हैं और उसके तरफ निश्चयमें ध्यान है उनके निम्न कठोर आचार-याज्ञको सिखा और कोई मार्ग भी तो नहीं है। आभय सस देखर मैं अङ्कन नहीं करता; सस दिन बन लखकोके केकर लतीक चलय गया तब मैंने अपनी कमबोरी ही महसूस की है।"

कमलने कहा तब तो आपने लपटा नहीं किया इरेन्द्र बाबू। मेरे पिता कहा करते थे कि त्रिभ जेगोस्य भयबान भितना ही अचिक सुख और अचिक अचिक है वे लोभ करने ही बरादा उल्लसकर मरते हैं और किन लोभोंके

* Illegible text = फरहदी छटाकीमें होनेवाला तादित्य-कला आदिभय भयभीतन।

मरणान् कितने ही अधिक स्थूल और सख्त हैं, वे शेष उत्सवोंसे बतनी ही बड़ा-
 कितारेके निकट हैं। ईश्वरको मानना बसकमें तुच्छमान्य करोबार है। करोबार
 कितना ही विलुप्त और स्वातन्त्र होया तुच्छमान ही बतना ही बड़ बामया। उसे
 समेटकर छोड़ा कर बसकमें यद्यपि स्वयं ज्वाहा नहीं होता किन्तु तुच्छमानकी
 मात्रा बहर बड़ जाती है। इरेन्द्र बाबू आपके सतीश्वरों मेंने बावलीन कर देखी
 है। आधममें उन्होंने बनेक प्रचारके प्राचीन विमोक्ष प्रवर्तन किया था —
 मन्को बामना ही कि उही प्राचीन युगमें लीला बान। उन्होंने छोबा था कि
 हुनिवाकी बमरमेंसे हो इबार बप पौछ बसकमें ही परम काम बाने ब्याप था
 पहुँचाया। बोरनेने भी एक दिन ऐसे ही छूट बामकी लकीम बाँधी थी प्यूरिटनोंके
 एक वकने। छोबा था कि मागकर अमेरिका की बापगे और पिछने सख्त
 सभामित्री मिटाकर बिना किसी कर्मके आनन्दके नाप बाहरकका सन-सुप
 बाबम कर डेने। किन्तु उनके कामका हिसाब आज बहनोंके माकूम हो गया
 है। नहीं माकूम है तो मकामीसेके बसके। पिछके बमानके दुर्जन-बाकते बप
 वर्तमान विधि-विधानोंके समर्थन किया बसे बगता है तमी उन विधि-विधानोंके
 बासतमें दूरनेका दिन आ जाता है। इरेन्द्र बाबू आपके आधमको पायब
 तुच्छमान पहुँचाया हो मैंने पर उस दूरे हुए आधमसे जो बाकी बप रहे हैं
 उनका मैंने तुच्छमान नहीं किया।”

प्यूरिटनोंका इतिहास जलबको माकूम था क्योंकि वह इतिहासका प्रोफेसर
 था। इस बार और सब सुन रहे, सिर्फ उहीन गिर दिलाकर इसका
 समर्थन किया।

आशु बाबू बनेने लगे, “पर उस युगके इतिहासका जो उज्ज्वल चित्र है—
 बसक बीबमें ही बोल उठी “बाहे कितना उज्ज्वल हो बर चित्र पर है तो
 चित्र ही—उससे ज्वाहा कुछ नहीं। ऐसी पुस्तक ब्याम तक संसारमें कितनी ही
 नहीं बई आशु बाबू कितने सम्राटके बपार्थ प्राणोंका परिचय प्राप्त किया था
 सख्या। आलोचना करके हम वर्ष अनुभव कर सकते हैं, पर पुस्तकके कितना
 मित्राकर समाज नहीं गड़ सकते। श्रीरामचन्द्रके युगका भी नहीं सुधिरिके
 युगका भी नहीं। रामायण और ‘महाभारत’ में बाहे कितनी ही बार्थ
 कितनी ही पर उनके स्केचोंकी उद्योगसे उन बमानके साधारण यतुष्के बर्णन

• महाराणी एकिशारेपके समबध एक अति भद्रस्तु विद्यावाह ईवाहै
 बार्थिक एक।

कमलने कहा कुछ भी नहीं। एक बार सामनेवा परवा हटा दीजिए और फिर कोई समझे या न समझे आपको समझनेमें बेर न लगेगी। यह नहीं होता तो आपका स्नेह मैं कैसे पा सकती। बीचमें हृदयेकी ज्योत न हो सो बात नहीं मगर फिर भी वह प्रेम मुझे मिलर है। मैं जानती हूँ आपको चोट पहुँचती है लेकिन आचार-अनुष्ठानको मैं छुड़ा बटाकर उड़ा देना नहीं चाहती मैं करना चाहती हूँ सिर्फ़ उसमें परिवर्तन। समयके बर्मातुसार आज जो अप्पक हो रहा है चोट पहुँचाकर मैं उसीको सफ़ा कर देना चाहती हूँ। यह जो मेरी अप्पका है वह इचीकिए है कि उसका मूल्य मैं समझती हूँ। छुड़ समझती होती तो छुड़के साथ स्वर मिखाकर सुठी भद्रसे सबके साथ मेक मिखाकर ही जीवन बिता देती — यद्य भी विरोध न करती।'

बरा ठहरकर वह फिर करने लगी, योरोफ़के उग रिनेसान्स्के * दिनोंकी तो बरा बाह कीजिए। उन ज्योगोने नई छष्टि करनी चाही पर आचार अनुष्ठानको हाथ भी न बन्वाया। पुरानेकी बेहपर ही ताबा रंग पदाकर मीठर ही भीठर करने लगे बसकी पूजा। मीठर बाह पहुँची नहीं और वह कैशन दो ही दिनमें बिसर गया। बर या हमार हरेन्द्र बाबूको कि कही उरब कमिन्सवा इती तरह बिसर न जान। पर जब कोई बर नहीं वे समूह गये हूँ।' और वह हँसने लगी।

इस हँसीमें हरेन्द्र सरीक न हो सक्र मम्मीर हो रहा। उसने क्षम तो कर जाका है, पर मीठरसे अब भी समर्जन नहीं मिल रहा है, और जब भी मन रह रहकर मारी हो उठता है। वह बोला मुस्किब तो वह है कि तुम भगवानको नहीं मानती और मुस्किपर गी तुम्हारा बिश्वास नहीं। मगर जो स्नेह तुम्हारी बस ज्येव वस्तु' की साथनामें जगे हुए हैं और उसके उपर निष्कन्ममें क्षम है उनके किये कठोर आचार-नास्नके सिवा और कोई मार्ग भी तो नहीं है। आभय ठठा बेकर मैं आईकर नहीं करता; उस दिन जब कमलोंको केकर सटीस बका बवा तब मैंने अपनी कमजोरी ही महसूस की है।"

कमलने कहा तब तो आपने अप्पक नहीं किया हरेन्द्र बाबू। मेरे पिता कहा करते थे कि जिन ज्योगोका मगबाव बितना ही अधिक सुख और अधिक बटिक है, वे ज्येव उठने ही ब्याबा बख्तकर मरत हैं और जिन ज्योगोके

* Renaissance = पत्रहवीं शताब्दीमें होनेवाला साहित्य-कला आदिअ नवजीवन।

मगधाम् बितने ही अधिक स्पष्ट और सख्त हैं, वे जेय इच्छानेसे उतनी ही बुर, जिनारेके निकट हैं। ईशरको मानना असम्भवे मुक्तमानका कारण है। कारण किना ही विसृष्ट और व्यापक होना मुक्तमान की उतना ही बुर मानना। उसे समेटकर छोड़ा कर जाननेसे कसपि काम ज्यादा नहीं होता किन्तु मुक्तमानकी मात्रा बसर कर जाती है। इरेन्द्र बाबू आपके सतीससे मने बातचीत कर देखी है। नाममने उन्हेंने अनेक प्रकारके प्राचीन नियमोंका प्रवर्तन किया था — मनकी कामना थी कि उठी प्राचीन युगमें औद्योगिक काम। उन्होंने सोचा था कि दुनियाकी इतरसेही जो इशार कप फेंक जाननेसे ही परम काम करने जान था पहुँचेगा। योरोपमें भी एक दिन ऐसे ही कुछ कामकी लक्ष्मी लीनी की प्यूरिटनोके एक बहने। सोचा था कि मापकर अमेरिका कहे जायेंगे और पिछली उग्र सशस्त्रियों मिटाकर बिना किसी ईशरके जानम्के माप बाइबलका सन-सुन बायन कर देंगे। किन्तु उनके सामना विशाल मात्र बहुरोंको मापस हो गया है। नहीं मापस है तो मद्रासीसके दसके। पिछके बमानेके वर्तन-आकड़े बर वर्तमान विधि-विधानोंको समझन किया जान लयता है तभी उन विधि-विधानोंके वास्तवमें टूटनेका दिन आ जाता है। इरेन्द्र बाबू आपके भाषनको समझ मुक्तमान पहुँचाया हो मने पर उस टूटे हुए भाषनको जो बाकी बच रहे हैं उनका मने मुक्तमान नहीं किया।”

प्यूरिटनोका इतिहास अक्षरको मापस का क्योंकि वह इतिहासका प्रोफेसर था। इस बार और एक पुन रहे, सिर्फ उचीन विर हिसाब इतका समर्पन किया।

आशु बाबू बहने बने, “ पर उस युगके इतिहासका जो उज्ज्वल चित्र है— कामक बीबमें ही बोल उठी “ चाहे बितना उज्ज्वल हो वह चित्र पर है तो चित्र ही —उससे ज्यादा कुछ नहीं। ऐसी पुस्तक आज तक संसारमें लिखी ही नहीं बरें आशु बाबू जिससे समाजके सबार प्राणोंका परिवर्तन प्राप्त किया जा सकता। आलोचना करके हम सर्व अनुभव कर सकते हैं, पर पुस्तकने बिना बिलकर समाज नहीं यह सकता। श्रीरामचन्द्रके पुण्य भी नहीं सुबिष्टिके पुण्य भी नहीं। रामचन्द्र और ‘महानाराट’ ये चाहे बितनी ही बाले बिली हो पर उनके खे-खेके टयोन्नेसे हम समाजके साधारण अनुभवके वर्तन

* महात्मी एकिशावेके समझ एक अति महान् मित्रान् ईगाई बार्मिड एक।

नहीं मिल सकते; और माफ़ी खोज चाहे जिसकी ही निरापेक्ष क्यों न हो, बड़े होनेपर उसमें बाध नहीं आना या सकता। संसारकी सम्पूर्ण मानव-जातिमें निम्न-कर ही तो मनुष्यका अस्तित्व है, वह तो आपके चारों तरफ है। कमबल मोक्षकर क्या इसके स्वभावमें रोधा या सकता है।”

वेष्म और माफ़िनी चुपचाप बैठी सुन रही थीं। इस झीके सम्बन्धमें बहुत-सी बातें इन दोनोंने सुन रखी थीं पर आज आमने-सामने बैठकर इस परित्यक्त और निराभवा महिलाके नाकबोंकी निःसंशय निर्ममता देखकर इनके आश्चर्यका ठिन्ना न रहा।

दूसरे ही क्षण वही भाव आसु बाबूके मुँहसे प्रकट हुआ। उन्होंने कहा, “बहुतमें हम चाहे जो भी कहा करें कमबल, पर तुम्हारी बहुत-सी बातें हम मानते हैं। जिसे हम नहीं कर सकते, हरमसे उसमें व्यवसा भी नहीं करते। श्रद्धा परमें किसी दिन सिबोका दरवाना बन्द या धीर सुना है, एक दिन तुम्हारे आ जानेसे सतीजन इस बगइच्छे कल्पित समझ किया या। मगर आज हम सभी वही आत्मविश्वास होकर आये हैं, किसीके आनेकी एक श्रेय नहीं—”

इसनेमें एक लक्ष्य दरवानेके पास आकर खड़ा हो गया। साफ-सुथरी पोशाक पहने या चेहरेपर आनन्द और सन्तोषका भाव प्रकट रहा था; बोला “व्यन आने कहा है, रसोई तैयार है आसन निकाले जायें।”

असहने कहा, “हाँ हाँ बिजने जायें। क्यों बाबर, रात भी तो खो रही है।”

असहने कहा गया। हरेन्द्रने कहा “अबसे मामूली आये हैं, जाने-पिनेकी किन्ता किसीको नहीं करनी बहती। इनके सिव तो नहीं व्यवह न रह गई थी — पर सतीजन गुस्ता होकर चला गया।”

आसु बाबूका चेहरा क्षण-भरके सिव सुक हो गया।

हरेन्द्र ने कहा “और मजा यह कि सतीजनके सिव भी और कोई सपाय नहीं था। यह स्वामी ब्रह्मचारी आचामी ठहरा — बहकी छात्रनामें यह सम्पर्क मिल था। पर मुश्किल तो यह है कि मेरी कुछ सम्बन्धमें नहीं आ रहा कि आस्तपमें कौन-सा काम ठीक हुआ।”

कमबलने हुरन्त निःसंशय तारमें कहा “वही काम हरेन्द्र बाबू वही काम

ठीक हुआ है। समय जब बहुत स्वाभाविक न रहकर वृद्धोपर आघात करने लगता है, तब वह दुर्बल हो उठता है।" करते करते उसने अपने-मरके लिए आज्ञा बाबूजी ठारक देखा — आज्ञा कोई एक गुन इसाता या — पर फिर उसने हरेन्द्रसे ही कहा "मयवानके अपने वे अपने जानबो ही बड़ाकर बैठते हैं अपने आपको ही बीज-बीजक वे अपने मगवानकी सृष्टि करते हैं। इसीसे उनकी मयवानकी पूजा बार बार फिर हुआकर जन्मी ही पूजापर उतर जाती है इसके सिवा उनके लिए और कोई उपाय भी नहीं। मनुष्य न तो सिर्फ पुरुष ही है और न सिर्फ स्त्री ही; दोनों मिलकर ही एक होते हैं। आगेकी बार देकर श्रेय आवा जब सिर्फ अपनेको ही विधात करने पाना चाहता है, तब वह अपनेको भी नहीं पाता और मगवानको भी को बैठाता है। सतीश बाबूके सिवा दुर्धिन्या मत रक्षिए हरेन्द्र बाबू उनको सिद्धि स्वयं मगवानके विन्ने दे।"

सतीशको व्यासग कोई भी बच न पाता था; इसीसे अन्तिम बातपर एक सब ईश बोले। आज्ञा बाबू भी ऐसे परन्तु बोले "हमारे हिन्दू-शास्त्रोंमें जो सबसे बड़ी बात है कमल वह है आत्म-दर्शन। जबकि अपनेको समझीएताके मात्र जान लेना। अधियोग्य करना है कि इन्की खोजने ही विषयों सम्पूर्ण जान करी,—सम्पूर्ण ज्ञान मरा पहा है। मयवानको पानेका यह एक मार्ग है और इसीके बिना शक्य उपदेश है। तुम ईशरको नहीं मानती — पर जो मानत हैं, विधात करते हैं, उन्हें चाहत हैं — वे अपर संसारक अन्य विषयोंमें अपनेको बंदिन न रखे तो एकप्रकित हीकर पानने में सफल नहीं हो सकत। मनीशकी बात में नहीं करता,—पर कमल यह तो हिन्दुओंका अविच्छिन्न-परम्परासे प्राप्त संस्कार है, और यही तो योग है। समुद्रसे लेकर हिमालय तक सम्पूर्ण भारत अनेकक अक्षासे इसी लक्ष्यर विधान करता है।"

अधिक विधात और मात्रक आगेसे उनको दोनों अर्थें उपजना आई। मन तरहके बाहरी साहसी ठाठक शीघ्र तनका जो दृष्टिष्ठ विद्याम-गमयय हिन्दु-विद्य निर्वीत ही-निश्चिन्ताकी तरह चल रहा था कमलने जय-मरक निरु उपय अनुभव किया। वह कुछ अज्ञाना चाहती थी, पर संशोधके मारे वह न सही। संशोध और किसी बातका नहीं सिर्फ इसी बातका कि इन संप्रदायी संघट्टेन्द्रिय बृह पुत्ररको क्या पदुबाना ठीक नहीं। परन्तु उत्तर न पाकर जब वे तुर ही पुत्रने लगे, "क्यों कमल क्या यह संज नहीं?" तब बहने निर

मिथ्याते हुए क्या नहीं, आसु बाबू यह सब नहीं। सिर्फ दिव्य धर्ममें नहीं
 -वह विश्वास सभी धर्मोंमें है। अगर सिर्फ विश्वासके जोरसे ही तो कोई बात कभी
 सत्य नहीं हो जाती। न स्वामके जोरसे ही यह सब हो सकती है और न मृत्यु
 -वश करनेके जोरसे ही। संसारमें अत्यन्त दुष्ट दुष्ट मत-भेदोंके कारण बहुत-से
 शान्तिवादी बहुत बार केना-बेना हो चुके हैं। उससे सिद्ध हो ही प्रमाणित
 हुआ है विश्वासेकी सख्ता प्रमाणित नहीं हुई। योग किसे करते हैं सो मैं नहीं
 जानती लेकिन अगर वह विवेक स्वाममें बैठकर केवल आत्म-विकसण और
 आत्म-विकसन करना ही है तो मैं यही बात जोरके साथ कहूँगी कि इन दो
 विचारवादी संसारमें बितने प्रम और बितने मोहने प्रविष्ट किया है, सतना और
 कर्तव्य नहीं। और ये दोनों अज्ञानके ही स्वरूप हैं।”

शुनकर सिर्फ आसु बाबू ही नहीं हरेन्द्र भी मारे आश्चर्य और दुःखके
 रूप हो रहा।

हृत्में उस क्षणमें फिर आकर कहा सब तैयार है, बकिष् बीमने।”
 सब नीचे गळे गये।

२८

शोकन हो चुकनेके बाद कमलको क्षण-भरके लिए एकमतमें पाकर अक्षयने
 चुपकेसे कहा सुना है कि आज बहोसे बड़ी जा रही हैं। कमलम सभी परि
 शित्तोंके वर आज एक-आव बार हो आई हैं सिर्फ मेरे ही—”

आप। कमलके आश्चर्यका ठिकाना न रहा। सिर्फ ररमें ही परिकर्तन हो
 -सो बात नहीं सम्बोजनमें भी आप। इस बातपर कि कबो उन शेष उससे
 तुम बहकर बोलते हैं, उसे न तो कोई शिक्षक भी और न किसीसे वह
 नाराज ही होती थी। परन्तु अज्ञानकी बात ही थी और थी। वह इस बीके लिए
 आप कहना प्यारी समझता था, बकिष् उसकी तो बही तक चारवा थी कि
 ऐसा करना स्थिरात्म दुःखयोग है। कमलको वह बात माकम दी पर इस अति
 दुष्ट कोकेपकी तरह बेचनमें भी उसे धर्म जाती थी। उसे वर वा कि कहीं
 इसी नियमको केकर कई बहस न छिड़ जाय।

कमलने हँसते हुए कहा “आपने तो कभी मुझे दुःखना नहीं।”

नहीं। वह मेरा स्वर है। जानेके पहले क्या अब आपको कष्ट न मिलेगा।”

“ इन्हे मित्र सजना है बतलाए, हम शेष कम लड़क ही खाना हो रहे हैं। ”

लड़के ही ! ” फिर बरा ठहरकर कहा “ नरिष्यमे हार अपर फिर कभी आना हो तो मेरे घर आकर निमन्त्रण रहा । ”

कमलने हँसत हुए कहा “ क्या एक बात आपसे कुछ सज्जी हैं बहुत बाबू ! आपका मेरे विषयमें जानकी रात कैसे बरत गई ? बल्कि जब तो आपसे और भी कटोर होना चाहिए था ! ”

कमलने कहा ‘ साधारण तीरठे बैरा ही होता । बेचिन कबकी बार इनसे कुछ अनुभव इकट्ठा कर जाना है । आपने जो प्यूरिजनोंका टयान्त विवा न सो मेरे हृदयमें बाहर विष फसा । और कित्तीने समझा या नहीं, मैं नहीं कह सकता —और न समझना कोई आश्चर्यकी बात भी नहीं —पर, मैं तो उस सम्बन्धमें बहुत-कुछ जानता हूँ । एक बात और है । हमारे यौवनमें कममय बौरह-जान मुसलमान है,—ये आज भी अपने वेद हजार बरके पुराने सत्यपर रह हैं —वही सब विधि-विशेष चाररे-अनून आचार-अनुष्ठान हैं,—कुछ भी स्मारक नहीं हुआ है । ”

कमलने कहा “ इनके सम्बन्धमें मुझे कममय कुछ भी नहीं मालूम,—जान केह मीछ कभी नहीं मित्र । पर अगर आपकी बात सच हो तो मैं सिर्फ यही कह सकती हूँ कि उनके लिए भी थप शेषने समझनेके दिन आ पहुँचे हैं । वह मस्यकी सीमा बिछी एक भीस-दिनमें ही सुनिश्चित नहीं हो गई है, उन्हें भी कित्ती न कित्ती दिन मानना ही पड़ेगा । बेचिन,—आर बलिप । ”

“ नहीं मैं यहीसे विश्व हूँगा । मेरा भी बीमार है । इतने आश्चर्यसे भेंट की है आपने, एक बार उसके भी भेंट न कीजिएगा ! ”

कमल कुहरलमा पृष्ठ बैठी “ केही हैं वे बेलनेमें ! ”

कमलने कहा “ ठीक नहीं मालूम । हमारे परिवारमें ऐसा प्रश्न कोई नहीं करता । पिताजी भी साबकी उमरमें उठे पुत्र-बाबू बनाकर घर के जाने थे । पत्नी मित्रनेहा न तो समझ ही मित्र न करत ही समझी पर । रसोई बनाता परक राम-बने अठ-उपवास, पूजा-पाठ —इसीमें कभी रहती है,—सुहाघे ही इह-शेक बरन्नेकथ बैरता समझती है बीमार होनेपर दवा नहीं खाना चाहनी करती है पतिके चारोदछे ही सब बीमारियों अच्छी हो जाती हैं । अगर न अच्छी हो तो समझना चाहिए कि बीबी जानु बरतन हो चुकी । ”

कमलको इसका बोझ-बहुत आभास इरेन्द्रसे मिल चुका था, उसने कहा—
तब तो आप माम्बवान् हैं—कमसे कम कर्त्तव्य माम्बसे। इतना ज्वरदस्त
विधास इस पुष्पों दुर्लभ है।”

असुखने कहा थायव ऐसा ही हो लीक नहीं जानता। सम्भव है, इसीको
कौन्मात्र करते हो। पर कभी ऐसा यादग्न होता है कि संसारमें मेरा कोई नहीं,
मैं अकेला हूँ,—बिडपुत्र गिरसं अकेला।—अच्छ नमस्कार।”

कमलने हाथ उठाकर प्रति-नमस्कार किया।

असुख एक क्षण बड़ाकर फिर मुह पका बोला “एक अनुपेक्ष नहीं।”
कहिए।”

अपर कभी समझ दिके और मेरी बाध रहे, तो एक पत्र लिखिएना।
आप खुद देखी हूँ, अमित बाधू देखे हूँ,—वही सब आप ज्येष्ठोंकी बात मैं अक्षर
सोना कहेंगा। अच्छा अब जाता हूँ नमस्कार।” इतना कहकर असुख अच्युते
बच्य गया और कमल वहीं स्थण्य होकर खड़ी रही। मन्त्रे-दुरेका विचार करते
नहीं उसे सिर्फ इसी बलाका खयाल हुआ कि वह नहीं असुख है। और मनुष्यकी
आनन्दरीके बाहर इस माम्बवानका सम्पत्त्य-जीवन निर्दिष्ट छान्तिके साथ इस
तरह कहा कम का रहा है। एक विदुषिके लिए उषे इतना कुदरत ऐसी विनीत
और सखी प्रार्थना।

अपर बाधू बोला कि पीत्तिकाके सिवा और सब बयास्वान बैठे हैं। यह
पीत्तिकाका स्वभाव है,—इसपर कोई कुछ खयाल भी नहीं करता। आद्य बाधूने
कहा इरेन्द्रने एक बड़े मन्त्रिणी बात कही थी कमल सुननेसे पहले तो सदा
वह एक पहेली सी मान्य होती है, पर बात असुखमें सब है। वह रहे थे, स्त्रो
इतना भी नहीं समझ सकते कि समाजके प्रबलित विविधिवानके उद्भव करनेका
कुल सिर्फ मन्त्रि-बल और विवेक-बुद्धिके बजाय ही सफल किया जा सकता है।
मनुष्य बाहरके जग्यादको ही देखता है, जन्म-दरबारी प्रेरणाकी कुछ बजाय ही
नहीं रखता। और वहींपर समस्त ह्युध और विरोधोंकी सृष्टि होती है।”

कमलने समझा कि इमका सत्य वह सब और अमित है, इसलिये वह चुप
रही। उसने वह बात नहीं कही कि उच्छृंखलताके जोरसे भी समाजके विवि-
धिवानोका उद्भव किया जा सकता है। बुद्धि और विवेक-बुद्धि दोनों एक
चीज नहीं हैं।

बेका और यादगिरी लठ खाड़ी हुई, उनके जानेका समय हो गया। कमलकी विसमृद्ध उपेक्षा उनके उन्होंने हरेन्द्र और आहु बाबूको नमस्कार किया। इस बीके सामने उन्होंने हमेशा अपनेको छोटा समझा है, इसलिए अन्तमें उसका वक्ष्य सुझवा उपेक्षा दिखाकर। उनके जानेपर आहु बाबूने स्नेहके साथ कहा ' कुछ खपाक मत करना बेटी इसके सिवा उनके पास और कुछ है ही नहीं। मैं भी तो उसी ब्रह्म आदमी हूँ। सब जानता हूँ। "

आहु बाबूने हरेन्द्रके सामने आज पहली बार बसे बेटी कहे सुझवा। कहा " देवबोगसे वे परस्पर व्यक्तिगोपी किये हैं, हाई सर्किलकी महिलाएँ ठहरी। बेटीकी बातचीतमें बाल-बलन और पहचान-उदाहरमें अप-टू-वेड हैं। वह मूल जानेसे तो उनकी मूल प्रीतिपर बोट पड़ती है कमल। उनपर गुस्सा होना भी अस्वाभाव है। "

कमलने ईसठ हुए कहा ' गुस्सा तो मैं नहीं हूँ। '

आहु बाबूने कहा ' तो मैं जानता हूँ। गुस्सा मुझे भी नहीं आया सिर्फ़ इसी आई। पर बर कैसे जानोगी बेटी, मैं उतारता बाऊँ तुम्हें ? "

" बाह, नहीं तो मैं बाऊँगी कैसे ? "

कहीं ज्योतीकी निगाह न पड़ जाय इस बरसे उसने अपनी मोटर बौध ही बी।

अच्छी बात है। पर, जब देर करना भी धानए ठीक न हो — क्यो ठीक है न ? "

उपको खवाक हो आया कि अभी वे सम्पूर्ण नीरोम नहीं हुए हैं।

इतनेमें बीनेमें प्लेडी आबाब सुनाई दी और दूसरे तप करने अरबन्त आबकेके साथ बेका कि बरबाकेके बाहर अमित आ कहा हुआ है।

हरेन्द्रने मीठे स्वरसे त्वाप्त किया " हेनो ! बेटर फेड देव नेक्टर। (—तर्कवा नहींसे देर मन्दी।) श्याचर्वाभमन्ध केसा सोनाम्न है। "

अमित अप्रतिम होकर बोला " केने जाना हूँ। " और फलक धारते ही एक अनचीती दुष्वाहदिक्रयाने उसके भीतरकी बातको धरेसे फलक देकर बाहर विचारक दिया बोला " नहीं तो फिर सुझावय न होती। हम ज्येग लपके ही बके जा रहे हैं। "

" लपके ही ! आबकी एत बीते ! "

" हाँ। सब ठेगारिबी हो लुपी है। बड़ीसे हम ज्येगोकी मात्रा हार होनी। "

बात सिद्धीसे छिपी हुई नहीं थी फिर भी उसके सब मानो कजरासे म्यान हो बडे ।

इतमने दूजे-दोब पुण्सेसे नीकिमा जा पहुँची और एक तरफ बैठ गई । संशेष दूर करके आसु बाबूने मौख उठाकर देखा । जो बात वे करना चाहते थे वह एक बार उनके गलेमें जड़की फिर धीरे धीरे वे बोले “ हो सकता है कि हम जोगोकी अब फिर कमी भेद न हो तुम दोनों मेरे स्नेहके पात्र हो अगर तुम जोगोका प्याह हो जाता तो मैं देख जाता । ”

अभितको सहासा मानो फिजाटा नजर आ गया वह स्वयं बच्यसे बोले उठ “ यह बीच में नहीं जाहवा आसु बाबू यह तो मेरे किये कमनाके बाहरकी बात है । विवाहके किये मैंने बार बार कहा है और बार बार सिर हिलानकर कमरने अस्वीकार कर दिया है । अपनी सारी सम्पत्ति — जो कुछ मेरे पास है सब, — उसके नाम लिखाकर मैं मजबूतीसे पकवाई देनेकी तैयार था पर कमक राखी नहीं हुई । आज इन सबके सामने मैं फिर प्राचना करता हूँ कमक तुम राखी हो जाओ । मैं अपना सबैस्य तुम्हें देकर बी जाऊँ । जोखेके कलकसे मुटकारा पा जाऊँ । ”

नीकिमा अथाह होकर देखती रह गई । अजित स्वभावतः होय मजुतिअ जादमी था उसके सामने उचकी ऐसी असीम म्वाकुमठा देखा उसके सब मारे आश्चर्यके रंग रह गये । आज वह अपनेकी विसमूल निःसर कर बना जाहता है । अपनी पहलेके कोई बीच अपने हाथमें रखैकी आज उँसे कोई आनन्दनकना ही नहीं मान्म हो रही है ।

कमरने उसके हुँदकी तरफ देखकर कहा “ क्यों तुम्हें इतना डर किउ बातअ हो रहा है ? ”

“ डर आज न सही पर— ”

पर का दिन पढ़के आवे तो सही । ”

जानेपर तो फिर तुम इयिज कुछ जेनी नहीं मैं जानता हूँ ।

कमरने हँसते हुए कहा “ जानत हो ? तो वही होया तुम्हारे किये सबसे बड़ा और मजबूत बन्मन । ”

जरा उठकर फिर करने लगी “ तुम्हें बाद नहीं मैंने एक दिन कहा था कि बहुत प्यारा मजबूत बनानेके जेमेते विसमूल अित और निधिअ मडान बनानेकी कोसिअ म्म करो । उसके मुारेकी कज मके ही बन जाव पर नीकिम मजुम्यअ धयनापार नहीं बन सकता । ”

अभितने कहा "क्या वा मुझे मार है। जानता हूँ, तुम मुझे बॉबना नहीं चाहती—पर मैं जो बॉबना चाहता हूँ। नहीं तो फिर मैं तुम्हें किस चीजसे बॉब रहूँगा कमक ? मुझमें कहीं है इतना खोर ?"

कमकने कहा "बोरकी बकरत नहीं। बसिक तुम अपनी कमबोरीसे ही मुझे बॉब रखना। मैं इतनी निपटूर नहीं कि तुम जैसे आदमीको बुझियामें यों ही बहाकर बसी जाऊँ।" फिर पञ्चमात्र आठ बान्सी तरफ देखाकर बोली "बागवानको तो मैं मानती नहीं नहीं तो बनसे प्रार्थना करती कि तुम्हें संभारके समस्त आपत्तोंकी जेडमें रखकर ही मैं एक दिन मर सकूँ।"

बीजिमाकी बॉबोमें जोड़ मर जाये। आठ बान्सी ने अपनी बॉबोमेंसे प्नाकुल बॉबोको प्येठते हुए दैने हुए बस्ये कहा "तुम्हें मरवाना माननेकी भी बकरत नहीं कमक। एक एक ही बात है बेटी। यह आत्म-समर्पण ही तुम्हें एक दिन गौरवके साथ उनके पाप बर्तुना देगा।"

कमक हंस ही बोली "यह ता मेरी कमटी प्राप्ति होगी। इककी प्रप्तिसे भी उरपी पचावा इच्छ है।"

छे ठीक है, बेटी। पर यह जान रखना कि मेरा आदीबाद निष्कम नहीं होनेछ।"

होत्रने कहा "अभित जल्ते तो जाये नहीं होने, कस्ये जीये।"

आठ बान्सी हंसते हुए बोले, "दुम्हारी बज्र भी लूट है। देता भी कभी हो सकता है कि अभित बिना जाने-सीये ही कस्य जाये और कमक नहीं। आ-सीकर निश्चिन्त हो जाये।"

अभितने कमकके साथ लीकर बिना कि बात दर-बसक देखी ही है। यह बिना जाने नहीं जावा।

इस बातका स्मरण आठ ही कि नहीं छेप उरि है, कितीक भी नहीं चाह्य वा कि समा भंग हो परन्तु आठ बान्सीके स्थात्मका कवाक करके बाबिर बठनेकी खेसती करनी पगी। होत्रने कमकके पाप भाकर बीजे स्मरणे कहा इतने दिनों बाद अब आपस खीज पाई कमक, मेरा अदिवन्धन म्बन बयो।"

कमकने बसी तरह तुफकेने कवाक बिना पाई है। कपसे कम बरी आतीबाँर दीखिह।"

होत्रने जाने और इच्छ न कहा। परन्तु कमकके कस्ये केहा बाबिर देह

दुविबाहीन परम निःसंख्य स्वर संलुप्त नहीं हुआ और वह बात उसके कानोंके कटकी । मगर फिर भी ऐसा ही हुआ करता है । निश्चय निश्चय ही ऐसा है ।

कमलको दरवाजेकी ओटमें बुझकर नीकियामे अपनी जॉर्ज पोछते हुए कहा कमल मुझे भूक न जाना कहीं । ” इससे ज्यादा उससे कहते नहीं बना ।

कमलसे उसे बुझकर नमस्कार किया और कहा बीबी मैं फिर बाँकेली पर जानेके पहले मैं आपके पास एक प्रार्थना रख बाँकेली कि जीवनमें अपनापके कमी अस्वीकार न करना । उसका सत्य रूप आनन्दका रूप है । उसी रूपमें वह दिखाई देगा है,—वह और किसी तरह भी पहचाना नहीं जा सकता । तुम और बाहे जो भी करो बीबी पर अविनाश बतूके करकी बेगार करनेको अब राजी न होना । ”

नीकियामे कहा ऐसा ही होगा कमल । ”

आष्ट बानू गाँवमें जाकर बैठे तो कमलने हिन्दू-रीतिसे उनके पौत्र सूरज प्रभाम किया । आष्ट बानूने उसके माथेपर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया । कहा तुमसे मुझे एक वास्तविक उत्पन्न पता लगा कमल । मनुष्यकोसे मुक्ति नहीं मिलती मुक्ति मिलती है ज्ञानसे । इससे जर कमला है कि तुम्हें बिचने मुक्ति भिजा ही है; कहीं अहितको वही अक्षममाममें न डुबो है । उससे इसकी रक्षा करना बेटी । आँसे इसका मार तुम्हीपर है । ”

कमलने इमारा समझ किया ।

आष्ट बानू फिर कहने लगे तुम्हारी ही बात मैं तुम्हें याद दिखाने देता हूँ कमल । उस दिनसे मैंने इस बातपर बार बार विचार किया है कि प्रेमकी पवित्रताका इतिहास ही मनुष्यकी सम्मताका इतिहास है,—इसका जीवन है । वही सचक मदान् होनेका आराधनात्मक रूप है । फिर भी बुद्धिताकी संज्ञा का व्याख्याको केन्द्र में रखते बच तर्क नहीं करेंगे । अपने सोमके निश्चयसे तुम लोगोंकी विधाकी अधिनोंके मैं मन्त्रि नहीं करना चाहता । मगर इस पूरेकी इतनी-सी बात याद रखना कमल कि आर्य्य का आइडिया सिर्फ सो-चार आधुनिकोंके किय ही है,—इसीसे इसकी श्रीमत् है । उसे साधारणके बीच खीन करनेसे फिर वह पापकल्प हो जाता है । इसका तुम मिट जाता है और बोध दुःख हो उठता है । बीज पुष्पसे केन्द्र वैष्णव युग तक इसकी बहुत-सी

हुन्कार नहीं संभारमें केसी पकी हैं। क्या तुम फिरसे वही हुन्कारा विजय संभारमें खीन बना जाहती हो केसी ?”

कमलने मूढ कण्ठी उत्तर दिया वह तो मेरा बर्म है बाबाजी !”

“ बर्म ! तुम्हारा यह बर्म है !”

कमलने कहा हौं। जिस हुन्कारे भाप भर रहे हैं बाबाजी, उसीमेंसे फिर उससे भी बड़ा आदर्श पैदा होगा। और उसका भी काम जिस दिन कतम हो जायगा उस दिन उसके मूढ कर्तारके सारमेंसे उससे भी महान् आदर्शकी छवि होगी। इसी तरह संभारमें आकाश शुभ कलके शुभतरके बरबोमें आत्म-वितर्जन के अपना काम बुझता रहता है। वही तो मनुष्यकी मुखिया माय है। देखते नहीं बाबाजी छठी-बाहक बाहरी केहरा राजसासनसे बरक गया है, पर उसके भीतरकी जान आज भी ज्योंकी त्यों बचक रही है और वही तरह मरम किये जा रही है। यह बुझेगी किस बीजसे ?”

आशु बाबूसे कुछ बोला न गया, न एक गहरी साँस कैकर रह गये। परन्तु दूसरे ही क्षण बोक ठके, कमल मसिकी माध बगल में आकतक नहीं तोड़ सका सो इसे तुम कहा करती हो कि मोह है कमजोरी है—माझन वही वह क्या है, पर वह मोह जिस दिन जाता रहेगा उस दिन उसके साथ साथ मनुष्यका बहुत-बहुत काम जायगा केटी। मनुष्यकी यह बहुत तपस्याकी पूजी है कमल।—अप्यक बर बाबू। पत्ने बाबुदेव।”

इतनेमें देखियाफ-पियून सामने आकर सानकिये उतरा। धर्म्यतार है।

हरेमने वालीकी बचीके सामने आकर तार खोलकर पड़ा। कन्वा देखियाफ है मजुरा बिकेके एक छोटे सरकारी मस्जिदके बाकडरने भेजा है। उसमें लिखा है,

“ गौरक एक मन्दिरमें जान लग गई थी। बहुत दिनोंकी बहुजनपूजित प्रतिमा प्यंज होनेको थी। रक्षाक कोई भी उपाय न रह गया था कि इतनेमें उस बकते हुए मन्दिरके अन्दर राजेन्द्र पुस पहा और मूर्तिको बाहर के जाया। देख्याकी रक्षा हो गई, पर उनके रक्षा-क्योंकी रक्षा न हो सकी। दो दिन पुरचार अल्पक बातना सहता हुआ आज सधेरे यह बैकुण्ठ बल गया। इस इमारतकतने मिकडर कील-भङ्गनादिके साथ सुदृष्ट निवृत्त कर समुना-तदपर बसकी अन्वेषि-किना अल्पक थी है। मरते कमल राजेन्द्र आपको समाचार देनेके लिए कह गया है।”

दुविधाहीन परम विशदम्ब स्वर संकृत नहीं हुआ और वह बात उसके कर्मोंके कटकी । मगर फिर भी ऐसा ही हुआ करता है । विद्वान्न विद्या ही ऐसा है ।

कमलके दरवाजेकी ओरमें कुम्हार नीकियाने अपनी आँखें बोक्ये हुए कहा कमल तुझे मूल न जाना करी ।” इसके जवाब उसके कहते नहीं बना ।

कमलने उसे कुम्हार नमस्कार किया और कहा बीबी मैं फिर धार्मिकी पर जानेके पहले मैं आपके पास एक प्रार्थना रख आऊँगी कि जीवनमें कल्याणके कमी बल्कीकर न करना । इसका सत्य हम जानन्दका कर है । उसी कमी वह दिखाई देता है,—वह और किसी तरह भी पहचाना नहीं जा सकता । तुम और बाहे जो भी करो बीबी पर अनिनास बाबूके करकी पैसा करनेके जब राजी न होना ।”

नीकियाने कहा “ऐसा ही होना कमल ।”

आष्ट बाबू यानीमें बाबू बैठे तो कमलने हिम्-नीसिसे उनके पाँव सूँघ प्रणाम किया । आष्ट बाबूने उसके माथेपर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया । कहा “तुमसे मुझे एक वास्तविक उत्तरका पता लगा कमल । अनुकरानसे मुक्ति नहीं मिलती मुक्ति मिलती है ज्ञानसे । इसके दर कल्पता है कि तुम्हीं जिन्हने मुक्ति मिला ही दे; कहीं अकित्तके वही अद्यमानमें न हूँगे दे । उससे हयकी रक्षा करना बेटी । ध्यानसे इसका मार तुम्हींपर है ।”

कमलने इसारा समझ किया ।

आष्ट बाबू फिर कहने लगे “तुम्हारी ही बात मैं तुम्हीं काव दिखने देता है कमल । उस दिनसे मैंने इस बातपर बार बार विचार किया है कि प्रेमकी परिवर्तना इतिहास ही मनुष्यकी सम्बन्धताका इतिहास है—इसका जीवन है । वही उसके महान् होनेका वास्तविक वर्णन है । फिर भी अकित्तकी संज्ञा का क्याक्याको केकर मैं कहते बच लर्क नहीं करूँगा । अपने छोमके नि-हालसे तुम लोगोंकी विद्याकी अधिमोके में मरिण नहीं करना चाहता । मगर इस बूझे इतनी-सी बात बाद रखना कमल कि आदर्श का आदर्शिका सिर्क दो-चार आदर्शिकोंके हिम् ही है,—इसीसे उसकी कीमत है । उसे सामारनके बीच बीच लानेके फिर वह धाराज्यन हो जाता है उसका तुम मिट जाता है और बोध कुच्छ हो उठता है । नीक तुमसे केकर केप्यन कुन एक हयकी बहुत-ही

दुबिबाहील परम विरहव्य स्वर संकृत नहीं हुआ और वह बात उसके कमरेके खटकी । मगर फिर भी ऐसा ही हुआ करता है । विश्वका विचार ही ऐसा है ।

कमरुके दरवाजेकी ओरमें कुम्हार नीकमाने अपनी ओरमें पोंकते हुए कहा ' कमरु मुझे मूक न बना कहीं । ' इससे ज्यादा उससे खड़े नहीं बना ।

कमरुके उसे कुम्हार बरस्कार किया और कहा ' जीजी मैं फिर बरस्कारी पर जानेके पहले मैं आपसे पाठ एक प्रार्थना एक बरस्कारी कि जीवनमें कमराकसे कमी अस्वीकार न करना । उसका उत्तर रूप आनन्दकर था है । उसी क्षणमें वह दिखाई देता है,—वह और किसी तरह भी पढ़वाना नहीं आ सकता । तुम और चाहे जो भी करो जीजी पर जयिनाथ बाबूके परकी बेपार करनेके जब राजी न होना । "

नीकमाने कहा ' ऐसा ही होगा कमरु । "

आठ बाबू पाकीमें बाहर बैठे तो कमरुके दिग्ग-रीतिसे उनके पाँव छुकर प्रणाम किया । आठ बाबूके उसके माथेपर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया । कहा ' तुमसे मुझे एक वास्तविक तत्त्वका पता क्या कमरु । अनुकरवसे मुक्ति नहीं मिलती मुक्ति मिलती है ज्ञानसे । इससे घर जाता है कि तुम्हें बिचने मुक्ति मिला ही है; कहीं अजितकसे नहीं अक्षम्यमयमें न डूबो दे । उससे इसकी रक्षा करना बेटी । आम्से इसका मार तुम्हीपर है । "

कमरुके इसारा समझ किया ।

आठ बाबू फिर करने को ' तुम्हारी ही बात मैं तुम्हें वाद विचार देता है कमरु । उस दिनसे मैंने इस बातपर बार बार विचार किया है कि प्रेमकी पवित्रताका इतिहास ही मनुष्यकी सम्प्रदाय इतिहास है —उसका जीवन है । नहीं उसके महान् होनेका आराधनाक बर्नन है । फिर भी सुविधाकी संज्ञा का व्याख्याको केकर मैं बहुत कुछ तर्क नहीं करूँगा । अपनी सोमके निःश्यासते तुम खेलेकी विदाकी धीमेकी में मस्तिष्क नहीं करना चाहता । मगर इस बड़ेकी इतनी-ही बात याद रखना कमरु कि आदर्श का आदर्शिका सिर्फ हो-बार आधुनिकी किम् ही है,—इसीसे उसकी शीघ्र है । उसे छाधारनके बीच बीच आर्सेस फिर वह पागल्पन हो जाता है ' उसका ज्ञान मित्र व्यता है और मोक्ष दुःख हो उठता है । बीच मुनसे केकर देवत्व मुन तक इसकी बहुत-ही

हु-ब-ब नजीरि संसारमें बैठी परी हैं। क्या तुम फिरसे वही हु-ब-ब फिर से संसारमें खींच खाना चाहती हो बेटी ?”

कमलने मुहु कण्ठसे उत्तर दिया वह तो मेरा बर्म है बाबाजी !”

“ बर्म ? तुम्हारा वह बर्म है ?”

कमलने कहा ' हाँ । जिस हु-ब-बसे आप डर रहे हैं बाबाजी, वहीमेसे फिर वससे भी बड़ा आश्चर्य पैदा होगा । और उच्छ्व भी कम जिस दिन कल्प हो जायगा उस दिन उसके पृथ सरीरके सारमेंसे उधसे भी महान् आश्चर्यकी सृष्टि होगी । इसी तरह संसारमें आजकल हुए कलके हुमतारके परबोंमें आत्म-निर्घर्षण करके अपना कल पुष्पता रहता है । वही तो मनुष्यकी मुख्य मार्ग है । देखते नहीं बाबाजी सती-बाह्यक बाहरी बेहू रात्रसासनसे बहक गया है, पर उसके मीठरकी आग आग भी ज्योती तबो बचक रही है और उठी तरह मस्म किये बा रही है । वह बुझेपी किस बीजसे ? ’

जात बाबूसे कुछ बोल न क्या, मैं एक घड़ी सोंस कैकर रह मये । परन्तु हमरे ही क्षण बोल ठठे कमल मखिची साक्य बन्धन में आबद्ध नहीं तोड़ सक्य तो इसे तुम क्या करती हो कि मोह है, कमजोरी है — पापम नहीं वह क्या है, पर वह मोह जिस दिन जाता रहेगा उस दिन उसके साथ साथ मनुष्यक बहुत-कुछ बल जानपा बेटी । मनुष्यकी यह बहुत तपस्याकी पूंजी है कमल! — अच्छा अब जाई । बड़ो बाहुदेव ।”

इतनेमें टेकियाज-भिन्न सामने आकर घायकिये उतरा । बर्बेष्ट तार है ।

हरेन्द्रने पाहीकी बाणीके सामने आकर तार बोल्कर प्ला । क्या टेकियाम ही यपुरा कियेके एक छोटे सरकपी अस्तानके बन्दरमे भेजा है । उसमें किन्ना है,

मौयके एक मन्दिरमें आय लम गई थी । बहुत दिनोंकी बहुजनपूजित प्रतिमा धंस होमैके थी । रसाक्य बोरे भी उपाय न रह गया था कि इतनेमें उस कब्जे हुए मन्दिरके अन्दर राजेन्द्र पुष पसा और मूर्तिको बाहर के लाया । देखाकी रखा हो गई, पर उनके रखा-कटौकी रखा न हो सकी । दो दिन पुनराय अम्यक बातना सहता हुआ आज सबेरे वह बेकुण्ड कला गया । सब हजार बलतने मिलकर बीरुन-मजनारिके साथ कुछ निकल कर खुना-खपर उधकी अन्वेषिकिना सम्भव की है । मरते कमल राजेन्द्र आक्यो समाचार देनेके क्रिय वह गया है ।”

स्वच्छ धीक जाग्रतसे बज्र गिरा ।

उत्तमसे हरेन्द्रिय यत्न रुक गया, और स्वच्छ पौदगी रात सुदूर्त-मरमें अन्ध-कारमें एकाकार हो गई ।

आज्ञा बाबू रो पने बोले हो दिन —अवतामीच बन्दे,—इतने नबरीक, फिर भी बरा बबर तक नहीं थी ।”

हरेन्द्र बीके पेंक्या हुआ बोध करत नहीं समझी । कुछ किना टो ना नहीं सफटा ना इसीसे खबर सघने किसीको हुआ केना नहीं बाहा ।”

आज्ञा बाबूने अपने दोनों हाथ माथेसे छ्याकर कहा इसके मानी यह है कि सिवा बेसके, किसी आदमीको बसने अपना आसीन नहीं माना । सिर्फे केस —समय मारतबन । फिर भी ममबाद तुम अपने बरजोमें लसे स्वान केना । तुम और बाहे जो भी करो पर इस राजेन्द्रकी बातको संघारसे न मित्राना ।—बासुदेव बन्दे ।”

इस सोझकी मार्मिक शब्द कमलसे बहकर धायद और किसीको न पहुँची होयी परन्तु बेदनाकी मापसे उघने अपने कल्लोमें रँपने पड़ी बिना । उसकी बीकोसे विनमारिवी-सी निरुधने लगी बोली “कुछ मिस बातका । वह बैकुण्ठ मया है ।” फिर हरेन्द्रसे बोली “रोइए मत हरेन्द्र बाबू, अज्ञानकी बलि हमेशा इसी तरह बना होती है ।”

कमलके स्वच्छ कठोर स्वरने वेने छुरेकी तरह स्वके कड़ेनेको छेद दिया । आज्ञा बाबू बसे बने ।

और, उस श्लोघच्छन्न स्तम्भ-नीरवताके बीच कमल अमितके साथ पानीमें बा बैठी । बोली, “पयशील—बन्दे ।”



